पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

१. मंत्री श्री दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
महावीर पार्क रोड, जयपुर (राजस्थान)

२. मैनेजर श्री दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
श्री महावीरजी (राजस्थान)



प्रथम संस्करण
५०० प्रति

वीर निर्वाण संवत् २४८३
वि० सं० २०१४
अगस्त १९५७

मूल्य
१५)



मुद्रक —
भंवरलाल न्यायतीर्थ,
श्री वीर प्रेस, जयपुर।

★ विषय सूची ★

क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग की ओर से शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तकें



१. प्रद्युम्नचरित :-

हिन्दी भाषा की एक अत्यधिक प्राचीन रचना जिसे कवि सधारु ने संवत १४११ (सन् १३५४) में समाप्त किया था।

२. सदंसणचरिउ :-

अपभ्रंश भाषा का एक महत्त्वपूर्ण काव्य जो महाकवि नयनन्दि द्वारा संवत ११०० (सन १०४३) में लिखा गया था।

३. प्राचीन हिन्दी जैन पद संग्रह :-

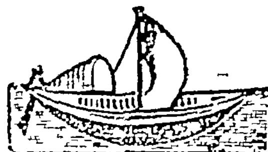
६० से भी अधिक कवियों द्वारा रचे हुये २५०० हिन्दी पदों का अपूर्व संग्रह।

४. राजस्थान के जैन मूर्त्ति लेख एवं शिलालेख :

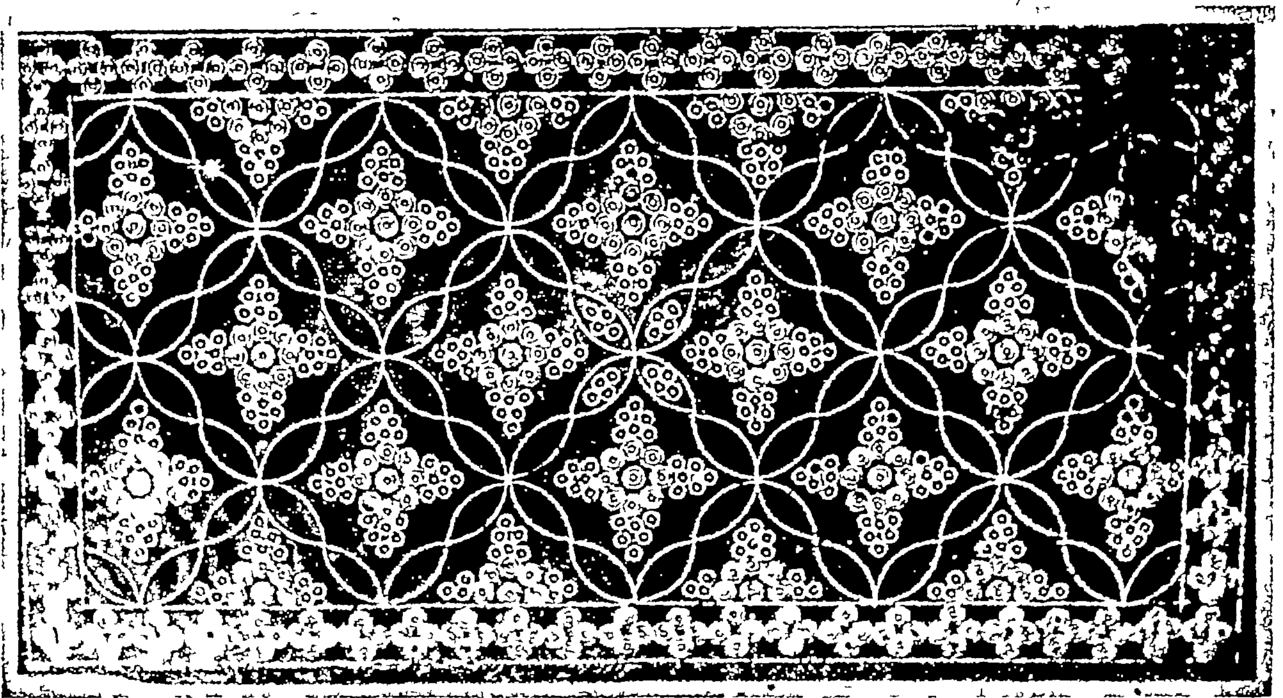
राजस्थान के १००० से अधिक प्राचीन मूर्त्तिलेखों एवं शिलालेखों का सचित्र संग्रह।

५. हिन्दी के नये साहित्य की खोज :- [राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों से]

१४वीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी तक रचित हिन्दी की अज्ञात एवं अप्रकाशित रचनाओं का विस्तृत परिचय।



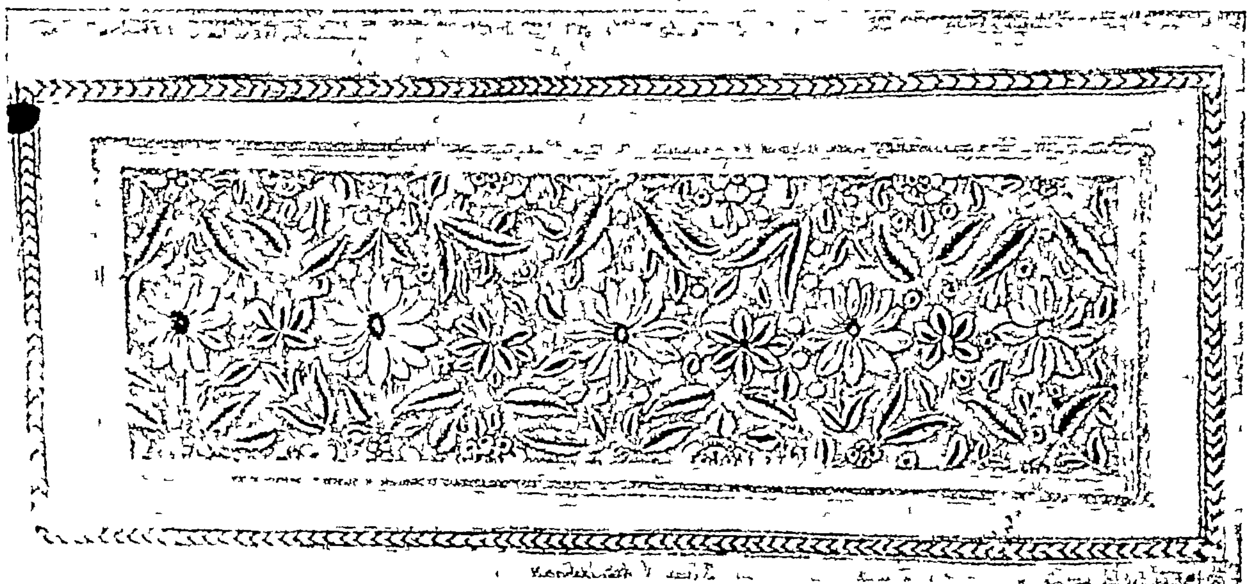
जैन शास्त्र-भण्डारों के ग्रन्थों के नीचे ऊपर लगाये जाने वाले कलात्मक पुट्ठों के चित्र—



जयपुर के चौधरियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार का एक कलात्मक पुट्ठा
जिस पर चादी के तारों से काम किया गया है।

मैं हौं जीव द्रव्य नित्य चेतना स्वरूप मेरौ लग्यो है अनादि तैं कलंक कर्म मल को। ताही को निमित्त पाय
रागादिक भाव भए भयो है शरीर को मिलाप जैसे खल को॥ रागादिक भावनि को पाय कै निमित्त पु
नि होत कर्म बंध ऐसो है बनाव कल को। ऐसैं ही भ्रमत भयो मानुष शरीर जोग [illegible] बनैं तौ बनैं [illegible]
उपाय निज थल को॥२६॥ दोहा॥ रंभापति स्तुत गुन जनक। जाको जोगीदास॥ सोई मेरो [illegible]
धारैं प्रगट प्रकास [illegible]॥२७॥ मैं आतम अरु पुद्गल खंध। मिलि कैं भयो परस्पर बंध॥ सो असमान

जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत महा पं० टोडरमलजी द्वारा
लिखित 'मोक्षमार्ग प्रकाश' का चित्र।



जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार का एक पुट्ठा—
जिस पर खिले हुए फूलों का जाल बिछा हुआ है।

प्रकाशकीय

श्री महावीर ग्रन्थमाला का यह सातवां पुष्प है तथा राजस्थान के जैन ग्रन्थभण्डारों की ग्रन्थ सूची का तीसरा भाग है जिसे पाठकों के हाथों में देते हुये बड़ी प्रसन्नता होती है। ग्रन्थ सूची का दूसरा भाग सन् १९५४ मे प्रकाशित हुआ था। तीन वर्ष के इस लम्बे समय में किसी भी पुस्तक का प्रकाशन न होना अवश्य खटकने वाली वात है लेकिन जयपुर एवं अन्य स्थानों के शास्त्र भण्डारों की छान वीन तथा सूची वनाने आदि के कार्यो में व्यस्त रहने के कारण प्रकाशन का कार्य न हो सका। सूची के इस भाग मे जयपुर के दि० जैन मन्दिर वधीचन्दजी तथा ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डारों के ग्रन्थों की सूची दी गयी है। ये दोनों ही मन्दिर जयपुर के प्रमुख एवं प्रसिद्ध मन्दिरों में से है। दोनों भण्डारों में कितना महत्वपूर्ण साहित्य सग्रहीत है यह बताना तो विद्वानों का कार्य है किन्तु मुझे तो यहाँ इतना ही उल्लेख करना है कि वधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार तो १८ वीं शताब्दी के सर्व प्रसिद्ध विद्वान् टोडरमलजी की साहित्यिक सेवाओं का केन्द्र रहा था और आज भी उनके पावन हाथों से लिखी हुई मोक्षमार्गप्रकाश एव आत्मानुशासन की प्रतियां इस भण्डार में संग्रहीत हैं। ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में भी प्राचीन साहित्य का अच्छा सग्रह है तथा जयपुर के व्यवस्थित भण्डारों में से है।

इस तीसरे भाग में निर्दिष्ट भण्डारों के अतिरिक्त जयपुर, भरतपुर, कामां, डीग, दौसा, मौजमावाद, वसवा, करौली, वयाना आदि स्थानों के करीव ४० भण्डारों की सूचियां पूर्ण रूप से तैय्यार हैं जिन्हें चतुर्थ भाग में प्रकाशित करने की योजना है। ग्रन्थ सूचियों के अतिरिक्त हिन्दी एव अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य भी चल रहा है तथा जिनमें से कवि सधारू कृत प्रद्युम्नचरित, प्राचीन हिन्दी पद संग्रह, हिन्दी भाषा की प्राचीन रचनायें, महाकवि नयनन्दि कृत सुदंसणचरिउ एव राजस्थान के जैन मूर्त्तिलेख एव शिलालेख आदि पुस्तके प्राय. तैय्यार हैं तथा जिन्हें शीघ्र ही प्रकाशित करवाने की व्यवस्था की जा रही है।

हमारे इस साहित्य प्रकाशन के छोटे से प्रयत्न से भारतीय साहित्य एव विशेषत जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचा है यह बताना तो कुछ कठिन है किन्तु समय समय पर जो रिसर्चस्कालर्स जयपुर के जैन भण्डारों को देखने के लिये आने लगे हैं इससे पता चलता है कि सूचियों के प्रकाश में आने से जैन शास्त्र भण्डारों के अवलोकन की ओर जैन एवं जैनेतर विद्वानों का ध्यान जाने लगा है तथा वे खोजपूर्ण पुस्तकों के लेखन मे जैन भण्डारों के ग्रन्थों का अवलोकन भी आवश्यक समझने लगे हैं।

सूचियां वनाने का एक और लाभ यह होता है कि जो भण्डार वर्षों से वन्द पडे रहते हैं वे भी खुल जाते हैं और उनको व्यवस्थित बना दिया जाता है जिससे उनसे फिर सभी लाभ उठा सकें। यहाँ

प्रकाशकीय

श्री महावीर ग्रन्थमाला का यह सातवां पुष्प है तथा राजस्थान के जैन ग्रन्थभण्डारों की ग्रन्थ सूची का तीसरा भाग है जिसे पाठकों के हाथों में देते हुये बड़ी प्रसन्नता होती है। ग्रन्थ सूची का दूसरा भाग सन् १९५४ में प्रकाशित हुआ था। तीन वर्ष के इस लम्बे समय में किसी भी पुस्तक का प्रकाशन न होना अवश्य खटकने वाली बात है लेकिन जयपुर एवं अन्य स्थानों के शास्त्र भण्डारों की छान बीन तथा सूची बनाने आदि के कार्यों में व्यस्त रहने के कारण प्रकाशन का कार्य न हो सका। सूची के इस भाग में जयपुर के दि० जैन मन्दिर बधीचन्दजी तथा ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डारों के ग्रन्थों की सूची दी गयी है। ये दोनों ही मन्दिर जयपुर के प्रमुख एवं प्रसिद्ध मन्दिरों में से है। दोनों भण्डारों में कितना महत्वपूर्ण साहित्य संग्रहीत है यह बताना तो विद्वानों का कार्य है किन्तु मुझे तो यहाँ इतना ही उल्लेख करना है कि बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार तो १८ वीं शताब्दी के सर्व प्रसिद्ध विद्वान् टोडरमलजी की साहित्यिक सेवाओं का केन्द्र रहा था और आज भी उनके पावन हाथों से लिखी हुई मोक्षमार्गप्रकाश एव आत्मानुशासन की प्रतियां इस भण्डार में संग्रहीत हैं। ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे भी प्राचीन साहित्य का अच्छा सग्रह है तथा जयपुर के व्यवस्थित भण्डारों में से है।

इस तीसरे भाग मे निर्दिष्ट भण्डारों के अतिरिक्त जयपुर, भरतपुर, कामां, डीग, दौसा, मौजमाबाद, बसवा, करौली, बयाना आदि स्थानों के करीब ४० भण्डारों की सूचियां पूर्ण रूप से तैय्यार हैं जिन्हें चतुर्थ भाग मे प्रकाशित करने की योजना है। ग्रन्थ सूचियों के अतिरिक्त हिन्दी एव अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य भी चल रहा है तथा जिनमें से कवि सधारू कृत प्रद्युम्नचरित, प्राचीन हिन्दी पद संग्रह, हिन्दी भाषा की प्राचीन रचनायें, महाकवि नयनन्दि कृत सुदंसणचरिउ एव राजस्थान के जैन मूर्त्तिलेख एवं शिलालेख आदि पुस्तकें प्राय तैय्यार हैं तथा जिन्हें शीघ्र ही प्रकाशित करवाने की व्यवस्था की जा रही है।

हमारे इस साहित्य प्रकाशन के छोटे से प्रयत्न से भारतीय साहित्य एव विशेषत जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचा है यह बताना तो कुछ कठिन है किन्तु समय समय पर जो रिसर्चस्कालर्स जयपुर के जैन भण्डारों को देखने के लिये आने लगे हैं इससे पता चलता है कि सूचियों के प्रकाश में आने से जैन शास्त्र भण्डारों के अवलोकन की ओर जैन एवं जैनेतर विद्वानों का ध्यान जाने लगा है तथा वे खोजपूर्ण पुस्तकों के लेखन में जैन भण्डारों के ग्रन्थों का अवलोकन भी आवश्यक समझने लगे हैं।

सूचिया बनाने का एक और लाभ यह होता है कि जो भण्डार वर्षों से बन्द पडे रहते हैं वे भी खुल जाते हैं और उनको व्यवस्थित बना दिया जाता है जिससे उनसे फिर सभी लाभ उठा सकें। यहाँ

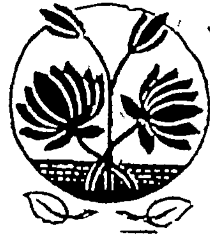
हम समाज से एक निवेदन करना चाहते हैं कि यदि राजस्थान अथवा अन्य स्थानो मे प्राचीन शास्त्र भण्डार हों तो वे हमें सूचित करने का कष्ट करें। जिससे हम वहां के भण्डारा की ग्रन्थ सूची तैयार करवा सके। तथा उसे प्रकाश मे ला सके।

क्षेत्र के सीमित साधनों को देखते हुये साहित्य प्रकाशन का भारी कार्य जल्दी से नहीं हो रहा है इसका हमे भी दुःख है लेकिन भविष्य में यही आशा की जाती है कि इस कार्य में और भी तेजी आवेगी और हम अधिक से अधिक ग्रन्थों को प्रकाशित कराने का प्रयत्न करेंगे।

अन्त मे हम बधीचन्दजी एवं ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के व्यवस्थापकों को धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकते जिन्होंने हमे शास्त्रों की सूची वनाने एवं समय समय पर ग्रन्थ देखने की पूरी सुविधाएं प्रदान की है।

जयपुर,
ता० १५-६-५७

बधीचन्द गंगवाल



प्रस्तावना

राजस्थान प्राचीन काल से ही साहित्य का केन्द्र रहा है। इस प्रदेश के शासकों से लेकर साधारण जनों तक ने इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। कितने ही राजा महाराजा स्वयं साहित्यिक थे तथा साहित्य निर्माण में रस लेते थे। उन्होंने अपने राज्यों मे होने वाले कवियों एव विद्वानों को आश्रय दिया तथा बड़ी बडी पदवियां देकर सम्मानित किया। अपनी अपनी राजधानियों मे हस्तलिखित ग्रथ सग्रहालय स्थापित किये तथा उनकी सुरक्षा करके प्राचीन साहित्य की महत्त्वपूर्ण निधि को नष्ट होने से बचाया। यही कारण है कि आज भी राजस्थान मे कितने ही स्थानों पर विशेषतः जयपुर, अलवर, बीकानेर आदि स्थानों पर राज्य के पोथीखाने मिलते हैं जिनमे संस्कृत, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा का महत्त्वपूर्ण साहित्य संग्रहीत किया हुआ है। यह सब कार्य राज्य-स्तर पर किया गया। किन्तु इसके विपरीत राजस्थान के निवासियों ने भी पूरी लगन के साथ साहित्य एवं साहित्यिकों की उल्लेखनीय सेवाये की हैं और इस दिशा मे ब्राह्मण परिवारों की सेवाओं से भी अधिक जैन यतियों एव गृहस्थों की सेवा अधिक प्रशंसनीय रही है। उन्होंने विद्वानों एवं साधुओं से अनुरोध करके नवीन साहित्य का निर्माण करवाया। पूर्व निर्मित साहित्य के प्रचार के लिये ग्रथों की प्रतिलिपियां करवायी गयी तथा उनको स्वाध्याय के लिये शास्त्र भण्डारों में विराजमान की गयी। जन साधारण के लिये नये नये ग्रंथों की उपलब्धि की गयी, प्राचीन एवं अनुपलब्ध साहित्य का संग्रह किया गया तथा जीर्ण एव शीर्ण ग्रथों का जीर्णोद्धार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया। उधर साहित्यिकों ने भी अपना जीवन साहित्य सेवा में होम दिया। दिन रात वे इसी कार्य मे जुटे रहे। उनको अपने खान-पान एव रहन-सहन की कुछ भी चिन्ता न थी। महापंडित टोडरमलजी के सम्बन्ध मे तो यह किम्वदन्ती है कि साहित्य-निर्माण मे व्यस्त रहने के कारण ६ मास तक उनके भोजन मे नमक नहीं डाला गया किन्तु इसका उनको पता भी न लगा। ऐसे विद्वानों के कारण ही विशाल साहित्य का निर्माण हो सका जो हमारे लिये आज अमूल्य निधि है। इसके अतिरिक्त कुछ साहित्यसेवी जो अधिक विद्वान् नहीं थे वे प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियां करके ही साहित्य सेवा का महान पुण्य उपार्जन करते थे। राजस्थान के जैन शास्त्र-भण्डारों मे ऐसे साहित्य-सेवियों के हजारों शास्त्र सग्रहीत हैं। विज्ञान के इस स्वर्णयुग में भी हम प्रकाशित ग्रथों को शास्त्र-भण्डारों मे इसलिये सग्रह करना नहीं चाहते कि उनका स्वाध्याय करने वाला कोई नहीं है किन्तु हमारे पूर्वजों ने इन शास्त्र भण्डारों मे शास्त्रों का संग्रह केवल एक मात्र साहित्य सेवा के आधार पर किया था न कि स्वाध्याय करने वालों की सख्या को देख कर। क्योंकि यदि ऐसा होता तो आज इन शास्त्र भण्डारों मे इतने वर्षो के पश्चात् भी हमें हजारों की संख्या में हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रहीत किये हुये नहीं मिलते।

जैन सघ की इस अनुकरणीय एव प्रशसनीय साहित्य सेवा के फलस्वरूप राजस्थान के गांवों, कस्बों एवं नगरों मे ग्र थ सग्रहालय स्थापित किये गये तथा उनकी सुरक्षा एव संरक्षण का सारा भार उन्हीं स्थानों पर रहने वाले जैन श्रावकों को दिया गया। कुछ स्थानों के भण्डार भट्टारकों, यतियों एव पाड्यों के अधिकार मे रहे। ऐसे भण्डार श्वेताम्बर जैन समाज मे अधिक हैं। राजस्थान मे आज भी करीब ३०० गाव, कस्बे तथा नगर आदि होंगे जहॉं जैन शास्त्र सग्रहालय मिलते हैं। यह तीन सौ की संख्या स्थानों की सख्या है भण्डारों की नहीं। भण्डार तो किसी एक स्थान मे दो तीन से लेकर २५-३० तक पाये जाते हैं। जयपुर मे ३० से अधिक भण्डार है, पाटन मे बीस से अधिक भण्डार है तथा बीकानेर आदि स्थानों मे दस पन्द्रह के आस पास होगे। सभी भण्डारों मे शास्त्रों की सख्या भी एक सी नहीं है। यदि किसी किसी भण्डार मे पन्द्रह हजार तक ग्रन्थ हैं तो किसी मे दो सौ तीन सौ भी है। भण्डारों की आकार प्रकार के साथ साथ उनका महत्त्व भी अनेक दृष्टियों से भिन्न भिन्न है। यदि किसी भण्डार मे प्राचीन प्रतियों का अधिक सग्रह है तो दूसरे भण्डार मे किसी भाषा विशेष के ग्रंथों का अधिक संग्रह है। यदि किसी भण्डार मे सैद्धान्तिक एव धार्मिक ग्रन्थों का अधिक संग्रह है तो किसी भण्डार मे काव्य, नाटक, रासा, व्याकरण, ज्योतिष आदि लौकिक साहित्य का अधिक संग्रह है। इनके अतिरिक्त किसी किसी भण्डार मे जैनेतर साहित्य का भी पर्याप्त सग्रह मिलता है।

साहित्य सग्रह की इस दिशा मे राजस्थान के अन्य स्थानों की अपेक्षा जयपुर, नागौर, जैसलमेर, बीकानेर, अजमेर आदि स्थानो के भण्डार सख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एव विषय-वैचित्र्य आदि सभी दृष्टियों से उल्लेखनीय हैं। राजस्थान के इन भण्डारों मे, ताडपत्र, कपडा, और कागज इन तीनों पर ही ग्र थ मिलते हैं किन्तु ताडपत्र के ग्र थ तो जैसलमेर के भण्डारों मे ही मुख्यतया सग्रहीत हैं अन्य स्थानों मे उनकी संख्या नाम मात्र की है। कपडे पर लिखे हुये ग्रंथ भी बहुत कम सख्या मे मिलते हैं। अभी जयपुर के पार्श्वनाथ ग्र थ भण्डार मे कपडे पर लिखा हुआ सवत १५१६ का एक ग्र थ मिला है। इसी तरह के ग्र थ अन्य भण्डारों मे भी मिलते हैं लेकिन उनकी सख्या भी बहुत कम है। सबसे अधिक सख्या कागज पर लिखे हुये ग्र थों की है जो सभी भण्डारों मे मिलते हैं तथा जो १३ वीं शताब्दी से मिलने लगते हैं। जयपुर के एक भण्डार मे सवत १३१९ (सन १२६२) का एक ग्र थ कागज पर लिखा हुआ सुरक्षित है।

यद्यपि जयपुर नगर को बसे हुये करीब २२५ वर्ष हुये हैं किन्तु यहॉं के शास्त्र-भण्डार सख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एव विषय वैचित्र्य आदि सभी दृष्टियों से उत्तम हैं। वैसे तो यहां के प्राय प्रत्येक मन्दिर एव चैत्यालय मे शास्त्र सग्रह किया हुआ मिलता है किन्तु आमेर शास्त्र भण्डार, बडे मन्दिर का शास्त्र भण्डार, बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भण्डार, ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पाडे लूणकरणजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, गोधो के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पार्श्वनाथ के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पाटोदी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, लश्कर के मन्दिर

का शास्त्र भण्डार, छोटे दीवान जी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, सघीजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, छाबडों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, जोवनेर के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, नया मन्दिर का शास्त्र भण्डार आदि कुछ ऐसे शास्त्र भण्डार हैं जिनमे सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी, भाषाओं के महत्त्व-पूर्ण साहित्य का सग्रह है। उक्त भण्डारों की प्राय. सभी की ग्रंथ सूचियां तैय्यार की जा चुकी हैं जिससे पता चलता है कि इन भण्डारों में कितना अपार साहित्य सकलित किया हुआ है। राजस्थान के ग्रथ भण्डारों के छोटे से अनुभव के आधार पर यह लिखा जा सकता है कि अपभ्रंश एवं हिन्दी की विभिन्न धाराओं का जितना अधिक साहित्य जयपुर के इन भण्डारों मे संग्रहीत है उतना राजस्थान के अन्य भण्डारों में संभवत. नहीं है। इन ग्रन्थ भण्डारों की ग्रन्थ सूचियां प्रकाशित हो जाने के पश्चात् विद्वानों को इस दिशा मे अधिक जानकारी मिल सकेगी।

ग्रथ सूची का तृतीय भाग विद्वानों के समक्ष है। इसमे जयपुर के दो प्रसिद्ध भण्डार–बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार एवं ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार—के ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय उपस्थित किया गया है। ये दोनों भण्डार नगर के प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण भण्डारों मे से है।

बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार—

बधीचन्दजी का दि० जैन मन्दिर जयपुर के जैन पञ्चायती मन्दिरों में से एक मन्दिर है। यह मन्दिर गुमानपन्थ के आम्नाय का है। गुमानीरामजी महापडित टोडरमलजी के सुपुत्र थे जिन्होंने अपना अलग ही गुमानपन्थ चलाया था। यह पन्थ दि० जैनों के तेरहपन्थ से भी अधिक सुधारक है तथा भट्टारकों द्वारा प्रचलित शिथिलाचार का कट्टर विरोधी है। यह विशाल एवं कलापूर्ण मन्दिर नगर के जौहरी बाजार के घी वालों के रास्ते मे स्थित है। काफी समय तक यह मन्दिर प० टोडरमलजी, गुमानीरामजी की साहित्यिक प्रवृत्तियों का केन्द्रस्थल रहा है। पं० टोडरमलजी ने यहीं बैठकर गोमट्टसार, आत्मानुशासन जैसे महान् ग्रंथों की हिन्दी भाषा एव मोक्षमार्गप्रकाश जैसे महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक ग्रन्थ की रचना की थी। आज भी इस भण्डार मे मोक्षमार्गप्रकाश, आत्मानुशासन एव गोमट्टसार भाषा की मूल प्रतियां जिनको पंडितजी ने अपने हाथों से लिखा था, संग्रहीत हैं।

पञ्चायती मन्दिर होने के कारण तथा जयपुर के विद्वानों की साहित्यिक प्रगतियों का केन्द्र होने के कारण यहाँ का शास्त्र भण्डार अधिक महत्त्वपूर्ण है। यहाँ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश हिन्दी, राजस्थानी एव ढूढारी भाषाओं के ग्रन्थों का उत्तम संग्रह किया हुआ मिलता है। इन हस्तलिखित ग्रन्थों की संख्या १२७८ है। इनमे १६२ गुटके तथा शेष १११६ ग्रथ हैं। हस्तलिखित ग्रंथ सभी विषय के हैं जिनमें सिद्धान्त, धर्म एव आचार शास्त्र, अध्यात्म, पूजा, स्तोत्र आदि विषयों के अतिरिक्त, काव्य, चरित, पुराण, कथा, नीतिशास्त्र, सुभाषित आदि विषयों पर भी अच्छा संग्रह है। लेखक प्रशस्ति संग्रह मे ४० लेखक प्रशस्तियां इसी भण्डार के ग्रन्थों पर से दी गयी हैं। इनसे पता चलता है कि भण्डार में

१५ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी तक की प्रतियों का अच्छा संग्रह है। ये प्रतियां सम्पादन कार्य में काफी सहायक सिद्ध हो सकती हैं। हेमराज कृत प्रवचनसार भाषा एवं गोमट्टसार कर्मकाण्ड भाषा, बनारसीदास का समयसार नाटक, भ० शुभचन्द्र का चारित्रशुद्धि विधान, पं० लाखू का जिणदत्तचरित्र, पं० टोडरमलजी द्वारा रचित गोमट्टसार भाषा, आदि कितने ही ग्रन्थों की तो ऐसी प्रतियां हैं जो अपने अस्तित्व के कुछ वर्षों पश्चात की ही लिखी हुई हैं। इनके अतिरिक्त कुछ ग्रन्थों की ऐसी प्रतियां भी हैं जो ग्रन्थ निर्माण के काफी समय के पश्चात् लिखी होने पर भी महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसी प्रतियों में स्वयम्भू का हरिवंशपुराण, प्रभाचन्द्र की आत्मानुशासन टीका, महाकवि वीर कृत जम्बूस्वामीचरित्र, कवि सधारू का प्रद्युम्नचरित, नन्द का यशोधर चरित्र, मल्लकवि कृत प्रबोधचन्द्रोदय नाटक, सुखदेव कृत वणिकप्रिया, वंशीधर की दस्तूरमालिका, पूज्यपाद कृत सर्वार्थसिद्धि आदि उल्लेखनीय हैं।

भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति वड्ढमाणकाव्य की वृत्ति की है जो संवत १४८१ की लिखी हुई है। यह प्रति अपूर्ण है। तथा सबसे नवीन प्रति संवत् १६८७ की अढाई द्वीप पूजा की है। इस प्रकार गत ५०० वर्षों में लिखा हुआ साहित्य का यहाँ उत्तम संग्रह है। भण्डार में मुख्य रूप में आमेर एवं सांगानेर इन दो नगरों से आये हुये ग्रन्थ हैं जो अपने २ समय में जैनों के केन्द्र थे।

ठोलियों के दि० जैन मन्दिर का शास्त्र भण्डार—

ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार भी ठोलियों के दि० जैन मन्दिर में स्थित है। यह मन्दिर भी जयपुर के सुन्दर एवं विशाल मन्दिरों में से एक है। मन्दिर में विराजमान बिल्लोरी पाषाण की सुन्दर मूर्त्तियां दर्शनार्थियों के लिये विशेष आकर्षण की वस्तु है। जयपुर के किसी ठोलिया परिवार द्वारा निर्मित होने के कारण यह मन्दिर ठोलियों के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। मन्दिर पञ्चायती मन्दिर तो नहीं है किन्तु नगर के प्रमुख मन्दिरों में से एक है। यहाँ का शास्त्र भण्डार एक नवीन एवं भव्य कमरे में विराजमान है। शास्त्र भण्डार के सभी ग्रन्थ वेष्टनों में बंधे हुये हैं एवं पूर्ण व्यवस्था के साथ रखे हुये हैं जिससे आवश्यकता पड़ने पर उन्हें सरलता से निकाला जा सकता है। पहिले गुटकों की कोई व्यवस्था नहीं थी तथा न उनकी सूची ही बनी हुई थी किन्तु अब उनको भी व्यवस्थित रूप से रख दिया गया है।

ग्रन्थ भण्डार में ५१५ ग्रन्थ तथा १४३ गुटके हैं। यहाँ पर प्राचीन एवं नवीन दोनों ही प्रकार की प्रतियों का संग्रह है जिससे पता चलता है कि भण्डार के व्यवस्थापकों का ध्यान सदैव ही हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह की ओर रहा है। इस भण्डार में ऐसा अच्छा संग्रह मिल जावेगा ऐसी आशा सूची बनाने के आरम्भ में नहीं थी। किन्तु वास्तव में देखा जावे तो संग्रह अधिक न होने पर भी महत्त्वपूर्ण है और भाषा साहित्य के इतिहास की कितनी ही कड़ियां जोड़ने वाला है। यहाँ पर मुख्यतः संस्कृत और हिन्दी इन दो भाषाओं के ग्रन्थों का ही अधिक संग्रह है। भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति ब्रह्मदेव कृत द्रव्यसंग्रह टीका की है जो संवत १४१६ (सन् १३५६) की लिखी हुई है। इसके अतिरिक्त योगीन्द्रदेव

का परमात्मप्रकाश सटीक, हेमचन्द्राचार्य का शब्दानुशासनवृत्ति एव पुष्पदन्त का आदिपुराण आदि रचनाओं की भी प्राचीन प्रतिया उल्लेखनीय हैं। यहाँ पर पूजापाठ सग्रह का एक गुटका है जिसमें ४७ पूजाओं का संग्रह है। गुटका प्राचीन है। प्रत्येक पूजा का मण्डल चित्र दिया हुआ है। जो रंगीन एव सुन्दर है। इस सचित्र ग्रन्थ के अतिरिक्त वेष्टनों के २ पुट्ठे ऐसे मिले हैं जिनमे से एक पर तो २४ तीर्थंकरों के चित्र अकित है तथा दूसरे पट्ठे पर केवल वेल बूटे हैं।

भण्डार मे संग्रहीत गुटके वहुत महत्त्व के हैं। हिन्दी की अधिकाश सामग्री इन्हीं गुटकों में प्राप्त हुई है। भ० शुभचन्द्र, मेघराज, रघुनाथ, ब्रह्म जिनदास आदि कवियों की कितनी ही नवीन रचनाये प्राप्त हुई हैं जिनको हिन्दी साहित्य मे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होगा। इनके अतिरिक्त भण्डार मे २ रासो मिले है जो ऐतिहासिक हैं तथा दिगम्बर भण्डारों मे उपलब्ध होने वाले ऐसे साहित्य मे सर्वप्रथम रासो हैं। इनमे एक पर्वत पाटणी का रासो है जो १६ वीं शताब्दी मे होने वाले पर्वत पाटणी के जीवन पर प्रकाश डालता है। दूसरा कृष्णदास वघेरवाल का रासो है जो कृष्णदास के जीवन पर तथा उनके द्वारा किये गये चान्दखेडी मे प्रतिष्ठा महोत्सव पर विस्तृत प्रकाश डालता है। इसी प्रकार सवत् १७३३ में लिखित एक भट्टारक पट्टावलि भी प्राप्त हुई है जो हिन्दी मे इस प्रकार की प्रथम पट्टावलि है तथा भट्टारक परम्परा पर प्रकाश डालती है।

भण्डारों में उपलब्ध नवीन साहित्य—

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है दोनों शास्त्र भण्डार ही हिन्दी रचनाओं के संग्रह के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। १४ वीं शताब्दी से लेकर २० वीं शताब्दी तक जैन एव जैनेतर विद्वानों द्वारा निर्मित हिन्दी साहित्य का यहा अच्छा सग्रह है। हिन्दी साहित्य की नवीन कृतियों मे कवि सुधारु का प्रद्युम्न चरित, (स० १४११) कवि वीर कृत मणिहार गीत, आज्ञासुन्दर की विद्याविलास चौपई (१५१६), मुनि कनकामर की ग्यारहप्रतिमावर्णन, पद्मनाभ कृत डूगर की वावनी (१५४३), विनयसमुद्र कृत विक्रमप्रबन्ध रास (१५७३) छीहल का उदर गीत एव पद, ब्रह्म जिनदास का आदिनाथस्तवन, ब्र० कामराज कृत त्रेसठ शलाकापुरुषवर्णन, कनकसोम की जइतपदवेलि (१६२५), कुमदचन्द्र एवं पूनो की पद एव विनतियां आदि उल्लेखनीय हैं। ये १४ वीं से लेकर १६ वीं शताब्दी के कुछ कवि हैं जिनकी रचनायें दोनों भण्डारों में प्राप्त हुई है। इसी प्रकार १७ वीं शताब्दी से १६ वीं शताब्दी के कवियों की रचनाओं मे ब्र० गुलाल की विवेक चौपई, उपाध्याय जयसागर की जिनकुशलसूरि स्तुति, जिनरंगसूरि की प्रवोधवावनी एव प्रस्ताविक दोहा, ब्र० ज्ञानसागर का व्रतकथाकोश, टोडर कवि के पद, पदमराज का राजुल का वारहमासा एव पार्श्वनाथस्तवन, नन्द की यशोधर चौपई (१६७०), पोपटशाह कृत मदनमंजरी कथा प्रबन्ध, वनारसीदास कृत मांभा, मनोहर कवि की चिन्तामणि मनवावनी, लघु वावनी एवं सुगुरुसीख, मल्लकवि कृत प्रवोधचन्द्रोदयनाटक, मुनि मेघराज कृत संयम प्रवहणगीत (१६६८), रूपचन्द का अध्यात्म सवैय्या, भ० शुभचन्द्र कृत तत्त्वसार-

दोहा, समयसुन्दर का आत्मउपदेशगीत, क्षमाबत्तीसी एवं दानशीलसंवाद, सुखदेव कृत वणिकप्रिया, (१७१७) हर्षकीर्त्ति का नेमिनाथराजुलगीत, नेमीश्वरगीत, एवं मोरडा, अजयराज कृत नेमिनाथचरित (१७६३) एवं यशोधर चौपई (१७६२), कनककीर्त्ति का मेघकुमारगीत, गोपालदास का प्रमादीगीत एव यदुरासो; थानसिंह का रत्नकरण्ड श्रावकाचार एव सुबुद्धिप्रकाश (१८४७) दादूदयाल के दोहे, दूलह कवि का कविकुलकण्ठाभरण, नगरीदास का इश्कचिमन, एव वैनविलास, वंशीधर कृत दस्तूरमालिका, भगवानदास के पद, मनराम द्वारा रचित अक्षरमाला, मनरामविलास, एव धर्मसहेली, मुनि महेस की अक्षरबत्तीसी, रघुनाथ का गणभेद, ज्ञानसार, नित्यविहार एव प्रसगसार, श्रुतसागर का पट्मालवर्णन (१८२१), हेमराज कृत दोहाशतक, केशरीसिंह का वर्द्धमानपुराण (१८७३) चपाराम का धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार, एव भद्रबाहुचरित्र, बाबा दुलीचन्द कृत धर्मपरीक्षा भाषा आदि उल्लेखनीय है। ये रचनायें काव्य, पुराण, चरित, नाटक, रस एव अलकार अर्थशास्त्र, इतिहास आदि सभी विषयों से सम्बन्धित है। इनमे से बहुत सी तो ऐसी रचनायें हैं। जो सम्भवत सर्व प्रथम विद्वानों के समक्ष आयी होंगी।

सचित्र साहित्य—

दोनों भण्डारों मे हिन्दी एव अपभ्र श का महत्त्वपूर्ण साहित्य उपलब्ध होने हुये सचित्र साहित्य का न मिलना जैन श्रावकों एवं विद्वानो की इस ओर उदासीनता प्रगट करती है। किन्तु फिर भी ठोलियों के मन्दिर मे एक पूजा सग्रह प्राप्त हुआ है जो सचित्र है। इसमे पूजा के विधानो के मडल चित्रित किये हुये है। चित्र सभी रगीन है एव कला पूर्ण भी है। इसी प्रकार एक शास्त्र के पुट्ठे पर चौबीस तीर्थंकरों के चित्र दिये हुये हैं। सभी रगीन एव कला पूर्ण हैं। यह पुट्ठा १६ वीं शताब्दी का प्रतीत होता है।

विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रन्थ—

इस दृष्टि से बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार उल्लेखनीय है। यहाँ पर महा पडित टोडरमलजी द्वारा लिखित मोक्षमार्गप्रकाश एवं आत्मानुशासन भाषा एव गोमट्टसार भाषा की प्रतियां सुरक्षित है। ये प्रतिया साहित्यिक दृष्टि से नहीं किन्तु इतिहास एव पुरातत्त्व की दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

विशाल पद साहित्य—

दोनों भण्डारों के गुटकों मे हिन्दी कवियों द्वारा रचित पदो का विशाल संग्रह है। इन कवियों की संख्या ६० है जिनमे कबीरदास, वृन्द, सुन्दर, सूरदास आदि कुछ कवियों के अतिरिक्त शेष सभी जैन कवि हैं। इनमे अजयराज, छीहल, जगजीवन, जगतराम, मनराम, रूपचन्द, हर्षकीर्त्ति आदि के नाम उल्लेखनीय है। इन कवियो द्वारा रचित हिन्दी पद भाषा एव भाव की दृष्टि से अच्छे हैं तथा जिनका प्रकाश मे आना आवश्यक है। क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग की ओर से ऐसे पद एव भजनों का सग्रह

किया जा रहा है और शीघ्र ही करीब २५०० पदों का एक वृहद् संग्रह प्रकाशित करने का विचार है । जिससे कम से कम यह तो पता चल सकेगा कि जैन विद्वानों ने इस दिशा में कितना महत्त्वपूर्ण कार्य किया है ।

गुटकों का महत्त्व—

वास्तव में यदि देखा जावे तो जितना भी महत्त्वपूर्ण एव अनुपलब्ध साहित्य मिलता है उसका अधिकांश भाग इन्हीं गुटकों में संग्रहीत किया हुआ है । जैन श्रावकों को गुटकों में छोटी छोटी रचनायें संग्रहीत करवाने का वडा चाव था । कभी कभी तो वे स्वयं ही संग्रह कर लिया करते थे और कभी अन्य लेखकों के द्वारा संग्रह करवाते थे । इन दोनों भण्डारों में भी जितना हिन्दी का नवीन साहित्य मिला है उसका आधे से अधिक भाग इन्हीं गुटकों में संग्रह किया हुआ है । दोनों भण्डारों में गुटकों की संख्या ३०५ है । यद्यपि इन गुटकों में सर्वसाधारण के काम आने वाले स्तोत्र, पूजायें, कथायें आदि की ही अधिक संख्या है किन्तु महत्त्वपूर्ण साहित्य भी इन्हीं गुटकों में उपलब्ध होता है । गुटके सभी साइज के मिलते है । यदि किसी गुटके मे १८-२० पत्र ही हैं तो किसी किसी गुटके मे ४००-५०० पत्र तक हैं । ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के एक गुटके में ६५४ पत्र है जिनमें ४७ पूजाओं का संग्रह किया हुआ है । कुछ गुटकों में तो लेखनकाल उसके अन्त मे दिया हुआ होता है किन्तु कुछ गुटकों में बीच बीच में भी लेखन-काल दे दिया जाता है अर्थात् जैसे जैसे पाठ समाप्त होते जाते हैं वैसे वैसे लेखनकाल भी दे दिया जाता है ।

इन गुटकों में साहित्यिक एवं धार्मिक रचनाओं के अतिरिक्त आयुर्वेद के नुसखे भी बहुत मिलते हैं । यदि इन्ही नुसखों के आधार पर कोई खोज की जावे तो वह आयुर्वेदिक साहित्य के लिये महत्त्वपूर्ण चीज प्रमाणित हो सकती है । ये नुसखे हिन्दी भाषा मे अनुभव के आधार पर लिखे हुये हैं ।

आयुर्वेदिक साहित्य के अतिरिक्त किसी किसी गुटके में ऐतिहासिक सामग्री भी मिल जाती है । यह सामग्री मुख्यत राजाओं अथवा बादशाहों की वंशावलि के रूप में होती है । कौन राजा कब राज्य सिंहासन पर बैठा तथा उसने कितने वर्ष, कितने महिने एवं कितने दिन तक शासन किया आदि विवरण दिया हुआ रहता है ।

ग्रन्थ-सूची के सम्बन्ध में—

प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची में जयपुर के केवल दो शास्त्र भण्डारों की सूची है । हमारा विचार तो एक भण्डार की और सूची देना था लेकिन ग्रन्थ सूची के अधिक पत्र हो जाने के डर से नहीं दिया गया । प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में जिन नवीन रचनाओं का उल्लेख आया है उनके आदि अन्त भाग भी दे दिये गये हैं जिससे विद्वानों को ग्रन्थ की भाषा, रचनाकाल, एवं ग्रन्थकार के सम्बन्ध में कुछ परिचय मिल सके ।

इसके अतिरिक्त जो लेखक प्रशस्तियां अधिक प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण थी उन्हें भी ग्रन्थ सूची में दे दिया गया है। इस प्रकार सूची में १०६ ग्रन्थ प्रशास्तियां एवं ५५ लेखक प्रशस्तियां दी गयी हैं जो स्वयं एक पुस्तक के रूप मे हैं।

प्रस्तुत सूची में एक और नवीन ढग अपनाया गया है वह यह है कि अधिकांश ग्रन्थों की एक प्रति का ही सूची में परिचय दिया गया है। यदि उस ग्रन्थ की एक से अधिक प्रतियॉ हैं तो विशेष में उनकी संख्या को ही लिख दिया गया है लेकिन यदि दूसरी प्रति भी महत्वपूर्ण अथवा विशेष प्राचीन है तो उस प्रति का भी परिचय सूची मे दे दिया गया है। इस प्रकार करीब ५०० प्रतियों का परिचय ग्रन्थ-सूची मे नहीं दिया गया जो विशेष महत्त्वपूर्ण प्रतिया नहीं थी।

कुछ विद्वानों का यह मत है कि प्रत्येक भण्डार की ग्रन्थ सूची न होकर एक सूची में १०-१५ भण्डारों की सूची हो तथा एक ग्रन्थ किस किस भण्डार मे मिलता है इतना मात्र उसमे दे दिया जावे जिससे प्रकाशन का कार्य भी जल्दी हो सके तथा भण्डारों की सूचियां भी आजावें। हमने इस शैली को अभी इसीलिये नहीं अपनाया कि इससे भण्डारों का जो भिन्न भिन्न महत्त्व है तथा उनमें जो महत्त्वपूर्ण प्रतियां हैं उनका परिचय ऐसी ग्रन्थ सूची में नहीं आसकेगा। यह तो अवश्य है कि बहुत से ग्रन्थ तो प्रत्येक भण्डार मे समान रूप से मिलते हैं तथा ग्रन्थ सूचियो में बार बार मे आते हैं जिससे कोई विशेष अर्थ प्राप्त नहीं होता। आशा है भविष्य मे सूची प्रकाशन का यह कार्य किस दिशा में चलना चाहिये इस पर इस सम्बन्ध के विशेषज्ञ विद्वान् अपनी अमूल्य परामर्श से हमें सूचित करेंगे जिससे यदि अधिक लाभ हो सके तो उसी के अनुसार कार्य किया जा सके।

ग्रन्थ सूची बनाने का कार्य कितना जटिल है यह तो वे ही जान सकते हैं जिन्होंने इस दिशा में कार्य किया हो। इसलिये कमियां रहना आवश्यक हो जाता है। कौनसा ग्रन्थ पहिले प्रकाश मे आ चुका है तथा कौनसा नवीन है इसका भी निर्णय इस सम्बन्ध की प्रकाशित पुस्तकें न मिलने के कारण जल्दी से नहीं किया जा सकता इससे यह होता है कि कभी कभी प्रकाश में आये हुये ग्रन्थ नवीन समझने की गल्ती हो जाया करती है। प्रस्तुत ग्रंथ सूची मे यदि ऐसी कोई अशुद्धि हो गयी हो तो विद्वान् पाठक हमे सूचित करने का कष्ट करेंगे।

दोनों भण्डारों में जो महत्त्वपूर्ण कृतियां प्राप्त हुई है उनके निर्माण करने वाले विद्वानों का परिचय भी यहां दिया जा रहा है। यद्यपि इनमे से बहुत से विद्वानों के सम्बन्ध में तो हम पहिले से ही जानते है किन्तु उनकी जो अभी नवीन रचनायें मिली हैं उन्हीं रचनाओं के आधार पर उनका संक्षिप्त परिचय दिया गया है। आशा है इस परिचय से हिन्दी साहित्य के इतिहास निर्माण में कुछ सहायता मिल सकेगी।

१. अचलकीर्त्ति

अचलकीर्त्ति १८ वीं शताब्दी के हिन्दी कवि थे। विषापहार स्तोत्र भाषा इनकी प्रसिद्ध रचना है जिसका समाज मे अच्छा प्रचार है। अभी जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में कर्म-बत्तीसी नाम की एक और रचना प्राप्त हुई है जो संवत् १७७७ में पूर्ण हुई थी। इन्होंने कर्मबत्तीसी में पावा नगरी एवं वीर संघ का उल्लेख किया है। इनकी एक रचना रविव्रतकथा देहली के भण्डार में संग्रहीत है।

२. अजयराज

१८ वीं शताब्दी के जैन साहित्य सेवियों मे अजयराज पाटणी का नाम उल्लेखनीय है। ये खण्डेलवाल जाति मे उत्पन्न हुये थे तथा पाटणी इनका गोत्र था। पाटणीजी आमेर के रहने वाले तथा धार्मिक प्रकृति के प्राणी थे। ये हिन्दी एवं संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे। इन्होंने हिन्दी में कितनी ही रचनायें लिखी थी। अब तक छोटी और वडी २० रचनाओं का तो पता लग चुका है इनमें से आदि पुराण भाषा, नेमिनाथचरित्र, यशोधरचरित्र, चरखा चउपई, शिव रमणी का विवाह, कक्काबत्तीसी आदि प्रमुख हैं। इन्होंने कितनी ही पूजायें भी लिखी हैं। इनके द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद भी पर्याप्त सख्या में मिलते हैं। कवि ने हिन्दी में एक जिनजी की रसोई लिखी है जिसमें षट् रस व्यंजन का अच्छा वर्णन किया गया है।

अजयराज हिन्दी साहित्य के अच्छे विद्वान् थे। इनकी रचनाओं में काव्यत्व के दर्शन होते हैं। इन्होंने आदिपुराण को संवत् १७६७, में यशोधरचौपई को १७९२ मे तथा नेमिनाथचरित्र को संवत् १७९३ में समाप्त किया था।

३. ब्रह्म अजित

ब्रह्म अजित संस्कृत भाषा के अच्छे विद्वान् थे। हनुमच्चरित में इनकी साहित्य निर्माण की कला स्पष्ट रुप से देखी जा सकती है। ये गोलशृंगार वश में उत्पन्न हुये थे। माता का नाम पीथा तथा पिता का नाम वीरसिंह था। भृगुकच्छपुर में नेमिनाथ के जिन मन्दिर में इनका मुख्य रूप से निवास था। ये भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एवं विद्यानन्दि के शिष्य थे।

हिन्दी में इन्होंने हंसा भावना नामक एक छोटी सी आध्यात्मिक रचना लिखी थी। रचना में ३७ पद्य हैं जिनमें संसार का स्वरूप तथा मानव का वास्तविक कर्त्तव्य क्या है, उसे क्या करना चाहिये तथा किसे छोडना चाहिये आदि पर प्रकाश डाला है। हंसा भावना अच्छी रचना है, तथा भाषा एव शैली दोनों ही दृष्टियों से पढने योग्य है। कवि ने इसे अपने गुरु विद्यानन्दि के उपदेश से बनायी थी।

४. अमरपाल

इन्होंने 'आदिनाथ के पच मंगल' नामक रचना को सवत १७७२ में समाप्त की थी। रचना में दिये हुये समय के आधार पर ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान् ठहरते हैं। ये खण्डेलवाल जाति मे उत्पन्न हुये थे तथा गंगवाल इनका गोत्र था। देहली के समीप स्थित जयसिंहपुरा इनका निवास स्थान था। आदिनाथ के पचमगल के अतिरिक्त इनकी अन्य रचना अभी तक उपलब्ध नहीं हुई है।

५. आज्ञासुन्दर

ये खरतरगच्छ के प्रधान जिनवर्द्धनसूरि के प्रशिष्य एवं आनन्दसूरि के शिष्य थे। इन्होंने संवत् १५१६ मे विद्याविलास चौपई की रचना समाप्त की थी। इसमे २६४ पद्य हैं। रचना अच्छी है।

६. उदैराम

उदैराम द्वारा लिखित हिन्दी की २ जखडी अभी उपलब्ध हुई हैं। दोनों ही जखडी ऐतिहासिक हैं तथा भट्टारक अनन्तकीर्ति ने सवत् १७८५ मे सांभर (राजस्थान) में जो चातुर्मास किया था उसका उन दोनों मे वर्णन किया गया है। दिगम्बर साहित्य में इस प्रकार की रचनायें बहुत कम मिलती हैं इस दृष्टि से इनका अधिक महत्व है। वैसे भाषा की दृष्टि से रचनायें साधारण हैं।

७. ऋषभदास निगोत्या

ऋषभदास निगोत्या का जन्म सवत १८४० के लगभग जयपुर में हुआ था। इनके पिता का नाम शोभाचन्द था। इन्होंने सवत् १८८८ मे मूलाचार की हिन्दी भाषा टीका सम्पूर्ण की थी। ग्रन्थ की भाषा ढूंढारी है तथा जिस पर पं० टोडरमलजी की भाषा का प्रभाव है।

८. कनककीर्त्ति

कनककीर्ति १७ वीं शताब्दी के हिन्दी के विद्वान थे। इन्होंने तत्वार्थसूत्र श्रुतसागरी टीका पर एक विस्तृत हिन्दी गद्य टीका लिखी थी। इसके अतिरिक्त कर्मघटावलि, जिनराजस्तुति, मेघकुमारगीत, श्रीपालस्तुति आदि रचनायें भी आपकी मिल चुकी है। कनककीर्ति हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। इनकी भाषा ढूंढारी है जिसमें 'है' के स्थान पर "छै" का अधिक प्रयोग हुआ है। गुटकों मे इनके कितने ही पद भी मिले हैं।

९. कनकसोम

कनकसोम १६ वीं शताब्दी के कवि थे। 'जइतपदवेलि' इनकी इतिहास से सम्बन्धित कृति है जो संवत १६२५ मे रची गयी थी। वेलि मे उसी संवत् मे मुनि वाचकदया ने आगरे में जो चातुर्मास किया था उसका वर्णन दिया हुआ है। यह खरतरगच्छ की एक अच्छी पट्टावलि है कवि ने इसमे साधुकीर्त्ति आदि कितने ही विद्वानों के नामों का उल्लेख किया है। रचना मे ४६ पद्य है। भाषा हिन्दी है लेकिन

गुजराती का प्रभाव है। कवि की एक और रचना आषाढाभूतिस्वाध्याय पहिले ही मिल चुकी है। जो गुजराती में है।

११. मुनि कनकामर

मुनिकनकामर द्वारा लिखित 'ग्यारह प्रतिमा वर्णन' अपभ्रंश भाषा का एक गीत है। कनकामर कौनसे शताब्दी के कवि थे यह तो इस रचना के आधार से निश्चित नहीं होता है। किन्तु इतना अवश्य है कि वे १६ वीं या इससे भी पूर्व की शताब्दी के थे। गीत मे १२ प्रतिमाओं का वर्णन है जिसका प्रथम पद्य निम्न प्रकार है।

मुनिवर जंपइ मृगनयणी, अंसु जल्लोलीइय गिरवयणी।
नवनीलोपलकोमलनयणी, पहु कणयंवर भणमि पई।
किम्म इह लब्भइ सिवपुर रम्मणी, मुनिवर जंपइ मृगनयणी॥ १॥

१२. कुलभद्र

सारसमुच्चय ग्रन्थ के रचयिता श्री कुलभद्र किस शताब्दी तथा किस प्रान्त के थे इसके विषय मे कोई उल्लेख नहीं मिलता। किन्तु इतना अवश्य है कि वे १६ वीं शताब्दी के पूर्व के विद्वान् थे। क्योंकि सारसमुच्चय की एक प्रति संवत् १५४५ में लिखी हुई वधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के संग्रह मे है। रचना छोटी ही है जिसमे ३३० श्लोक हैं। ग्रन्थ का दूसरा नाम ग्रन्थसारसमुच्चय भी है। ग्रन्थ की भाषा सरल एवं ललित है।

१३. किशनसिंह

ये सवाईमाधोपुर प्रान्त के रामपुरा गांव के रहने वाले थे। खण्डेलजाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटणी इनका गोत्र था। इनके पिता का नाम 'काना' था। ये दो भाई थे। इनसे वडे भाई का नाम सुखदेव था। अपने गांव को छोडकर ये सांगानेर आकर रहने लगे थे, जो वहुत समय तक जैन साहित्यिकों का केन्द्र रहा है। इन्होंने अपनी सभी रचनायें हिन्दी भाषा मे लिखी हैं। जिनकी सख्या १५ से भी अधिक है। मुख्य रचनाओं मे क्रियाकोशभाषा, (१७८४) पुण्याश्रवकथाकोश, (१७७२) भद्रवाहुचरित भाषा (१७८०) एवं वावनी आदि हैं।

१४. केशरीसिंह

पं० केशरीसिंह भट्टारकों के पंडित थे। इनका मुख्य स्थान जयपुर नगर के लश्कर के जैन मन्दिर मे था। ये वहीं रहा करते थे तथा श्रद्धालु श्रावकों को धर्मोपदेश दिया करते थे। दीवान वालचन्द के सुपुत्र दीवान जयचन्द छावडा की इन पर विशेष भक्ति थी और उन्हीं के अनुरोध से इन्होंने सस्कृत भाषा में भट्टारक सकलकीर्त्ति द्वारा विरचित वर्द्धमानपुराण की हिन्दी गद्य मे भाषा टीका लिखी थी। पडित जी ने इसे सवत १८७३ में समाप्त की थी। पुराण की भाषा पर ढूढारी (जयपुरी) भाषा का प्रभाव है। ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार पुराण की भाषा का सशोधन वस्तुपाल छावडा ने किया था।

१४. ब्रह्मगुलाल

ब्रह्मगुलाल हिन्दी भाषा के कवि थे यद्यपि कवि की अब तक छोटी २ रचनायें ही उपलब्ध हुई हैं किन्तु भाव एवं भाषा की दृष्टि से ये साधारणतः अच्छी हैं। इनकी रचनाओं में त्रेपनक्रिया, समवसरणस्तोत्र, जलगालनक्रिया, विवेकचौपई आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। विवेकचौपई अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में प्राप्त हुई है। कवि १७ वीं शताब्दी के थे।

१५. गोपालदास

गोपालदास की दो छोटी रचनायें यादुरासो तथा प्रमादीगीत जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के ६७ वे गुटके मे संग्रहीत हैं। गुटके के लेखनकाल के आधार पर कवि १७ वीं शताब्दीया इससे भी पूर्व के विद्वान् थे। यादुरासों मे भगवान नेमिनाथ के वन चले जाने के पश्चात् राजुल की विरहावस्था का वर्णन है जो उन्हे वापिस लाने के रूप मे है। इसमे २४ पद्य हैं। प्रमादीगीत एक उपदेशात्मकगीत है जिसमें आलस्य त्याग कर आत्महित करने के लिये कहा गया है। इनके अतिरिक्त इनके कुछ गीत भी मिलते हैं।

१६. चपाराम भांवसा

ये खण्डेलवाल जैन जाति मे उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम हीरालाल था जो माधोपुर (जयपुर) के रहने वाले थे। चपाराम हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। शास्त्रों की स्वाध्याय करना ही इनका प्रमुख कार्य था इसी ज्ञान वृद्धि के कारण इन्होंने भद्रबाहुचरित्र एवं धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार की हिन्दी भाषा टीका क्रमश संवत् १८४४ तथा १८६८ में समाप्त की थी। भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचनाएं साधारण हैं।

१७. छीहल

१६ वीं शताब्दी मे होनेवाले जैन कवियों मे छीहल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये राजस्थानी कवि थे किन्तु राजस्थान के किस प्रदेश को सुशोभित करते थे इसका अभी तक कोई उल्लेख नही मिला। हिन्दी भाषा के आप अच्छे विद्वान् थे। इनकी अभी तक ३ रचनायें तथा ३ पद उपलब्ध हुये हैं। रचनाओं के नाम बावनी, पचसहेली गीत, पंथीगीत हैं। सभी रचनायें हिन्दी की उत्तम रचनाओं मे से है जो काव्यत्व से भरपूर हैं। कवि की वर्णन करने की शैली उत्तम है। बावनी मे आपने कितने ही विषयों का अच्छा वर्णन किया है। पंचसहेली को इन्होंने संवत् १५७५ मे समाप्त किया था।

१८. पं जगन्नाथ

पं० जगन्नाथ १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। ये भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे तथा सस्कृत भाषा के पहुंचे हुए विद्वान् थे। ये खन्डेलवाल जाति मे उत्पन्न हुये थे तथा इनके पिता का नाम पोमराज था। इनकी ६ रचनायें श्वेताम्बरपराजय, चतुर्विंशतिसंधानस्वोपज्ञटीका, सुखनिधान, नेमिनरेन्द्रस्तोत्र,

तथा सुखेणचरित्र तो पहिले ही प्रकाश में आ चुकी है। इनके अतिरिक्त इनकी एक और कृति "कर्मस्वरूप-वर्णन" अभी बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भडार मे मिली है। इस रचना में कर्मों के स्वरूप की विवेचना की गयी है। कवि ने इसे संवत् १७०७ (सन् १६५०) में समाप्त किया था। 'कर्मस्वरूप' के उल्लासों के अन्त मे जो विशेषण लगाये गये हैं उनसे पता चलता है कि पंडित जी न्यायशास्त्र के पारंगत विद्वान् थे तथा उन्होंने कितने ही शास्त्रार्थों मे अपने विरोधियों को हराया था। कवि का दूसरा नाम वादिराज भी था।

१६. जिनदत्त

प० जिनदत्त भट्टारक शुभचन्द्र के समकालीन विद्वान् थे तथा उनके धनिष्ट शिष्यों में से थे। भट्टारक शुभचन्द्र ने अम्बिकाकल्प की जो रचना की थी उसमें मुख्य रूप से जिनदत्त का ही आग्रह था। ये स्वयं भी हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा संस्कृत भाषा में भी अपना प्रवेश रखते थे। अभी हिन्दी में इनकी २ रचनायें उपलब्ध हुई है जिनके नाम धर्मतरुगीत तथा जिनदत्तविलास है। जिनदत्तविलास मे मे कवि द्वारा बनाये हुये पदों एवं स्फुट रचनाओं का सग्रह है तथा धर्मतरुगीत एक छोटा सा गीत है।

२०. ब्रह्म जिनदास

ये भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे। सस्कृत, प्राकृत, एव गुजराती भाषाओं पर इनका पूरा अधिकार था। इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा मे भी इनकी तीव्र गति थी। कवि की अब तक संस्कृत एवं गुजराती का कितनी ही रचनाये उपलब्ध हो चुकी हैं इनमे आदिनाथ पुराण, धनपालरास, यशोधररास, आदि प्रमुख हैं। इनकी सभी रचनाओं की सख्या २० से भी अधिक है। अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में इनका एक छोटा सा आदिनाथ स्तवन हिन्दी मे लिखा हुआ मिला है जो बहुत ही सुन्दर एवं भाव पूर्ण है तथा ग्रंथ सूची मे पूरा दिया हुआ है।

२१. ब्रह्म ज्ञानसागर

ये भट्टारक श्रीभूषण के शिष्य थे। संस्कृत के साथ साथ ये हिन्दी के भी अच्छे विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी मे २६ से भी अधिक कथायें लिखी है जो पद्यात्मक हैं। भाषा की दृष्टि से ये सभी अच्छी हैं। भट्टारक श्रीभूषण ने पाण्डवपुराण (सस्कृत) को संवत् १६५७ में समाप्त किया था। क्योंकि ब्रह्म ज्ञानसागर भी इन्हीं भट्टारक जी के शिष्य थे अतः कवि के १८ वीं शताब्दी के होने में कोई सन्देह नहीं रह जाता है। इन्होंने कथाओं के अतिरिक्त और भी रचनायें लिखी होंगी लेकिन अभी तक वे उपलब्ध नही हुई है।

२२. ठक्कुरसी

१६ वीं शताब्दी मे होने वाले कवियों में ठक्कुरसी का नाम उल्लेखनीय है। ये हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा हिन्दी में छोटी छोटी रचनाये लिखकर स्वाध्याय प्रेमियों का दिल बहलाया करते

थे। इनके पिता का नाम वेल्ह था जो स्वय भी कवि थे। कवि द्वारा रचित कृपणचरित्र तथा पंचेन्द्रिय बेलि तो पहिले ही प्रकाश में आ चुकी हैं लेकिन नेमिराजमतिबेलि पार्श्वशकुनसत्तावीसी और चिन्तामणि-जयमाल तथा सीमधरस्तवन और उपलब्ध हुए है जो हिन्दी की अच्छी रचनायें हैं।

२३. थानसिंह

थानसिंह सागानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये खण्डेलवाल जैन थे तथा ठोलिया इनका गोत्र था। सुबुद्धि प्रकाश की ग्रन्थ प्रशस्ति मे इन्होंने आमेर, सागानेर तथा जयपुर नगर का वर्णन लिखा है। जब इनके माता पिता नगर मे अशान्ति के कारण करौली चले गये थे तब भी ये सागानेर छोडकर नहीं जा सके और इन्होंने वहीं रहते हुये रचनाये लिखी थी। कवि की २ रचनायें प्राप्त होती है—रत्नकरडश्रावकाचार भाषा तथा सुबुद्धि प्रकाश। प्रथम रचना को इन्होंने स १८२१ मे तथा दूसरी को सं. १८४७ मे समाप्त किया था। सुबुद्धि प्रकाश का दूसरा नाम थानविलास भी है इसमे कवि की छोटी २ रचनाओं का सग्रह है। दोनों ही रचनाओ की भाषा एव वर्णन शैली साधारणत. अच्छी है। इनकी भाषा पर राजस्थानी का प्रभाव है।

२४. मुनि देवचन्द्र

मुनि देवचन्द्र युगप्रधान जिनचन्द्र के शिष्य थे। इन्होंने आगमसार की हिन्दी गद्य टीका सवत् १७७६ में मारोठ गाव में समाप्त की थी। आगमसार ज्ञानामृत एवं धर्मामृत का सागर है तथा तात्त्विक चर्चाओं से भरपूर है। रचना हिन्दी गद्य मे है जिस पर मारवाडी मिश्रित जयपुरी भाषा का प्रभाव है।

२५. देवाब्रह्म

देवाब्रह्म हिन्दी के अच्छे कवि थे। इनके सैकडों पद मिलते हैं जो विभिन्न राग रागनियो मे लिखे हुये हैं। सासबहू का झगडा आदि जो अन्य रचनाये है वे भी अधिकाशत पद रुप मे ही लिखी हुई है। इन्होंने हिन्दी साहित्य की ठोस सेवा की थी। कवि सभवत' जयपुर के ही थे तथा अनुमानत १८ वीं शताब्दी के थे।

२६. बाबा दुलीचन्द

जयपुर के २० वीं शताब्दी के साहित्य सेवियो मे बाबा दुलीचन्द का नाम विशेषत' उल्लेखनीय है। ये मूलत जयपुर निवासी नही थे किन्तु पूना (सितारा) से आकर यहा रहने लगे थे। इनके पिता का नाम मानकचन्दजी था। आते समय अपने साथ सैकडों हस्तलिखित ग्रन्थ भी साथ लाये थे, जो आजकल जयपुर के बडे मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे संग्रहीत है तथा वह सग्रहालय भी बाबा दुलीचन्द भण्डार के नाम से प्रसिद्ध है। इस भण्डार मे ८०६-६०० हस्तलिखित ग्रन्थ है। जो सभी बाबाजी द्वारा संग्रहीत है।

बाबाजी बडे साहित्यिक थे। दिन-रात साहित्य-सेवा में व्यतीत करते थे। ग्रन्थों की प्रतिलिपियां करना, नवीन ग्रन्थों का निर्माण तथा पुराने ग्रन्थों को व्यवस्थित रुप से रखना ही आपके प्रतिदिन के कार्य थे। बडे मन्दिर के भण्डार में तथा स्वयं बाबाजी के भण्डार में इनके हाथ से लिखी हुई कितनी ही प्रतियां मिलती है। इन्होंने १५ से अधिक ग्रन्थों की रचना की थी। जिनमे उपदेशरत्नमाला भाषा, जैनागारप्रक्रिया, ज्ञानप्रकाशविलास, जैनयात्रादर्पण, धर्मपरीक्षा भाषा आदि उल्लेखनीय हैं। इन्होंने भारत के सभी तर्थो की यात्रा की थी और उसीके अनुभव के आधार पर इन्होंने जैनयात्रादर्पण लिखा था। मन्दिरनिर्माण विधि नामक रचना से पता चलता है कि ये शिल्पशास्त्र के भी ज्ञाता थे। इन सबके अतिरिक्त इन्होंने भारत के कितने ही स्थानों के शास्त्र भण्डारों को भी देखा था और उसीके आधार पर संस्कृत और हिन्दी भाषा के ग्रन्थों के ग्रन्थकार विवरण लिखा था जिसमे किस विद्वान् ने कितने ग्रन्थ लिखे थे तथा वे किस किस भण्डार मे मिलते हैं दिया हुआ है। अपने ढंग की यह अनूठी पुस्तक है। इनकी मृत्यु ता० ४ अगस्त सन् १९२८ में आगरे में हुई थी।

२६. नन्द

ये अग्रवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। गोयल इनका गोत्र था। पिता का नाम भैरू तथा माता का नाम चंदा था। ये गोसना गाव के निवासी थे जो संभवत आगरा के समीप ही था। कवि की अभी तक एक रचना यशोधर चरित्र चौपई ही उपलब्ध हुई है जो संवत् १६७० मे समाप्त हुई थी। इसमे ५९८ पद्य हैं। रचना साधरणत' अच्छी है। तथा अभी तक अप्रकाशित है।

२७. नागरीदास

सभवतः ये नागरीदास वे ही हैं जो कृष्णगढ नरेश महाराज सांवतसिंह जी के पुत्र थे। इनका जन्म सवत् १७५६ मे हुआ था। इनका कविता काल स० १७८० से १८१९ तक माना जाता है। इनकी छोटी वडी सब रचना मिलाकर ७३ रचनाये प्रकाश मे आ चुकी हैं। वैनविलास एवं गुप्तरसप्रकाश नामक अप्राप्य रचनाओं मे से वैनविलास जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध हुई हैं। इसमे ३० पद्य है जिनमें कुडलिया दोहे आदि हैं।

२८. नाथूलाल दोशी

नाथूलाल दोशी दुलीचन्द दोशी के पौत्र एवं शिवचन्द के पुत्र थे। इनके पं० सदासुखजी काशलीवाल धर्म गुरू थे तथा दीवान अमरचन्द परम सहायक एव कृपावान थे। दोशी जी विद्वान् थे तथा ग्रंथ चर्चा मे अधिक रस लिया करते थे। इन्होंने हरचन्द गगवाल की प्रेरणा से संवत् १९१८ मे सुकुमालचरित्र की भापा समाप्त की थी। रचना हिन्दी गद्य में में है जिस पर ढूंढारी भाषा का प्रभाव है।

२९. नाथूराम

लमेचू जाति में उत्पन्न होने वाले नाथूराम हिन्दी भाषा के अच्छे विद्वान् थे। ये संभवत १९ वीं शताब्दी के थे। इनके पिता का नाम दीपचद था। इन्होंने जम्बूस्वामीचरित का हिन्दी गद्यानुवाद लिखा है। रचना साधारणत अच्छी है।

३०. निरमलदास

श्रावक निरमलदास ने पंचाख्यान नामक ग्रन्थ की रचना की थी। यह पंचतन्त्र का हिन्दी पद्यानुवाद है। संभवत यह रचना १७ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में लिखी गयी थी क्योंकि इसकी एक प्रति संवत् १७५४ मे लिखी हुई जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे संग्रहीत है। रचना सरल हिन्दी मे है तथा साधारण पाठकों के लिये अच्छी है।

३१. पद्मनाभ

पद्मनाभ १५-१६ वीं शताब्दी के कवि थे। ये हिन्दी एव संस्कृत के प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् थे इसीलिये संघपति डूंगर ने इनसे बावनी लिखने का अनुरोध किया था और उसी अनुरोध से इन्होंने संवत् १५४३ मे बावनी की रचना की थी। इसका दूसरा नाम डूंगर की बावनी भी है। बावनी मे ५४ सवैय्या हैं। भाषा राजस्थानी है। इसकी एक प्रति अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध हुई है लेकिन लिखावट विकृत होने से सुपाठ्य नहीं है। बावनी अभी तक अप्रकाशित है।

३२. पन्नालाल चौधरी

जयपुर मे होने वाले १९-२० वीं शताब्दी के साहित्यकारों मे पन्नालाल चौधरी का नाम उल्लेखनीय है। ये संस्कृत, प्राकृत एव हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। महाराजा रामसिंह के मन्त्री जीवनसिंह के ये गृह मन्त्री थे। इनके गुरु सदासुखजी काशलीवाल थे जो अपने समय के बहुत बड़े विद्वान थे। यही कारण है कि साहित्य सेवा इनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य हो गया था। इन्होंने अपने जीवन में ३० से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की थी। इनमें से योगसार भाषा, सद्भाषितावली भाषा, पाण्डवपुराण भाषा, जम्बूस्वामी चरित्र भाषा, उत्तरपुराण भाषा, भविष्यदत्तचरित्र भाषा उल्लेखनीय हैं। सद्भाषितावलि भाषा आपका सर्व प्रथम ग्रन्थ है जिसे चौधरीजी ने संवत् १९१० मे समाप्त किया था। ग्रथ निर्माण के अतिरिक्त इन्होंने बहुत से ग्रथों की प्रतिलिपियां भी की थी जो आज भी जयपुर के बहुत से भण्डारों मे उपलब्ध होती है।

३३. पुण्यकीर्त्ति

ये खरतरगच्छ के आचार्य एवं युगप्रधान जिनचद्रसूरि के शिष्य थे। तथा ये सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। इन्होंने पुण्यसार कथा को संवत् १७६६ मे समाप्त किया था। रचना साधारणत अच्छी है।

३४. बनारसीदास

कविवर बनारसीदास का स्थान जैन हिन्दी साहित्य में सर्वोपरि है। इनके द्वारा रचे हुये समयसार नाटक, बनारसीविलास, अर्द्ध कथानक एवं नाममाला तो पहिले ही प्रसिद्ध हैं। अभी इनकी एक और रचना 'मांझा' जयपुर के वधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में मिली है। रचना आध्यात्मिक रस से ओत प्रोत है। इसमें १३ पद्य है।

३५. वंशीधर

इन्होंने संवत् १७६५ मे 'दस्तूरमालिका' नामक हिन्दी ग्रंथ रचना लिखी थी। दस्तूरमालिका गणित शास्त्र से सम्बन्धित रचना है जिसमें वस्तुओं के खरीदने की रस्म रिवाज एवं उनके गुरू दिये हुये हैं। रचना खडी बोली में है तथा अपने ढग की अकेली ही रचना है। इसमें १४३ पद्य है। कवि सभवत वे ही वशीधर है जो अहमदाबाद के रहने वाले थे तथा जिन्होंने संवत १७८२ में उदयपुर के महाराणा जगतसिंह के नाम पर अलंकार रत्नाकर ग्रंथ बनाया था[१]।

३६ मनराम

१८ वीं शताब्दी के जैन हिन्दी विद्वानों मे मनराम एक अच्छे विद्वान् हो गये हैं। यद्यपि रचनाओं के आधार पर इनके सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है फिर भी इनकी वर्णन शैली से ज्ञात होता है कि मनराम का हिन्दी भाषा पर अच्छा अधिकार था। अब तक अक्षरमाला, धर्मसहेली, मनरामविलास, वत्तीसी, गुणाक्षरमाला आदि इनकी मुख्य रचनायें हैं। साहित्यिक दृष्टि से ये सभी रचनायें उत्तम हैं।

३७. मन्नासाह

मन्नासाह हिन्दी के अच्छी कवि थे। इनकी लिखी हुई मान वावनी एवं लघु वावनी ये दो रचनाये अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे मिली हैं। रचना के आधार पर यह सरलता से कहा जा सकता है कि मन्नासाह हिन्दी के अच्छे कवि थे। मान वावनी हिन्दी की उच्च रचना है जिसमें सुभाषित रचना की तरह कितने ही विषयों पर थोडे थोड़े पद्य लिखे हैं। मन्ना साह सभवत १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे।

३८. मल्ल कवि

प्रबोधचन्द्रोदय नाटक के रचयिता मल्लकवि १६ वीं शताब्दी के विद्वान थे। इन्होंने कृष्णमिश्र द्वारा रचित सस्कृत के प्रबोधचन्द्रोदय का हिन्दी भाषा में पद्यानुवाद संवत् १६०१ में किया था। रचना

---

१. हिंदी साहित्य का इतिहास—पृष्ठ २८)

सुललित भाषा मे लिखी हुई है। तथा उत्तम संवादों से भरपूर है। नाटक में काम, क्रोध मोह आदि की पराजय करवा कर विवेक आदि गुणों की विजय करवायी गयी है।

३९. मेघराज

मुनि मेघराज द्वारा लिखित 'संयमप्रवहण गीत' एक सुन्दर रचना है। मुनिजी ने इसे संवत् १६६१ मे समाप्त की थी। इसमें मुख्यत 'राजचंदसूरि' के साधु जीवन पर प्रकाश डाला गाया है किन्तु राजचन्दसूरि के पूर्व आचार्यों—सोमरत्नसूरि, पासँचन्दसूरि, तथा समरचन्दसूरि के भी माता पिता का नामोल्लेख, आचार्य बनने का समय एवं अन्य प्रकार से उनका वर्णन किया गया है। रचना वास्तव मे ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर लिखी गयी है। वर्णन शैली काफी अच्छी है तथा कहीं कहीं अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

४०. रघुनाथ

इनकी अब तक ५ रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं। रघुनाथ हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा जिनकी छन्द शास्त्र, रस एव अलकार प्रयोग मे अच्छी गति थी। इनका गणभेद छन्द शास्त्र की रचना है। नित्यविहार शृंगार रस पर आश्रित है जिसमे राधा कृष्ण का वर्णन है। प्रसंगसार एवं ज्ञानसार सुभाषित, उपदेशात्मक एव भक्तिरसात्मक हैं। ज्ञानसार को इन्होंने संवत् १७४२ मे समाप्त किया था इससे पता चलता है कि कवि १७ वीं शताब्दी मे पैदा हुये थे। कवि राजस्थानी विद्वान् थे लेकिन राजस्थान के किस प्रदेश को सुशोभित करते थे इसके सम्बन्ध मे परिचय देने मे इनकी रचनायें मौन है। इनकी सभी रचनायें शुद्ध हिन्दी मे लिखी हुई हैं। ये जैनेतर विद्वान् थे।

४१. रूपचन्द

कविवर रूपचन्द १७ वीं शताब्दी के साहित्यिको मे उल्लेखनीय कवि हैं। ये आध्यात्मिक रस के कवि थे इसीलिये इनकी अधिकांश रचनायें आध्यात्मिक रस पर ही आधारित हैं। इनकी वर्णन शैली सजीव एवं आकर्षक है। पंच मंगल, परमार्थदोहाशतक, परमार्थगीत, गीतपरमार्थी, नेमिनाथरासो आदि कितनी ही रचनायें तो इनकी पहिले ही उपलब्ध हो चुकी हैं तथा प्रकाश मे आ चुकी हैं किन्तु अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर मे अध्यात्म सवैय्या नामक एक रचना और प्राप्त हुई है। रचना आध्यात्मिक रस से ओतप्रोत है तथा बहुत ही सुन्दर रीति से लिखी हुई है। भाषा की दृष्टि से भी रचना उत्तम है। इन रचनाओं के अतिरिक्त कवि के कितने पद भी मिलते हैं वे भी सभी अच्छे हैं।

४२. लच्छीराम

लच्छीराम संवत् १८ वीं शताब्दी के हिन्दी कवि थे। इनका एक "करुणाभरणनाटक" अभी उलब्ध हुआ है। नाटक में ६ अक है जिनमे राधा अवस्था वर्णन, व्रजवासी अवस्था वर्णन सत्यभामा

ईर्षा वर्णन, बलदाऊ मिलाप वर्णन-आदि दिये हुये हैं। नाटक की भाषा साधारणत अच्छी है। नाटककार जैनेतर विद्वान थे।

४३. भट्टारक शुभचन्द्र

भट्टारक शुभचन्द्र १६-१७ वीं शताब्दी के महान् साहित्य सेवी थे। भट्टारक सकलकीर्त्ति की परम्परा में गुरु सकलकीर्त्ति के समान इन्होंने भी संस्कृत भाषा में कितने ही ग्रन्थों की रचना की थी जिनकी सख्या ४० से भी अधिक है। षट्भाषाचक्रवर्त्ति, त्रिविधविद्याधर-आदि उपाधियों से भी आप विभूषित थे।

संस्कृत भाषा के ग्रन्थों के अतिरिक्त आपने हिन्दी में भी कुछ रचनाये लिखी थीं उनमें से २ रचनायें तो अभी प्रकाश मे आयी हैं। इनमें से एक चतुर्विंशतिस्तुति तथा दूसरा तत्त्वसारदोहा है। तत्त्वसार दोहा में तत्त्ववर्णन है। इसकी भाषा गुजराती मिश्रित राजस्थानी है। इसमें ९१ पद्य हैं।

४४. सहजकीर्त्ति

सहजकीर्ति सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये १७ वीं शताब्दी के कवि थे। इनकी एक रचना प्रीति छत्तीसी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे ९७ वें गुटके मे सग्रहीत है। यह सवत् १६८८ मे समाप्त हुई थी। रचना में ३६ पद्य हैं जिसमें प्रातःकाल सबसे पहले भगवान का स्मरण करने के लिये कहा-गया है। रचना साधारण है।

४५. सुखदेव

हिन्दी भाषा में अर्थशास्त्र से सम्बन्धित रचनायें बहुत कम हैं। अभी कुछ समय पूर्व जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर मे सुखदेव द्वारा निर्मित वणिकप्रिया की एक हस्तलिखित प्रति उपलब्ध हुई है। वणिकप्रिया का मुख्य विषय व्यापार से सम्बन्धित है।

सुखदेव गोलापूरब जाति के थे। उनके पिता का नाम बिहारीदास था। रचना मे ३२१ पद्य हैं जिनमें दोहा और चौपई प्रमुख हैं। कवि ने इसे सवत् १७१७ में लिखी थी। रचना की भाषा साधारणत अच्छी है।

४६. सधारु कवि

अब तक उपलब्ध जैन हिन्दी साहित्य में १४ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में कवि सधारु का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनकी-यद्यपि एक ही रचना उपलब्ध हुई है लेकिन वही इनकी काव्य शक्ति को प्रकट करने मे पर्याप्त है। ये अग्रवाल जाति में उत्पन्न हुये थे जो अग्रोह-नगर के नाम से प्रसिद्ध हुई थी। इनके पिता का नाम शाह महाराज एवं माता का नाम गुणवती-था। कवि ने इस रचना को एरछ नगर में समाप्त की थी जो कानपुर[1] झांसी रेल्वे लाइन पर है।

१ जैन सन्देश भाग २१ सख्या १२

कवि की रचना का नाम प्रद्युम्न चरित है जो संवत् १४११ मे समाप्त हुई थी। इसमे ६८२ पद्य हैं किन्तु कामा उज्जैन आदि स्थानों में प्राप्त प्रति में ६८२ से अधिक पद्य हैं तथा जो भाव भाषा, अलकार आदि सभी दृष्टियों से उत्तम है। कविने प्रद्युम्न का चरित्र वडे ही सुन्दर ढंग से अकिन किया है। रचना अभी तक अप्रकाशित है तथा शीघ्र ही प्रकाश मे आने वालीहै।

४७. सुमतिकीर्त्ति

सुमतिकीर्ति भट्टारक सकलकीर्त्ति की परम्परा मे होने वाले भट्टारक ज्ञानभूषण के शिष्य थे तथा उनके साथ रह कर साहित्य रचना किया करते थे। कर्मकाण्ड की संस्कृत टीका ज्ञानभूषण तथा सुमतिकीर्ति दोनों ने मिल कर वनायी थी। भट्टारक ज्ञानभूषण ने भी जिस तरह कितने ही ग्रन्थों की रचना की थी उसी प्रकार इन्होंने भी कितने ही रचनायें की हैं। त्रिलोकसार चौपई को इन्होंने सवत् १६२७ मे समाप्त किया था। इसमे तीनलोकों पर चर्चा की गयी है। इस रचना के अतिरिक्त इनकी कुछ स्तुतियां अथवा पद भी मिलते हैं।

४८. स्वरूपचन्द विलाला

पं० स्वरुपचन्द जी जयपुर निवासी थे। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा विलाला इनका गोत्र था। पठन पाठन एवं स्वाध्याय ही इनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य था। विलाला जी ने कितनी ही पूजाओं की रचना की थी जो आज भी वडे चाव से नित्य मन्दिरों मे पढी जाती हैं। पूजाओं के अतिरिक्त इन्होंने मदनपराजय की भाषा टीका भी लिखी थी जो संवत् १६१८ मे समाप्त हुई थी। इनकी रचनाओं के नाम मदनपराजय भाषा, चौसठऋद्धिपूजा, जिनसहस्त्रनाम पूजा तथा निर्वाणक्षेत्र पूजा आदि हैं।

४९. हरिकृष्ण पांडे

ये १८ वीं शताब्दी के कवि थे। इन्होंने अपने को विनयसागर का शिष्य लिखा है। जयपुर के वधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में इनके द्वारा रचित चतुर्दशी-कथा प्राप्त हुई है जो सवत् १७६६ की रचना है। कथा मे ३५ पद्य हैं। भाषा एवं दृष्टि से रचना साधारण है।

५०. हर्पकीर्त्ति

हर्पकीर्त्ति हिन्दी भाषा के अच्छे विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी मे छोटी छोटी रचनायें लिखी हैं जो सभी उत्तम हैं। भाव, भाषा एवं वर्णन शैली की दृष्टि से कवि की रचनायें प्रथम श्रेणी की हैं। चतुर्गति वेलि को इन्होंने संवत् १६८३ मे समाप्त किया था जिससे पता चलता है कि कवि १७ वीं शताब्दी के थे तथा कविवर वनारसीदासजी के समकालीन थे। चतुर्गति वेलि के अतिरिक्त नेमिनाथ-

राजुल गीत, नेमीश्वरगीत, मोरडा, कर्महिंडोलना पञ्चमगतिवेलि आदि अन्य रचनायें भी मिलती हैं। सभी रचनायें आध्यात्मिक है। कवि द्वारा लिखे हुये कितने ही पद भी हैं। जो अभी तक प्रकाश मे नहीं आये हैं।

५१. हीरा कवि

ये बूंदी (राजस्थान) के रहने वाले थे। इन्होंने संवत् १८४८ में 'नेमिनाथ व्याहलो' नामक रचना को समाप्त किया था। व्याहलों में नेमिनाथ के विवाह के अवसर पर होने वाली घटनाओं का वर्णन किया गया है। रचना साधारणत अच्छी है तथा इस पर हाडौती भाषा का प्रभाव झलकता है।

५२. पांडे हेमराज

प्राचीन हिन्दी गद्य लेखकों मे हेमराज का नाम उल्लेखनीय है। इनका समय सत्रहवीं शताब्दी था तथा ये पांडे रूपचद के शिष्य थे। इन्होंने प्राकृत एवं सस्कृत भाषा के ग्रन्थों का हिन्दी गद्य मे अनुवाद करके हिन्दी के प्रचार मे महत्त्वपूर्ण योग दिया था। इनकी अब तक १२ रचनायें प्राप्त हो चुकी हैं जिनमे नयचक्रभाषा, प्रवचनसारभाषा, कर्मकाण्डभाषा, पञ्चास्तिकायभापा, परमात्मप्रकाश भाषा आदि प्रमुख हैं। प्रवचनसार को इन्होंने १७०९ मे तथा नयचक्रभाषा को १७२४ में समाप्त किया था। अभी तीन रचनायें और मिली हैं जिनके नाम दोहाशतक, जखडी तथा गीत हैं। रचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि कवि का हिन्दी गद्य एव पद्य दोनों में ही एकसा अधिकार था। भाव एवं भाषा की दृष्टि से इनकी सभी रचनायें अच्छी है। दोहा शतक जखडी एवं हिन्दी पद अभी तक अप्रकाशित हैं।

उक्त विद्वानों में से २७, ३५, ४०, ४२ तथा ४५ संख्या वाले विद्वान् जैनेतर विद्वान् हैं। इनके अतिरिक्त ५, ६, २४, ३०, ३३ एव ३६ संख्या वाले श्वेताम्बर जैन एवं शेष सभी दिगम्बर जैन विद्वान् हैं। इनमें से बहुत से विद्वानों का परिचय तो अन्यत्र भी मिलता है इसलिये उनका अधिक परिचय नहीं दिया गया। किन्तु अजयराज, अमरपाल, उदैराम, केशरीसिंह, गोपालदास, चपाराम भांवसा ब्रह्मज्ञानसागर, थानसिंह, बाबा दुलीचन्द, नन्द, नाथूलाल दोशी, पद्मनाभ, पन्नालाल चौधरी, मनराम, रघुनाथ आदि कुछ ऐसे विद्वान् हैं जिनका परिचय हमे अन्य किसी पुस्तक मे देखने को नहीं मिला। इन कवियों का परिचय भी अधिक न मिलने के कारण उसे हम विस्तृत रूप से नहीं दे सके।

ग्रन्थ सूची के अन्त मे ४ परिशिष्ट हैं। इनमें से ग्रन्थ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्ति के सम्बन्ध में तो हम ऊपर कह चुके हैं। ग्रंथानुक्रमणिका में ग्रन्थ सूची मे आये हुये अकारादि क्रम से सभी ग्रन्थों के नाम दे दिये गये हैं। इससे सूची में कौनसा ग्रन्थ किस पृष्ठ पर है यह ढूंढने में सुविधा रहेगी। इस परिशिष्ट के अनुसार ग्रन्थ सूची मे १७८५ ग्रन्थों का विवरण दिया गया है। ग्रन्थ एव ग्रन्थकार परिशिष्ट को भी हमने सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी भाषाओं मे विभक्त कर दिया है जिससे ग्रन्थ सूची में किसी एक विद्वान् के एक भाषा के कितने ग्रन्थों का उल्लेख आया है सरलता से जाना जा

सकता है। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में संस्कृत भाषा के १७३, प्राकृत के १४, अपभ्रंश के ८६ तथा हिन्दी के २८२ विद्वानों के ग्रन्थों का परिचय मिलता है तथा इनसे भाषा सम्बन्धी इतिहास लेखन में अधिक सहायता मिल सकती है।

ग्रन्थ सूची को उपयोगी बनाने का पूरा प्रयत्न किया गया है तथा यही प्रयास रहा है कि ग्रन्थ एवं ग्रन्थ कर्त्ता आदि के नामों मे कोई अशुद्धि न रहे किन्तु फिर भी यदि कहीं कोई त्रुटि रह गयी हो तो विद्वान् पाठक हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे आगे प्रकाशित होने वाले संस्करणों मे उसका परिमार्जन किया जा सके।

धन्यवाद समर्पण—

सर्व प्रथम हम क्षेत्र कमेटी के सदस्यों एवं विशेषत मन्त्री महोदय को धन्यवाद देते हैं जो प्राचीन साहित्य के उद्धार जैसे पवित्र कार्य को क्षेत्र की ओर से करवा रहे हैं तथा भविष्य मे इस कार्य में और भी अधिक व्यय किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। इसके अतिरिक्त राजस्थान के प्रमुख जैन साहित्य सेवी श्री अगरचन्दजी नाहटा एवं वीर सेवा मन्दिर देहली के प्रमुख विद्वान् प० परमानन्दजी शास्त्री के हम हृदय से आभारी हैं जिन्होंने सूची के अधिकांश भाग को देखकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है तथा समय समय पर अपनी शुभ सम्मतियों से सूचित करते रहते हैं। श्रद्धेय गुरुवर्य्य प० चैनसुखदासजी सा० न्यायतीर्थ के प्रति भी हम कृतज्ञाजलिया अर्पित करते हैं जो हमे इस पुनीत कार्य मे समय समय पर प्रेरणा देते रहते हैं और जिनकी प्रेरणा मात्र से ही जयपुर मे साहित्य प्रकाशन का थोडा बहुत कार्य हो रहा है। बधीचन्दजी के मन्दिर के प्रबन्धक बाबू सरदारमलजी आबूजी वाले तथा ठोलियों के मन्दिर के प्रबन्धक बाबू नरेन्द्र मोहनजी डडिया तथा प० सनत्कुमारजी बिलाला को भी हार्दिक धन्यवाद है जिन्होंने अपने यहां के शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूची बनाने की पूरी सुविधा प्रदान की है। अन्त मे हमारे नवीन सहयोगी बाबू सुगनचन्दजी को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने इस ग्रन्थ सूची के कार्य मे हमारा पूरा हाथ बटाया है।

कस्तूरचन्द कासलीवाल
अनूपचन्द जैन

दि० २५-७-५७

१८वीं शताब्दी के हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान्—महा प० टोडरमलजी द्वारा रचित एव लिखित

मोक्षमार्ग प्रकाश एव क्षपणासार की मूल प्रतियों के चित्र

[जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र-भण्डार मे सग्रहीत]

श्री महावीराय नमः

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थसूची

श्री दि० जैन मन्दिर बधीचन्दजी (जयपुर) के

ग्रन्थ

विषय–सिद्धान्त एवं चर्चा

अन्तगढदशाओ वृत्ति (अन्तकृद्दशासूत्रवृत्ति)—अभयदेवसूरि पत्र सख्या–७। साइज–१०×४½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–सिद्धान्त। रचनाकाल ×। लेखनकाल ×। पूर्ण। वेष्टन नं० २६०।

विशेष—अन्तकृद्दशासूत्र श्वे० जैन आगम का ८ वां अ ग है।

२. आश्रव त्रिभगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सख्या–१२। साइज–११¾×५¼ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। रचनाकाल ×। लेखनकाल–स० १६०६, द्वितीय भादवा सुदी २। पूर्ण। वेष्टन न० ६७६।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

३. इकवीस ठाणा चर्चा—पत्र सख्या–६। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–चर्चा। रचनाकाल ×। लेखनकाल संवत् १८१३, फागुण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन न० १५४।

विशेष—पं० किशनदास ने प्रतिलिपि की थी।

४ इक्कीस गिणती का स्वरूप—पत्र संख्या–१३। साइज–८½×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सिद्धान्त। रचनाकाल ×। लेखनकाल–स० १८२६। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८६।

विशेष—सख्यात, असख्यात और अनन्त इनके २१ भेदों का वर्णन किया गया है।

५ एक सौ गुणहत्तर जीव पाठ—लक्ष्मणदास। पत्र सख्या–७१। साइज–११×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–चर्चा। रचनाकाल सं० १८८४ माघ सुदी ५। लेखनकाल ×। पूर्ण। वेष्टन न० ४६८।

विशेष-प्रारम्भ—अथ लिछमणदास कृत पाठ लिख्यते। अथ एक सौ गुणतर जीवां की संख्या पाठ लिख्यते।

दोहा—वृषभ आदि चौवीस कौ नमौ नाम उरधार ।
कछु इक संख्या कहत हू उत्तम नर की सार ॥१॥
प्रथमहि जिन चौवीस के कहौं नाम सुखदाय ।
कोटि जनम के पाप ते छयक एक में जाय ॥२॥

छंद—प्रथम वृषभ जिन देव, दूजौ अजित प्रमानौ ।
तीजौ समव नाथ अभिनंदन चउ जानौ ॥३॥

अन्तिम—इनका कथन वसेपतै पूरव नगरी आदि ।
ग्रंथ माहि तें जानयौ जथा जोग अनवाद ॥६६॥
पाठ बदन के कारणै कियौ नाहि मै मित ।
नाम मात्र अनुराग वसि धारि कियौ हरि चित ॥७०॥

छन्द सुन्दरी—जैनमत कै ग्रंथ लखाय कै । कहत हौं ये पाठ बनाय कै ।
नाम ए चित मैं जु धरै नरा । होय मिथ्या जाल सवै परा ॥७१॥
भूल चूक जु होय सुधारयौ । हांसि पंडित नाहि न कारयौ ।
करि छिमा मो गुण गहि लीजियो । राम कहइ किरप तुम कीजियौ ॥७२॥

दोहा—ठारासै चौरासिया वार सनीश्चर वार, पोस कृष्ण तिथ पंचमी कियो पाठ सुभ चार ॥७२॥

"इति एक सौ गुणांतर जीव पाठ संपूरण"॥१॥

निम्न पाठ और हैं:—

नाम	पत्र संख्या	पद्य संख्या	विशेष
(१) तीस चौवीसी पाठ	६ से २४ तक	२२७	
(२) गणधर मुख्य पाठ	२४ से २५	१२	
(३) दसकरण पाठ	२५ से ३४	१२४	दस बंध भेद वर्णन रामचन्द्र कृत
(४) जयचन्द्र पचीसी	३४ से ३६	२६	
(५) आगति जागति पाठ	३६ से ४१	७५	सं० १८८४ मंगसिर वदी ११
(६) षट कारिक पाठ	४१ से ४२	१२	
(७) शिष्य दिक्षा बीसी पाठ	४२ से ४३	२७	
(८) सात प्रकार वनस्पति उत्पत्ति पाठ	४३ से ४४	१४	
(९) जीवमोक्ष बत्तीसी पाठ	४४ से ४६	३३	

नाम	पत्र संख्या	पद्य संख्या	विशेष
(१०) मोह उत्कृष्टथित पचीसी	४६ से ४८	२६	
(११) प्रथम शुक्ल ध्यान पचीसी	४८ से ५०		
(१२) जतर चोबनो	५० से ५१	८	
(१३) बधबोल	५१	५	
(१४) इकबीस गिणती को पाठ	५१ से ६०	६३	
(१५) सम्यक चतुरदसी	६० से ६१	१४	
(१६) इक अक्षर आदि बत्तीसी	६१ से ६३	३३	
(१७) बावन छद रूपदीप	६३ से ७१	५५	१८८४ माघ सुदी ५ मगलवार

६. कर्मप्रकृति—आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र संख्या–११। साइज–११×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। रचनाकाल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १६।

विशेष—मूल मात्र हैं तथा गाथाओं की सख्या १६२ हैं।

७. प्रति नं० २—पत्र संख्या–१६। साइज–१०×५ इञ्च। लेखनकाल सं०–१८५६ श्रावण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० १७।

विशेष—चंपाराम ने प्रतिलिपि की थी। इस प्रति में १६४ गाथायें हैं।

८. प्रति नं० ३—पत्र सख्या–१६। साइज–१२×४½ इञ्च। लेखनकाल ×। पूर्ण। वेष्टन नं० १८।

विशेष—गाथाओं की सख्या–१६१ है।

९. प्रति नं० ४—पत्र संख्या–१३। साइज–११×४½ इञ्च। लेखनकाल सं० १६०६ अषाढ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन नं० १६। इसमें १६१ गाथायें हैं।

विशेष— सस्कृत में कहीं २ टिप्पण दिया हुआ है। लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सं० १६०६ वर्षे आषाढ मासे शुक्लपक्षे प्रतिपदा तिथौ सोमवासरे श्रीमूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये आचार्य भुवनकीर्तिदेवा तत् शिष्यणी आ० मुक्तिश्री तत् शिष्या आ० कीर्तिश्री पठनार्थ। कल्याणमस्तु। अमरसरमध्ये राज्यश्री सूजाजी।

१०. प्रति नं० ५—पत्र सख्या–४४। साइज–५½×४½ इच। लेखनकाल स०–१८११ भादवा सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० ५३।

विशेष—हरचन्द ने प्रतिलिपि की थी। मध्य गुटका साइज में है। १६१ गाथायें हैं।

११. प्रति नं० ६—पत्र संख्या–२१। साइज–१०½×४½ इञ्च। लेखनकाल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० २२।

विशेष—प्रति अशुद्ध है। संस्कृत टीका सहित है। मूल गाथायें नहीं है। कर्म प्रकृति का सत्वस्थान भंग सहित गुणस्थान का वर्णन है।

जिनदेव प्रणम्याह मुनिचन्द्र जगत्प्रभु ।
सत्कर्मप्रकृतिस्थान सद्गुणीमि यथागम ॥१॥

णमिऊण वड्ढमाण कणयणिंद देवरायपरिपुज्ज ।
पयडीणसत्तठाणं ओघे भगे सम वोच्छे ॥१॥

देवराजपरिपूज्य कनकनिभ वर्द्धमानभगवद् अर्हद्भट्टारकं नत्वा कर्मप्रकृतीनां सत्वस्थान भगसहितं गुणस्थानेषु वक्ष्यामीति संबध ।

१२. प्रति नं० ७—पत्र संख्या-३४। साइज ११-×५ इञ्च। लेखनकाल-१६७६भादवा सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन न० २१। प्रति सटीक है। अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

विशेष—इति प्राय श्री गोमट्टसारमूलात् टीकाश्च निष्काश्य क्रमेण एकीकृत्य लिखिता श्रीनेमिचन्द्र सैद्धान्तिक विरचित-कर्मप्रकृतिग्रंथस्य टीका समाप्ता।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १६७६ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां तिथौ सम्रामपुरवास्तव्ये महाराजाधिराजराजश्रीभावसिंह-राज्ये श्रीमूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवातत्पट्टे भट्टारक शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीचन्द्रकीतिदेवा तत्पट्टे भ० श्री श्री श्री श्री श्री देवेन्द्रकीर्तिजी। तदाम्नाये खडेलवालान्वये मौंसा गोत्रे सा० गगा तद्भार्या गौरादे तयो पुत्र सा० धेल्हा तद् भार्या धेलसिरि तयो. पुत्र पच। प्रथम सा० ताल्हु तद् भार्या ल्होड़ी तयो' पुत्रौ द्वौ प्र० सा० बाजू तद् भार्ये द्वे० प्र० बालहदे, द्वि० प्रतापदे तत्पुत्रौ द्वौ प्र० पुत्र सा० सावल तद् भार्या सहलालदे तयो पुत्र चि० साहीमल, द्वि० पुत्र सा० साकर। साह ताल्हु द्वि पुत्र सा० चढ्ढू तस्य भार्या गाखदे। एतेषां मध्ये साह बाजू तद् भार्या बालहदे इद शास्त्र रत्नत्रयव्रत-उद्यापनार्थं भट्टारक श्री श्री श्री देवेन्द्र कीर्ति तत् शिष्य आचार्य श्री रामकीर्त्तिये प्रदत्त ।

१३. कर्मप्रकृति विधान—वनारसीदास। पत्र संख्या-१३। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचनाकाल-स० १७००। लेखककाल-१७८०। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६२।

विशेष—यह रचना बनारसीविलास में संगृहीत रचनाओं में से है।

१४. प्रति न० २—पत्र संख्या-५१। साइज-६×६½ इञ्च। लेखनकाल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३६७।

विशेष—कर्मप्रकृतिविधान गुटके में है जिसमें निम्न पाठ और है—श्रावकों के १७ नियम, सिंदूर प्रकरण-(बनारसीदास) और अनित्य पचाशिका-(त्रिभुवनचन्द)।

१५. प्रति नं० ३—पत्र सख्या-१६ । साइज-६३⁄४×५ इच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३६८ ।

१६. कर्मप्रकृतियों का व्योरा—(कर्मप्रकृति चर्चा) . . .. . । पत्र सख्या-१७ । साइज-१०३⁄४×६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८३३ ।

विशेष—ग्रथ वही खाते की साइज में है ।

१७. कर्मस्वरूपवर्णन—अभिनव वादिराज (प० जगन्नाथ) । पत्र संख्या—५० । साइज-१०३⁄४×६ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-स० १७०७ माघ बुदी १३ । लेखन काल-स० १७०७ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८४ ।

विशेष—१० से २३ तक के पत्र नहीं हैं । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ— कर्म्मव्यूहविनिर्मुक्ता, मुक्तवाचत्ता त्रिशुद्धित: ।
ग्रन्थकर्मस्वरूपाख्यो वादिराजेन तन्यते ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

इति निरवद्यविद्यामण्डनमण्डित पण्डितमंडलीमंडित भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्तिजीकाख्यशिष्यै: कविगमकिवादिवाग्मित्व गुणगणभूषणै कणादाक्षपादप्रभाकरभट्टशिवसुगतचार्वाकसाख्यप्रमुखप्रवादिगणोपन्यस्तदूषणदूषणैस्त्रैविधविद्याधिपै पण्डित जगन्नाथैरपराख्ययाभिनववादिराजैर्विरचिते कर्म्मस्वरूपग्रथे स्थित्यनुभागप्रदेशनिरूपणं नाम द्वितीय उल्लास,

वर्षे तत्त्वनमो श्व भूपरिमिते (१७०७) मासे मघौ सुन्दरे,
तत्पक्षे च सितेतरेहनि तथा नाम्ना द्वितीयाह्वये ।

श्रीसर्वज्ञपदांबुजानति-गलद् ज्ञानावृतिप्राभवा
स्त्रैविद्येश्वरतांगता व्यरचयन् श्रीवादिराजा इम ॥ १ ॥

तावत्केवलिमि.सम: कलिमलैर्मुक्ता कलौ साधव. ।
तावज्जैनमत चकास्ति विमल तावच्चधर्मोत्सव: ।

तावत्षोडशभावनामवस्मृतां स्वर्गापवर्गोक्तयो
यावच्छ्रीपरमागमो विजयते गोमट्टसाराभिध ॥ २ ॥

१८. काल और अन्तर का स्वरूप— . . .. । पत्र सख्या-१२ । साइज-११×५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८७३ ।

रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

अथ काल अर अन्तर का स्वरूप निरुपण करिए है ॥ छ ॥ तिनि विषै आठ सांतर मार्गणा है तिनका स्वरूप

संख्या विधान निरूपणै के अर्थि गाथा तीन करि कहै है। नाना जीवनि की अपेक्षा विवक्षित गुणस्थान वा मार्गणास्थान नै छोड़ि अन्य कोई गुणस्थान वा मार्गणास्थान नै प्राप्त होइ। बहुरि उस ही विवक्षित गुणस्थान वा मार्गणास्थान को यावत्काल प्राप्त न हो इति सत्काल का नाम अतर है।

अन्तिम—विवक्षित मार्गणा के भेद का काल विषै विवक्षित गुणस्थान का अंतराल जेते कालि पाईए ताका वर्णन है। मार्गणा के भेद का पलटना भए। अथवा मार्गणा के भेद का सद्भाव होतैं विवक्षित गुणस्थान का अंतराल भया था ताकी बहुरि प्राप्ति भए विस अंतराल का अभाव हो है। ऐसे प्रसग पाइ काल का अर अंतर कथन कीया है सो जानना ॥ इति सपूर्ण ॥

पोथी ज्ञान बाई की।

१६ क्षपणासार टीका—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव। पत्र सख्या-६६। साइज-१४×६½ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८७६।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र कृत क्षपणासार की यह सस्कृत टीका है। मूल रचना प्राकृत भाषा में है।

२०. गुणस्थान चर्चा—। पत्र सख्या-५७। साइज-१२×७ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-चर्चा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ८६२।

विशेष—चौदह गुणस्थानों पर विस्तृत चार्ट (सदृष्टि) है।

२१ प्रति नं० २—पत्र सख्या-३६। साइज-१२×७½ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६३।

२२ प्रति न० ३—पत्र संख्या-५१। साइज-१०½×६ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ८६४।

२३. गोमट्टसार—आ० नेमिचन्द्र। पत्र संख्या-७२६। साइज-१४×६½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन न० ६८६।

विशेष—७२६ से आगे पत्र नहीं हैं। प्रति सस्कृत टीका सहित है।

२४. प्रति न० २—पत्र स०-१६३ से ८४८। साइज-१२½×५ इच। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ७८५।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

२५. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-६५। साइज-११×५ इञ्च। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६८७।

विशेष—जीवकाण्ड मात्र है गाथाओं पर सस्कृत में पर्यायवाची शब्द हैं।

२६. प्रति नं० ४—पत्र सख्या १७२ । साइज–१३×८ इञ्च । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६६२ ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । आगे के पत्र नहीं है ।

२७. प्रति नं० ५—पत्र संख्या–४० । साइज–१०×५½ इञ्च । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६४ ।

२८. प्रति न० ६—पत्र सख्या–११ । साइज–११×५¼ इञ्च । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६३१ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

२९. प्रति नं० ७—पत्र सख्या–२४८ से ५३१ । साइज–२०×७½ इञ्च । × । लेखन काल–सं० १७९९ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८५ ।

विशेष—२४६ से २५३, ३७१ से ४४०, ४८८ से ५२८ तक पत्र नहीं हैं ।

यति नेण सागर ने प्रतिलिपि की थी । स० १७९९ मे महाराजा जयसिंह के शासन काल में सवाई जयपुर में जोधराज पाटोदी द्वारा उस निमित्त (बनवाये हुए) ऋषभदेव चैत्यालय में गुलाबचन्द गोदीका ने प्रतिलिपि करवा कर इस ग्रंथ को भेंट किया था । केशववर्णि की कर्णाटक वृत्ति के आधार पर संस्कृत टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—सवत्सरे नव-नारद-मुनिंदुमिते १७९९ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पंचमीतिथौ सवाईजयपुरनाम्नि नगरे महाराजाधिराजसवाईजयसिंहराज्यप्रवर्तमाने पाटोदी गोत्रीय साह जोधराज कारित श्री ऋषभदेव चैत्यालय । श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकजित् श्री जगत्कीर्तिदेवास्तत्पट्टे प्रमाणद्वयावछिन्न प्रतिमाधा रक भट्टारकजित् श्री देवेन्द्रकीतिदेवा । तत्पट्टधारक कुमतिनिवारक केतुप्रमोदनिवारक भवभय-भजक भट्टारकाधिराजजित् श्री महेन्द्रकीर्ति देवाम्नाये खंडेलवाल वशोत्पन्न भौंवसा गोत्रीयमध्ये गोदीकेति नाम्ना प्रसिद्धा श्रेष्ठीजित श्री लूणकरणाख्यास्तस्पुत्र श्री भगवद्धर्म प्रकटनकरणपर साह जी रूपचन्द जी कस्तत्पुत्रः राद्धांतवितरणेवमितानादिमिथ्यात्वनिकरेण चिरंजीवजित श्री गुलाब चन्द्रेण इदं गोमट्टसार शास्त्र लिखाप्य भट्टारक जित् श्री महेन्द्र कीर्तिये प्रदत्तं ॥

३०. गोमट्टसार भाषा—पं० टोडरमलजी (लब्धिसार क्षपणासार सहित) पत्र संख्या–१०५३ । साइज–१०×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धात । रचना काल–स० १८१८ माघ सुदी ५ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१२ ।

विशेष—कई प्रतियों का सम्मिश्रण है । बहुत से पत्र स्वयं पं० टोडरमलजी के हाथ के लिखे प्रतीत होते हैं । ग्रंथ का विस्तार ६०,००० श्लोक प्रमाण है ।

३१. प्रति नं० २—पत्र संख्या–११०४ । स इज–१५×७इञ्च । लेखन काल–स०१८६१ पौष बुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७१६ ।

विशेष—सदृष्टि के अलग पत्र हैं। ११८, १३३ तथा २०२ के पत्र नहीं हैं।

३२ प्रति नं० ३—पत्र सख्या—१०३१। साइज—१२½×६½ इच। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७१७।

३३. प्रति नं० ४—पत्र सख्या—३११। साइज—१३½×८ इञ्च। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८११।

विशेष—केवल कर्मकाण्ड भाषा है।

३४ प्रति नं० ५—पत्र सख्या—२२। साइज—१४×६½इञ्च। लेखन काल—× अपूर्ण। वेष्टन नं० ८७६।

विशेष—जीवकाण्ड की भाषा मात्र है।

३५ **गोमट्टसार कर्मकाण्ड टीका—सुमति कीर्ति**। पत्र सख्या-४५। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०।

३६. **गोमट्टसार कर्मकाण्ड भाषा—पं० हेमराज**। पत्र सख्या-३४। साइज-११½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७०६। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६६।

विशेष—पं० सेवा ने सरोजपुर में प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ का प्रारम्भ और अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—पणमिय सिरसा णेमिं गुण रयण विहूसण महावीरं।
सम्मत्तरयणनिलय पयडि समुक्कित्तणं वोछं ॥ १ ॥

अर्थ—अहं नेमिचन्द्राचार्य प्रकृती समुत्कीर्त्तन वक्ष्ये। अहं हूं जु हौ नेमिचन्द्र ऐसे नाम आचार्य सो प्रकृतिसमुत्कीर्त्तन प्रकृति हु कार हैं समुत्कीर्त्तन कथन जिस विषै ऐसा जु ग्रन्थ कर्मकांड नामा तिसहि वक्ष्ये कहूंगा। किंकृत्वा कहा करि सिरसा नेमिं प्रणम्य सिरकरि श्री नेमिनाथ को नमस्कार करिकै। कैसे है नेमिनाथ गुणरत्न विभूषण—अनत ज्ञानादिक छ गुण तेई हुवे रत्न तेई है विभूषण आभरण जिनके। बहुरि कैसे हैं महावीरं महासुभट हैं कर्म के नासकरण कौं। बहुरि कैसे है सम्यक्त रत्न निलय। सम्यक्त रूप जु है रत्न तिसके निलय स्थानक है।

अन्तिम—अरु जिस काल यह जीव पूर्वोक्त प्रत्यनीक आदिक क्रिया विषै प्रवर्त्तै, तब जैसी कुछ उत्कृष्ट मध्यम जघन्य शुभाशुभ क्रिया होई, तिस माफिक कर्म हूं का बध करै स्थिति अनुभाग की विशेषता करि। तिस तै समय समय बध जु करै सुतौ स्थित अनुभाग की हीनता करि। अरु जु प्रत्यनीक आदिक पूर्वोक्त क्रिया करि करै सुस्थित अनुभाग की विशेषता करि यह सिद्धान्त जाणना। इय भाषा टीका पंडित हेमराजेन कृता स्वबुद्ध्यानुसारेण। इति कर्म कांड भाषा टीका सम्पूर्ण। इति सवत्सरे अस्मिन् विक्रमादित्यराजैसप्तदशसत सतषटोत्तर १७०६ अग्र सरोजपुरे सन्निधे पुस्तक लिख्यत पंडित सेवा स्वपठनार्थं ॥

३७ प्रति नं० २—पत्र सख्या—७६। साइज—११×५½ इञ्च। लेखन काल—सं० १८२५ आसोज सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८६।

विशेष—कोटा में प्रतिलिपि हुई थी।

३८. चर्चाशतक—द्यानतराय। पत्र संख्या-५३। साइज-११×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १९२४ चैत सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ७८३।

विशेष-यह प्रति बधीचन्द साहामिका के शिष्य हरजीमल पानीपत वाले की हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

३९ प्रति नं० २—पत्र सख्या-४७। १५½×११½ इंच। लेखन काल-सं० १९३८ ज्येष्ठ बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ७८४।

विशेष—प्रति बहुत सुन्दर है-हिन्दी टब्बा टीका सहित है। बीच २ में नक्शे आदि भी दिये हुए हैं।

४०. प्रति नं० ३—पत्र सख्या-६३। साईज-१२×५½ इंच। लेखन काल-सं० १९०६ माघ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ८०८।

विशेष—प्रत्येक पत्र पर ३ पक्तियां हैं।

४१ चर्चासमाधान--भूधरदास जी पत्र संख्या-७६। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—चर्चा। रचना काल-×। लेखन काल सं० १८८४। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६१।

४२. प्रति नं० २--पत्र सख्या-११३। साइज-१०½× ५ इञ्च। लेखन काल-सं०१८८३। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६२।

४३. प्रति नं० ३—पत्र सख्या-९३। साइज-११×५½ इच। लेखन काल-सं० १८४८। पूर्ण। वेष्टन-३६३।

४४. चर्चासंग्रह—पत्र सख्या-२७२। साइज-१२×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चर्चा। रचना-काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ३५६।

विशेष—गोमट्टसार त्रिलोकसार, क्षपणासार आदि ग्रन्थों के आधार पर धार्मिक चर्चाओं को यहाँ संग्रह किया गया है। चर्चाओं के नाम निम्न प्रकार हैं चर्चा वर्णन, कर्मप्रकृति वर्णन, तीर्थंकर वर्णन, मुनि वर्णन, नरक वर्णन, मध्यलोकवर्णन, अन्तरकालवर्णन समोसरमवर्णन श्रुतिज्ञानवर्णन। नरकनिगोदवर्णन। मोक्षसुखवर्णन, अन्तरसमाधिवर्णन, कुदेववर्णन आदि।

४५. चौबीस ठाणा चर्चा—आ० नेमिचन्द्र। पत्र संख्या-५९ से १२७। साइज—१२×६ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचाना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ३२०।

विशेष—सस्कृत में टीका दी हुई है।

४६. प्रति नं० २—पत्र सख्या-१२३। साइज-११½×४¾ इञ्च। लेखन काल-सं० १७८३। पूर्ण। वेष्टन नं० १६६।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है। टीकाकार आनन्द राम है।

४७. चौबीसठाणा चर्चा भाषा—पत्र सख्या-५२ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८८५ माह सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५६ ।

विशेष—भाषाटीका का नाम बाल बोध-चर्चा दिया हुआ है ।

४८. प्रति न० २—पत्र सख्या-३० । साइज-६×५ इञ्च । लेखन काल-स० १८२३ कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५८ ।

विशेष—खुशालचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

४९. चौबीसठाणा चर्चा—पत्र सख्या-३३ । साइज-१०× ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८६१ ।

५० चौबीसठाणा चर्चा—पत्र सख्या-६ । साइज-६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५४६ ।

५१ चौबीसठाणा चर्चा—पत्र संख्या-२८ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२० । पूर्ण । वेष्टन न० ५४५ ।

विशेष—हिंडोली में प्रतिलिपि हुई थी ।

५२ चौबीसठाणा पीठिका—पत्र सख्या-८ । साइज-१३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११२७ ।

५३. चौबीसठाणा पीठिका—पत्र सख्या-४३ । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१६ ।

५४. जीवसमास वर्णन—आ० नेमिचन्द्र । पत्र सख्या-१४ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ३२१ ।

विशेष—गोमट्टसार जीवकांड में से गाथाओं का सग्रह है ।

५५. प्रति न २—पत्र सख्या-४५ । साइज-११×५ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३२२ ।

विशेष—गाथाओं पर सस्कृत में अर्थ दिया हुआ है ।

५६ ज्ञानचर्चा—पत्र सख्या-४६ । साइज-६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३५७ ।

विशेष—गोमट्टसार, त्रिलोकसार, क्षपणासार आदि ग्रंथों के अनुसार भिन्न २ चर्चाओं का सग्रह है ।

५७. तत्त्वसार—देवसेन । पत्र सख्या-८ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७० ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

५८. तत्त्वार्थसूत्र—उमास्वामि। पत्र संख्या–२३। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८७३। पूर्ण। वेष्टन नं० ५१४।

विशेष—प्रारम्भ में भक्तामर स्तोत्र तथा द्रव्य संग्रह की गाथायें दी हुई हैं।

५९. प्रति नं० २—पत्र संख्या–३३। साइज–१०½×५इञ्च। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५२४।
विशेष—पत्र लाल रंग के हैं तथा चारों ओर वेलें हैं।

६०. प्रति नं० ३—पत्र सं०–२५। साइज–११×५½ इञ्च। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५३१।

६१. प्रति नं० ४—पत्र संख्या–७। साइज–१०½×७ इञ्च। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५६८।

६२. प्रति नं० ५—पत्र संख्या–१४। साइज–११½×५½ इञ्च। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५६६।

६३. प्रति नं० ६—पत्र संख्या–७। साइज–१३½×६ इञ्च। लेखन काल–१९३३। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०६।

६४. प्रति नं० ७—पत्र संख्या–३–१६। साइज–१०×४½ इञ्च। लेखन काल–× अपूर्ण। वेष्टन नं० ९९६।

विशेष—एक पत्र में ४ पंक्तियाँ हैं।

६५. प्रति नं० ८—पत्र संख्या–७। साइज–१०×४ इन्च। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०४१।
विशेष—प्रति प्राचीन है।

६६ प्रति नं० ९—पत्र संख्या– ७३। साइज–७×५½ इंच। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ९४८।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र तथा पूजाओं का भी संग्रह है।

६७. प्रति नं० १०—पत्र संख्या–२०। साइज–११½×५½ इंच। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ९४२।

विशेष—तीन चौवीसी नाम तथा भक्तामर स्तोत्र भी है।

६८. प्रति नं० ११—पत्र संख्या–४६। साइज–१०½×७½ इंच। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८५३।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

६९. प्रति नं० १२—पत्र संख्या–४७। साइज–१०½×७½ इंच। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८५१।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

७०. प्रति नं० १३—पत्र संख्या-५० । साइज-१०½×७½ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१० ।

विशेष – हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७१ प्रति नं० १४—पत्र संख्या-१५ । साइज-११×५¾ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६० ।

७२. प्रति नं० १५—पत्र संख्या-१५ । साइज-१०×५ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०४ ।

७३ प्रति नं० १६—पत्र संख्या-१३ । साइज-६×४¾ इञ्च । लेखन काल-सं० १८१२श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०५ ।

७४. प्रति नं० १७—पत्र संख्या-१० । साइज-६×४¾इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०६ ।

७५. प्रति नं १८—पत्र संख्या-६ । साइज-११¾×६¾ इञ्च × । लेखन काल-× । वेष्टन नं० ३०७ ।

विशेष--प्रत्येक पत्र के चारों ओर सुन्दर वेलें हैं ।

७६ प्रति नं० १६—पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । नं० ८८७ । वेष्टन नं० ४ ।

विशेष--सूत्रों पर संक्षिप्त हिन्दी अर्थ दिया हुआ है । अक्षर मोटे हैं । एक पत्र में तीन पंक्तियाँ हैं ।

७७. प्रति नं० २०—पत्र संख्या-६३ । साइज-१२×५¾ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन

विशेष--हिन्दी टब्बा टीका सहित है प्रति प्राचीन है ।

७८. प्रति नं० २१— पत्र संख्या-८६ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-सं० १६४६ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

विशेष—यह प्रति संस्कृत टीका सहित है जिसमें प्रभाचन्द्र कृत लिखा हुआ है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है । कहीं कहीं हिन्दी में भी टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—संवत् १६४६ वर्षे शाके १५१८ कार्तिक सुदी १५ गुरुवासरे मालपुरा वास्तव्ये महाराजाधिराज श्री कवर माधोसिंह जी राज्य प्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेव विरचिता । यह ग्रन्थ भीमराज वैद्य ने मनोहर लोंका से पढ़ने के लिये मोल लिया था ।

७६ तत्त्वार्थ सूत्र वृत्ति—पत्र संख्या-२८ । साइज-१०½×४¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५८७ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

विशेष—टीका में मूल सूत्र दिये हुए नहीं हैं । टीका संक्षिप्त है ।

प्रशस्ति--सवत् १५५७ वर्षे वैशाख सुदी ७ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मंडलाचार्य रत्नकीर्ति शिष्येण ब्र० रत्नेन लिखापितं ।

८० तत्वार्थसूत्र वृत्ति—योगदेव । पत्र सख्या–१११ । साइज–१०×४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १६३८ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण ।वेष्टन न० ६८ ।

विशेष – भट्टारक प्रभाचन्द्र देव की आम्नाय के अजमेरा गोत्रवाले साह सांतू व उनकी भार्या सुहागदे ने यह ग्रन्थ स० १६३८ में लिखवा कर षोडषकारण व्रतोद्यापन में मडलाचार्य चन्द्रकीर्ति को भेंट किया था ।

८१. तत्त्वार्थसूत्र—पत्र संख्या–१२३ । साइज–१०×५ इञ्च । माषा–सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना-काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ६७ ।

विशेष--सस्कृत तथा हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है तथा दोनों भाषाओं की टीकायें सरल हैं ।

८२ तत्त्वार्थसूत्र भाषा टीका—कनककीर्ति—पत्र सख्या–२७१ । साइज–६×५$\frac{1}{2}$ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८३६ । वेष्टन नं० ८३४ ।

विशेष—नेण सागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । पत्र १७५ से २७१ तक बाद में लिखे हुऐ हैं अथवा दूसरी प्रति के हैं ।

प्रारम्भ–मोक्ष मार्ग्गस्य नेतार भेत्तार कर्म्मभूभृतां । ज्ञातार विश्व तत्त्वानां वदे तद्गुण लब्धये ॥ १ ॥ टीका-अह उमास्वामी मुनीश्वर मूल ग्रंथ कारक । श्री सर्वज्ञ वीतराग वदे कहतां श्री सर्वज्ञ वीतराग नै नमस्कार करू छू । किसा इक छै श्री वीतराग सर्वज्ञ देव, मोक्ष (ख) मार्ग्गस्य नेतारं कहतां मोक्षमार्ग का प्रकासका करवा वाला छैं । और किसा इक छै सर्वज्ञ देव कर्म्म भूभृतां भेत्तार कहतां ज्ञानावरणादिक आठ कर्म त्यह रूपि पर्वत त्यांह का भेदिवा वाला छ ।

अन्तिम—कै इक जीव चारण रिधि करि सिध छै । कै इक जीव चारण बिना सिध छै । कैं इक जीव घोर तप करि सिध छै । कै इक जीव अघोर तप करि सिध छै । कै इक जीव उरध सिध छै । कै इक मध्य सिध छै । कै इक जीव अधो सिध छै । इह भाति करि घणा ही भेदा सों सिध हुआ छे । सो सिधांत सु ं समझि लीज्यों । इति तत्त्वार्थाधि गये मोक्ष शास्त्रे दसमीयां पोसतक लिखत नेण सागर का चीमनराम दोसी सवाई जैपुर में लिख्यों संवत १८४६ में पुरी कियो ।

८३ प्रति न० २—पत्र संख्या–१२२ । साइज ८×४ इच । लेखन काल– × । पूर्ण । वेष्टन न० ८२३ ।

विशेष—श्रुतसागरी टीका के प्रथम अध्याय की हिन्दी टीका हैं ।

८४. प्रति नं० ३—पत्रसख्या–२१६ । साइज–१०×७ इच । लेखन काल–स० १८४० । पूर्ण । वेष्टन न० ७३५ ।

विशेष– चैन सागर ने सांभर में लिपि की थी । प्रारम्भ के पत्र नहीं है यद्यपि सख्या १ से ही प्रारम्भ है ।

८५ प्रति न ४—पत्र सख्या–११२ । साइज–१२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । लेखन काल–सं० १७३८ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ७३८ ।

विशेष—दूसरे अध्याय से है। वेष्टन नं० ७८७ के समान है।

८६ प्रति नं० ५—पत्र संख्या-८२। साइज-११½×४½ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७४७। वेष्टन नं० ८३४ के समान है।

८७. प्रति नं० ६—पत्र संख्या-१३१। साइज-८¾×४इञ्च। लेखन काल-वैशाख सुदी ५ सं० १७७६। पूर्ण। वेष्टन नं० ८२३।

विशेष—पापडदा में ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी। लिखितं ऋषि जत्रीराजेण। लिखापितं श्री संघेन नगर पापडदा मध्ये। दूसरे अध्याय से लेकर १० वें अध्याय तक की टीका है। यह टीका उतनी विस्तृत नहीं है जितनी प्रथम अध्याय की है।

८८. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—जयचन्द्र छाबडा। पत्र संख्या-४४०। साइज-१०×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। रचना काल- सं०१८६५ चैत सुदी ५। लेखन काल-सं० १८६५। पूर्ण। वेष्टन नं० ७३२।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपी की थी।

८६. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र संख्या-३३६। साइज-११×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। रचना काल सं० १६१४ वैशाख सुदी १०। लेखन काल-सं० १६३६ कार्तिक सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ७२१।

विशेष—सदासुख जी कृत तत्त्वार्थ सूत्र की यह वृहद् टीका है। टीका का नाम 'अर्थ प्रकाशिका' है। ग्रन्थ की रचना सं० १६१२ में प्रारम्भ की गई थी।

६०. तत्त्वार्थ सूत्र भाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र संख्या-१२३। साइज-८×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-सं० १६१० फाल्गुण सुदी १०। लेखन काल-सं० १६१६ आषाढ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ७५२।

विशेष—सदासुखजी द्वारा रचित तत्त्वार्थ सूत्र की लघु भाषा वृत्ति है।

६१. प्रति नं २—पत्र संख्या-१२७। साइज-११×५ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७५३।

६२ तत्त्वार्थ सूत्र टीका भाषा—पत्र संख्या-१ से १००। साइज-१५×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ७८०।

विशेष—१०० से आगेके पत्र नहीं है। प्रारम्भिक पद्य निम्न प्रकार है—

श्रीवृषभादि जिनेश वर, अंत नाम शुभ वीर।
मनवचकायविशुद्ध करि, वंदों परम शरीर ॥ १ ॥

करम धराधर भेदि जिन, मरम चराचर पाय ।
धरम बराबर कर नमूं, सुगुरु परापर पाय ॥ २ ॥

९३ तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पत्र सख्या-३१ । साइज-१०½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ७०३ ।

९४. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पत्र सख्या-७७ से १७८ । साइज-६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ८३५ ।

९५. तत्त्वार्थबोध भाषा—बुधजन । पत्र संख्या-७७ । साइज-१०½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-१८७९ कार्तिक सुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं०७३३ ।

विशेष—२०२९ पद्य हैं । प्रति नवीन एव शुद्ध है रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

अतिमपाठ — सुवस वसै जयपुर तहाँ, नृप जयसिंह महाराज ।
बुधजन कीनौं ग्रंथ तह निज परहित के काज ॥ २०२७ ॥

सवत् ठारासै विषै अधिक गुण्यासी वेस ।
कातिक सुदि ससि पचमी पूरन ग्रन्थ असेस ॥ २०२८ ॥

मंगल श्री अरहत सिद्ध मंगल दायक सदा ।
मगल साध महत, मंगल जिनवर धर्मवर ॥ २०२९ ॥

९६. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या-१२० । साइज-८×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७७७ । पूर्ण । वेष्टन न० ३०३ ।

विशेष—तत्त्वार्थ सूत्र की यह टीका मुनि श्री धर्मचन्द्र के शिष्य प्रभाचन्द्र द्वारा विरचित है । मकसूदाबाद में भट्टारक श्री दीपकीर्ति के प्रशिष्य एवं लालसागर के शिष्य रामजी ने प्रतिलिपि की थी । १०६ पत्र के आगे नेमिराजुल गृहमासा तथा राजुल पच्चीसी, शारदा स्तोत्र (भ० शुभचन्द्र) सरस्वती स्तोत्र मंत्र सहित स्तोत्र और दिया हुआ है ।

९७. तत्त्वार्थराजवार्तिक—भट्टाकलंकदेव । पत्र सख्या-३ से ११७ । साइज-११×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६६१ ।

९८. प्रति न० २—पत्र संख्या-१ से ५३ । साइज-१५×६¾ इच । लेखन काल-× । अपूर्ण वेष्टन नं० ६४७ ।

९९. तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकालंकार—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र संख्या-५३२ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७६५ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६४ ।

विशेष—ग्रन्थ श्लोक संख्या २०००० प्रमाण है।

१००. तत्त्वार्थसार—पत्र सख्या-४। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धात। रचना काल-×। लेखन काल। पूर्ण। वेष्टन न० ५१३।

१०१ त्रिभगी सग्रह—पत्र सख्या-८७। साइज-१०×५३/४ इच। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-स० १७२२ श्रावण सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन न० १३।

विशेष—साह नरहर दास के पुत्र साह गगाराम ने यह प्रति लिखवायी थी।

ग्रन्थ में निम्न त्रिभगियों का सग्रह है—

बध त्रिभगी, उदयउदीरणा त्रिभगी (नेमिचन्द्र), सत्ता त्रिभगी, भावत्रिभगी तथा विशेष सत्ता त्रिभगी।

१०२ त्रिभंगीसार—श्रुतमुनि। पत्र सख्या-३६। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३०३।

१०३ द्रव्यसग्रह—आ० नेमिचन्द्र। पत्र सख्या-११। साइज-१०१/२×७ इच। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८३३ श्रावण सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन न० ७५।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है।

१०४. प्रति नं० २—पत्र सख्या-१३। साइज-१२×५१/२ इञ्च। लेखन काल-स० १७३६ कार्तिक सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन न० ७६।

विशेष—सस्कृत तथा हिन्दी अर्थ सहित है।

१०५. प्रति न० ३—पत्र सख्या-३६। साइज-१२×५इञ्च। लेखन काल-स०१७८६ सावन सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन न० ७७।

विशेष—पर्वतधर्मार्थीकृत बालबोधिनी टीका सहित है। लालसोट में भट्ट रतनजी ने प्रतिलिपि की थी।

१०६. प्रति न० ४—पत्र सख्या-३। साइज-८३/४×६३/४ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ७८।

१०७. प्रति न० ५—पत्र सख्या-३। साइज-११×५१/२इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ७६।

विशेष—पद्मनन्दि के शिष्य ब्रह्मरूप ने प्रतिलिपि की।

१०८ प्रति न० ६ —पत्र सख्या-६। साइज-१०×३१/२ इच। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ८०।

विशेष—इसी प्रकार की ७ प्रतिया और हैं। वेष्टन न० ८१ से ८७ तक हैं।

१०६. प्रति नं० १४—पत्र सख्या-६ । साइज-१२×५½ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८८ ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

११०. प्रति न० १५—पत्र सख्या-११ । साइज-१०½×४¾ इच । लेखन काल-स० १८२५ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ८६ ।

विशेष—माधोपुर में प० नगराज ने प्रतिलिपि की ।

१११. प्रति न० १६—पत्र संख्या-६ । साइज-११×५ इन्च । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन न० ६० ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—शरदि पशुपतीक्षणाग्र गवस्वब्जांकिते पुण्य समय मासे अर्जुनेतरपक्षे तिथौ त्रयोदश्यां भौम वासरे सवाईजयनगरे कामपालगजे वृषभचैत्यालयपण्डितोत्तम विद्वद्वरजिच्छ्री रामकृष्णजित्कतच्छिष्य विद्वद्वरेण सकलगुण निधान जिच्छ्री नगराजे जित्तच्छिष्य बाल कृष्णेन स्वपठनार्थं लिखितं ।

प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

११२. प्रति न० १७—पत्र सख्या-६२ । साइज-१०½×५ इच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६१

विशेष—सस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुऐ हैं।

११३ प्रति न० १८—पत्र सख्या-७ । साइज-८½×४½ इच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५६ ।

११४ प्रति नं० १६—पत्र संख्या-७ । साइज-१२×५½ इच । लेखन काल-सं० १८२० । पूर्ण । वेष्टन ५७ ।

विशेष—जीवराज छाबड़ा ने अपने पढने को प्रतिलिपि कराई ।

११५. प्रति न० २०—पत्र सख्या-७ । साइज-१२×५½ इच । लेखन काल-स० १६०६ । पूर्ण वेष्टन नं० ५८ ।

११६. द्रव्यसंग्रह वृत्ति—ब्रह्मदेव । पत्र संख्या-१७० । साइज-१०×६ इच । भाषा-सस्कृत विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४६ ।

११७. द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र सख्या-२६ से ५६ । साइज-१०×४½ इच । भाषा-गुजराती । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७५८ कातिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ७४२ ।

विशेष—वसुआ में प्रति लिखी गई थी । अमरपाल ने लिखवायी थी ।

११८. प्रति नं० २—पत्र संख्या-३५ । साइज-११½×५ इंच । लेखन काल-सं० १७५३ पौष सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८३ ।

विशेष—सग्रामपुर नगर में प्रतिलिपि हुई ।

११६ प्रति नं० ३—पत्र संख्या-३१ । साइज-१२×५ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४४ ।

विशेष—प्रतियाँ वर्षा में भीगी हुई हैं ।

१२०. प्रति नं० ४—पत्र संख्या-४८ । साइज-१२×५½ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४५ ।

१२१ द्रव्यसग्रह भाषा—जयचन्दजी । पत्र संख्या-३७ । साइज-१०½×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× लेखन काल-सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२६ ।

१२२ प्रति न २—पत्र संख्या-४६ । साइज-१०½×७ इञ्च । लेखन काल-सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन न० ७३० ।

१२३. प्रति न० ३—पत्र संख्या-४८ । साइज-१०½×६ इंच । लेखन काल-सं० १८६८ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७४१ ।

विशेष—महात्मा देवकर्ण ने लवाण में प्रतिलिपि की । हंसराज ने प्रतिलिपि कराकर वखीचन्द के मन्दिर में स्थापित की । पहले तथा अंतिम पत्र के चारों ओर लाइनें स्वर्ण की रंगीन स्याही में हैं, अन्य पत्रों के चारों ओर बेलें तथा बूंटे अच्छे हैं । प्रति दर्शनीय हैं ।

१२४ द्रव्यसग्रह भाषा—वंशीधर । पत्र संख्या-३० । साइज-१०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८५७ ।

विशेष—प्रारंभ-जीवमजीव दव्वं इत्यादि गाथा की निम्न हिन्दी टीका दी हुई है ।

टीका—अहं कहिये मैं जु हो सिद्धांतचक्रवर्ति श्री नेमिचंद्र नामा आचार्य सो तं कहिये आदिनाथ महाराज है ताहि सिरसा कहिये मस्तक करि सव्वदा कहिये सर्वकाल विषैं वंदे कहिये नमस्कार करू हूँ ।

अंतिम—

टीका—मो मुणिणाहा कहिये हे मुन्यों के नाथ हो जूय कहिये तुम जु हो ते इणं दव्वं संगहं कहिये इहु द्रव्यसंग्रह ग्रन्थ है ताहि सोधयतु कहिये सौध्यो है मुनिनाथ हो तुम कैसाक हो.. ।

१२५. द्रव्यसग्रह भाषा—पत्र सख्या-८६ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८४१ ।

विशेष—पहिले द्रव्य सग्रह की गाथायें दी हुई हैं और उसके पश्चात् गाथा के प्रत्येक पद का अर्थ दिया हुआ है ।

१२६. द्रव्य का ब्योरा—पत्र सख्या-१८ । साइज-४×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धांत । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० १००० ।

१२७ पचास्तिकाय—आ० कुन्दकुन्द । पत्र सख्या-३३ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन न० ११६ ।

विशेष—मूल मात्र है ।

१२८ पचास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सख्या-४३ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८७२ फाल्गुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ११४ ।

१२९ प्रति न० २—पत्र सख्या-८० । साइज-१२×५½ इञ्च । लेखन काल-स० १८२५ आषाढ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ११५ ।

विशेष—सवलसिंह की पुत्री धाई रूपा ने जयपुर में प्रतिलिपि कराई थी ।

१३०. पचास्तिकाय प्रदीप—प्रभाचन्द्र । पत्र सख्या- २२ । साइज-१३×६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ३८६ ।

विशेष—आ० कुन्दकुन्द कृत पञ्चास्तिकाय की टीका है । अन्तिम पाठ इस प्रकार है—

इति प्रभाचन्द्र विरचिते पचास्तिक प्रदीपे मूलपदार्थ प्ररूपणाधिकार समाप्तः ॥

१३१. पचास्तिकाय भाषा—पं० हेमराज । पत्र सख्या-१०४ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७२१ आषाढ बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन न० ३२१ ।

विशेष—आमेर में शाह रिषमदास ने प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्राचीन है । हेमराज ने पञ्चास्तिकाय का हिन्दी गद्य मे अर्थ लिखकर जैन सिद्धान्त के अपूर्व ग्रन्थ का पठन पाठन का अत्यधिक प्रचार किया था । हेमराज ने रूपचन्द्र के प्रसाद से ग्रथ रचना की थी ।

१३२. पचास्तिकाय भाषा—बुधजन । पत्र सख्या-६२ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-स० १८९२ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७५ ।

विशेष—सघी अमरचन्द दीवान की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की गयी थी । ग्रन्थ में ५८२ पद्य हैं । रचना का आदि अन्त निम्न प्रकार है—

मगलाचरण—

वदूं जिन जित क्रम अति इष्ट, वाक्य विशद त्रिभुवन हित मिष्ट।
अतर हित धारक गुन वृन्द, ताके पद वदत सत इंद ॥

अंतिम पाठ—

पराकरत कुन्दकुन्द बखानी, ताका रहिस अमृतचन्द्र जानि।
टीका रची सहस कृत वानी, हेमराज वचनिका आनी ॥ ५७७ ॥
धरें सम्यक्त्व मिथ्यात्व हरै,' भव सागर लील तैं तरै।
महिमा मुख तैं कही न जाय, बुधजन वंदें मन वच काय ॥५७८ ॥
सांगही अमर चन्द दीवान, मोकू कही दयावर आन।
मुन्नालाल फुनि नेमिचन्द सहमक्रित ग्यायक गुन वृन्द ॥
शब्द अर्थ धन यो में लख्यो, भाषा करन तवें उमगख्यो ॥५८०॥
भक्ति प्रेरित रचना आनी, लिखो पढो बाचो भवि ज्ञानी।
जो कछु यामें अशुध निहारो, मूलग्रन्थ लखि ताहि सुधारो ॥
रामसिंह नृप जयपुर बसैं सुदि आसोज गुरु दिन दशैं।
उगणी सै में घटि है आठ ता दिवस में रचयो पाठ ॥५८२॥

१३३. भाव सग्रह—देवसेन। पत्र सख्या-१ से ३४। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-X। लेखन काल-सं० १६२१ फाल्गुण बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० १११।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

विशेष – अथ श्री सवत् १६२१ वर्षे फाल्गुण बुदी ७ भौमवासरे। अथ श्री काष्ठा संघे माथुरान्वये पुष्करगणे जिनाये,अग्रोत्कान्वये गोइल गोत्रे पचमीव्रत उद्धरण वीर साह ऊगरु तस्य भार्या देल्हाही तस्य पुत्र सा० बुजोखा तस्य भार्या आल्हाही फतेहाबाद वास्तव्य। तयो पुत्रा पट् प्रथम पुत्र ·· ।

१३४ प्रति न० २—पत्र सख्या-६६। साइज-११×५ इञ्च। लेखन काल-स० १६०६ मांगसिर सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन न० ११२।

विशेष—शेरपुर निवासी पाटनी गोत्र वाले साह मलू ने यह शास्त्र लिखा था।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६०६ मार्गसरी १० शुक्ले रेवती नक्षत्रे श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवा' तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री जिणचन्द्र देवा तत्पट्टे भ०

श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्शिष्य वसुन्धराचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये शेरपुर वास्तव्ये पाटणी गोत्रे साह श्रवणा तद्भार्या तेजी तयो: पुत्रौ द्वौ प्र० संघी चापा द्वितीय संघी दूल्हा । संघी माया तद्भार्या श्रृंगारदे तयो पुत्राश्च चत्वार ।

प्रथम साह ऊधा द्वितीय साह दीपा तृतीय साह नेमा चतुर्थ साह मलू ।।साह ऊधा भार्या उर्धासिरि तत् पुत्र साह पर्वत तद्भार्या पोसिरी । साह दीपा भार्या देवलदे । साह नेमा भार्या लाडमदे तयो पुत्र चि० लाला । साह मल्लू भार्या महमादे । साह दूलह भार्या बुधी तयो पुत्रास्त्रय. प्रथम संघी नानू द्वितीय संघी ठक्कुरसी तृतीय संघी गुणदत्त । संघी नानू भार्या नायकदे तयो पुत्र चि० कौजू । संघी ठक्कुरदे भार्या पाटमदे तयो: पुत्रौ द्वौ प्रथम साह ईसर तद् भार्या अहकारदे, द्वि० चि० सेवा । साह गुणदत्त भार्या गारवदे । तयो पुत्रास्त्रय प्रथम चि० गेगराज द्वि० चि० सुमतिदास तृ० चि० धर्मदास एतेषां मध्ये साह मलू इद शास्त्र लिखाप्य पचमीव्रतोद्योतनार्थं आचार्य श्री ललितकीर्ति आचार्य धनक राय दत्त ।

१३५. भावसंग्रह—श्रुतमुनि । पत्र संख्या-१ से १४ । साइज-११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५१० । पूर्ण । वेष्टन नं० ११० ।

विशेष—कहीं २ संस्कृत में टीका भी है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५१० वर्षे आषाढ सुदि ६ शुक्ले गुरुजरदेशे कल्पवल्ली शुभस्थाने श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमत् काष्ठासंघे नन्दीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्रीरामसेनान्वये भट्टारक श्री यशकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री उदयसेन, आचार्य श्री जिनसेन पठनार्थं ।

१३६. लब्धिसार—आ० नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-६६ । साइज-१२$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५५१ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४ ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित हैं । लेखक—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १५५१ वर्षे आषाढ सुदी १४ मंगलवासरे ज्येष्ठानक्षत्रे श्री मेदपाटे श्रीपुरनगरे श्री ब्रह्मचालुकवंशे श्रीराजाधिराज रायश्री सूर्यसेनराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे, श्री नंदिसंघे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे श्री जिनचन्द्र देवा. तत् शिष्य मुनि रत्नकीर्ति तत् शिष्य मुनि लक्ष्मीचन्द्र खंडेलवालन्वये श्री साह गोत्रे साह काल्हा भार्या रानादे तत् पुत्र साह बीझा, साह माधव, साह लाला, साह डूंगा । बीझा भार्या विजयश्री द्वितीय भार्या पूना । विजय श्री भार्या पुत्र जिणदास भार्या जौणदे, तत् पुत्र साह गंगा, साह सांगा साह सहसा, साह चौडा । सहसा पुत्र पासा साम्रमिद लब्धिसारमिधान निजज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थं मुनि लक्ष्मीचन्द्राय पठनार्थं लिखापितं । लिखित गोगा ब्राह्मण गौड ज्ञातीय ।

जयत्यर्हन्महर्हंत सिद्धा. सूर्य्यु पदेशका ।
साधवो भव्यलोकस्य शरणोत्तम मंगल ॥
श्री नागार्यतनूजातशांतिनाथोपरोधत ।
वृत्तिर्भव्यप्रबोधाय लब्धिसारस्य कथ्यते ॥

१३७. **लब्धिसार टीका—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव**। पत्र संख्या-६७। साइज-१४×६½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८७७।

विशेष—इस प्रति की सं० १५८३ वाली प्रति से प्रतिलिपी की गई थी।

१३८. **प्रति नं० २**—पत्र संख्या-२४। साइज-१४×६½ इंच। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ८७८

१३९ **लब्धिसार भाषा—पं० टोडरमल**। पत्र संख्या-१ से ४५। साइज-१२½×७½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६९०।

१४० **षट् द्रव्य वर्णन**—पत्र संख्या-११। साइज-१०×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६२५।

१४१. **सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद**। पत्र संख्या-१२२। साइज-११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १५२१ चैत सुदी ३। पूर्ण वेष्टन नं० ८०।

विशेष—लेखक प्रशस्ति पूर्ण नहीं है। केवल संवत् मात्र है। प्रति शुद्ध है।

१४२. **सिद्धान्तसारदीपक—भ० सकलकीर्ति**। पत्र संख्या-५ से २१। साइज १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०७।

विशेष—तृतीय अधिकार तक है।

१४३ **प्रति नं० २**—पत्र संख्या-१२ से ५०। साइज-१०½×६½ इंच। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०८।

१४४. **प्रति नं० ३**—पत्र संख्या-३८ से २७५। साइज-१०×४½ इंच।। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० २००।

१४५. **सिद्धान्तसारदीपक भाषा—नथमल बिलाला**। पत्र संख्या-२४५। साइज-१०½×७½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-सं० १८२४। लेखन काल-सं० १९३५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३९५।



धर्म एवं आचार-शास्त्र

१४६. अनुभवप्रकाश—दीपचन्द। पत्र संख्या-२२। साइज-१२½×८ इंच। भाषा-हिंदी गद्य। विषय-धर्म। रचना काल-सं० १७८१ पौष सुदी ५। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८४५।

१४७ अरहन्त स्वरूप वर्णन—पत्र संख्या-३। साइज-८×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ११४४।

१४८ आचारसार—वीरनन्दि। पत्र संख्या-८२। साइज-११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८१६ वैशाख बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन नं० १७७।

विशेष—प्रति उत्तम है, क्लिष्ट शब्दों के संस्कृत में अर्थ भी दिये हुये हैं।

१४६. आचारसारवृत्ति—वसुनन्दि। पत्र संख्या-३१०। साइज-१२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७।

विशेष—मूलकर्त्ता आ० वट्टकेर स्वामी हैं। मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा में है।

१५०. उपदेशरत्नमाला—सकलभूषण। पत्र संख्या-६०। साइज-१२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। रचना काल-सं० १६२७ श्रावण सुदी ५। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १५६।

विशेष—रचना का दूसरा नाम षटकर्मोपदेशरत्नमाला भी है। इस ग्रंथ की ४ प्रतियां और हैं वे सभी पूर्ण हैं।

१५१ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला—भंडारी नेमिचन्द्र। पत्र संख्या-११। साइज-१०½×४½ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८११ श्रावण सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० १५७।

विशेष—महात्मा सीताराम ने नोनदराम के पठनार्थ लिपि कराई थी।

१५२. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा। पत्र संख्या-२०। साइज-११½×४½ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-धर्म। रचना काल-सं० १७७२ चैत्र सुदी १४। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७६।

विशेष—भाषाकार के मतानुसार उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला की रचना सर्व प्रथम प्राकृत भाषा में धर्मदास गणि ने की थी। उसी ग्रंथ का संक्षिप्त सार लेकर भंडारी नेमिचन्द ने ग्रन्थ रचना की थी। भाषाकार ने भंडारी नेमिचन्द की रचना की ही हिन्दी की है।

प्रारम्भ—शुद्ध देव अरहत गुरू, धर्म्म पंच नवकार।
वसै निरंतर जासु हिय, धन्यकृती नर सार ॥१॥

पठइन गुणइन दानन देहि, तप आचार नहु नांहि करेहि ।
जो हिय एक देव अरिहत, ताप त्रय न आताप करंत ॥२॥

अन्तिम पाठ—

इम भडारी नेमिचद, रची कितीयक गाह ।
सुमगरक्त जे भवि पठत, जीनतु सिव सुख लाह ॥६१॥
यह उपदेश रतन माला सुभ, ग्रंथ रच्यो भ्रमदामगणी,
ता महिं केतक गाह घनोपम नेमिचन्द भडार भणी ।
जिनवर धरम प्रभावन काजह भाष रच्यो अनुबुद्धि तणी ।
जाके पढत सुनत सर्वधारत आतम हुइ वर सिव रमणी ॥६२॥
सवत् सतरह सै सतरि अधिक दोय पख सेत ।
चैत मास चातुरदसी, पूरन भयो सु एत ॥१६३॥

१५३ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला—भागचन्द्र । पत्र सख्या-६२ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-स० १६१२ आषाढ बुदी २ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४०७ ।

१५४ उपासकदशा सूत्र विवरण—अभयदेव सूरि । पत्र सख्या-१८ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १७६ ।

विशेष—उपासक दशा सूत्र श्वे० सम्प्रदाय का सातवा अग है जो दश अध्यायों मे विभक्त है । सस्कृत में यह विवरण अति सक्षिप्त है । विवरण का प्रथम पद्य निम्न प्रकार है—

श्रीवर्द्धमानमानम्य व्याख्या काचिद् विधीयते
उपासकदशादीना प्रायो ग्रथातरेक्षिता' ॥१॥

१५५ उपासकाचार दोहा—लक्ष्मीचन्द्र । पत्र सख्या-२७ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रश (प्राचीन हिन्दी) । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८२१ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० १७८ ।

विशेष—दोहों की सख्या २२४ है ।

१५६ कर्मचरित्र बाईसी—रामचन्द्र । पत्र सख्या-५ । साइज-६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५५७ ।

विशेष—३ पत्र मे आगे दौलतरामजी के पद हैं ।

१५७ क्रियाकोश भाषा—किशनसिंह । पत्र सख्या-११४ । साइज-१०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी

पद्य । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-स० १७८८ भादवा सुदी १५ । लेखन काल-स० १८४६ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१० ।

विशेष—भण्डार में ग्रन्थ की ११ प्रतिया और हैं जो सभी पूर्ण हैं ।

१५८ **गुणतीसो भावना**—पत्र सख्या-२ । साइज-११½×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १०७६ ।

विशेष—हिन्दी गद्य मे गाथाओं के ऊपर अर्थ दिया हुआ है । गाथाओं की संख्या २६ है ।

१५६. **गुरोपदेश श्रावकाचार—डालूराम।** पत्र संख्या-१३३ । साइज-१२½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन न० ८८० ।

विशेष—पचेवर मे ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

१६० **चारित्रसार (भावनासार संग्रह) चामुण्डराय ।** पत्र सख्या-११० । साइज-६½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १०५ ।

विशेष—प्रथम खड तक है तथा अतिम प्रशस्ति अपूर्ण है ।

१६१ **चारित्रसार पजिका**—पत्र सख्या-८ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १०६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । चरित्रसार टिप्पण भी नाम दिया हुआ है । टिप्पण अति सक्षिप्त है ।

प्रारम्भिक मगलाचरण निम्न प्रकार है—

नमोनतसुखज्ञानदृग्वीर्याय जिनेशिने ।
ससारवारापारास्मिन्निमज्जज्जीवतापिने ॥१॥
चारित्रसारे श्रुतसारं संग्रहे यन्मंदबुद्धे स्तमस्तावृत्त पद ।
अव्यक्तये व्यक्तपदप्रयोगत प्रारभ्यते विद्वद्मीष्टपंजिका ॥२॥

१६२ **चारित्रसार भाषा—मन्नालाल** । पत्र सख्या-२३५ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-स० १८७१ । लेखन काल-स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५५ ।

आदि भाग (पद्य)— श्री जिनेन्द्र चन्द्रा । परम मगलमादिशतु तराम् ।

दोहा —परम धरम रथ नेमि सम, नेमिचन्द्र जिनराय ।
मगल कर अघ हर विमल, नमो सुमन-वच-काय ॥१॥

भव अथाह सागर परे, जगत जंतु दुख पात ।
करि गहि काढत तिनहि यह, जैन धर्म विख्यात ॥२॥
करत परम पद विदश सुख, धारत गुण विस्तार ।
नमों ताहि चित हरष धरि, करुणामृत रस धार ॥३॥

मध्यभाग (गद्य)'—(पत्र स० ६४) मदिरा को पीवै तथा और हू मादिक वस्तु भक्षण करै तब प्रमाद तें बधन तें विवेक का नाश होय । ताके नाश होतें हित अहित का विचार होता नाहीं । ऐसें धर्म कार्य तथा कर्म उन छोडन हूतें भ्रष्ट होहि तातें इस मद्यवत तथा मादिक वस्तु का सर्वथा प्रकार त्याग ही करना जोग्य है । ऐसा जानना ।

ग्रथोत्पत्ति वर्णन–प्रशस्ति —

सर्वाकाश अनन्त प्रमान । ताके बीच ठीक पहचान ॥
लोकाकाश असंख्य प्रदेश. उरिध मध्य अधा भुमेश ॥१॥
मध्यलोक में जंबू दीप । सो है सब द्वीपनि अवनीप ॥
ता मधि मेरु सुदर्शन जान । मानूं भूमि दंड है मान ॥२॥
ता दक्षिण दिश भरत सु नाम । क्षेत्र प्रकट सोहै सुरधाम ॥
ताके मध्य ढूंढाहड देश । बहु शोभा जुत लसै अशेष ॥३॥
तहां सवाई जयपुर नाम । नगर लसत रचना अभिराम ॥
बहु जिन मंदिर सहित मनोग्य । मानु सुर गण बसने जोग्य ॥४॥
जगत सिंह राजा तसु जान । कंपत अरिगन करें प्रनाम ॥
तेजवत जसवत विशाल । रीझत गुन गन करत निहाल ॥५॥
जहां वसै बहु जैंनी लोग । सेवत धर्म वमै दुख रोग ॥
तिन मधि सांगा वस विशाल । जोगिदास सुत मन्नालाल ॥६॥
बालपने ते सगति पाय । वियाभ्यास कियो मन लाय ॥
जैन ग्रथ देखे कुछ सार । जयचंद नंदलाल उपकार ॥७॥
हस्तिनागपुर तीर्थ महान । तहि वदन आयो सुख धाम ॥
इन्द्रप्रस्थ पुर शोभा होइ । देखैं भयो अधिक मन मोद ॥८॥
तहां राज अँगरेज करत । हुकम अपनी छत्र फिरंत ॥
बादस्याह अकबर सिर सेत । सेवक जननि द्रव्य बहु देत ॥९॥
हरसुख राय खजाना वंत । तिनके सोहै धरम धरंत ॥
अगरवाल गोत्री गुण नाम । सुगनचन्द्र तसु पुत्र सुजान ॥१०॥
मदिर तिनि नैं रच्यो महत । जिनवर तनो धूजा लहकंत ॥

बहु विधि रचना रची तसु मांहि । शोभा वरनत पार न पांहि ॥११॥

ताके दर्शन कर सुख राशि । प्रापत भई रंक निधि भासि ॥

कारन एक भयो तिहि ठाम । रहने को भाषू तसु नाम ॥१२॥

मंत्री जगतसिंह को नाम । श्रमरचन्द्र नामा गुणधाम ॥

रहै बहुत सज्जन सुखदाय । धर्म राग शोभित अधिकाय ॥१३॥

मोतैं अधिक प्रीति मन धरै । तिनि अटकायो मैं हित खरैं ॥

ता कारण विरता तिहि पाय । सुगनचद्र के कहै सुभाय ॥१४॥

चारित्रसार ग्रंथ की भाष । वचन रूप यह करी सुसाख ॥

ठाकुरदास श्रौर इन्दराज । इनि भाइन के बुद्धि समाज ॥१५॥

मदबुद्धितैं अर्थ विशेष । तहि प्रतिभास्यो होय अशेष ॥

सुधी ताहि नीकै ठानियो । पक्षिपात मत ना मानियो ॥१६॥

अनेकांत यह जैन सिधत । नय समुद्र वर कहि विलसंत ॥

गुरुवच पोत पाय भवि जीव । लहो पार सुख करत सदीव ॥१७॥

जयवती यह होउ दिनेश । चन्द नखत उडु वजावत शेष ॥

पढो पढावो भव्य संसार । वढो धर्म जिनवर सुखकार ॥१८॥

संवत एक सात अठ एक । माघ मास सित पचमि नेक ॥

मंगल दिन यह पूरण करी । नांदो विरधो गुण गण भरी ॥१९॥

दोहा—शुभ चिंतक जु लेखका दयाचंद यह जानि ।

लिख्यो ग्रंथ तिनि नै एहै वाचो पढो सुहसांनि ॥

विशेष—ग्रंथ की एक प्रति श्रौर है लेकिन अपूर्ण है ।

१६३. चिद्विलास-दीपचन्द—पत्र संख्या-५० । साइज-१२½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल- सं० १७७९ फाल्गुण बुदी ५ । लेखन काल-सं० १७८४ वैशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३९ ।

१६४. चौरासी बोल—हेमराज । पत्र संख्या-१४ । साइज-११½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७१ ।

१६५. चौवीस दंडक—पत्र संख्या-२८ । साइज-७×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल सं० १८५४ श्रावण सुदी ९ । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० ५४७ ।

विशेष—१४ वें पत्र के आगे बारह भावना तथा बाईस परीषह का वर्णन है । दंडक में ११८ पद्य हैं ।

१६६. **चौवीस दण्डक—दौलतराम** । पत्र संख्या-१ । साइज-७×२१½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८५ ।

१६७. **जिनगुण पच्चीसी**—पत्र संख्या-२२ । साइज-११×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८०५ ।

१६८. **जीवों की संख्या वर्णन**—पत्र संख्या-८ । साइज-७×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३६ ।

१६९ **ज्ञान चिन्तामणि—मनोहरदास** । पत्र संख्या-१० । साइज-१०½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १७२८ माह सुदी ८ । लेखन काल-सं० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८०६ ।

१७० **ज्ञान मार्गणा**—पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६४ ।

विशेष—मार्गणाओं का वर्णन संक्षेप में दिया हुआ है।

१७१ **ज्ञानानन्द श्रावकाचार—रायमल्ल** । पत्र संख्या-१११ । साइज-११×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४८ ।

१७२. **ढाल गण-सूरत** । पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०६ ।

१७३ **त्रेपनक्रियाविधि—पं० दौलतराम** । पत्र संख्या-१०४ । साइज-११×६ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १७६५, भादवा सुदी १२ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७७७ ।

विशेष—कवि ने यह रचना उदयपुर में समाप्त की थी।

१७४. **दशलक्षणधर्म वर्णन**—पत्र संख्या-२६ । साइज-१२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७६ ।

विशेष—दश धर्मों का हिन्दी गद्य में संक्षिप्त वर्णन है।

१७५ **दर्शनपच्चीसी—आरतराम** । पत्रसंख्या-११ । साईज-११½×४½ इंच । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०३ ।

विशेष—फुटकर सवैया भी हैं। एक प्रति और है जिसका वेष्टन नं० ५०६ है।

१७६ **देहव्ययाकथन**—पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३० ।

विशेष—देह को किस २ प्रकार से व्यथा है इसका वर्णन किया हुआ है

१७७. धर्म परीक्षा—आचार्य अमितगति । पत्र सख्या-८८ । साइज-११½×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-स० १०७७ । लेखन काल-स० १७६२ पौष शुक्ला २ । पूर्ण । वेष्टन न० १८७ ।

विशेष—वृन्दावती गढ (वृन्दावन) में प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है । स० १७६२ मिति पौषमासे शुक्लपक्षे द्वितीया दिवसे वार शुक्रवार लिखितं गढ वृन्दावती मध्ये श्री राव बुधसिंह राज्ये नेमिनाथचैत्यालये भट्टारक श्री जगतकीर्ति आचार्य श्री शुभचन्द्रेन शिष्य नानकरामेन शुभं भवत् ।

ग्रंथ की एक प्रति और है जो स० १७२६ में लिखित है । वेष्टन न० १८८ है ।

१७८. धर्म परीक्षा—मनोहरदास सोनी । पत्र सख्या-१२४ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । (पद्य) विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७६३ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६६ ।

विशेष—हिन्डौन में प्रतिलिपि हुई थी ।

इसी ग्रथ की पांच प्रतिया और हैं जो सभी पूर्ण हैं तथा उत्तम हैं ।

१७६. धर्मविलास—द्यानतराय । पत्र सख्या-२१६ । साइज-१०½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन न० ७२३ ।

विशेष—द्यानतरायजी की रचनाओं का संग्रह है ।

१८० धर्मरसायन—पद्मनन्दि । पत्र सख्या-१६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २७ ।

विशेष—ग्रथ की एक प्रति और है जो सवत् १८५४ में लिखी हुई है । वेष्टन न० २८ है ।

१८१. धर्मसार चौपई—प० शिरोमणिदास । पत्र सख्या-३६ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १७३२ बैसाख सुदी ३ । लेखन काल-१८३६ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन न० ८६६ ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । इसमें हिन्दी के ७६३ छन्द हैं । रचना काल निम्न पंक्तियों से जाना जा सकता है ।

सवत् १७३२ वैशाख मास उज्ज्वल पुनि दीस ।
तृतीया अक्षय शनौ समेत भविजन को मगल सुख देत ॥

१८२. धर्मपरीक्षा भाषा—बा. दुलीचन्द । पत्र सख्या- २७२ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-स० १८६८ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७८६ ।

विशेष—अंतिम पत्र नहीं है । मूल कर्ता आचार्य अमित गति हैं ।

१८३ **धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा—चपाराम।** पत्र संख्या–१६० । साइज–१२×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–आचार । रचना काल–सं० १८६८ भादवा सुदी ५ । लेखन काल–स० १८६० भादवा सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६० ।

विशेष—दीपचन्द के पौत्र तथा हीरालाल के पुत्र चम्पाराम ने सवाई माधोपुर मे ग्रन्थ रचना की थी । विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है ।

१८४ **धर्मसंग्रह श्रावकाचार—प० मेधावी** । पत्र संख्या–४६ । साइज–११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत विषय–आचार । रचना काल–स० १५४१ । लेखन काल–स० १८३० । पूर्ण । वेष्टन न० १८६ ।

विशेष—सवाई जयपुर में मोपतिराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१८५ **धर्मोपदेशश्रावकाचार—ब्र० नेमिदत्त** । पत्र संख्या–३० । साइज–१०½×५ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार । रचना काल–× । लेखन काल–स० १६३३ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० १८२ ।

विशेष—चपावती दुर्ग के आदिनाथ चैत्यालय में महाराजाधिराज श्री भगवतदासजी के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१८६. **प्रति न० २**—पत्र संख्या–१७ । साइज–११×५½ इच । लेखन काल–सं० १६०६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० १८३ ।

विशेष—टोडा दुर्ग (टोडारायसिंह) में महाराजाधिराज श्री रामचन्द्र के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

१८७. **नरक दु ख वर्णन**—पत्र संख्या–३–६ । साइज–१२×६ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६१८ ।

१८८. **नरक दु ख वर्णन**—पत्र संख्या–३ । साइज–११½×४½ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० १०४७ ।

१८९. **नरक दु ख वर्णन**—पत्र संख्या–६२ । साइज–६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८१६ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१६ ।

विशेष—भाषा ढूंढारी है तथा उर्दू के शब्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है । नरकों के वर्णन के आगे अन्य वर्णन जैसे स्वर्ग, मार्गणायें तथा काल अन्तर आदि का वर्णन भी दिया हुआ है ।

१९०. **पद्मनन्दिपंचविंशति—पद्मनन्दि** । पत्र संख्या–६७ । साइज–१०½×५ इच । भाषा प्राकृत–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल– × । पूर्ण वेष्टन नं० ३ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१६१. प्रति न० २—पत्र संख्या-६६ । साइज-१०½×४ इंच । लेखन काल-सं० १५३२ फागुन सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन न० ११ ।

विशेष—स० १५३२ फागुण सुदी प्रतिपदा सोमवासरे उत्तरानक्षत्रे शुभनामजोगे श्री कुन्दकुन्दाचार्यन्वये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री सिंह कीर्ति देवा तत् शिष्य प्रभाचन्द्र पठनाय दत्त पुण्यार्थं इच्वाकु वंशे अश्वपतिना दत्तं शुभं भवतु ।

१६२ पद्मनंदिपच्चीसी भाषा—मन्नालाल खिंदूका । पत्र संख्या-१६८ । साइज-१०½×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १९१५ । लेखन काल-सं० १९३५ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६७

१६३. परीषह विवरण—पत्र संख्या-३ । साइज-१२×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५५ ।

१६४ प्रतिक्रमण—पत्र संख्या-५ । साइज-१०½×४½ इंच । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६३ ।

१६५ प्रबोधसार—महा प० यशःकीर्त्ति । पत्र संख्या-२८ । साइज-८×३½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५२५ मगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० १७६ ।

विशेष—रचना में ४७८ पद्य हैं । प्रशस्ति अपूर्ण है जो निम्न प्रकार है—

संवत् १५२५ वर्षे मार्गसुदी १५ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत् शिष्य भ० श्री हेमकीर्ति देवा तस्योपदेशात् जैसवालान्वये इच्वाकु वंशे सा० ... ...

१६६. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—बुलाकीदास । पत्र संख्या-१४३ । साइज-१२×५ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८४ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६४ ।

विशेष—प० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७. प्रायश्चित्तसमुच्चय—नंदिगुरु । पत्र संख्या-१०० । साइज-१२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६६ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० २६ ।

१६८. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-६२ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

१६६. प्रति न० २—पत्र संख्या-१०८ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-सं० १६३२ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० १६० ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत्सरेस्मिन विक्रमादित्य १६३० वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे पचम्यां तिथौ शुक्रवासरे मालवदेशे चन्देरीगढदुर्गे पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये तदाम्नाये महावादवादीश्वर मंडलाचार्य श्री श्री देवेन्द्रकीर्तिदेव । तत्पट्टे भं० आचार्य श्री त्रिभुवनकीर्ति देव । तत्पट्टे भ० श्री सहस्रकीर्तिदेव । तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री पद्मनदि देव । तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यश'कीर्ति' । तत्पट्टे भ० श्री ललितकीर्ति लिखितं पडित रत्न पठनार्थं इदं उपासकाचार ग्रन्थ लिखित ।

२००. प्रति न० ४३ – पत्र सख्या-१२२ । साइज-११×४½ इच । लेखन काल-स० १६४८ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न०'१६१ ।

विशेष—सहारनपुर नगर बादशाह श्री अकबर जलालुद्दीन के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

इस ग्रन्थ की भण्डार में ५ प्रतियां और हैं जिनमे २ प्रतियां अपूर्ण हैं ।

२०१. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार—सकलकीर्त्ति । पत्र सख्या-६२ । साइज-११½×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन न० १८५ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है प्रथम पत्र नवीन है ।

२०२ प्रति न० २—पत्र सख्या-७२ । साइज-११×५ इच । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० १८४ ।

२०३. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सख्या-३८ । साइज-१४×८ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६२७ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० ६३ ।

विशेष—इसका दूसरा नाम जिन प्रवचन रहस्य कोश भी है । प्रति सस्कृत टीका सहित है तथा टीका का नाम त्रिपाठी है । सस्कृत पद्यों पर टीका लिखी हुई है ।

२०४ पुरुषार्थसिद्धयुपाय—पडित टोडरमलजी । पत्र सख्या-१११ । साइज-११×७½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-स० १८२७ । लेखन काल-सं० १६३८ माघ सुदी १ । पूर्ण वेष्टन न० ३६६ ।

विशेष—ग्रन्थ की २ प्रतियां और हैं लेकिन वे दोनों ही अपूर्ण है ।

२०५. ब्रह्मविलास—भगवतीदास । पत्र सख्या-११६ । साइज १०½×७½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-१७५५ । लेखन काल-१८८६ । अपूर्ण । वेष्टन न० ७२६ ।

विशेष—भैय्या भगवतीदास की रचनाओं का सग्रह है । विलास की एक प्रति और है वह अपूर्ण है ।

२०६. बाईस परीषह वर्णन—पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×६½ इञ्च । रचनाकाल-× । लेखन काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन न० ६६० ।

विशेष—ग्रन्थ गुटका साइज है ।

२०७ भगवती आराधना भाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र सख्या–५३४ । साइज–११×७½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–सं० १६०८ भादवा सुदी २ । लेखन काल–सं० १६०८ माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६० ।

२०८. मालामहोत्सव—विनोदीलाल । पत्र सख्या–३ । साइज–११×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८६८ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० ५५६ ।

२०६ मूलाचार प्रदीपिका—भट्टारक सकलकीर्ति । पत्र सख्या–६१ । साइज–११½×८½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन न० ३८ ।

विशेष—ग्र थ मे बारह अधिकार हैं । सालिगराम गोधा ने स्वपठनार्थ जयपुर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

२१० प्रति न० २—पत्र सख्या–१३७ । साइज–१२×५ इञ्च । लेखन काल–स० १५८१ पौष सुदी २ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति स० १५८१ वर्षे पोपमासे द्वितीयाया तिथौ सोमवासरे अद्येह वीजापुर वास्तव्ये मेदपाट ज्ञातीय ज्योति श्री वलिराज सुत लीलाधर केन पुस्तिका लिखिता । श्री मूलसघे ब्रह्म श्री राजपाल तत् शिष्य ब्र० कर्मश्री पठनार्थं ।

२११ मूलाचार भाषा टीका—ऋषभदास । पत्र संख्या–२२७ । साइज–१५×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–स० १८८८ कार्तिक सुदी ७ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ७८२ ।

विशेष—वट्टकेर स्वामी की मूल पर आधारित वसुनदि की आचार वृत्ति नाम का टीका के अनुसार भाषा हुई है ।

प्रारम्भ—वदौ श्री जिन सिद्धपद आचारिज उवझाय ।
माधु धर्म जिन भारती, जिन गृह चैत्य सहाय ॥१॥
वट्टकेर स्वामी प्रणमि, नमि वसुनंदि सूरि ।
मूलाचार विचार के भाखौ लखि गुण भूरि ॥२॥

अन्तिम पाठ—वसुनदि सिद्धान्त चक्रवर्त्ति करि रची टीका है सो चिरकाल पर्यं त पृथ्वी विषें तिष्ठहु । कैसी है टीका सर्व अर्थनि की है सिद्धि जातें । बहुरि कैसी है समस्त गुणनि की निधि । बहुरि ग्रहण करि है नीति जानें ऐसो जो आचारज कहिये मुनिनि का आचरण ताके सूक्ष्म भावनि की है अनुवृत्ति कहिये प्रवृत्ति जातै । बहुरि विख्यात है अठारह दोष रहित प्रवृत्ति जाकी ऐसा जो जिनपति कहिये जिनेश्वर देव ताके निर्दोष वचनि करि प्रसिद्ध । बहुरि पाप रूप मल की दूर करण हारी । बहुरि सुन्दर ।

२१२ मोक्ष पैडी—बनारसीदास । पत्र सख्या–३ । साइज–१०½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ५६४ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२१३. मोक्षमार्ग प्रकाश—प० टोडरमल । पत्र सख्या-१६० । साइज-१३½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (ढू ढारी) । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २ ।

विशेष—प्रति सशोधित की हुई है ।

२१४. प्रति नं० २—पत्र सख्या- २०७ । साइज-१०×५½ इञ्च । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ७११ ।

विशेष—यह प्रति स्वय पं० टोडरमलजी के हाथ की लिखी हुई है । इसके अतिरिक्त ग्र थ की २ प्रति और हैं लेकिन वे भी अपूर्ण है ।

२१५. मोक्षसुख वर्णन—पत्र सख्या-१३ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ८७० ।

२१६ यत्याचार—वसुनदि । पत्र सख्या-६७ से २०७ । साइज-१५×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६५ चैत्र सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन न० ६८६ ।

विशेष—अमरचन्द दीवान के पठनार्थ ग्र थ की प्रतिलिपि की गयी थी ।

२१७ रत्नकरडश्रावकाचार—आ० समतभद्र । पत्र सख्या-१० । साइज-८½×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६०० भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ७१ ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी । श्रावकाचार की ३ प्रतियां और हैं ।

२१८. रत्नकरडश्रावकाचार टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या-५२ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७४० ।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र फिर से लिखवाये हुये हैं । टीका की एक प्रति और है ।

२१६. रत्नकरण्डश्रावकाचार—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या-४७६ । साइज-१२½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-सं० १६२० चैत्र सुदी १४ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ७७६ ।

विशेष—प्रति उत्तम है । ग्र थ की २ प्रतिया और हैं । दोनों ही अपूर्ण हैं ।

२२०. व्रतोद्योतन श्रावकाचार—अभ्रदेव । पत्र संख्या-१७ । साइज-१०×५½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८३५ आषाढ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ८६४ ।

२२१. वृहद् प्रतिक्रमण—पत्र सख्या-२७ । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७४० श्रावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० १४७ ।

विशेष—मुनिभुवनभूषण ने बाली में प्रतिलिपि की थी ।

२२२. श्रद्धान निर्णय—पत्र सख्या-२८ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३८४ ।

विशेष—ज्ञानाबाई ओसवाल कोठ्यारी के पठनार्थ तेरह पंथियों के मदिर में प्रतिलिपि की गई । धार्मिक चर्चाओं का सग्रह है । ग्रथ की एक प्रति और है ।

२२३. श्रावकक्रियावर्णन—पत्र सख्या-१६ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५५० ।

२२४. श्रावक-दिनकृत्य वर्णन—पत्र सख्या-३-८ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६३२ ।

विशेष—प्रति दिन करने योग्य कार्यों पर प्रकाश डाला गया है ।

२२५. श्रावकधर्म वचनिका—पत्र सख्या-१ । साइज-७½×३१ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६८४ ।

विशेष—स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा में से श्रावक धर्म का वर्णन है ।

२२६. श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र (छाया युक्त)—पत्र सख्या-२ से ३६ । साइज-६½×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६८२ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है संस्कृत में भी अर्थ दिया हुआ है ।

२२७. श्रावकाचार—स्वामी पूज्यपाद । पत्र सख्या-५ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १७१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२८. श्रावकाचार—वसुनन्दि । पत्र संख्या-३५ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६३० । चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—ग्रथ की प्रतिलिपि मोजमाबाद (जयपुर) में हुई थी । ग्रथ की एक प्रति और है वह अपूर्ण है ।

२२९. श्रावकाचार—पद्मनन्दि । पत्र सख्या-६६ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १७२ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२३०. श्रावकाचार—पत्र सख्या-२७ । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र ।

रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० १७४ ।

विशेष—ग्रंथ पर निम्न शब्द लिखे हुये हैं जो शायद बाद के हैं—ये श्रावकाचार उमास्वामि का बनाया हुवा नहा है कोई जैन धर्म का द्रोही का बनाया हुआ है । झूठा होगा सावत हैं ।

२३१ श्रावकाचार – पत्र संख्या–११ । साइज–१०¾×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १५३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७८ ।

२३२ श्रावकाचार—अमितगति । पत्र संख्या–६६ । साइज–११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १६१८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८१ ।

२३३ श्रावकाचार—गुणभूषणाचार्य । पत्र संख्या–१२ । साइज–१२×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १७८७ वैसाख बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७० ।

२३४ षोडशकारण भावना वर्णन—पत्र संख्या–८० । साइज–१२×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७८ ।

विशेष—दशलक्षण धर्म का भी वर्णन है ।

२३५ सम्मेदशिखरमहात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र संख्या–७८ । साइज–८×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १७८५ । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७०२ ।

२३६ सम्मेदशिखरमहात्म्य—मनसुखसागर । पत्र संख्या–१६५ । साइज–११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७८ ।

विशेष—लोहाचार्य विरचित 'तीर्थ महात्म्य' में से सम्मेदाचल महात्म्य की भाषा है । महात्म्य की एक प्रति और है जो अपूर्ण है ।

२३७ सम्यक्त्व पच्चीसी—भगवतीदास । पत्र संख्या–२ । साइज–६¾×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६४ ।

२३८. सम्यगप्रकाश—डालूराम पत्र संख्या–५ । साइज–११×८ इन्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १८७१ चैत्र सुदी १५ । लेखन काल–सं० वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४४ ।

२३९ सबोधपचासिका—रइधू । पत्र संख्या–३ । साइज–११×६ इंच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–धर्म । रचना काल–X । लेखन काल– X । पूर्ण । वेष्टन नं० १० ।

विशेष—गाथाओं की संख्या ४६ है । अंतिम गाथा निम्न प्रकार है—

सावय मासम्मिकया, गाहा वधेया विरइ य सुयह ।
कहियं समुच्चयत्व, पइढिज्जत च सुहवोह ॥४६॥

२४०. संबोधपंचासिका—द्यानतराय । पत्र संख्या-४ । साइज-८×६½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६१५ ।

२४१. संबोध सत्तरी सार" । पत्र सख्या-५ । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचनाकाल-× । लेखन काल-स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन न० २०६४ ।

विशेष—पत्र ४-५ में सम्यक्त्व फल वर्णित है । भाषा पुरानी हिन्दी है ।

सत्तरी में ७० पद्य हैं । अन्तिम पद निम्न प्रकार है—
जे नरा. ध्यानज्ञानं च स्थिरचित्तोऽर्थग्राहका: ।
क्षीयते अष्टकर्माणि सारसवोधसत्तरी ॥७०॥

२४२. सागारधर्मामृत—प० आशाधर । पत्र सख्या-५१ । साइज-११×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १२९६ पौष सुदी ७ । लेखन काल-स० १६२५ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० १८० ।

२४३. सामायिक महात्म्य— पत्र सख्या-५ । साइज-७½×५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६६५ ।

२४४ सारसमुच्चय—कुलभद्र । पत्र सख्या-१६ । साइज-१०×८ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५४५ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—सघी श्री छाजू अग्रवाल ने ग्र थ लिखवाया था । तथा श्री भैरोंवक्स ने प्रतिलिपि की थी ।

सारसमुच्चय का दूसरा नाम ग्र थसार समुच्चय भी है । इसमें ३३० श्लोक हैं ।

प्रारम्भ—
देवदेव जिन नत्वा भवोद्भवविनाशन ।
वक्ष्येहं देशनां काचित् मतिहीनोऽपि भक्तित: ॥१॥
ससारे पर्यटन् जतुर्बहुयोनि-समाकुलो ।
शरीरं मानस दु:ख प्राप्नोतीति दारुणं ॥२॥

अन्तिम पाठ—
अय तु कुलभद्रेण भवविच्छित्ति-कारण ।
दृष्टो वालस्वभावेन ग्रंथ: सारसमुच्चय: ॥३२६॥
ये भक्त्या भावयिष्यन्ति, भवकारणनाशन ।

अचिरेणैवकालेन, सुख प्राप्स्यति शाश्वतं ॥३२८॥
सारसमुच्चयमेतेच पठति समाहिता ।
ते स्वल्पेनैव कालेन पद यास्यंतिनामयं ॥३२९॥
नम परमध्यान विघ्ननाशनहेतवे ।
महाकल्याणसंपत्ति कारिणोरिष्टनेमये ॥३३०॥

इति सारसमुच्चयाख्यो ग्रंथ समाप्त ।

२४५ सारसमुच्चय—दौलतराम । पत्र संख्या-१८ । साइज-६½×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८२ ।

विशेष—सारसमुच्चय के अतिरिक्त पूजाओं का संग्रह है । सार समुच्चय में १०८ पद्य हैं । अंतिम पद्य निम्न प्रकार है—

सार समुच्चै ग्रंह रच्यो गुर आग्या परवान ।
आनंद सुत दौलति नैं नमि करि श्री भगवान ॥१०८॥

२४६ सुगुरु शतक—जिनदास गोधा । पत्र संख्या-७ । साइज-१×३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचनाकाल-सं० १८०० । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०२ ।

विशेष—१०१ पद्य हैं ।

विषय-अध्यात्म एवं योग शास्त्र

२४७. अध्यात्मकमल मार्त्तण्ड—राजमल्ल । पत्र संख्या-१२ । साइज-१०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३१ फाल्गुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३ ।

विशेष—सं० १५८२ में मदनकीर्ति ने अर्गलपुर (आगरा) में प्रतिलिपि की थी । ग्रंथ ४ अध्यायों में पूर्ण होता है ।

२४८. अध्यात्म बारहखडी—दौलतराम । पत्र संख्या-६७ । साइज-६½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-अध्यात्म । रचना काल-सं० १७९८ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३८७ ।

२४६. अष्टपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र सख्या–६ से ५७। साइज–१०½×५ इच। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन न० ६३।

विशेष—ग्र थ की २ प्रतिया और हैं लेकिन वे दोनों ही अपूर्ण हैं।

२५०. अष्टपाहुड भाषा—जयचन्द्र छावडा। पत्र सख्या ८१ से १२३। साइज–११×८ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। रचना काल–स० १८६७। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन न० ८१०।

विशेष—ग्र थ की एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण है।

५१ आत्मसबोधन काव्य—रइधू। पत्र सख्या–२८। साइज–११×४½ इञ्च। भाषा–अपभ्र श। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–स० १६१६ द्वितीय श्रावण बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन न० २४।

विशेष—अलवर नगर में प्रतिलिपि हुई थी।

२५२. आत्मानुशासन—आचार्य गुणभद्र। पत्र सख्या–२३। साइज–१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–स० १७७० भादवा सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन न० ३४।

विशेष—साह ईसर अजमेरा ने वून्दी नगर में प्रतिलिपि की थी। ग्र थ की २ प्रतिया और हैं।

२५३. आत्मानुशासन टीका—टीकाकार प० प्रभाचन्द्र। पत्र संख्या–७१। साइज–१०×४½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–अध्यात्म। रचनाकाल–×। लेखन काल–स० १५८१ चैत्र बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन न० ३३।

विशेष—पत्र ३८ तक फिर से प्रतिलिपि की हुई है, नवीन पत्र हैं। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १५८१ वर्षे चैत्र बुदी ६ गुरूवासरे घटपालीनाम नगरे राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र देवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये साह गोत्रे चतुर्विधदानवितरण कल्पवृक्ष साह काधिल तद्भार्या कावलदे तयो' पुत्रा. त्रय प्रथम साह गूजर, द्वितीय सा० राधै जिनचरणकमलचचरीकान् दान पूजा समुद्यतान् परोपकारनिरतान् प्रस्वस्थ चिन्वान् सम्यक्त्व प्रतिपालकान् श्री सर्वज्ञोक्त धर्मरंजितचैतसान कुटुम्ब साधारकान रत्नत्रयालंकृत दिव्य देहान् अहाराभयशास्त्रदानसमुन्नितान् त्रयो साह वच्छराज तद्भार्या पतिव्रता पद्मा तस्या पुत्र परम श्रावक साह पचाइण तद्भार्या प्रतापदे तत्पुत्र साह दूलह एतेषां मध्ये सा० वच्छराज इदं शास्त्र लिखायित सत्पात्राय मुनि श्री माघनन्दिने दत्तं कर्मक्षयार्थं। गौरवश सेठ श्री खेऊ तस्य पुत्र पदारथ लिखितं।

२५४. आत्मानुशासन भाषा—पं० टोडरमल। पत्र सख्या–५६। साइज १०×७ इच। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन न० ७१०

विशेष—प्रति स्वयं प० टोडरमलजी के हाथ की लिखी हुई है। इस प्रति के अतिरिक्त ८ प्रतियां और हैं।

उनमें से तीन प्रतियां अपूर्ण हैं।

२५५. आत्मावलोकन—दीपचन्द कासलीवाल। पत्र सख्या–६४। साइज–११×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय-अध्यात्म। रचना काल–सं० १७७७। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७६१।

२५६ आराधनासार—देवसेन। पत्र संख्या–१६। साइज–१०½×४¾ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३५।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त टिप्पण दी हुई है। दो प्रतियां और हैं।

२५७ चार ध्यान का वर्णन। पत्र सख्या–२३। साइज–६×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–योग। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण वेष्टन नं० ५३७।

२५८ चौरासी आसन भेद। पत्र सख्या–११। साइज–८×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-योग। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७८८। पूर्ण। वेष्टन नं० १३६।

विशेष—पं० लूणकरण के शिष्य पं० खीवसी ने प्रतिलिपि की।

२५९ ज्ञानार्णव—आचार्य शुभचन्द्र। पत्र संख्या–१२८। साइज–१०½×५। भाषा–संस्कृत। विषय–योग शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८१६। पूर्ण। वेष्टन नं० ३०।

विशेष—पं० श्री कृष्णदास ने प्रतिलिपि कराई थी। ग्रंथ की २ प्रतियां और हैं।

२६०. ज्ञानार्णव भाषा—जयचन्द छावड़ा। पत्र सख्या–३६६। साइज–१०½×७½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–योग। रचना काल–सं० १८६६। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४००।

२६१ ज्ञानार्णव भाषा। पत्र संख्या–१६। साइज–१३×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–योग। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ५१६।

विशेष—प्राणायाम प्रकरण का ही वर्णन है।

२६२ द्वादशानुप्रेक्षा। पत्र संख्या–४४। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८२८।

विशेष—प्राकृत भाषा में गाथा दी हुई है और फिर उन पर हिन्दी गद्य में अर्थ लिखा हुआ है।

२६३. द्वादशानुप्रेक्षा। पत्र सख्या–१ से ५। साइज–१०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१६।

२६४. द्वादशानुप्रेक्षा। पत्र सख्या–६। साइज–११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५५१।

२६५. **परमात्मप्रकाश—योगीन्द्र देव** । पत्र संख्या-२५१ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६५ ।

विशेष—ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका तथा दौलतरामकृत भाषा टीका सहित है ।

योगीन्द्रदेव कृत श्लोक संख्या-३४३, ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका श्लोक संख्या ४५००, तथा दौलतराम कृत भाषा श्लोक संख्या ६८६० प्रमाण है । दो प्रतियों का मिश्रण है । अंतिम पत्रों वाली प्रति में कई जगह अक्षर काटे गये है ।

२६६. प्रति नं० २—पत्र संख्या-२४० । साइज-११×५ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६६

२६७ प्रति नं० ३—पत्र संख्या-२१८ । साइज-१०½×५ इञ्च । लेखन काल-सं० १८६२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६७ ।

२६७ प्रति नं० ४—पत्र संख्या-१७६ । साइज-११½×५½ इंच । भाषा-अपभ्रंश । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०३ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीका उत्तम है । टीकाकार का नामोल्लेख नहीं मिलता है । इन प्रतियों के अतिरिक्त ग्रंथ की ४ प्रतियां और हैं ।

२६८ **परमात्मपुराण-दीपचन्द** । पत्र संख्या-१ से ३६ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७६८ ।

विशेष— ग्रन्थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—अथ परमातम पुराण लिख्यते ।

दोहा—परम अखंडित ज्ञानमय गुण अनत के धाम ।
अविनासी आनंद अग लखत लहै निज ठाम ॥१॥

गद्य—अचल अतुल अनत महिम मंडित अखंडित त्रैलोक्य शिखर परि विराजित अनोपम अबाधित शिव दीप है । तामें आतम प्रदेश असंख्य देस है । सो एक एक देस अनंत गुण पुरुषन करि व्यापत है । जिन गुण पुरुषन के गुण परणति नारी है । तिस शिवदीप को परमातम राजा है ताके चेतना परिणति राणी है । दरसण ज्ञान चरित्र ए तीन मंत्री हैं । सम्यक्त्व फौजदार है । सब देसका परणाम कोटवाल है । गुण सत्ता मन्दिर गुण पुरुषन के है । परमातम राजा का परमातम सत्ता महल बण्या तहां चेतना परणति कामिनी सो केलि करते अतेंद्रिय अबाधित आनंद उपजै है ।

अन्त में (पृष्ठ ३६)—"परमातम राजा एक है परणति शक्ति भाविकाल में प्रगट और और होने की है परिवर्त्तन काल में व्यक्त रूप परणति एक है सो ही वस राजा को रमावै है । जो परणति वर्तमान की कौ राजा भोगवे है सो परणति समय मात्र आत्मीक अनंत सुख दे करि विलय जाय है । परमातमा में लीन होय है ।

२६९. **प्रवचनसार—कुन्दकुन्दाचार्य** । पत्र संख्या–८ से ४४ । साइज–१६×७½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८८ ।

२७०. **प्रवचनसार भाषा—हेमराज** । पत्र संख्या–३५ । साइज–१०½×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । रचना काल–सं० १७०९ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१८ ।

विशेष—पद्य संख्या ४३८ है ।

२७१. **प्रति नं० २**—पत्र संख्या–११० । साइज–१२×८ इंच । रचना काल–सं० १७०९ माघ सुदी ५ । लेखन काल–सं० १७११ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२७ ।

विशेष—श्री नन्दलाल अग्रवाल ने प्रतिलिपि कराई थी ।

सं० १७११ वर्षे आश्विनि मासे शुक्ल पक्षे गुरुवासरे श्री अकबराबाद मध्ये पातशाह श्री शाहे जहान विजय राज्ये श्वेताम्बर कासीदासेन अग्रवाल ज्ञातीय साह श्री नन्दलाल पठनार्थ । सं० १७९१ शाह छाजूराम भज के पठनार्थ खरीदी थी ।

ग्रंथ की ४ प्रतियां और हैं ।

२७२. **प्रवचनसार भाषा—वृन्दावन** । पत्र संख्या–१५३ । साइज–१३×७½ इन्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । रचना काल–सं० १९०५ वैसाख सुदी ३ । लेखन काल–सं० १९२७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२६ ।

विशेष—हीरालाल गगवाल ने लश्कर नगर मे प्रतिलिपि कराई थी ।

२७३. **मृत्युमहोत्सव भाषा—दुलीचन्द** । पत्र संख्या–१५ । साइज–१२×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३८ ।

२७४. **योगसार—योगीन्द्र देव** । पत्र संख्या– १३ । साइज–११×५½ इंच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–योग । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १९२१ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५९ ।

२७५. **प्रति नं० २**—पत्र संख्या–१० । साइज–१०½×७½ इंच । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । गाथा स० १०८ । ४ प्रतियां और हैं ।

२७६. **योगसार भाषा—बुधजन** । पत्र संख्या–८ । साइज–१०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–स० १८९५ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २८२ ।

२७७. **योगीरासा—पाण्डे जिनदास** । पत्र संख्या–३ । साइज–१३½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२४ ।

२७८. **वैराग्य पच्चीसी—भैया भगवतीदास** । पत्र संख्या–४ । साइज–७×४½ इश्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–स० १७५० । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ५५६ ।

२७६ **वैराग्य शतक** । पत्र संख्या–११ । साइज–१०×४ इश्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८१६ वैसाख सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १४४ ।

विशेष—जयपुर में नाथूराम के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी । गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । १०३ गाथायें हैं ।

प्रारम्भिक गाथा निम्न प्रकार है —

ससारंमि असारे णत्थि सुह वाहि वेयणापउरे ।

जाणतो इह जीवो णकुणइ जिणदेसिय धम्मं ॥१॥

२८०. **षट्पाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य** । पत्र संख्या–६२ । साइज–६½×४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–स० १७३६ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ६२ ।

विशेष—साह काशीदास आगरे वाले ने स्वपठनार्थ धर्मपुरा में प्रतिलिपि की । अक्षर सुन्दर एवं मोटे हैं । एक पत्र में ४-४ पंक्तियां हैं ।

२८१ प्रति नं० २—पत्र संख्या–३४ । साइज–११×५ इश्च । लेखन काल–स० १७४४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८६ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । ग्रंथ की २ प्रतियाँ और हैं ।

२८२. **समयसार कलशा—अमृतचन्द्राचार्य** । पत्र संख्या–४५ । साइज–११½×५ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६०२ श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

विशेष—सस्कृत में कहीं २ संकेत दिये हुए हैं । ग्रंथ की दो प्रतिया और हैं ।

२८३. **समयसार टीका—अमृतचन्द्राचार्य** । पत्र संख्या–६४ । साइज–१२×६ इश्च । भाषा–संस्कृत । विषय- अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–स० १७८८ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—सवत्सरे वसुनागमुनींदुमिते १७८८ भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे चतुर्दशी तिथौ ईसरदा नगरे राज्ये श्री अजितसिंहजी राज्य प्रवर्तमाने श्री चन्द्रप्रभुचैत्यालये श्रीमूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये अंवावत्याः भट्टारकजित श्रीसुरेंद्रकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीजित् श्रीजगतकीर्ति तत्पट्टस्थः स्वगांभीर्यक्षमागुणनिर्जितसागरेलादि पदार्थ स्वपरज्ञातारिता-गमावोधे भ० शिरोमणि भट्टारक जित श्री १०८ श्रीमद्देवेन्द्रकीर्तिस्तेनेयं समयसारटीका स्वशिष्य मनोहर कथनार्थं पठनाय

तत्वबोधिनी सुगम निजबुद्ध्या पूर्व टीकामवलोक्य विहिता। बुद्धिमद्भिः बोधनीया प्रमादात् वा अल्पबुद्धया पत्रहीनाधिक भव भवेत् तत् शोधनीय पाचनेयं कृता मया किं बहुकथनेन वाचकानां पाठकानां मंगलावली समवो भवेत् श्री जिनप्रभप्रसत्ते।

२८४ प्रति नं० २—पत्र संख्या-१२७। साइज-१०×६ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२।

विशेष—संघ ही दीवान श्योजीराम ने अपने पुत्र कुंवर अमरचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी। श्योजीराम दीवान के मन्दिर जयपुर में प्रतिलिपि हुई।

२८५. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-१६। साइज-१२×७ इञ्च। लेखन काल-सं० १८६६ आसोज सुदी ४ पूर्ण। वेष्टन नं० ४५।

विशेष—संघही दीवान अमरचन्द पठनार्थ पिरागदास महुआ के ने प्रतिलिपि की।

२८६ प्रति नं० ४—पत्र संख्या-१००। साइज-१०×५½ इंच। लेखन काल-शक सं० १८००। पूर्ण। वेष्टन नं० ४७।

विशेष—सं० ख ख वसुइन्दुमिते वर्षे शाके माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ द्वितीयायां गुरुवारे अनेकवनवापीकूप-तडाग जिनचैत्यालयादि विराजमाने बहुविख्याते सकलनगरग्राम मट वादीनां शेखरीभूते पाति साह श्री मुहम्मदशाह तत् सेवक महाराजाधिराज महाराजा श्रीईश्वरसिंहराजय प्रवर्तमाने सवाईजैपुरनामनगरे तत्र श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये सोनी गोत्रे साह श्री प्रागदास जी कारापिते। श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कार गणे सरस्वति गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकजित श्री १०८ श्री महेन्द्रकीर्त्तिजी तस्य शासनधारी ब्रह्म श्री अमरचन्द्रस्तत् शिष्य पं० श्री जयमल्लस्तत् शिष्य पं० मनोहरदास तत् शिष्य पं० श्री छीत्रमलस्तत् शिष्य पं० श्री हीरानन्दस्तत् शिष्य गुणगरिष्ट बुद्धिवरिष्ट सकलतर्क मीमांसा अष्टसहस्री प्रमुखादीगुणानां व्याख्याने निपुण पंडितोत्म पंडित जितश्रीचोखचन्द्रजीकस्य शिष्य सुखरामेण स्वशयेन स्वपठनार्थं ज्ञानावरणीकर्मक्षयर्थं लिपिकृता।

२८७. प्रति नं० ५—पत्र संख्या-३६। साइज-१०×४½ इञ्च। लेखन काल-सं० १७२१ पौष सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८।

विशेष—सा० जोधराज ने प्रतिलिपि करवाई थी।

२८८. **समयसार नाटक—बनारसीदास**। पत्र संख्या-१०८। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-अध्यात्म। रचना काल-सं० १६६३। लेखन काल-सं० १८९७ श्रावण सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० ७४६

२८९ प्रति नं० २—पत्र संख्या-१६४। साइज-८½×५½ इंच। लेखन काल-सं० १७०० कार्तिक सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ७५६।

विशेष—श्रीमानुसात्म पठनार्थ लिखित। आमेर में प्रतिलिपि हुई। १४० पत्र के आगे बनारसीदास कृत अन्य पाठ है। (गुटका)

२६०. प्रति न० ३—पत्र सख्या-७६ । साइज-११½×४½ इच । लेखन काल-स० १७०३ सावन सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६७ ।

विशेष—सवत् १७०३ वर्षे श्रावणसितचतुर्दशीतिथौ श्रीमूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री चद्रकीर्त्तिजी भ० श्री नरेन्द्रकीर्त्तिजी तदाम्नाये सेन्या गोत्रे साह महेस भार्या धर्मा तया इदं समयसार नाम नाटक लिख्य आचार्य श्री सकलकीर्तिये प्रदत्तं ।

विशेष—समयसार नाटक की भण्डार में १६ प्रतियां और हैं ।

२६१. समयसार भाषा—राजमल्ल । पत्र सख्या-२६६ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७४३ पौष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६४ ।

विशेष—इति श्री समयसार टीका राजमल्लि भाषा समाप्तेय ।

२६२ प्रति न० २—पत्र सख्या-२७५ । साइज-११×८ इञ्च । लेखन काल-स० १७५८ असाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६६ ।

२६३. प्रति न० ३—पत्र सख्या-२०२ । साइज-१२×६ इञ्च । लेखन काल-स० १८२० । पूर्ण । वेष्टन न० ८१३ ।

विशेष—नैणसागर ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । पुट्ठे पर बहुत सुन्दर बेल बूटे हैं ।

२६४ समयसार भाषा—जयचन्द छावडा । पत्र सख्या-३२० । साइज-१०½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-स० १८६४ । लेखन काल-स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२० ।

२६५ समाधितत्र भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र सख्या-१२० । साइज-१२×५½ इन्च । भाषा-गुजराती । विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७६३ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ७८६ ।

विशेष—६ प्रतियां और हैं । ग्रथ की लिपि देवनागरी है ।

२६६ समाधितन्त्र भाषा । पत्र सख्या-१७२ । साइज-११×७½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन न० ८४६ ।

विशेष—चाकसू में लिपि हुई थी ।

२६७ समाधितत्र भाषा । पत्र सख्या-२० । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६३६ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६६ ।

२६८ समाधिमरण । पत्र सख्या-२८ । साइज-८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३४ ।

२९९. समाधिमरण । पत्र संख्या–१६ । साइज–११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८७ ।

३००. समाधिमरण भाषा । पत्र संख्या–२० । साइज–६½×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८३४ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८८ ।

३०१. समाधिमरण भाषा । पत्र संख्या–१६ । साइज–११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७५ ।

३०२. समाधिशतक—आ० समन्तभद्र । पत्र संख्या–१३ । साइज–१२½×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४६ ।

विशेष—हिन्दी में पद्यों पर अर्थ दिया हुआ है ।

३०३. स्वामीकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामीकार्त्तिकेय । पत्र संख्या–२८७ । साइज–१२×५½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—प्रति भ० शुभचन्द्रकृत टीका सहित है । टीका संस्कृत में है । ग्रंथ की ३ प्रतियां और हैं ।

३०४. स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र संख्या–१५० । साइज–११×५ इंच । विषय–अध्यात्म । रचना काल–सं० १८८३ श्रावण बुदी ३ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०३ ।

३०५. प्रति नं० २—पत्र संख्या–११६ । साइज–१०×७½ इंच । लेखन काल–सं० १८६३ श्रावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०४ ।



विषय–न्याय एवं दर्शन शास्त्र

३०६. अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र संख्या–२६७ । साइज–११½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय शास्त्र । रचनाकाल–× । लेखन काल–सं० १९२७ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३ ।

विशेष—जयपुर में घासीलाल शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

३०७. तर्कसंग्रह—अन्नभट्ट । पत्र संख्या–५ । साइज–११×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५१ ।

विशेष—सांगानेर में पं० नगराज ने प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ की एक प्रति और है।

३०८. **देवागमस्तोत्र—समंतभद्र**। पत्र संख्या–११। साइज–६३/४×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० २८७।

विशेष—एक प्रति और है।

३०९. **देवागमस्तोत्र भाषा—जयचन्द्र छाबडा**। पत्र सख्या–८४। साइज–११×५१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–न्याय शास्त्र। रचना काल–सं० १८६६ चैत्र बुदी १४। लेखन काल–स० १९८४ पौष बुदी १५। पूर्ण। वेष्टन न० ४६१।

३१०. **नयचक्र भाषा—हेमराज**। पत्र सख्या–१७। साइज–१०१/२×४१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय-दर्शन शास्त्र। रचना काल–स० १७२६। लेखन काल–स० १८६३। पूर्ण। वेष्टन न० ३८३।

३११ **न्यायदीपिका—यति धर्म भूषण**। पत्र सख्या–३७। साइज–११×५१/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०१।

विशेष—ग्रन्थ की एक प्रति और है।

३१ . **न्यायदीपिका भाषा—पन्नालाल**। पत्र संख्या–१०३। साइज–१२×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–न्याय शास्त्र। रचनाकाल–स० १९३५ मगसिर सुदी ९। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३९८।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति का अन्तिम भाग निम्न प्रकार है:—

अन्तिम पाठ—

आर्य क्षेत्र मधि ढूंढाहडु में जयपुर अदभुत नगर महा।
ताके अधिपति नीति नुपण अति रामसिंह नृप नाम कहा॥
मंत्री पद में रायबहादुर जीवनसिंह सुनाम लहा।
ताको गृह मति सखी मावह पन्नालाल सु धर्म चहा॥
श्रावक धर्म्मी उत्तम कर्म्मा, है मर्मी जिन वचनन के।
नाम सदासुख नाशित सब दुख दोष मिटावन के॥
तास निकट जिन श्रुत निति प्रति सुनत सुनत मन समता पाय।
न्याय शास्त्र को रहिस ग्रहण हित न्यायदीपिका हमें पढाय॥
तास वचनिका विशद करन कौं आनद हृदय पढायो है।
करी वीनती त्रिभुवन गुरू तैं अर्थ समस्त लखायो है॥
फतेलाल जित पंडित वर अति धर्म प्रीति को धारक है।
शब्दागम तैं तथा न्याय तै अर्थ समर्थन कारक है॥

तिनके निकट विशद फुनि कीनो, अर्थ विकल्प निवारन को।
करी वचनिका स्व पर हित को पढ़ो भव्य भ्रम टारन को॥
विक्रम नृप के उगणीसैं पर तीस पांच सत चीना है।
मंगसिर शुक्ला नवमी शशि दिन ग्रन्थ सम्पूरन कीना है॥

चोपई—श्री जिन सिद्ध सूरि उवझाय सर्व साधु है मंगलदाय।
तिनके चरण कमल उरलाय, नमन करै निति शीश नवाय॥

३१३. परीक्षामुख—आचार्य माणिक्यनंदि। पत्र संख्या–७। साइज–१०×२$\frac{3}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–दर्शन। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४।

३१४. परीक्षामुख भाषा—जयचन्द छाबडा। पत्र संख्या–११७। साइज–१०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–दर्शन। रचना काल–सं० १९२७ श्रावण सुदी २। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३९६।

३१५. प्रमेयरत्नमाला—अनन्तवीर्य। पत्र संख्या ४५। साइज–११×८ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८।

विशेष—माणिक्यनंदि कृत परीक्षामुख की टीका है।

३१६ मितिभाषिणीटीका—शिवादित्य। पत्र संख्या–१७। साइज–१०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण वेष्टन नं० १५३।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

प्रारम्भ का दूसरा पद्य.—

त्रिदेशादीन् नमस्कृत्य माधवारव्य सरस्वती।
शिवादित्यकृतेष्टीकां करोति मितभाषिणि॥२॥

३१७. सप्तपदार्थी—श्रीभावविद्येश्वर। पत्र संख्या–८। साइज १०$\frac{1}{2}$×४। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १६८३ फागुण सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० १८३।

विशेष—पं० हर्ष ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

अंतिम—यमनियमस्वाध्यायधारणासमाधिधोरणी मयानयनपाशुपताचार्य श्री भावविद्येश्वरविरचिता वाग्विद्या विलासविचित्रवाचस्त्वस्वार्थपरायचमत्कारापारगयगया परापरन्यायवैशेषिकमहाशास्त्रसमुद्धरणशालिन विरचिता सप्तपदार्थी समाप्ता॥

३१८ स्याद्वादमंजरी—मल्लिषेण। पत्र संख्या–३४। साइज–१२×५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६४०।

३१९. **स्याद्वादमंजरी—मल्लिषेण** । पत्र संख्या-५९ । साइज-१०×४½ । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । टीका काल-शक सं० १२१४ । लेखन काल-सं० १७९७ माह सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७१ ।

विशेष—उदयपुर में प्रतिलिपि हुई । मल्लिषेण उदयप्रभसूरि के शिष्य थे ।

विषय—पूजा एवं प्रतिष्ठादि अन्य विधान

३२०. **अकृत्रिम चैत्यालयपूजा—चैनसुख** । पत्र संख्या-६४ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १९३० । लेखन काल-सं० १९३५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७८ ।

विशेष—पूजा की एक प्रति और है ।

३२१. **अकृत्रिमचैत्यालयपूजा—पं० जिनदास** । पत्र संख्या-३६ । साइज-८½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८६ ।

विशेष—लक्ष्मीसागर के शिष्य पं० जिनदास ने रचना की थी ।

३२२. **अकृत्रिमचैत्यालयपूजा** ... । पत्र संख्या-१२३ । साइज-१२½×८½ इंच । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७२ ।

३२३. **अढ़ाईद्वीपपूजा—डालूराम** । पत्र संख्या-१२४ । साइज-१२×८ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८५९ । लेखन काल-सं० १९८७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७३ ।

विशेष—ग्रंथ का मूल्य पंद्रह रुपया साढे पांच आना लिखा हुआ है ।

३२४. **अढाईद्वीपपूजा** ... । पत्र संख्या-३१६ । साइज-१०½×५ इच । भाषा-संस्कृत । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८५२ । फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२७ ।

विशेष—ग्रंथ के पुट्ठे पर १२ तीर्थंकरों के चिन्हों के चित्र हैं । चित्र सुन्दर हैं ।

३२५. **अढाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण** । पत्र संख्या-१०१ । साइज-१०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९०६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१५ ।

३२६. **अंकुरारोपणविधि—इन्द्रनन्दि** । पत्र संख्या-६१ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८१ ।

३२७. अभिषेकपाठ । पत्र संख्या-३१ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८८ ।

३२८. अष्टाह्निकापूजा । पत्र संख्या-२५ । साइज १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७६ ।

३२९. अष्टाह्निकापूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या-२३ से ३० । साइज-११½×५½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ९३० ।

विशेष—१—२२ तक के पत्र नहीं हैं ।

३३०. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा । पत्र संख्या-१८ । साइज-११×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३६ ।

३३१. आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४८ ।

विशेष—प्रारम्भ में हिन्दी में दर्शन पाठ है ।

३३२ आदिनाथपूजा—पत्र संख्या-७ । साइज-७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३३ ।

३३३. इन्द्रध्वजपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र संख्या-२४ । साइज-१०½×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३२५ ।

विशेष—रूचिकगिरि उत्तर दिगचैत्यालय की पूजा तक पाठ है ।

३३४ कमलचन्द्रायणव्रतपूजा । पत्र संख्या-३ । साइज-१३×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५६ ।

३३५ कर्मदहनपूजा । पत्र संख्या-१५ । साइज-६×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५६ ।

३३६. कर्मदहनपूजा । पत्र संख्या-२० । साइज-८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ९०७ ।

३३७ कर्मदहनपूजा । पत्र संख्या-५२ । साइज-१३×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७४ ।

३३८ कर्मदहनपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-२७ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६० ।

विशेष—इस पूजा की ५ प्रतियां और हैं ।

३३६. कर्मदहनपूजा । पत्र सख्या-१५ । साइज-१०X५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५० ।

३४० कर्मदहनव्रतपूजा । पत्र सख्या-११ । साइज-१०½X५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६२ ।

विशेष—पूजा मन्त्र सहित है । एक प्रति और है ।

३४१. कर्मदहनव्रतमत्र । पत्र सख्या-१० । साइज-१०½X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६१ ।

३४२. गणधरवलयपूजा – सकलकीर्ति । पत्र सख्या-६ । साइज-१०½X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२४ ।

३४३ गिरनारक्षेत्रपूजा । पत्र संख्या-४६ । साइज-१०½X८ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४६ ।

विशेष—प्रतिलिपि कराने में तीन रुपये साढे पाच आने लगे थे ऐसा लिखा हुआ है ।

३४४. चतुर्विंशतिजिनपूजा । पत्र सख्या-११३ । साइज-११X५½ इञ्च । भाषा-हिंदी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४० ।

३४५ चतुर्विंशतिजिनकल्याणकपूजा—जयकीर्ति । पत्र सख्या-५३ । साइज-१०X४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६८४ चैत्र सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४१ ।

विशेष—स० १६८४ वर्षे चैत सुदी ७ सोमे वहली नगरे श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमत्काष्ठासंघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री रत्नभूषण, भ० श्री जयकीर्ति, आचार्य श्री नरेन्द्रकीर्ति, उपाध्याय श्री नेमकीर्ति, ब्र० श्री कृष्णदास, पूरनमल ब्रह्म श्री हरिजी ब्र० वर्द्धमान, ब्र० वीरजी, प० रहीदास लिखित

३४६. चतुर्विंशतिजिनपूजा—वृन्दावन । पत्र संख्या-६६ । साइज-११X८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१८ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

३४७. चतुर्विंशतिजिनपूजा—सेवाराम । पत्र सख्या-६३ । साइज-१०½X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल-सं० १८५४ । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४१६ ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है । २ प्रतियां और हैं ।

३४८. चतुर्विंशतिजिनपूजा—रामचन्द्र । पत्र संख्या-६१ । साइज-११×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२० ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं ।

३४९. चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा । पत्र संख्या-४५ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३८ ।

३५०. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा । पत्र संख्या-४ । साइज-१२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २७७ ।

३५१ चतुर्विधसिद्धचक्रपूजा—भानुकीर्त्ति । पत्र संख्या-२१६ । साइज-७½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३२ ।

विशेष—वृहद् पूजा है । ग्रंथकार तथा लेखक दोनों की प्रशस्ति हैं ।

भ० भानुकीर्ति ने साधु तिहुणपाल के निमित्त पूजा की रचना की थी । साधु तिहुणपाल ने ही इस पूजा की प्रतिलिपि करवायी थी ।

३५२. चारित्रशुद्धिविधान—भ० शुभचन्द्र । पत्र संख्या-६४ । साइज ११½×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६२ ।

विशेष—'१२३४ व्रतों का विधान' यह भी इस रचना का नाम है ।

३५३. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-२ से ३५ । साइज १०½×४½ इंच । लेखन काल-सं० १५८४ कार्तिक सुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५१० ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । जाप्य दिये हुए हैं ।

प्रशस्ति—संवत् १५८४ वर्षे कार्तिक बुदी अष्टमी वृहस्पतिवारे लिखितं पं० गोपाल कर्मक्षयार्थ पात्री (पत्री) क्षुल्लिकाबाई सोना पठ्या इदं दत्तं श्री पार्श्वनाथचैत्यालये दुबलाणापत्तने ।

३५४. चौवीसतीर्थंकरजयमाल—पत्र संख्या-८ । साइज-१३×५ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९५७ वैसाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४६ ।

३५५. चौसठऋद्धिपूजा—स्वरुपचन्द । पत्र संख्या-३३ । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १९१० श्रावण सुदी ७ । लेखन काल-सं १९६६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१२ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

३५६. जलगालनक्रिया—ब्रह्म गुलाल । पत्र सख्या-५ । साइज-८×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८१९ वैसाख बुदी । पूर्ण । वेष्टन न० १००६ ।

विशेष—रूडमल मोंसा ने नारनोल में प्रतिलिपि की थी ।

३५७ जिनसहस्रनामपूजा—धर्मभूषण । पत्र सख्या-६३ । साइज-११×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ३२६ ।

३५८ जिनसहस्रनामापूजा भाषा—स्वरूपचन्द बिलाला । पत्र संख्या-८२ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६१६ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ३८१ ।

३५६ जिनसहिता—पत्र संख्या-७ । साइज-१०½×४¾ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-X । लेखन काल-स० १५६० सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६५ ।

विशेष—सवत् १५६० वर्षे श्रावण सुदी ५ श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० जिनचन्द्रदेवा. तत् शिष्य मुनि श्री रत्नकीर्ति मुनि श्री हेमचन्द्र तदाम्नाये खडेलवालान्वये सेठी गोत्रे सा० ताल्ह भार्या पर्दा तत्पुत्र साह जील्हा भार्या सुहागिणि इदं शास्त्र सत्पात्राय दत्त । इति जिन सहितायां विमानहोम शान्तिहोम गृहहोम विधि समाप्तमिति ।

नवीन गृह प्रवेश आदि के अवसर पर होम विधि आदि दी हुई है ।

३६० तीनलोक पूजा—टेकचन्द । पत्र सख्या-४०४ । साइज-१२×११½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६२८ सावन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६८ ।

विशेष—ग्रन्थ का मूल्य २७।) लिखा है ।

३६१. तीसचौबीसीपूजा भाषा—वृन्दावन । पत्र सख्या-८५ । साइज-१२½×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १८७६ माघ सुदी ५ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४११ ।

३६२ तीसचौबीसीपूजा भाषा । पत्र सख्या-५ । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १६०८ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४१० ।

विशेष—लघु पूजा है ।

३६३. तेरहद्वीपपूजा । पत्र सख्या-४२ । साइज-११½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६१६ । पूर्ण । वेष्टन न० ४१७ ।

३६४. दशलक्षणजयमाल—रइधू । पत्र संख्या-८ । साइज-६½×५ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७ ।

विशेष—संस्कृत में अर्थ दिया हुआ है। तीन प्रतियां और हैं।

३६५. दशलक्षणजयमाल—भाव शर्मा। पत्र संख्या–६। साइज–१०×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४५।

विशेष—एक प्रति और है।

३६६. दशलक्षणजयमाल । पत्र संख्या–२। साइज–११½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८१।

३६७. दशलक्षणपूजा—सुमतिसागर। पत्र संख्या–११। साइज–१०×५ इञ्च भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७१६। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४७।

३६८. दशलक्षणपूजा । पत्र संख्या–१४। साइज–११½×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३०।

विशेष—पूजा में केवल जल चढाने का मंत्र प्रत्येक स्थान पर दिया है। अन्त में ब्रह्मचर्य धर्म वर्णन की जयमाल में आचार्यों का नाम भी दिया गया है।

३६९ दशलक्षणव्रतोद्यापन पूजा । पत्र संख्या–३७। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८२६। पूर्ण। वेष्टन नं० ६४८।

३७० द्वादशांगपूजा । पत्र संख्या–६। साइज–७×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ११४३।

३७१. देवगुरूपूजा । पत्र संख्या–३। साइज–१३×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११४७।

३७२ देवपूजा । पत्र संख्या–७। साइज–१०½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८४।

३७३. देवपूजा । पत्र संख्या–२ से १४। साइज–११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५२।

३७४. देवपूजा । पत्र संख्या–८। साइज–१२×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८३६।

३७५. देवपूजा । पत्र संख्या–५। साइज–६½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८८२।

३७६. देवपूजा । पत्र सख्या–७ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८३ ।

३७७. देवपूजा । पत्र सख्या–५ । साइज–६×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ८८४ ।

३७८. धर्मचक्रपूजा—यशोनंदि । पत्र सख्या–२३ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ३२६ ।

विशेष—प० खुशालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३७९. नन्दीश्वरपूजा । पत्र सख्या–३ । साइज–११×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १०४२ ।

विशेष—जयमाला प्राकृत भाषा में है ।

३८० नन्दीश्वर उद्यापन पूजा । पत्र सख्या–६ । साइज ११½×७ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८३४ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४३ ।

विशेष—पत्रों के चारों ओर सुन्दर वेलें हैं ।

३८१. नन्दीश्वरजयमाल टीका । पत्र संख्या–१५ । साइज–६×४½ इन्च । भाषा–प्राकृत हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८४१ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० १४६

विशेष—श्री अमीचन्द ने जोवनेर के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

३८२. नन्दीश्वरविधान । पत्र संख्या–२३ । साइज–१०×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचनाकाल–× । लेखन काल–स० १६०६ अषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० ५०४ ।

विशेष—विजैलाल लुहाडिया ने प्रतिलिपि कर बधीचन्दजी के मन्दिर चढाई थी ।

३८३. नन्दीश्वरव्रतविधान । पत्र सख्या–५० । साइज–११½×१२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन न० ५०० ।

विशेष—पूजा का नाम पञ्चमेरू पूजा भी है ।

३८४. नवग्रहनिवारणजिनपूजा । पत्र सख्या–७ । साइज–७½×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ८६७ ।

३८५. नांदीमंगलविधान । पत्र संख्या–२ । साइज–११×६ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । रचनाकाल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६६ ।

३८६ नित्यपूजासंग्रह । पत्र संख्या-११८ । साइज-११½×५½ इच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० ६२१ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का सग्रह है ।

३८७ नित्यपूजा । पत्र सख्या-४१ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७०६ ।

३८८. नित्यपूजा । पत्र सख्या-३७ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७०७ ।

विशेष—प्रतिदिन की जाने वाली पूजाओं का सग्रह है ।

३८९ नित्यपूजा । पत्र सख्या-२१ । साइज-१३×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ५३५ ।

३९० नित्यपूजापाठ । पत्र सख्या-३० । साइज-६¾×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १९५६ । पूर्ण । वेष्टन न० ५७० ।

३९१ नित्यपूजासग्रह । पत्र सख्या-३१ । साइज-११½×५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८५६ ।

३९२. निर्वाणपूजा । पत्र संख्या-२ । साइज-९×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ११२८ ।

३९३ निर्वाणक्षेत्रपूजा । पत्र संख्या-२२ । साइज-१०½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४४५ ।

३९४ निर्वाणक्षेत्रपूजा-स्वरूपचन्द । पत्र सख्या-३३ । साइज-१२½×५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १९१९ कार्तिक बुदि १३ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८४६ ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

३९५. पद्मावतीपूजा । पत्र सख्या-८ । साइज-१०×३½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५० ।

३९६ पचकल्याणकपूजा—पं० जिनदास । पत्र सख्या-५३ । साइज-१२×५½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६४२ फागुण सुदी ५ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४० ।

३९७. पंचकल्याणकपूजा—सुधासागर । पत्र सख्या-२६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत ।

विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४२ ।

३९८. पंचकल्याणकपूजा—पत्र संख्या-३६ । साइज-११X५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १९३८ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६७ ।

३९९. पंचकुमारपूजा—जवाहरलाल । पत्र संख्या-३ । साइज-१०½X४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६४ ।

४००. पंचपरमेष्ठीपूजा—यशोनन्दि । पत्र संख्या ११४ । साइज-९X६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५१ ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं ।

४०१. पंचपरमेष्ठीपूजा—डालूराम । पत्र संख्या-३५ । साइज-१०X५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८९० । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५३ ।

विशेष—महात्मा सदासुखजी ने माधोराजपुरा में प्रतिलिपि की थी । पूजा की ६ प्रतियां और हैं ।

४०२. पंचमंगलपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-२१ । साइज-११X५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १९३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५८ ।

४०३. पंचमेरुपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-४३ । साइज-११X७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १९१० । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७७ ।

४०४. पंचमेरुपूजा—भूधरदास । पत्र संख्या-४ । साइज-११X५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ९६६ ।

विशेष—द्यानतराय कृत अष्टाह्निका पूजा भी है ।

४०५. प्रतिष्ठासार संग्रह—वसुनंदि । पत्र संख्या-१३५ । साइज-१२X५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१६ ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । ग्रन्थ का प्रारम्भिक भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—विद्यानुवादसन्सूत्राद्वाग्देवीकल्पतस्तथा ।

चन्द्रप्रज्ञप्तिसंज्ञाच्च सूर्यप्रज्ञप्तिग्रंथतः ॥४॥

तथा महापुराणार्षा छ्रावकाध्ययनश्रुतान् ।

सारं संगृह्य वक्ष्येहं प्रतिष्ठासार संग्रहे ॥५॥

इ वसुनंदि नामा आचार्य हूं सो प्रतिष्ठासार संग्रह नामा जो ग्रंथ ताहि कहूं गो—कहा करिकै सिद्धं अरिहंत

शेस जो वर्द्धमान पर्यन्त जिन प्रवचन कहतां शास्त्र गुरु कहतां सर्व साधु यातैं नमस्कार करि कै कैसे छहैं वे सिद्ध, सिद्ध भयो है आतम स्वरूप जिनकै ।

४०६. पल्यविधानपूजा—रत्ननंदि । पत्र संख्या–६ । साइज–१३×६½ इन्च । भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३१ ।

विशेष—पूजा की एक प्रति और है ।

४०७. पार्श्वनाथ पूजा । पत्र संख्या–३ । साइज–१३×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ११४१ ।

४०८ पुष्पांजलिव्रतोद्यापन । पत्र संख्या–११ । साइज–६×६½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ५४० ।

विशेष—बृहत् पूजा है ।

४०६. पूजनक्रियावर्णन—बाबा दुलीचन्द । पत्र संख्या–३० । साइज–१२×७½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ५१८ ।

४१०. पूजासग्रह । पत्र सख्या–१०० । साइज–७½×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १०६६ ।

विशेष—चतुर्विशति तथा अन्य नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है । पूजा सग्रह की तीन प्रतियां और है ।

४११. पूजासंग्रह । पत्र संख्या–२८ । साइज–१२×६½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ६०२ ।

विशेष—इसमें देव पूजा तथा सरस्वती पूजा है ।

४१२ पूजासग्रह । पत्र सख्या–६ । साइज–१२×८ इन्च । भाषा-संस्कृत–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१४ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा, दशलक्षण, रत्नत्रय, सोलहकारण, पचमेरु तथा नन्दीश्वर द्वीप पूजाऐ है । पूजा सग्रह की ४ प्रतियां और है ।

४१३. पूजासंग्रह । पत्र सख्या–२७१ । साइज–६×६ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ३१७ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक ३७ पूजाऐ तथा निम्न पाठ है—

(१) तत्वार्थ सूत्र (२) स्वयभू स्तोत्र (३) सहस्त्रनामस्तोत्र ।

४१४. पूजा सग्रह । पत्र सख्या-३३ । साइज-१३×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४३२ ।

विशेष—इसमें पल्यविधान, सोलहकारण, कंजिका व्रतोद्यापन आदि पूजायें है ।

४१५. पूजासग्रह । पत्र सख्या-२६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३३७ ।

सुखसपत्तिपूजा, जिनगुणसपत्तिपूजा, लघुमुक्तावलीपूजा का सग्रह है ।

४१६. २ कामरपूजा—उद्यापन—श्री भूषण । पत्र सख्या-२४ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७८ वैसाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० ३४६ ।

४१७. रत्नत्रयजयमाल । पत्र सख्या-२ । साइज-१२×५½ इच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८८७ ।

४१८. रत्नत्रयजयमाल । पत्र सख्या-३ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८६८ ।

४१६. रत्नत्रयपूजा । पत्र सख्या-१० । साइज-११×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४२१ ।

४२०. रत्नत्रयपूजा । पत्र सख्या-५ । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०४३ ।

४२१. रत्नत्रयपूजा भाषा—द्यानतराय । पत्र संख्या-२२ । साइज-११×५½ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ४३६ ।

४२२. रत्नत्रयपूजा भाषा । पत्र संख्या-३६ । साइज-११×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६३७ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ४१४ ।

४२३. रत्नत्रयपूजा भाषा—पत्र सख्या-३ से ५४ । साइज १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३७ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन न० ४२५ ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं । एक प्रति और है किंतु यह भी अपूर्ण है ।

४२४ रोहिणीव्रतोद्यापन—कृष्णसेन तथा केसवसेन । पत्र संख्या-३१ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २६३ ।

४२५. लब्धिविधानउद्यापनपूजा । पत्र सख्या-७ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५३४ ।

४२६. वृहत्शांतिकविधान । पत्र संख्या-१३ । साइज-१०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४० ।

विशेष—मुन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४२७. विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा । पत्र सख्या-७ । साइज-१०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× ।लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८६८ ।

४२८. विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा—जौंहरीलाल । पत्र सख्या-४६ । साइज-१४½×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १९४६ श्रावण सुदी १४ । लेखन काल-स० १९७१ । पूर्ण । वेष्टन न० ४०८ ।

४२९ विमलनाथपूजा । पत्र सख्या-१ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६२ ।

४३०. विमलनाथपूजा । पत्र संख्या-११ । साइज-१०½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५८ ।

४३१ शांतिचक्रपूजा । पत्र सख्या-३ । साइज- १२×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८५ ।

४३२. शास्त्रपूजा—द्यानतराय । पत्र सख्या-३ । साइज-१३×५½ इञ्च । भाषा-हिंदी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६२ ।

४३३. श्रुतोद्यापनपूजा । पत्र संख्या-८ । साइज-१०½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१५ ।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है ।

४३४. षोडशकारणमंडलपूजा—आचार्य केसवसेन । पत्र सख्या-५० । साइज-११×५ इञ्च । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७८ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३३३ ।

४३५. षोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा—ब्र० ज्ञानसागर । पत्र सख्या-३२ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३४ ।

४३६. षोडशकारणजयमाल । पत्र सख्या-१०८ । साइज-११×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७७ ।

विशेष—रत्नत्रयजयमाल (नयमल) तथा दशलक्षणजयमाल भी है ।

४३७. **षोडशकारणजयमाल—रइधू** । पत्र सख्या-२२ । साइज-११X५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८७६ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५ ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने इसी मन्दिर में प्रतिलिपि की थी । गाथाओं पर संस्कृत में उल्था दिया हुआ है । एक प्रति और है ।

४३८. **षोडशकारणजयमाल** । पत्र संख्या-७ । साइज-१०½X५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४३४ ।

विशेष—रत्नत्रय तथा दशलक्षण जयमाल भी है ।

४३९. **षोडशकारणजयमाल** । पत्र सख्या-२० । साइज-१०½X४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३० ।

विशेष—दो प्रतियां और हैं ।

४४०. **षोडशकारणपूजा** । पत्र सख्या-१६ । साइज-११X७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ३३६ ।

४४१ **षोडशकारणपूजा** । पत्र संख्या-२ । साइज-११½X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४८२ ।

विशेष—प्रति एक और है ।

४४२. **सम्मेदशिखरपूजा—रामचन्द्र** । पत्र सख्या-७ । साइज-११½X५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७१ ।

४४३. **सम्मेदशिखरपूजा** । पत्र सख्या-३१ । साइज-८½X६½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४२ ।

४४४. **सरस्वतीपूजा** । पत्र संख्या-१० । साइज-५X१० इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ११२३ ।

विशेष—अन्य पूजाएं भी हैं ।

४४५. **सरस्वतीपूजा भाषा—पन्नालाल** । पत्र संख्या-६ । साइज-१४X८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६२१ ज्येष्ठ सुदी ५ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०६ ।

४४६. सहस्रगुणपूजा — भ० धर्मकीर्ति । पत्र संख्या-७२ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७६५ वैसाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४८ ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४४७. सहस्रनामगुणितपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र संख्या-१०४ । साइज-८×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७१० कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२८ ।

४४८. सिद्धचक्रपूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या-६ । साइज-१२×५½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४४९. सुगन्धदशमीपूजा ...... । पत्र संख्या-८ । साइज-१२×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२६ ।

४५०. सोलहकारणपूजा — टेकचन्द । पत्र संख्या-७० । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६३५ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५८ ।

विशेष—दो प्रतियां और हैं ।

४५१. सोलहकारणपूजा ...... । पत्र संख्या-१३ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३५ ।

विशेष—द्यानतराय कृत रत्नत्रय, दशलक्षण, पचमेरु तथा अढाई द्वीप की पूजा भी है ।

४५२. सोलहकारणपूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या-५ । साइज-६×६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

विशेष—दशलक्षण पूजा भी है ।

४५३ सोलहकारण भावना ...... । पत्र संख्या-१४ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२७ ।

४५४. सोलहकारण जयमाल ...... । पत्र संख्या-२ । साइज-८×७ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचनाकाल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५७ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४५५. **सोलहकारण विशेष पूजा** । पत्र सख्या-१२ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३३५ ।

४५६. **सौख्यव्रतोद्यापन—अक्षयराम** । पत्र संख्या-१४ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन न० २७४ ।

विशेष—जयपुर में श्योजीलालजी दीवान ने प्रतिलिपि कराई ।

विषय-पुराण साहित्य

४५७ **आदिपुराण—जिनसेनाचार्य** । पत्र संख्या-३४६ । साइज-१२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८६ मगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० १३३ ।

विशेष—तीन तरह की प्रतियों का मिश्रण है । आचार्य पद्मकीर्ति के शिष्य छाजू ने प्रतिलिपि की थी ।
एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४५८. **आदिपुराण—भ० सकलकीर्ति** । पत्र संख्या-२०६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६० आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० १९२ ।

विशेष—श्री मोतीराम लुहाड़िया ने प्रतिलिपि कराई थी । १ से १३१ तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं ।
एक प्रति और है ।

४५६. **प्रति नं० २** । पत्र सख्या-२४२ । साइज-१२×६ इञ्च । लेखन काल-स० १६७६ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५३ ।

विशेष—चपावती (चाकसू) में प्रतिलिपि हुई थी ।

४६०. **आदिपुराण भाषा—दौलतराम** । पत्र संख्या-६०६ । साइज-१२×७ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । रचना काल-सं० १८२४ । लेखन काल-स० १८५५ मंगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन म० ६५३ ।

विशेष—४ प्रतियां और हैं लेकिन वे अपूर्ण हैं ।

४६१. **प्रति नं० २** । पत्र संख्या-२०१ से १३१० । साइज-१०३/४×७ इञ्च । लेखन काल-सं० १८२४ आसोज सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन म० ७१३ ।

विशेष—प्रति स्वयं ग्रन्थकार के हाथ की लिखी हुई प्रतीति होती है, जगह जगह संशोधन हो रहा है ।

४६२. उत्तपुराण—गुणभद्राचार्य। पत्र संख्या-३२४। साइज-१२×७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। रचनाकाल-×। लेखन काल ×। पूर्ण। वेष्टन नं० २५८।

विशेष—२ प्रतियां और हैं।

४६३. उत्तरपुराण—खुशालचन्द। पत्र संख्या-५४४। साइज-१२½×६½इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पुराण। रचना काल-सं० १७६६। लेखन काल-सं० १८१३। पूर्ण। वेष्टन नं० ६४२।

विशेष—दूसरी २ प्रतियां और हैं और वे दोनों ही पूर्ण हैं।

४६४ नेमिनाथपुराण—ब्रह्मनेमिदत्त। पत्र संख्या-१७४। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६४४ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० १२८।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। ३ प्रतियां और हैं। ग्रन्थ का दूसरा नाम हरिवंश पुराण भी है।

४६५. पद्मपुराण भाषा—खुशालचन्द। पत्र संख्या-३४४। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पुराण। रचना काल-सं० १७८३। लेखन काल-सं० १९५२। पूर्ण। वेष्टन नं० ६६३।

विशेष—एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है।

४६६ पद्मपुराण भाषा—पं० दौलतराम। पत्र संख्या-२ से ४१७। साइज-१५×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। रचना काल-सं० १८२३। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६४०।

विशेष—२ प्रतियां और हैं लेकिन वे भी अपूर्ण हैं।

४६७. पाण्डवपुराण—बुलाकीदास। पत्र संख्या-२०२। साइज-११×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पुराण। रचना काल-सं० १७५४। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६४४।

विशेष—एक प्रति और लेकिन वह अपूर्ण है।

४६८. पाण्डवपुराण—भ० शुभचन्द्र। पत्र संख्या-२६५। साइज-११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। रचना काल-सं० १६०८। लेखन काल-सं० १७६७ वैशाख सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ११८।

विशेष—हंसराज खंडेलवाल की स्त्री लाडी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाकर पं० गोरधनदास को भेंट की थी।

४६९. पुराणसारसंग्रह—भ० सकलकीर्ति। पत्र संख्या २११। साइज-१२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२३ चैत सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० २५६।

४७०. भरतराज दिग्विजय वर्णन भाषा—पत्र संख्या-५६। साइज-१२×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-पुराण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७३८ आसोज सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० ६८०।

विशेष—जिनसेनाचार्य प्रणीत आदि पुराण के २६ वें पर्व का हिन्दी गद्य है। गद्य का उदाहरण निम्न प्रकार है।

हे देव तुम्हारा विहार कैं समय जाणु कर्म रूप बैरी की तर्जना कहतां डर करतो संतो ऐसो महा उद्धत सबद करि दिसां का मुख पूरया है। जानै ऐसो परगट नगांरा को टंकार सबद भगवान के विहार समय पग पग के विषै हो रहे। (पत्र सख्या ३३)

४७१. वर्द्धमानपुराण भाषा—पं० केशरीसिंह। पत्र सख्या—२०३। साइज—११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पुराण। रचना काल-स० १८७३ फागुण सुदी १०।। लेखन काल-स० १८७४ चैत वदी १४। अपूर्ण। वेष्टन न० ६७८।

विशेष—७५ से ६४ तक पत्र नहीं हैं। ग्रन्थ का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—जिनेशं विश्वनाथाय अनंतगुणसिंधवे।
धर्मचक्रभृते मूर्द्धा श्रीमहावीरस्वामिने नमः ॥१॥

श्री वर्द्धमान स्वामी कू हमारौ नमस्कार हो। कैसेक हैं वर्द्धमान स्वामी गणधरादिक के ईस हैं, अर ससार के नाथ हैं अर अनन्त गुणन के समुद्र है, अर धर्म चक्र के धारक हैं।

गद्य का उदाहरण—

अहो या लोक विषै ते पुरुष धन्य हैं ज्यां पुरुष न का ध्यान विषै तिष्ठताचित्त उपसर्ग के सैकंडेन करिहू किंचित् मात्र ही विक्रिया कू नहीं प्राप्ति होय है ॥७॥ तहां पीछे वह रूद्र जिनराज कूं अचलाकृति जाणि करि लज्जायमान भयाथका आप ही या प्रकार जिनराज की स्तुति करिवे कूं उद्यमी होता भया।

अन्तिम प्रशस्ति—

नगर सवाई जयपुर जानि ताकी महिमा अधिक प्रवानि।
जगतसिंह जहां राज करेह गोत कुछाहा सुन्दर देह ॥६॥
देस देस के आवे जहां, भांति भांति की वस्ती तहां।
जहा सरावग बसै अनेक कैईक के घट मांही विवेक ॥७॥
तिन में गोत छावडा मांहि, वालचद दीवान कहांहि।
ताके पुत्र पांच गुणवान, तिन में दोय विख्यात महान् ॥८॥
जयचद रायचद है नाम स्वामी धर्मवती कीने काम।
राजकाज में परम प्रवीन, सधर्म ध्यान में बुद्धि सुचीन ॥६॥
सघ चलाय प्रतिष्ठा करी, सब जग में कीर्ति विस्तरी।
और अधिक उत्सव करि कहा रामचंद संगही पद लहा ॥१०॥
सुत दीवान जयचद के पांच, सबकी धरम करम में सांच।

तव रूचि उपजी यह मन मांहि, वीर चरित की भाषा नांहि ॥१२॥
जो याकी अब भाषा होय, तौ यामै समुभै सहु कोय ।
यह विचार लखिकै बुधिवान, पंडित केशरीसिंह महान ॥१३॥
तिन प्रति यह प्रार्थना करी, याकी करौ वचनिका खरी ।
तव तिन अर्थ कियो विस्तार, ग्रंथ संस्कृत के अनुसारी ॥१४॥
यह खरडो कीनी तब तिनै, ताकी महिमा को कवि मनै ।
पुनि व्याकरण बोध बुधिवान, वसतपाल साहवडा जान ॥१५॥
तानै याको सोधन कीन, मूलग्रंथ अनुसारि सुवीन ।
बुधि अनुसारि वचनिका भयी, ताकू गुरजन हसियो नहीं ॥१६॥

× × × × ×

दोहा—सवत अष्टादश सतक, और तहत्तरि जानि ।
सुकल पक्ष फागुण भली, पुण्य नक्षत्र महान ॥२१॥
सुक्रवार शुभ द्वादसी, पूरण भयौ पुराण ।
वाचै सुनै जु भव्यजन, पावै गुण अमलान ॥२२॥

इति श्री भट्टारक सकलकीर्ति विरचिते "श्री वर्द्धमान पुराण संस्कृत ग्रंथ की देस भाषा मय वचनिका पंडित केशरीसिंह कृत संपूर्ण" । मिती चैत सुदी १४ शनिवार सं० १८७४ का मैं ग्रंथ लिख्यौ ।

४७२. **वर्द्धमानपुराणसूचनिका** । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७६ ।

४७३. **वर्द्धमानपुराण भाषा** । पत्र संख्या-७ । साइज-११×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८४६ ।

४७४. **शान्तिनाथपुराण—असग** । पत्र संख्या-८८ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८३४ असाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६ ।

४७५. **शान्तिनाथपुराण—सकलकीर्ति** । पत्र संख्या-१६६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३० ।

विशेष—ग्रंथ संख्या श्लोक प्रमाण ४३७५ है । एक प्रति और है ।

४७६. **हरिवंशपुराण—जिनसेनाचार्य** । पत्र संख्या-३५५ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११६ ।

विशेष—प्रति नवीन है । २ प्रतियां और हैं ।

४७७. हरिवंशपुराण—पं० दौलतराम । पत्र सख्या-५३० । साइज-११×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-सं०१८२६ । लेखन काल-स० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६४ ।

विशेष—रूपचन्द ने प्रतिलिपि की थी । दो प्रतियां और हैं ।

४७८. हरिवंशपुराण—खुशालचन्द । पत्र सख्या-१६१ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-सं० १७८० वैशाख सुदी ३ । लेखन काल-सं० १८३१ फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४५ ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं ।

विषय—काव्य एवं चरित्र

४७६. उत्तरपुराण—महाकवि पुष्पदंत । पत्र सख्या-३२४ से ८३८ । साइज-१०×५½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५५७ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७ ।

विशेष—३२४ से पूर्व आदि पुराण है ।

प्रशस्ति—स० १५५७ कार्तिकमासे शुक्लपक्षे पूर्णमास्यां तिथौ गुरुदिने अद्यो श्री घनौघेन्द्रगे श्री चन्द्रप्रभं चैत्यालये श्री मूलसंघे भारतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्ति देवाः तत्पट्टे भ० श्री विद्यानन्दिदेवा तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषण देवाः तस्य शिष्य ब० महेन्द्रदत्त, नेमिदत्त तैः भट्टारकं श्री मल्लिभूषणाय महापुराण पुस्तकं प्रदत्तं ।

४८०. कलावतीचरित्र—भुवनकीर्त्ति । पत्र संख्या-४ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६५ ।

४८१. गौतमस्वामीचरित्र—आचार्य धर्मचन्द्र । पत्र सख्या-३२ । साइज-१२×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६२२ । लेखन काल-सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१३ ।

४८२. चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर । पत्र संख्या-१२३ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३१ ।

विशेष—१२३ से आगे के पत्र नहीं हैं। प्रति नवीन है। ग्रंथ की पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति मंडलसूरिश्रीभूषण तत्पट्टे गच्छे भट्टारक श्री धर्मचन्द्र शिष्य कवि दामोदर विरचिते श्री चन्द्रप्रभचरित्रे चन्द्रप्रभकेवलज्ञानोत्पत्ति वर्णनो नाम द्वाविंशतितम सर्गः।

४८३ **चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनंदि**। पत्र संख्या-११२। साइज-११×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८६६ माघ बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० २३०।

विशेष—फतेहलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी। काव्य की १ प्रति और है।

४८४ **चेतनकर्मचरित्र—भैया भगवतीदास**। पत्र संख्या-१५। साइज-१०×४½ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १७३२ ज्येष्ठ बुदी ७। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७०।

विशेष—ग्रन्थ की ३ प्रतियां और है।

४८५. **जम्बूस्वामीचरित्र—महाकवि वीर**। पत्र संख्या-११४। साइज-१२×४¾ इंच। भाषा-अपभ्रंश। विषय-काव्य। रचना काल-सं० १०७६ माह सुदी १०। लेखन काल-सं० १६०१ असाढ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० २२६।

विशेष—ग्रन्थकार एवं लेखक प्रशस्ति दोनों पूर्ण है। राजाधिराज श्री रामचंद्रजी के शासनकाल में टोडागढ में आदिनाथ चैत्यालय में लिपि की गई थी।

खंडेलवाल वंशोत्पन्न साह गोत्र वाले सा० हेमा भार्या हमीर दे ने प्रतिलिपि करवाकर मंडलाचार्य धर्मचन्द्र को प्रदान की थी। लेखक प्रशस्ति निम्न है।

संवत् १६०१ वर्षे आषाढ सुदी १३ भौमवासरे टोडागढवास्तव्ये राजाधिराजरावश्रीरामचन्द्रविजयराज्ये श्री आदिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भ० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंडल श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये साह गोत्रे जिनपूजापुरन्दरान गुणश्रेयोनृपतिः साह महसा तद् भार्या सुहागदे तत्पुत्र साह मेघचन्द्र द्वि० कौजू। साह मेघचन्द्र भार्या माणकदे द्वितीय नवलादे। तत्पुत्र साह हेमा द्वि० साह हीरा तृतीय साह छाजू। साह हेमा भार्या हमीर दे तत्पुत्र चि० भीखा। साह हीरा भार्या हीरादे। साह कौजू भार्या कौतुकदे तत्पुत्र साह पदारथ द्वि० खीवा। सा० पदारथ भार्या पारमदे तत्पुत्र सा० धनपाल। साह खीवा भार्या खिवसिरी तत्पुत्र डूंगरसी एतेषां मध्ये सा० हेमा भार्या हमीर दे एतत् जम्बूस्वामीचरित्र लिखाप्य रोहिणीव्रत उद्योतनार्थं मंडलाचार्या श्री धर्मचन्द्राय प्रदत्तं।

४८६ **जम्बूस्वामीचरित्र—ब्र० जिनदास**। पत्र संख्या-३१। साइज-११½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २२७।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है। एक प्रति और है।

४८७. **जम्बूस्वामीचरित्र - पांडे जिनदास** । पत्र संख्या-३० । साइज-१०½×५ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १६४२ मादवा बुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८० ।

विशेष—अकबर के शासनकाल में रचना की गई थी । दो तरह की लिपि है ।

४८८. **जिनदत्तचरित्र – गुणभद्राचार्य** । पत्र संख्या-४८ । साइज-१०¾×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन न० २२० ।

विशेष—प० नगराज ने प्रतिलिपि की थी । २ प्रतियां और हैं ।

४८९. **जिणयत्तचरित्त (जिनदत्तचरित्र)—पं० लाखू** । पत्र संख्या-१८० । साइज-११¾×५½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १२७५ । लेखन काल-स० १६०६ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२१ ।

विशेष—सं० १६०६ मगसिर सुदी ५ आदित्यवार को रणथमौर महादुर्ग में शान्तिनाथ जिन चैत्यालय में सलेमशाह आलम के शासन के अन्तर्गत खिदिरखान के राज्य में पाटनी गोत्र वाले साह श्री दूलहा ने प्रतिलिपि करवाकर आचार्य ललित कीर्ति को भेंट की थी ।

४९०. **णायकुमारचरिए (नागकुमारचरित्र)—महाकवि पुष्पदन्त** । पत्र सख्या-६६ । साइज-८¾×४½इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-स० १५१७ वैसाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० २१२ ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १५१७ वर्षे वैसाख सुदी ५ श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टालकार भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवा । शिष्यणी बाई मानी निमित्ते नागकुमार पंचमी कथा लिखाप्य कर्मक्षय निमित्ते प्रदत्तं ।

४९१ **प्रति नं० २** । पत्र संख्या-६० । साइज-१०½×५ इञ्च । लेखन काल-सं० १५२८ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३४ ।

प्रशस्ति—सवत् १५२८ वर्षे श्रावण सुदि १ बुधे श्रवणनक्षत्रे सुभनामायोगे श्री नयनवाह पत्तने सुरत्राण अलावदीनराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्द्रदेवा तत् शिष्य जैनन्दि आत्म कर्म क्षयार्थ निमित्ते इद णायकुमार पंचमी लिखापितं । खडेलवाल वशोत्पन्न पहाड्या गोत्र वाले अरजन भार्या केलूई ने प्रतिलिपि कराई ।

४९२. **द्विसधानकाव्य सटीक—मूलकर्त्ता-धनंजय, टीकाकार नेमिचन्द्र** । पत्र सख्या-१६६ । साइज-१४×६¾ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १४ ।

अंतिम पुष्पिका—इति निरवद्यविद्यामंडनमंडितपंडितमंडलीमंडितस्य षट्तर्कचक्रवर्तिनः श्रीमत्विनयचन्द्र-पंडितस्य गुरोरंतेवासिनो देवनंदिनाम्न शिष्येण सकलकलोद्भवचारुचातुरीचंद्रिकाचकोरेण नेमिचन्द्रेण विरचितायांद्विसंधान कविर्धनंजयस्य राघव पाण्डवीयापरनामकाव्यस्य पदकौमुदीनां दधानायां टीकायां श्रीरामव्यावर्णो नाम अष्टादश सर्ग ।

टीका का नाम पदकौमुदी है।

४६३. धन्यकुमार चरित्र—सकलकीर्त्ति । पत्र संख्या-४६ । साइज-११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३७ ।

प्रशस्ति—संवत् १६५६ वर्षे कार्तिक सुदी ७ रविवासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक जशकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री ललितकीर्तिदेवा तत् शिष्य "ब्र०" श्रीपाल स्वयं पठनार्थं गृहीतं । लिखित चन्देरीगढ़दुर्गे वास्तव्य अकबर पातिसाहि राज्ये प्रवर्तते ।

४६४. धन्यकुमार चारित्र—ब्र०नेमिदत्त । पत्र संख्या-३० । साइज-१०$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २३८ ।

विशेष—प्रारम्भ के पत्र जीर्ण हैं ।

४६५. धन्यकुमार चरित्र—खुशालचन्द । पत्र संख्या-५० । साइज-१०×५ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१६ ।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं ।

४६६. प्रद्युम्नचरित्र—पत्र संख्या-१६० । साइज-६×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११११ ।

४६७ प्रद्युम्नचरित्र—पत्र संख्या—३४ । साइज-११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १४११ भादवा बुदी ५ । लेखन काल-सं० १६०५ आसोज बुदी ३ मंगलवार । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१२ ।

विशेष—प्रद्युम्न चरित्र की रचना किसी अग्रवाल व धुने की थी । रचना की भाषा एवं शैली अच्छी है । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ—सारद विणु मति कवितु न होइ, सरु आखरु णवि बूझई कोइ ।
सीस धार पणमई सरसुती, तिहि कहुँ बुधि होइ कत हुती ॥१॥
सबु को सारद सारद करइ, तिस कउ अंतु न कोऊ लहई ।
जिणवर मुखह झुणि गाय वाणि, सा सारद पणवहु परियाणि ॥२॥
अठदल कमल सरोवरु वासु, कासमीर पुरलु (हु) निवासु ।
हंस चढीकर लेखणि देइ, कवि सधार सरसई पणमेई ॥३॥

सेत वस्त्र पदमवतीय, करह अलावणि वाजहि वीण।
आगम जाणि देहु बहुमती पुणु दुइ जे पणवर्इ सरस्वती ॥४॥
पदमावती दड कर लेइ, जालामुखी चकेसरी देइ।
अवमाइ रोहिणी जो सारु, सासण देवी नवइ सधारु ॥५॥
जिणसासण जो विघन हरेइ, हाथ लकुटि लै ऊभो होइ।
भवियहु दुरिउ हरइ असरालु अगिवाणीउ पणउ खित्रपाल ॥६॥
चउवीसउ स्वामी दुख हरण, चउवीस के जर मरण।
जिण चउवीस नउ धरि मोउ, करउ कवितु जइ होइ पसाउ ॥७॥
रिषभु अजितु सभउ तहि भयउ, अभिनंदनु चउत्थउ वन्नयउ।
समति पदमु प्रभु अवरु सुपासु, चदप्पउ आठमउ निकासु ॥८॥
सुविधु नवउ सीतलु दस भयउ, अरु श्रेयसु ग्यारह जयउ।
वासुपूज अरु विमल अनतु, धमु साति सोलहउ पहू पहू त ॥९॥
कुंथु सतारह अरु सु अत्थार, मल्लिनाथ एगुणासी वार।
मुणिसुव्रत नमिनेमि वावीस, पासु वीरु महुदेहि असीस ॥१०॥
सरस कथा रसु उपजई घणउ, निसुणहु चरित पजूनह तणउ।
सवतु चौदहसै हुइ गये, ऊपर अधिक ग्यारह भये।
भादव दिन पचइ सो सारू, स्वाति नक्षत्र सनीश्चर वारु ॥१२॥

मध्यभाग—प्रद्युम्न रुक्मणी के यहां आपहुंचे हैं किन्तु यह प्रकट न हो पाया कि रुक्मणी का पुत्र आगया। पुत्र आगमन के पूर्व कहे हुए सारे संकेत मिल गये हैं किंतु माता पुत्र को देखने के लिये अधीर हो रही है—

खण खण रूपिणि चढइ अवास, खण खण सो जोवइ चौपास।
मोस्यो नारद कह्यउ निरुत, आज तोहि घर आवइ पूत ॥३८४॥
जे मुनि वयण कहे प्रमाण, ते सवई पूरे सहिनाण।
च्यारि आवते दीठे फले, अरुआचल दीठे पीयरे ॥३८५॥
सूकी वापी भरी सुनीर अपय जुगल भरि आये षीर।
तउ रूपिणि मन विभउ भयउ, एते ब्रह्मचारि तहां गयउ ॥३८६॥
नमस्कार तब रूपिणि करइ, धरम विरधि खूडा उच्चरइ।
करि आदरु सो विनउ करेइ, कणय सिघासणु वैसण देहु ॥३८७॥
समाधान पूछई समुझइ, वह भूखउ २ बिललाई।
सखी बुलाइ जणाइ सार, जैवण करहु म लावहु वार ॥३८८॥

जीवण करण उठी तखिणी, तुइरी मयण प्रमी यमीणी ।
नाजु न घुरइ चूल्हि धु धाइ, वाइ मूयउ २ चिललाइ ॥३८६॥

अंतिम—महसामी कउ कीयउ वखाणु, तुम पञ्जन पायउ निरवाणु ।
अगरवाल की मेरी जात, पुर अगरो ए मुहि उतपाति ॥६७५॥
सधणु जणणी गुणवइ उर धरिउ सा महाराज घरह अवतरिउ ।
एरछ नगर वसते जानि, सुणियाउ चरित मइ रचिउ पुराण ॥६७६॥
सावय लोय वसहि पुर माहि, दह लक्षण ते धर्म्म कराइ ।
दस रिस मानइ दुतीया भेउ भावहिं चितहं जीणेसरु देउ ॥६७७॥
एहु चरितु जो वांचइ कोइ, सो नर स्वर्ग देवता होइ ।
हलु वइ धर्म्म खपइ सो देव, मुकति वरंगण मागइ एम्व ॥६७८॥
जो फुणिसुणइ मनह धरि भाउ, असुभ कर्म ते दूरिहि जाइ ।
जो र वखाणइ माणुसु कवणु, ताहि फहु तू सइ देव परदमणु ॥६७६॥
अरु लिखि जो रि रिवयावइ साधु, सो सुर होइ महा गुणरधु ।
जो र पढावइ गुण किउ निलउ, सो वर पावइ कचण मलउ ॥६८०॥
यहु चरितु पु न भडारू, जो वरु पढइ सु नर महसारु ।
तहि परदमणु तुही फल देइ, सपति पुत्र अवरु जसु होइ ॥६८१॥
हउ बुधि हीणु न जाणौं केम्बु, अक्षर मातह गुणउ न भेउ ।
पण्डित जणह न्मू कर जोडि हीएा अधिक जरा लावहु खोडि ॥६८२॥

॥ इति परदमण चरित समाप्तः ॥

४९८. पार्श्वपुराण—भूधरदास । पत्र संख्या–१०५ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–काव्य । रचना काल–स० १७८६ । लेखन काल–स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन न० ६४७ ।

विशेष—१६ प्रतियां और हैं ।

४९९. प्रीतिंकरचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सख्या–२५ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० २१० ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति अपूर्ण है ।

५००. बाहुबलिदेव चरिए (बाहुबलि देव चरित्र)—पं० धनपाल । पत्र सख्या–२६७ । साइज–११½×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । रचना काल–स० १४५४ वैसाख सुदी १३ । लेखन काल–स० १६०२ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० २५२ ।

विशेष—ग्रंथकार व लेखक प्रशस्ति पूर्ण है। लेखक प्रशस्ति का अन्तिम भाग इस प्रकार है—

. एतेषां मध्ये ढूंढाहड देशे कछुवाहा राज्यप्रवर्तमाने अमरसर नगरेतिनामस्थितो धनधान्य चैत्यचैत्यालयादि सोभालङ्कृत तत्रैव राज्य पदाश्रितो राजश्री सूजा उधरणयो राज्ये वसन सघही लाखा तेनेद बाहुबलि चरित्र लिखाप्य ज्ञानपात्र आचार्य धर्मायदत्तं।

५०१. भद्रबाहुचरित्र—आचार्य रत्ननंदि। पत्र संख्या-४३। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७७०। पूर्ण। वेष्टन नं० २५०।

विशेष - एक प्रति और है।

५०२. भद्रबाहुचरित्रभाषा—किशनसिंह। पत्र संख्या-२०२। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १७८०। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०८।

विशेष—पत्र ५५ के बाद निम्न पाठों का संग्रह है जो सभी किशनसिंह द्वारा रचित हैं—

विषय-सूची	कर्त्ता	रचना संवत्
एकावली व्रत कथा	किशनसिंह	×
श्रावक मुनि गुण वर्णन गीत	"	×
चौवीस दंडक	"	१७६४
चतुर्विंशति स्तुति	"	×
णमोकार रास	"	१७६०
जिनभक्ति गीत	"	×
चेतन गीत	"	×
गुरुभक्ति गीत	"	×
निर्वाण कांड भाषा	"	१७८३ संग्रामपुर में रचना की
चेतन लोरी	"	×
नागश्री कथा (रात्रि भोजन त्याग कथा)	"	१७७३
लब्धि विधान कथा	"	१७८२ आगरे में रचना की गयी थी

५०३. भविसयत्तपंचमीकहा—धनपाल। पत्र संख्या-१३१। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २१७।

श्लोक संख्या ३३००।

विशेष—ग्रंथ की ३ प्रतियां और हैं। दो प्राचीन प्रतियां हैं।

५०४. भविसयत्तचरिय—(भविष्यदत्तचरित्र) श्रीधर । पत्र संख्या-१४४ । साइज-११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६११ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१४ ।

विशेष—राजमहल नगर में प्रतिलिपि हुई थी । ग्रंथ श्लोक संख्या १५०७ प्रमाण है ।

५०५. प्रति नं० २—पत्र संख्या-८१ । साइज-११×५ इन्च । लेखन काल-सं० १६४५ चैत्र सुदी ११ पूर्ण । वेष्टन नं० २१५ ।

प्रशस्ति—संवत् १६४५ वर्षे चैत्र सुदी ११ मंगलवार अंबावती नगरे नेमिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवा, तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री धर्मचन्द्रदेवा, तत्पट्टे भट्टारक ललितकीर्तिदेवाः समस्त गोष्ठि अंबावती ' " " खण्डेलवालान्वये सांवसा गोत्रे इदं शास्त्र घटापितं ।

५०६. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-७७ । साइज-११×५ इन्च । लेखन काल-सं० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१६ ।

विशेष—कहीं २ कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

प्रशस्ति—संवत् १६०६ वर्षे वैसाख मासे कृष्ण पक्षे द्वादशी तिथौ बुद्धवासरे अनुराधा नक्षत्रे श्री मूलसंघे गढ रणस्तंभ शाखागरे मरपूर नाम्नि पातिशाह सलेम साहि राज्य प्रवर्तमाने श्री शान्तिनाथ जिण चैत्यालये श्री लसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दि देवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवा, तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्द्र देवा, तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्र देवा तत् शिष्य भ० श्री धर्मचन्द्र देवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पाटोदी गोत्रे सा० चेला तद्भार्या सारी ...... पनेपा मध्ये सा० बोहिथ भार्या लाली इदं शास्त्रं लिखाप्य भ० श्री धर्मचन्द्राय घटापितं कल्याण व्रतोद्यापनार्थं ।

५०७. भोजचरित्र—पाठक राजवल्लभ । पत्र संख्या-२८ । साइज-११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३५ ।

विशेष—ग्रंथ की अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

श्री धर्मघोषगच्छे श्री धर्मसूरि संताने श्राद्धी पट्टे श्री महीतिलक सूरि शिष्य पाठक राजवल्लभ कृते भोज चरित्रे समाप्त । सं० १६०७ वर्षे फागुण मासे शुक्ल पक्षे सप्तम्यां तिथौ शुक्रवासरे अजयगढ मध्ये लिखितं ।

५०८ महीपालचरित्र—मुनिचारित्र भूषण । पत्र संख्या-५४ । साइज-१०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचनाकाल-× । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन नं० २११ ।

विशेष—श्लोक संख्या-६६५ प्रमाण ग्रंथ है ।

५०९. यशस्तिलकचम्पू—सोमदेव । पत्र संख्या-५६ । साइज-१२½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६३ ।

विशेष—८ पेज तक टीका दे रखी है।

५१० यशोधरचरित्र—सोमकीर्ति। पत्र संख्या-१७। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० २४२।

विशेष—१७ से आगे पत्र नहीं हैं।

५११. यशोधरचरित्र—ज्ञानकीर्ति। पत्र संख्या-६५। साइज-१४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १६५६ माघ सुदी ५। लेखन काल-सं० १६६४ वैशाख सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० २४१

विशेष—महाराजा मानसिंहजी के शासन काल में मौजमाबाद में प्रतिलिपि हुई थी।

५१२. यशोधरचरित्र—वासवसेन। पत्र संख्या-२-३५। साइज-११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७५६ भादवा सुदी १। अपूर्ण। वेष्टन नं० २४०।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। पं० पेमराज ने प्रतिलिपि की थी।

५१३ यशोधरचरित्र—भ० सकलकीर्ति। पत्र संख्या-३४। साइज-१२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २३६।

विशेष—चार प्रतियां और हैं।

५१४. यशोधरचरित्र—परिहानन्द। पत्र संख्या-३४। साइज-११×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १६७०। लेखन काल-सं० १८३६। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१८।

विशेष—आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—सुमर देव अरहंत महंत, गुण अति अगम लहै को अंतु।
जाकै माया मोह न मान, लोकालोक प्रकासक ज्ञान॥
जाकै राग न मोह न खेद, छितिपति रंक न जाके भेद।
राखे हरष न विरचै वक्कु, सुमरत नाम हरै अघ चक्कु॥
अलख अगोचर अन्तुक अंतु, मंगलधारि मुकति कौ कन्तु।
गुण वारिधि मो रसना एक, अलप बुद्धि अर तुच्छ विवेक॥
द्वै कर जोडि नऊ सरस्वती, वढै बुद्धि उपजै शुभ मती।
जिन वानी मानी जिन आनि, तिनकौ वचन चल्यो परवान॥
विबुध विहंगम नव घन वारि, कवि कुल केलि सरोवर मार।
भव सागर तू तारन नाव, कुनय कुरंग सिंघनी भाव॥
वे नर सुन्दर ते नर वली, जिनका पुहमि कथा वहु चली।

जिनकौ तैं सारद वर दीयौ, सुखसुरितासु अमल जल पीयौ ॥
सुमरि सुमरि गुण ज्ञान गंभीर, बढैं सुमति अघ घटहिं सरीर।
जिनमुद्रा जे धारण धीर, भव आताप बुझावन नीर ॥
तिनके चरण चित्त महि धरै, चिर अनुसार कवित उच्चरै।
गुरु गणधर सुमरो मन माहि, विघन हरन करि धरि तूं छांह ॥८॥
नगर आगरो बसै सुवासु, जिहपुर नाना भोग विलास।
वसीह साहु बहु धनी असंखि, वनजहि वनज सागर हिनखि ॥
गुणी लोग छत्तीसौं कुरी, मथुरा मंडल उत्तम पुरी।
और बहुत को करै बखाउ, एक जीभ को नाहीं दाउ।
नृपति नूरदीसाह सुजान, अरि तम तेज हर नमो मान ॥

मध्य भाग—सुनिरी माइ कहीं हो एह, जो नर पावै उत्तम देह।
सत पंडित सज्जन सुखदाइ, सब हित करहि न कोपै राइ ॥
जो बोलै सो होइ प्रमान, जह बैठे तह पावै मान।
वैर भाव मन धरै न कोइ, जो देखै ताकौ सुख होइ ॥७८॥
यह सब जानि दया को अंग, उत्तम कुल अरु रूप अनंग।
दीरघ आव परै ता तनी, सेवहि चरन कमल वहु गुनी ॥७९॥

अन्तिम भाग—संवत् सोलह सै अधिक सत्तरि सावण मास।
सुकल सोम दिन सप्तमी कही कथा मृदु भास ॥
अग्रवाल वर वंस गोसना गांव को।
गोयल गोत प्रसिद्ध चिह्न ता ठांव को ॥
माता चंदा नाम, पिता भैरू भन्यौ।
परिहानंद कही मनमोद अंग न गुन नां गन्यौ ॥५६८॥

इति श्री यशोधर चौपई समाप्ता।

संवत् १८३९ का मैं घटतौ पाना पुरौ कियौ पुस्तक पहेली लिख्यो छै। पुस्तक लूटि में आयी सो यौं निछरावलि देर यौ गाजी का थाणा का पंचा वाचै पछै त्याह भव्य जीवानै पुन्य होयसी।

५१५. यशोधरचरित्र—खुशालचन्द। पत्र संख्या-८१। साइज-६३/४×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १७८१। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१४।

विशेष—२ प्रतियां और हैं।

५१६. **यशोधरचरित्र टिप्पण** ····· । पत्र संख्या-२६ । साइज-११×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६० ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं जीर्ण है, पत्र गल गये हैं । चतुर्थ संधि तक है ।

५१७. **यशोधर चौपई—अजयराज** । पत्र संख्या १२ से ५१ । साइज-६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७६२ कार्तिक बुदी २ । लेखन काल-सं० १८०० चैत बुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६६ ।

विशेष—चूहडमल पाटनी बस्सी वाले ने आमेर में प्रतिलिपि कराई थी ।

५१८. **वड्ढमाणकहा (वर्द्धमान कथा)—नरसेन** । पत्र संख्या-२७ । साइज-४×४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५८४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६१ ।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८४ वर्षे चैत्र सुदी १४ शनिवारे पूर्वानक्षत्रे श्री चंपावतीकोटे राणा श्री श्री श्री संग्रामस्य राज्ये, राइ श्री रामचन्द्र राज्ये, श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्र देवा, प्रभाचन्द्रदेवा ॥ श्री खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्र साह लोल्हा भार्या धनपइ तस्य पुत्र साह ष्यौराज भार्या रतना तस्य पुत्र शान्तु तस्य भार्या सांतिश्री तस्य पुत्र स्यौन् द्वितीय साह चापा भार्या सोना तस्य साह होला तस्य भार्या ·।

५१६. **वड्ढमाणकव्व (वर्द्धमानकाव्य)—पं० जयमित्रहल** । पत्र संख्या-२ से ५६ । साइज-६½×४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५५० वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३८ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५० वर्षे वैशाख सुदी ३ रोहिणी शुभनाम योगे श्री गैणोली पत्तने राजाधिराज· अरिमानमर्दनराजश्री चापादेव राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे भ० शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० जिनचन्द्र देवा तत् शिष्य मुनि श्री रत्नकीर्ति देव ··· ।

५२०. **वर्द्धमानचरित्र—सकलकीर्ति** । पत्र संख्या-१२४ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६ ।

५२१. **वरांगचरित्र—वर्द्धमान भट्टारक देव** । पत्र संख्या-६० । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३१ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४७ ।

विशेष—सांगानेर में महाराजाधिराज भगवतसिंहजी के शासनकाल में खंडेलवालवंशोत्पन्न भौंसा गोत्र वाले साह

नानग आदि ने प्रतिलिपि कराई थी।

विशेष— २ प्रतियां और हैं।

५२२. विदग्धमुखमडन—धर्मदास। पत्र सख्या-२२। साइज-१०३/४×४१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८२५ चैत्र सुदी ३ सोमवार। पूर्ण। वेष्टन न० १५२।

विशेष—नगराज ने प्रतिलिपि की थी।

५२३. षट्कर्मोपदेशमाला—अमरकीर्ति। पत्र संख्या-८६। साइज-१०१/२×४१/२ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १५५६। पूर्ण। वेष्टन न० ११८।

विशेष—प्रति प्राचीन है—

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५६ वर्षे चैत्र सुदी १३ शनिवासरे शतमिखानक्षत्रे राजाधिराज श्रीमाणविजयराज्ये भीलोड़ा ग्रामे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० सिंघकीर्ति देवास्तत् शिष्य ब्रह्मचारी रामचन्द्राय हू वड जातीय श्रेष्ठी हारा भार्या ईजा सुत श्रुतश्रेष्ठी देवात भ्रातृ श्रेष्ठी नाना भार्या हूवी द्वतीय भार्या रूपी तयो' सुत श्रुतश्रेष्ठी लाला भार्या वानू तत् भ्रातृ श्रेष्ठी वेला भार्या वीली षट्कर्मोपदेश शास्त्र लिखाय प्रदत्तं।

५२४ शालिभद्र चौपई—जिनराज सूरि। पत्र सख्या-१४। साइज-१०×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। रचना काल-१० १६१८। लेखन काल-सं० १७६४ भादवा सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन न० १०७५।

५२५. श्रीपालचरित्र—ब्र० नेमिदत्त। पत्र संख्या-५५। साइज-१२×५१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १५८५ आषाढ सुदी ५। लेखन काल-स० १८६१ सावन सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन न० २२५

विशेष—मालवा देश में पूर्णाशा नगर में आदिनाथजी के मन्दिर में ग्रंथ रचना हुई थी।

छाजूलालजी साह के पिता शिवजीलालजी साह ने ज्ञानावरणीक्षयार्थ श्रीपाल चरित्र की प्रतिलिपि कराई थी। एक प्रति और है।

५२६. श्रीपालचरित्र—कवि दामोदर। पत्र सख्या-५७। साइज-११×४१/२ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-स० १६०६ श्रावण सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन न० २२४।

५२७. श्रीपालचरित्र—दौलतराम। पत्र संख्या-४६। साइज-८१/२×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६०७। पूर्ण। वेष्टन न० ५२०।

विशेष—आराधना कथा कोष में से कथा ली गई है।

५२८. श्रेणिकचरित्र—भ० विजयकीर्ति । पत्र संख्या-२५० । साइज-१०½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १८२० । लेखन काल-सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१५ ।

५२६. श्रेणिकचरित्र—जयमित्रहल । पत्र संख्या-६० । साइज-१०½×५½ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० २३६ ।

५३०. श्रीपालचरित्र—परिमल्ल । पत्र संख्या-१३६ । साइज-१०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०४ ।

विशेष—५ प्रतियां और हैं ।

५३१. श्रीपालचरित्र ... । पत्र संख्या-३५ । साइज-१३×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८५६ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२७ ।

विशेष—ग्रंथ के मूलकर्त्ता भ० सकलकीर्ति थे । २ प्रतियां और है ।

५३२ सीताचरित्र—कवि बालक । पत्र संख्या-१६१ । साइज-६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७१३ । लेखन काल-सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०३ ।

विशेष—चंपावती (चाकसू) में प्रतिलिपि हुई थी । सीता चरित्र की भण्डार में ५ प्रतियां और हैं ।

५३३ सिद्धचक्रकथा—नरसेनदेव । पत्र संख्या-३८ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५१५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७७८ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५१५ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १५ रवौ नैणवाहपत्तने सुरत्राण अलावदीन राज्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा' तत्पट्टे जिनचन्द्रदेवा तस्य शिष्य मुनि अनंतवृति लंबकंचुकान्वये जदवंसे काकलिमरच्छगोत्रे साह सीथे भार्या दीपा तस्य पुत्र साह साम्हरि भार्या जसवरूप नाराइण लघु भ्राता कान्ह एतेषु मध्ये नाराइण पठनार्थं लिखापित ।

५३४. सुदर्शनचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या-३८ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २३२ ।

५३५. सुदर्शनचरित्र—विद्यानंदि । पत्र संख्या-५० । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३३ ।

विशेष—टोंक निवासी गंगवाल गोत्र वाले सा० राजा ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

५३६. हरिवंशपुराण—महाकवि स्वयंभू । पत्र संख्या-१ से ४०६ । साइज-१३×५ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५८२ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२३ ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है। पुराण की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इय रिट्ठणेमिचरिय धवलइयासिय सयंभुएवउव्वरए तिहुयणसयंभुइए समाणिय कन्हकित्ति हरिवंस ॥ गुरुपव्ववासमयं सुयणाणुक्कम जहाजायासयेमिक्कदुदहसहिय संधिओ परिसम्मतिओ ॥६॥ संधि ११९२ ॥ इति हरिवंस पुराण समाप्त ॥६॥ ग्रंथ संख्या सहस्र १८००० पूर्वोक्त ॥ ६ ॥

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८२ वर्षे फाल्गुण सुदी १३ त्रयोदशीदिवसे शुक्रवासरे श्रवणनक्षत्रे शुभजोगे चंपावतीगढनगरे महाराज श्री रामचन्द्रराज्ये श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये साहगोत्रे जिनपूजापुरंदरान बहुशास्त्रपरिमलित सुन्दरो, जिनचरणारविंद षट्पदनीतिशास्त्रपरिगत, विशदजिनशासनसमुद्धरणधीर, पंचाणुव्रतपालनैकवीर, सम्यक्त्वालंकृतशरीरामेदाभेदरत्नत्रयराधकत्रिपंचाशक्रियाप्रतिपालक शंकाद्यष्टदोषरहित संवेगाद्यष्टगुणयुक्ति दुस्थितजनविश्राम, परम श्रावक साह काधिल, भार्या कावलदे तया पुत्रा। द्वितीय पुत्र जिनचरणकमलचंचरीकान्, दानपूजाश्रयान् इव समुद्यतान् परोपकारनिरतान् प्रशस्तचित्तान् सम्यक्त्वगुणप्रतिपालकान् श्री सर्वज्ञोक्तधर्मानुरंजितचेतसान् कुटुंबभारधुरंधरान रत्नत्रयालंकृतदिव्यदेहान् आहारभैषजशास्त्रदानमदाक्लिन्नीय पूरितचित्तान् श्रावकाचारप्रतिपालननिरतान् सा राघौ साधी (साध्वी) भार्या रैनदे तस्य चतुर्थ पुत्रः द्वितिय पुत्र. जिणबिंबचैत्यविहारउद्धरणधीरान् चतुर्विधसंघमनोरथपूर्णान, चिंतामणि गुण सपूर्णान बहुलक्षणलक्षितदिव्यदेहान स्वजनानंदकारी देवशास्त्रगुरूया (णां) भक्तिवंतान त्रिकालसामायिकपूत प्रतिपालकान् परमाराधकपुरन्दर, निजकुलगगनद्योतनदिवाकर व्रतनियमसंजमरत्नत्रयरत्नाकर कृष्णावलिप्रस्तरन्तमूलखंडन चतुर्विधमुखमंडन, निजकुलकमलविकासनैकमार्त्तण्डान्, मार्गस्थकल्पवृक्षान् सरस्वतिकंठाभरणान त्रेपनक्रियाप्रतिपालकान एतान् गुणसंयुक्तान परम श्रावक विनयवंत साधु सा० हाथु भार्या श्रीमती इव साध्वी हरिषदे तस्य द्वौ पुत्रौ प्रथम पुत्र जिणशासन—उद्धरणधीर राजसभाभारवितरणप्रवीण सा० पासा भार्या द्वौ प्रथम लाडी द्वितीय वाली तस्य पुत्र चिरंजीव बालधवल सा० हरराज। सा० हाथु द्वितीय पुत्र देवगुरूशास्त्रशासनविनयवंत सा० आशा भार्या हकारदे। सा० राघौ—तृतीय पुत्र सा० दासा भार्या सिंदूरी तस्य द्वौ पुत्रौ प्रथम पुत्र सा० भविसी भार्याभावलदे द्वितीय पुत्र सा० नानू सा० कादू। सा० दासा तस्य द्वितीय पुत्र सा० धर्मसी भार्या दारादे। सा० राघौ चतुर्थ पुत्र सा० घाट तस्य भार्या राणी घाट पुत्र द्वौ, सा० हेमराज मुनिमाधवनंदाय दत्तम्।

४३७. होलिकाचरित्र—छीतर ठोलिया। पत्र संख्या–५। साइज–१०×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। रचना काल–सं० १६६० फागुण सुदी १५। लेखन काल–सं० १८७४। पूर्ण। वेष्टन नं० ५७०।

४३८ होलीरेणुकाचरित्र—जिनदास। पत्र संख्या–३१। साइज–११३/४×५१/२ इन्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७५६। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०८।

विशेष—पांडे जसा ने स्वयं प्रतिलिपि की थी।

—:o:—

विषय-कथा एवं रासा साहित्य

५३६ अष्टाह्निकाकथा—भ० शुभचन्द्र। पत्र सख्या-१० । साइज-१०½×६ इञ्च । माषा-सस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० २७५ ।

विशेष—कथा की रचना जालक की प्रेरणा से हुई थी । कथा की तीन प्रतियां और हैं ।

५४० आदित्यवारकथा—भाऊ कवि । पत्र सख्या-१७ । साइज-१०½×४½ इञ्च । माषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचनाकाल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १०६६ ।

५४१ आदित्यवारकथा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सख्या-४१ । साइज-५½×४ इञ्च । माषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-स० १७४४ । लेखन काल-सं० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन न० ६६६ ।

विशेष—कामा में प्रतिलिपि हुई थी । पत्र २० से सूरत की बारहखडी दी हुई है ।

५४२. कवलचन्द्रायणव्रतकथा । पत्र सख्या-६ । साइज-१०½×५ इञ्च । माषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-X लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ५६७ ।

५४३. कर्मविपाकरास—ब्र० जिनदास । पत्र सख्या-१७ । साइज-१०¾×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा साहित्य । रचना काल-X । लेखन काल-स० १७७६ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६१ ।

विशेष—भाषा में गुजराती का बाहुल्य है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७७६ वर्षे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे एकादशी गुरुवासरे श्री रत्नाकर तटे श्री खमातबदरे गौसाई कान्हड-गिरेण लिखितेमिद पुस्तक ब्र० सुमतिसागर पठनार्थं ।

५४४ गौतमपृच्छा । पत्र सख्या-३५ । साइज-१०×४ इञ्च । माषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४८ ।

विशेष—

प्रारम्भ—वीरजिनं प्रणम्यादौ बालानां सुखबोधकं ।
श्रीमद् गौतमपृच्छायाः क्रियते वृत्तिमद्भुतां ॥१॥
नमि ऊण तित्थनाह जाणतो तहय गोयमो भयवं ।
अबुहाण बोहणत्थ धम्माधम्मफलं वुच्छे ॥२॥
नत्वा तीर्थनाथ जाणन् तथा गौतम भगव ।
अबोधान् बोधनार्थं धर्माधर्मफल प्रपच्छे ॥३॥

अन्तिम पाठ—पाठक पद संयुक्तं कृता चेयं कथानिका ।

श्रीमद् गौतमपृच्छा सुखमासुरबोधका ॥

लिखत चेला हमीर विजय ।

इति गौतमपृच्छा संपूर्ण. ।

५४५. चन्दनषष्ठिव्रतकथा—विजयकीर्ति । पत्र संख्या-६ । साइज-११½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६६० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०१ ।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड ने प्रतिलिपि कराई थी ।

५४६. चन्द्रहंसकथा—टीकम । पत्र संख्या-४४ । साइज-११½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७०८ । लेखन काल-सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७६ ।

विशेष—रचना के पद्यों की संख्या ४५० है । रचना का प्रारम्भ और अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है ।

प्रारम्भ—ओंकार अपार गुण, सब ही अक्षर आदि ।
सिद्ध होय ताको जप्यां, आखिर एह अनादि ।
जिन वाणी मुख उचरे, ओं सबद सरुप ।
पंडित होय मति वीसरो, आखिर एह अनूप ॥२॥

अन्तिम पाठ—सांभरि स्यौं दश कोसा गांव, पूर्व दिशा कालख है ठाम ॥४४०॥
ता माहे व्यापारी रहै, धर्म्म कर्म्म सो नीति की कहै ।
देव जिनालय है तिहां भलौ, श्रावग तिहां वसा सांभलो ॥४४१॥
विधि सौं पूजा करे जिन तनी, मन में प्रीति सु राखै घणी ।
भगड़ तहांतणौ हुजदार, वंस लुहाड्या में सिरदार ॥४४२॥
भोज राज साहिब को नांव, देई वडाई सौंप्यौं गांव ।
सब सौं प्रति चलावे साह, दोप न करे कदै मन माहि ॥४४३॥
पुत्र दोइ ताकै घरि भला सुजाणि, पिता हुकम करे परवान ।
कालु और नराईनदास, ईहगातणीय जोव आस ॥४४४॥
भाई बधु कुटंब परिवार, विधि सौं करे सबन की सार ।
साहमी तणौ विनौ अति करें, सति वचन मुख उचरे ॥४४५॥
जिती भलाई है तिहि माहि, एक जीभ वरणन नही जाई ।
सब ही को दिल लीया हाथि, जिमै बैठि आपनै साथि ॥ ४४६
अैसी जुगति खैचियो भार, जाणे ताको सब संसार ।
संवत आठ सतरासै वर्ष, करता चौपई हुवो हर्ष ॥ ४४७ ॥

पडित होइ हसो मति कोई, बुरा भला आखरू जो होइ ।
जेठमास अर पखि अधियार, जाणै दोईज अरविवार ॥ ४४६ ॥
टीकम तणी बीनती एहु, लघु दीरघु सवारै जु लेह ।
सुणत कथा होई जे पास, हो तिन कै चरनण को दास ॥
मनधर कृपा एह जो कहै, चन्द्र हस जोमि सुख लहै ॥
रोग विजोग न व्यापै कोई, मनधर कथा सुनै जै सोई ॥ ४५० ॥

॥ इति चन्द्रहस कथा संपूर्ण ॥

सवत् १८१२ वर्षे शाके १६७७ आषाढकृष्णा तिथौ ६ बुधवासरे लिपि कृत ॥ जोसी स्योजीराम ॥ लिखापित धर्ममूरति धरमात्मा साह जी श्री डालूराम॥

५४७. **चित्रसेनपद्मावतीकथा—पाठक राजवल्लभ** । पत्र सख्या–१६ । साइज–९३/४×४१/२ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–स० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७४ ।

५४८ **दर्शनकथा—भारामल्ल** । पत्र सख्या–६८ । साइज–८×६१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–स० १९२७ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८४ ।

विशेष — एक प्रति और है ।

५४९ **दानकथा—भारामल्ल** । पत्र संख्या–३६ । साइज–११×५१/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ५९८ ।

विशेष—मूल्य १।।।) लिखा हुआ है ।

५५०. **नागश्रीकथा (रात्रिभोजनत्यागकथा)—ब्र० नेमिदत्त** । पत्र संख्या–२८ । साइज–११×४१/२ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६७४ फाल्गुन बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० १६८

विशेष—बाई तेजश्री बैजवाड में प्रतिलिपि कराई । पहला पत्र बाद का लिखा हुआ है । एक प्रति और है ।

५५१. **नागश्रीकथा (रात्रि भोजन त्याग कथा)—किशनसिंह** । पत्र संख्या–२० । साइज–११×५१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । रचना काल–सं० १७७३ सावन सुदी ६ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ५९० ।

विशेष—३ प्रतियां और हैं ।

५५२ **नागकुमारचरित्र—नथमल बिलाला** । पत्र सख्या–१०३ । साइज–१११/२×५३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–कथा । रचना काल–सं० १८३७ माघ सुदी ५ । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६१३ ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

५५३. निशिभोजनत्यागकथा—भारामल्ल। पत्र संख्या-२०। साइज-८×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६२७ श्रावण बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० ५८५।

विशेष—एक प्रति और है।

५५४ नेमिव्याहलो—हीरा। पत्र संख्या-११। साइज-१३×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। रचना काल-सं० १८४८। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११५०।

विशेष—इसमें नेमिनाथ के विवाह की घटना का विस्तृत वर्णन है-परिचय निम्न प्रकार है—

साल अठारासें परमाण, ता पर अडतालीस बखाण। पोष कृष्णा पांचै तिथि आणि, वारब्रहस्पति मन में आण ॥८०॥

बू दी को छै महासुथान, तो में नेम जिनालय जान। ती मध्ये पंडित वर भाग, रहै कवीश्वर उपमा गाय ॥८१॥

ताको नाउ जिनण की ठाम, महां विचक्षण रहत उदास। सखि हीरो छै ताको नाम, ती करया नेम गुण गान॥८२॥

इति श्री नेमि व्याहलो सपूर्ण। लिखत-चम्पाराम। छन्द संख्या ८२ है।

पत्र ५ से आगे वीनती सभ्भाय, रतन साहकृत, ज्ञानचौपडसभाय, माणकचंद कृत, बूलेट के ऋषभ देव का पद-तथा पेमराज कृत राजुल पच्चीसी-और हैं।

५५५. नेमिनाथ के दश भव । पत्र संख्या-४। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८७४। पूर्ण। वेष्टन नं० ५७५।

५५६ पुण्याश्रवकथाकोष—दौलतराम। पत्र संख्या-२६६। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। रचना काल-सं०१७७७ भादवा बुदी ५। लेखन काल-सं० १८८८। पूर्ण। वेष्टन नं० ५६३।

विशेष—श्लोक संख्या ८००० है। ग्रंथ महात्मा हरदेव लेखक से लिखा था। ४ प्रतियां और हैं।

५५७. पुरन्दर चौपई – ब्र० मालदेव। पत्र संख्या-१४। साइज-६½×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६८।

विशेष—

अन्तिम पद्य—सील वडो सवि धम मैं व्रत पालो रे।
अनुरुत्र कोठ प्रधान। सी०
रतनागरी कछु पाईये। चिंता रतन समान। सी० ॥ ७३ ॥
भाव देव सूरी गुण नीलो। ब्र०। वड गच्छ कमल दिणंद ॥ सी० ॥
तासु सीस इम कहइ। ब्र०। मालदेव आणद ॥ सी० ॥७४॥
अगर्या सील तो जे कह्यो। ब्र० अनुमोदीजै तेय। सी०
जो विरुद्ध किंपी कह्यो ब्र०। मीछा दुक्कड तेय। सी० ॥७५॥

५५८. राजाचन्द की चौपई । पत्र सख्या-५१ । साइज-५×१० इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८१२ श्रावण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० ६६८ ।

विशेष—प्रारम्भ के पत्र नहीं हैं । पत्र ३५ से फुटकर पद्य हैं ।

५५६. राजुलपच्चीसी । पत्र संख्या-७ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५३६ ।

विशेष—७ से आगे पत्र नहीं है ।

५६० व्रतकथाकोशभाषा—खुशालचन्द । पत्र संख्या-६७ । साइज-१२½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-स० १७८३ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ५६२ ।

विशेष—निम्न कथायें है ।

(१) जेष्ठजिनवरव्रतकथा (२) आदित्यवारव्रतकथा (३) सप्तपरमस्थानव्रतकथा (४) मुकुट सप्तमीव्रतकथा (५) अक्षयनिधिव्रतकथा (६) षोडशकारणव्रतकथा (७) मेघमालाव्रतकथा (८) चन्दनषष्ठीव्रतकथा (९) लब्धि विधानव्रतकथा (१०) पुरन्दरकथा (११) दशलक्षणव्रतकथा (१२) पुष्पांजलिव्रतकथा (१३) आकाशपचमीव्रतकथा (१४) मुक्तावलीव्रतकथा (१५) निर्दोषसप्तमीव्रतकथा (१६) सुगधदशमीव्रतकथा ।

५६१. रोहिणी कथा । पत्र सख्या-६ । साइज-५½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०५१ ।

५६२. वैताल पच्चीसी । पत्र सख्या-६-६२ । साइज-७×६ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६७५ ।

विशेष—अवस्था जीर्ण है । आदि तथा अन्तिम पाठ नहीं है । छठी कथा का प्रारम्भ निम्न प्रकार है ।

अथ छठी बारता लिखंत ॥ तब राजा वीर विक्रमादीत फेरि जाये सीस्यौ के रूख जाये चढयौ अर म्रतग ने उतारि करि ले चल्यौ ॥ तब राह मैं म्रतंग वैताल बोल्यो ॥ हे राजा रात्रि को समौ राह दुरि ॥ पैंडो कटे न्ही ॥ कथा बारता कह्यास्यो राह कटै सो हू येक कथा कहूँ छूं ॥ तु सुणि ॥

५६३ शनिश्चरदेव की कथा । पत्र संख्या-१३ । साइज-६½×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८५२ माघ सुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन न० १०३६ ।

विशेष—सेवाराम के पठनार्थ नन्दलाल ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

५६४. शीलकथा—भारामल्ल । पत्र सख्या-३३ । साइज-७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-१६८५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०० ।

विशेष—सं० १८८६ की प्रति की नकल है । कापी साइज है । दो प्रति और हैं ।

५६५. शीलतरंगिनीकथा–अखैराम लुहाड़िया । पत्र संख्या–८२ । साइज–६×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८७५ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०१ ।

विशेष—आरतराम गगवाल ने प्रति लिपि की थी ।

५६६ सप्तपरमस्थान विधान कथा—श्रुतसागर । पत्र संख्या–६ । साइज–१२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८३० वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८ ।

विशेष—पं० गुलाबचन्द ने प्रतिलिपि की । संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी हैं । एक प्रति और है ।

५६७ सप्तव्यसन कथा—आ० सोमकीर्ति । पत्र संख्या–७६ । साइज–१०½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–सं० १५२६ माघ सुदी १ । लेखन काल–सं० १७८१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६७ ।

५६८ सम्यक्त्वकौमुदी—मुनिधर्मकीर्ति । पत्र संख्या–१२ से ६२ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचनाकाल–× । लेखन काल सं० १६०३ श्रावण सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३६ ।

विशेष—किशनदास अग्रवाल ने प्रतिलिपि कराई थी । शकरदास ने प्रतिलिपि की थी ।

५६६. सम्यक्त्वकौमुदी कथा भाषा • । पत्र संख्या–४० । साइज–६½×६½ इंच । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५८३ ।

विशेष—४० से आगे पत्र नहीं है ।

५७०. सम्यक्त्वकौमुदी कथा—जोधराज गोदीका । पत्र संख्या–५६ । साइज–१०×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–कथा । रचना काल–सं० १७२४ फाल्गुन बुदी १३ । लेखन काल–सं० १८३० कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८२ ।

विशेष—हरीसिंह टोंग्या ने चन्द्रावतों के रामपुरा में प्रति लपि की । एक प्रति और है ।

५७१. सम्यग्दर्शन के आठ अगों की कथा • । पत्र संख्या–६ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २८० ।

५७२. सुगन्धदशमीव्रत कथा—नयनानद । पत्र संख्या–८ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १५२४ भादवा बुदी ६ आदित्वार । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८१ ।

विशेष—इति सुगधदशमी दुजिय संधि समाप्ता ।

५७३ सिद्धचक्रव्रत कथा—नथमल । पत्र संख्या–११ । साइज–१२×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी ।

विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ५२१ ।

५७४. हनुमंत कथा—ब्र० रायमल्ल । पत्र सख्या-७१ । साइज-११×४½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-स० १६१६ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ६०६ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।



विषय-व्याकरण शास्त्र

५७५ जैनेन्द्र व्याकरण—देवनन्दि । पत्र सख्या-४६५ । साइज-११×५½ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० २०८ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । प्रारम्भ के ३० पत्र जीर्ण हैं । एक प्रति और है वह भी अपूर्ण है ।

५७६. प्रक्रियारूपावली—पं० रामरत्न शर्मा । पत्र संख्या-८६ । साइज-११×५½ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय व्याकरण । रचनाकाल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १५ ।

५७७ मह्रीभट्टी—भट्टी । पत्र सख्या-२ से २८ । साइज-१०×४½ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० ७०० ।

५७८ शब्दरूपावली । पत्र सख्या-५६ । साइज-६½×४ इश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७०४ ।

५७६ सारस्वतप्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य ।,पत्र सख्या-४६ । साइज-१०½×५ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०३ ।

विशेष—एक प्रति और है ।



विषय-कोश एवं छन्द शास्त्र

५८०. अमरकोश—अमरसिंह। पत्र संख्या-२५। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत विषय-कोष। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १३४।

५८१. एकाक्षर नाममाला—सुधाकलश। पत्र संख्या-८८। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोष। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १५६।

५८२. छन्दरत्नावली—हरिराम। पत्र संख्या-२६ साइज-११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-छन्द शास्त्र। रचना काल-सं० १७०८। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६११।

विशेष—कुल २११ पद्य हैं—

अंतिम—ग्रंथ छंद रत्नावली सारस याको नाम।

मूखन भरती तैं भयो कहे दाश हरिराम ॥२११॥

इति श्री छंद रत्नावली संपूर्ण।

रागनंमनिंधीचंद करं सो संमतं सुमजानि।

फागुण सुदी त्रयोदशी मांजुलिखी सो जानि॥

५८३. छन्दशतक—कवि वृन्दावन। पत्र संख्या-३१। साइज-८½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-छन्द शास्त्र। रचना काल-सं० १८६८ माघ सुदी २। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०३।

५८४. नाममाला—धनजंय। पत्र संख्या-१६। साइज-१०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोष। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८५१ चैत सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० १३७।

विशेष—खीवसिंह के शिष्य खुशालचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

५८५. रूपदीपपिंगल—जैकृष्ण। पत्र संख्या-१०। साइज-१०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-छन्दशास्त्र। रचना काल-सं० १७७६ भादवा सुदी २। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५७३।

विशेष—रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम—सारद माता तुम बडी बुधि देहि दर हाल।

पिंगल की छाया लिये बरनूं बावन चाल ॥१॥

गुरु गणेश के चरण गहि हिये धारके विष्णु।

कुंवर भवानीदास का जगत करै जै किष्ण ॥२॥

रूप दीप परगट करूं भाषा बुद्धि समान ।
बालक कू सुख होत हैं उपजें अक्षर ज्ञान ॥३॥
प्राकृत की बानी कठिन भाषा सुगम प्रतिक्ष ।
कृपाराम की कृपा सूं कंठ करै सब शिष्य ॥४॥
पिंगल सागर सम कह्यो छंदा भेद अपार ।
लघु दीरघ गण अगण का बरनूं बुद्धि विचार ॥५॥

अंतिम— दोहा—गुण चतुराई बुधि लहै भला कहै सब कोइ ।
रूप दीप हिरदै धरै सो अक्षर कवि होय ॥

सोरठा—निज पुहकरण न्यात तिस में गोत कटारिया ।
सुनि प्राकृत सों बात तैसे ही भाषा करी ॥

दोहा—बावन बरनी चाल सब, जैसी उपजी बुद्धि ।
मूल भेद जाको कह्यो, करो कवीश्वर सुद्ध ॥
सवत सत्रहसै बरसै और छहत्तर पाय ।
भादों सुदी दुतिया गुरू भयो ग्रंथ सुखदाय ॥५६॥

॥ इति रूपदीप पिंगल समाप्त ॥

५८६. **श्रुतबोध—कालिदास** । पत्र सख्या–५ । साइज–९×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–छन्द शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०१ ।

विषय–नाटक

५८७. **ज्ञानसूर्योदय नाटक—वादिचन्द्रसूरि** । पत्र सख्या–२६ । साइज–११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–नाटक । रचना काल–स० १६४८ माघ सुदी ८ । लेखन काल–सं० १६८८ जेठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६५ ।

विशेष—मथुरा नगर में ग्रंथ रचना हुई। जोशी रावी ने मौजमाबाद में प्रति लिपि की।

५८८. ज्ञान सूर्योदय नाटक भाषा—पारसदास निगोत्या। पत्र संख्या-४८। साइज-१०½×७½ इंच।। भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक। रचना काल-सं० १९१७। लेखन काल-सं० १९३६। पूर्ण। वेष्टन नं० ८०२।

५८९ प्रबोधचन्द्रोदय—मल्ल कवि। पत्र संख्या-२५। साइज-८×६। भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक रचना काल-सं० १६०१। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६६।

विशेष—इस नाटक में ६ अंक हैं तथा मोह विवेक युद्ध कराया गया है। अंत में विवेक की जीत है। बनारसीदास जी के मोह विवेक युद्ध के समान है। रचना का आदि अंत भाग इस प्रकार है—

प्रारंभिक पाठ—अभिनंदन परमाग्य कीयो, अरु हैं गलित ज्ञान रस पीयो।
नाटिक नागर चित में बस्यौं, ताहि देख तन मन हुलस्यो ॥१॥
कृष्ण भट्ट करता है जहां, गंगा सागर मेटे तहां।
अतुमै को घरु जानें सोइ, ता सम नांहि विवेकी कोई ॥२॥
निन प्रबोधचन्द्रोदय कीयो, जानों दीपक हाथ ले दीयो।
कर्णा सुर उपावें स्वाद, कायर औरं करें प्रतिवाद ॥३॥
इन्द्री उदर परायन होइ, कबहूं पै नहीं रीझी सोइ।
पंच तत्व अगगति मन धार्यो, तिहि भाष नाटिक विस्तार्यो ॥४॥

काम उवाच—जो रति तू कुमति है मोहि, त्यौंरो सर्म सुनाऊं तोह।
ये विभात भैया ह मेरे, ते सब सुनन लागे तेरे ॥
पिता एक माता द्वै गाऊं, यह त्यौंरो आगे समझाऊं।
ज्यों रावी अरु लक्ष्पति राऊ, यों हम उन भयो युध को चाऊ ॥

विवेक— श्री विवेक गाह कराई, महाबली मति कहा न जाई।
याय शास्त्र वेगि बुलाया, तासों कहीतपीठ पठायौ ॥
तब वह गयो मोह के पासा, बोलन लागे वचन उदासा।
मथुरादागमनि रति जो काज, मांगे ते निरला सो जाजै।
गह विवेक कहीं समझाई, पु त्योहार तुम छोडो भाई।
नीम्ब नर देहुरे जेते, महापुरुष के हिरदे ते ते ॥
या र तुन न मतायो काही, पश्चिम मुगगान को जाही।
न्याय विचार कहीं सो वाता, अतिंप मोर न अंग समाता ॥

अंतिम पाठ—

पुरुष उवाच-तब आकास भयो जैकारा, और सबै मिटि गयो विचारा।
पुरुष प्रकट परमेश्वर आहि, तिसौं विवेक जानियौ ताहि ॥
अब प्रभु भयो सोखि तन धरिया, चन्द्र प्रबोध उदै तब करीया।
सुमति विवेकरु सरधा सांति, काम देव कारन कौं कांति ॥
इनकी कृपा प्रसन्न मन मुवो, जोहो आदि सोइ फिरि हुवो।
विष्णु भक्ति तेरे पर सारा, इत कृत भयो मिल्यो अनुवारा ॥
अब तिह संग रहेगो एही, हों भयो ब्रह्म विसरीयो देही।
विष्णु भक्ति तू पहुँची आइ, कीयो अनद जु सदा सहाइ ॥
अरु चिरकाल के मनोरथ पूजे, गयो शत्रु साल है दूजे।
जो निरवधि वासना होइ, तातै प्यारा औरन कोइ ॥
अद्वैत राज अनैम पदलयो, अचितै चिंतवत अचित भयो।
जा सिर ऊपर सनक सनदा, अरु वसिष्ठ वेदै ताहि वदा।
कृष्ण भट्ट सोइ रस गाया, मथुरादास सारु सोई वाता ॥
वदे गुरु गोविंद के पाइ, मति उनमान कथा सो गाइ।

इति श्री मल्लकवि विरचिते प्रबोधचन्द्रोदय नाटके षष्टमो अक समाप्त।

५६०. मदनपराजय भाषा—स्वरुपचन्द विलाला। पत्र सख्या-६३। साइज-११×७½ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक। रचना काल-स० १६१८ मगसिर सुदी ७। लेखन काल-सं० १६१८। असाढ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन न० ४७१।

विशेष—सवत शत उगणीस अरु अधिक अठारा मांहि।
मार्गशीर्ष सुदी सप्तमी दीतवार सुखदाहि ॥
तादिन यह पूरण करयो देश वचनिका मांहि।
सकल सघ मगल करो ऋद्धि वृद्धि सुख दाय ॥

इति मदनपराजय ग्र थ की वचनिका सपूर्ण। स० १६१८ का मिती असाढ सुदी ७ शुक्रवार सपूर्ण।
लेखन काल संभवत. सही नहीं है।

५६१. मदनपराजय नाटक—जिनदेव। पत्र सख्या-४१। साइज-१२½×८½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-नाटक। रचना काल-×। लेखन काल-स० १७८१। माह सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन न० २५।

विशेष—वसवा नगर में आचार्य ज्ञानकीर्ति तथा प० त्रिलोकचन्द्र ने मिलकर प्रतिलिपि की।

५६२. मोहविवेक युद्ध—बनारसीदास। पत्र सख्या–६। साइज–१०×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८७२।



विषय–लोक विज्ञान

५६३. अकृत्रिम चैत्यालयों की रचना । पत्र संख्या–१०। साइज–११×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–लोक विज्ञान। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६६।

५६४. त्रिलोकसार बंध चौपई—सुमतिकीर्त्ति। पत्र सख्या–१०। साइज–१०½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–लोक विज्ञान। रचना काल–×। लेखन काल–स० १८१३। पूर्ण। वेष्टन नं० ८०७।

विशेष—

अंतिम—अतीत अनागत वर्तमान, सिद्ध अनंता गुणना धाम।
भावे भगति समरु सदा, सुमति कीरति कहति अघतरु कदा ॥३०॥
मूलसघ गुरु लक्ष्मीचंद मुनीदत्त सपाटि वीरजचद।
मुनिन्द ज्ञानभूषण तस पाटि चंग प्रभाचन्द घदो मलरंगि ॥३१॥
सुमति कीरति सूरि वर कहिसार त्रैलोक्य सार धर्म ध्यान विचार।
जे भणि गणि ते सुखिया थाय एयशा रूपधरी मुगति जाय ॥३४॥

५६५. त्रिलोक दर्पण कथा—खड्गसेन। पत्र सख्या–२१८। साइज–८½×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–लोक विज्ञान। रचना काल–सं० १७१३। लेखन काल–स० १८०३। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७४।

विशेष—यह प्रति संवत् १७३६ की प्रति से लिपि की गई है।

५६६. त्रिलोकसार—आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र संख्या–१८७। साइज–१०½×५ इच। भाषा–प्राकृत। विषय–लोक विज्ञान। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १६४६। पूर्ण। वेष्टन नं० १०२।

विशेष—टीकाकार माधवचन्द्र त्रैविद्याचार्य है। जयपुर में प्रतिलिपि हुई।
एक प्रति और है।

५९७ त्रिलोकसार भाषा । पत्र संख्या-२ से ५० । साइज-११½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६३५ ।

५९८. त्रिलोकसार भाषा—उत्तमचन्द । पत्र संख्या-२२५ । साइज-१४½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-सं० १८४१ ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८१ ।

विशेष—दीवान श्योजीरामजी की प्रेरणा से ग्रंथ रचना की गयी थी जैसा कि ग्रंथ कर्त्ता ने लिखा है—

अंतिम दोहा—संवत् अष्टादश सत इकतालीस अधिकानि ।
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वादशी रविवारे परमानि ॥
त्रिलोकसार भाषा लिख्यो उत्तिमचन्द विचारि ।
भूल्यो होऊं तो कछु लीज्यो सुकवि सुधारि ॥
दीवाण श्योजीराम यह कियो हृदय में ज्ञान ।
पुस्तग लिखाय श्रवणा सुणू राखो निस दिन ध्यान ॥

॥ इति ॥

गद्य— प्रथम पत्र—"तहां कहिए है ।" मेरा ज्ञान स्वभाव है सो ज्ञानावरण के निमित्त तैं हीन होय मति श्रुत पर्याय रूप भया हैं तहां मति ज्ञान करि शास्त्र के अक्षरनि का जानना भया । बहुरि श्रुतज्ञान करि अक्षर अर्थ के वाच्य वाचक सम्बंध है । ताका स्मरणतैं तिनके अर्थ का जानना भया । बहुरि मोह के उदयतैं मेरे उपाधिक भाव रागादिक पाइये हैं ।

५९९ त्रैलोक्यदर्पण । पत्र संख्या-२६ । साइज-११¾×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६७८ ।

विशेष—बीच २ में चित्रों के लिए जगह छोड़ी हुई है ।

६०० त्रैलोक्यदीपक—वामदेव । पत्र संख्या-८६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८१२ माघ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०० ।

विशेष—पं० खुशालचन्द्र ने लालसोट में प्रतिलिपि की ।

६०१. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-६५ । साइज-११×५½ इंच । लेखन काल-सं० १५१६ अषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१ ।

विशेष—पत्र सं० ७७ तक नवीन पत्र है इससे आगे प्राचीन पत्र हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति सं० १५१६ वर्षे आषाढ सुदी ५ भौमवासरे झुंझुणू शुभ स्थाने शाकंभूपति प्रजाप्रतिपालक समसखानविजयराज्ये ॥ श्रीमूलान्वये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० पद्मनंदि देवा स्तत्पट्टे भ० श्री शुभ-

चन्द्र देवास्तत् पट्टालंकार षटतर्कचूडामणि भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मुनि सहसकीर्ति तत्शिष्य ब० तिहुणा खंडेलवाला वंशे श्रेष्टि गोत्रे सं मोरना भार्या माहुस्ततपुत्र सं० मारथोरेव सपत्री पदमानद भ्राता रूल्हाण्य: सं० पदमा भार्या पद्मश्री पुत्रा. त्रयो हेमा, गूजर, महिराज । रूल्हा भार्या जाजी पुत्र थोराज पूतपाल एतै पचमी उद्यापन निमित्त इदं त्रैलोक्यदीपकं नामा कर्मक्षय निमित्त सदृशत्रे प्रदत्तं ।



विषय—सुभाषित एवं नीति शास्त्र

६०२. उपदेशशतक—बनारसीदास । पत्र संख्या-२५ । साइज-८×४½ । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । रचना काल-सं०-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५५३ ।

६०३. गुलालपच्चीसी—ब्रह्म गुलाल । पत्र संख्या-४ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७४ ।

६०४. जैनशतक—भूधरदास । पत्र संख्या-२७ । साइज-९×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । रचना काल-सं० १७८१ । पौष सुदी १३ लेखन काल-सं० १९१४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५११ ।

विशेष—उत्तमचन्द्र मुशरफ की भार्या ने चढाया ।

६०५. नन्दबत्तीसी—मुनि विमलकीर्ति । पत्र संख्या-११ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । (पद्य) । विषय-नीति शास्त्र । रचना काल-सं० १७०१ । लेखन काल-सं० १७५० । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२ ।

विशेष— २ श्लोक तथा १०१ पद्य हैं ।

६०६ नीतिशतक - चाणक्य । पत्र संख्या-२१ । साइज-६×६ । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३० ।

६०७. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र संख्या-५१ । साइज-८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४३ ।

६०८ भावनावर्णन   । पत्र संख्या-२ । साइज-१३×६ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३६ ।

विशेष—हेमराज ने प्रतिलिपि की थी

६०९. रेखता—बखीराम । पत्र संख्या-६ । साइज-६×३$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । रचना काल × । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४२ ।

विशेष—स्फुट रचनाऐ हैं ।

६१०. सद्भाषितावली भाषा   । पत्र संख्या-३० । साइज-१२$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं०७०६ ।

विशेष—लेखक की मूल प्रति ही है, प्रति संशोधित है । पद्य संख्या ५०५ है । ग्रंथ के मूल कर्त्ता भ० सकलकीर्त्ति हैं ।

६११. सुबुद्धिप्रकाश—थानसिंह । पत्र संख्या-१४६ । साइज-१०$\frac{3}{4}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) विषय-सुभाषित । रचना काल-सं०१८४७ फागुण बुदी ६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८३० ।

रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ केवल ज्ञानानंद मय परम पूज्य अरहत ।
समोसरण लक्ष्मी सहित राजै नमूं महत ॥१॥
अष्ट कर्म अरि निष्ट कर अष्ट महागुण पाय ।
सिष्टि इष्ट अष्ट धरा लही सिद्ध पद जाय ॥२॥
पचसार आचार सुखि गुण छत्तीस निवास ।
सिसा दिक्षा देत हैं आचारज शिव वास ॥३॥

अन्तिम पाठ—श्रीमति सांति जिनाथ जी सांति करौ निति आप ।
विघन हरौ मंगल करौ तुम त्रिभुवन के बाप ॥६०३
सांति सुमुद्रा रावरी सांति चित्त करि तोहि ।
पूजौ वदौ भाव सौ खेम कुसल करि मोहि ॥६०४॥
देस प्रजा भूपति सकल ईत भीत करि दूर ।
सुख संपति धन धाम जस क्रिया भाव रख पूर ॥६०६॥
फागुन वदि षष्टी सुगुर ठारासत सैंताल ।
पूरण ग्रंथ सुसांत रखि विषै कियौ गुनमाल ॥६०६॥
पदिमी सुनिसी वांचसी करसी चरचा सार ।
मन वंछित फल पायसी तिनकौ करौ जुहार ॥६०७॥

इति श्री सबुद्धि प्रकास भाषा बंध जिनसेवक थानसिंह विरचित संपूर्ण ।

कवि अवस्था वर्णन—भरत षेत्र में देस ढूंढारि । तामैं वन उपवागि रसाल ॥
नदी बावडी कूप तडाग । ताकौ देखत उपजै राग ॥
कुक्कट उडि बैठे जिहि ठाम । सो समसरतौ तामैं गाम ॥
धन कन गोधन पूरत लोग । तपसी चौमासे दे जोग ॥
ता मधि अबावति पुरसार । चौगिरदां परवत अधिकार ॥
बस्ती तल उपरि सोधनी । ज्यौ दाडिम बीजन तैं बनी ॥
ताको जैसिंघ नामां भूप । सूरज वंस विषै ✱ अनूप ।
न्यायवंत बुधिवंत विसाल । परजापालक दीन दयाल ॥
दाता सूर तेज जिम भान । ससि अहला दीज्यौं जसखानि ॥
हय गय रथ सिवकादि अपार । अत मन्त्री प्रोहित परिवार ॥
इदि सौ विभौ कुवेर भडार । वदु समूह तियां वहुवार ॥
पंडत कवि भाटादि विसेख । षट दरसन सबही कौ भेष ॥
अपनै अपनै धर्म सुचलै । कोऊ काहू पै नही मिलै ॥४१॥
पणि सिव धर्मी भूपति जान । मन्त्री जैनी मुखि अधिकाहि ॥
जैनी सिव के धाम उतंग । सिखर धुजा सुन कलस सुचंग ॥
राग दोष आपस मैं नाहि । सबकै प्रीति भाव अधिकाहि ॥
सब ही भूपन मैं सिरदार । छत्रपती चलि इन अनुसार ॥
दुतिय पुरी सांगावति जानि । दक्षिण दिसि षट कोस प्रमान ॥
पुरी तलै सरिता मनुहार । नाम सुरसती सुध जलधार ॥४४।
नगर लोक धनवान अपार । विविध भांति करि है व्योहार ॥
ऊचे सिखर कलस धुज जहां । पंच जैन मन्दिर हैं तहां ॥
धर्म दया सज्जन गुन लीन । जैनी वहोत वसै परवीन ॥
वंस खण्डेलवाल मम गोत । ठोल्या बहु परिवारी गोत ॥
यारौ वास हमारौ सही । हेमराज दादो मम कही ॥
पुनि अनुसारि सकल घर मध्य । सामग्री दीपै सब रिद्धि ॥

दोहा—बडौ मलूक सुचंद सुत, दूजौ मोहन राम ।
लूणकर्ण तीजौ कह्यौ चौथौ साहिब राम ॥
सबकैं सुत पुत्री घना मोहन राम सुतात ।
मेरौ जन्म सांगावति मांहिं भयौ अवदात ॥

अवावति सांगावति नगर बीच जै भूप ।
आप बसायौ चाहि करि जैंपुर नाम अनूप ॥
सूत वंध सवही किये हाट सुघट बाजार ।
मिंदर कोटि सुकांगरे दरवाजे अधिकार ॥
सतखमौ जु बनाइयो, अपनै रहनै काज ।
चित्र महल रचना करी, बाग ताल महाराज ॥
साहूकार बुलाइया लेख भेज बहु देस ।
हासिल बाध्यौ न्याय जुत लोभ अधिक नहिं लेस ॥
सुखी भये सबही जहां अधिक चल्यौ व्यौपार ।
सांगावती आंवावती उजरी तब निरधार ॥१४॥
आय बसै जैपुर विषै कीन्हैं घर अरु हाटि ।
निज पुनि के अनुसार तैं सुखित भयौ सव ठाठ ॥१५॥
षोडश संवत्सर भयौ सब ही कौ सुख भ्रात ।
जैसिंह लोकांतर गयौ पिछली सुनि अब बात ॥
सब ईसुर मुख भूपती ईसर सिद्ध सु नाम ।
अति उदार प्राक्रम बडौ सब ही कौ आराम ॥
न्यायवत सवही सुखी दड मूल कछु नाहिं ।
काहू कौ दीन्है नहीं चुगलाचार न रहाय ॥
काल दोष तै नीच जन समराखि वछवारि ।
तीन वण के ऊच जन तिनकौ मानधराय ॥
आप हठी काहू तनी मानी नाहीं बात ।
पिछले मत्र थकी जिके कियौ भूप को घात ॥

अडिल्ल— दखिणी लियौ बुलाय गांव बाहिर रहे ।
मिलि कै जांहि दिवान दाम देने कहे ॥
लघु भ्राता माधव कूं वेगि मिलाय कै ।
लेख भेजियौ राज करौ तुम आय कै ॥
माधव आगै सिव धरमी सुखियौ भयो ।
जैन्यासौं करि द्रोह वच मैं लै लियौ ॥
देव धर्म गुरु श्रुत कौ विनय विगारियौ ।
कीयौ नांहि विचारि पाप विस्तारियौ ॥

दोहा— भूप अरथ समभ्यो नहीं मत्री के वसि होय ।
दड सहर में नाखियौ दुखी भये सब लोय ॥
त्रिविध भांति धन घटि गयौ पायौ बहुत क्लेस ।
दुखी होय पुर कौ तजो तव ताकौ पर देस ॥

सोरठा— मत्थपुर में आय कछू काल बैठे रहे ।
पुनि जयपुर मे जाय विणज गणि रहबो करै ॥
माधव के दरवार विणज कियौ सुख सौ रहे ।
आगे सुनि चित धारि मायो को जो वारता ॥६४॥

अडिल्ल— दुखी रोग धन हीन होय परगति गयौ ।
जासु पुत्र पृथ्वी हरि राजा पद भयौ ॥
हत्या करि लघु आप वृतांत ज्ञु लैगयौ ।
अनुजराज परतापसिंघ पीछै भयौ ॥
सिवमत जिनमत देवधन विप्र अतिथि जो कोय ।
ग्रहण कियौ वसि लौभ तैं पाप पुण्य नहिं जोय ॥
ईं अन्याय के जोग तौ दुखी लोग हम जोय ।
ह्वै उदास पुर छौंडियौ सुख इ इच्छा उर होय ॥

सोरठा — जादौ वंस विसाल नगर करौरी को पती ।
नाम भूप गोपाल, विणज हमारो थो सदा ॥
पीछै तुरछमपाल बैठ्यौ वास इहां कर्‌यो ।
राख्यौ मान विसाल, हाट सुघट उद्यम कियौ ।
मानिकपाल नरेस तुरसमपाल सुपट लयौ ।
मद कषाय महेस, राग दोम मध्य रत है ॥
जाकै शत्रु न कोय, सबसौं मिलि राज ज्ञु करै ।
रैत सुखी कछु जोय, थिरता पावैं इन करी ॥
पिता रह्यौ इहि थान, हम जैंपुर मे ही रहे ।
लघु भ्राता सुत जानि, तिन व्योपार कियो घनौं ॥
नैन सुख है नाम, नानिग राम ज्ञु तनुज हैं ।
बहु स्यानौ अभिराम, राजदुवार में प्रगट है ॥
गत्यातर में तात, गयौ ज्ञु टीकौ करण को ।

आये तव तें भ्रात, इहां रहे थिरता करी ॥७५॥
देवल साधरमी जहां पूजा धर्मक थांन ।
प'रयन खांन सुपांन की, थिति सगति विद्वान ॥
अैसी अछ्या रूप जो कीजे सुवुधि प्रकास ।
भाषामय अर वहु रहसि रहैसि यामैं भासि ॥७७॥
नैना को लघु भ्रात, नाम गुलाव छु जासु को ।
अत सुनि के हरषात सुवुधि दैन कौ श्रुत रच्यौ ॥

६१२. सुभाषित । पत्र संख्या-६ । साइज-८×५ इञ्च । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११५४ ।

६१३. सुभाषितरत्नावलि—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र संख्या-१८ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय सुभाषित । रचनाकाल-× । लेखन काल सं० १५८० वैसाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६० ।

वीच २ में नये पत्र भी लगे हैं ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

विशेष—संवत् १५८० वर्षे वैसाख सुदी ६ गुरौ श्री टोडानगरमध्ये राजाधिराजमुकुटमणिसूर्यसेनराज्ये श्री सोलकी वंशे श्री प्रभाचन्द्र देवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये वाकुलीवालगोत्रे साह नेमदास तस्य भार्या सिंगारदे तत्पुत्र पासा तस्य भार्या द्वितिय पुत्र साह जैला तस्य भार्या गौरादे तत्पुत्र गिरराज । इद शास्त्र लिखापितं वाई माता कर्म क्षयनिमित्त ।

विशेष—सात प्रतियां और हैं । सभी प्रतियां प्राचीन हैं ।

६१४ सुभाषितार्णव । पत्र संख्या-१ से ४८ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५० ।

विशेष – प्रति प्राचीन है । संस्कृत में संकेत भी दिये हुए हैं । पत्र ? ३ वां वाद का लिखा हुआ है ।

६१५ सुभाषितावलि भाषा । पत्र संख्या-७८ । साइज-६½×६½ इंच । भाषा-हिंदी । विषय-सुभाषित । रचनाकाल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०२४ ।

विशेष —६७६ पद्यों की भाषा है अन्तिम पत्र नहीं है ।

प्रारम्भ—

श्री सरवज्ञ नमूं चितलाय, गुरू सुगुरू निरग्रंथ सुभाय ।
जिन वाणी ध्याउ निरकार, सदा सहाई भवि गण तार ॥१॥

ग्रन्थ सुभाषित जिन वरणयौ, ताकौ श्ररथ कछु इक लग्यौ ।
निज पर हित कारणि गुण खानि, भाखू भाषा सुणहु सुजान ॥
सीख एक सदगुरु की सार, सुणि धारौ निज चित्तमझारि ।
मनुषि जनम सुख कारण पाय, एसी क्रिया करहु मन लाय ॥३॥

६१६. **सूक्तिमुक्तावली – सोमप्रभसूरि** । पत्र संख्या–१४ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सुभाषित । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ३०८ ।

विशेष – ८ प्रतियां और हैं ।

६१७ **सूक्ति संग्रह** । पत्र सख्या–२० । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४५ ।

विशेष—जैनेतर ग्रन्थों में से सूक्तियों का सग्रह है ।

६१८. **हितोपदेशबत्तीसी—बालचन्द** । पत्र संख्या–३ । साइज–६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ५६३ ।



विषय—स्तोत्र

६१९. **अकलंक स्तोत्र** । पत्र संख्या–५ । साइज–८¾×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५६ ।

६२० **अकलंकाष्टक भाषा—सदासुख कासलीवाल** । पत्र संख्या–१६ । साइज–११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–स० १९१५ श्रावण सुदी २ । लेखन काल–स० १९३५ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०५ ।

६२१. **आराधना स्तवन—वाचक विनय सूरि** । पत्र संख्या–५ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–स० १७२६ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ६०४ ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री विजयदेव सूरिंद पटधर, तीरथ जग मइ इणि जगि ।
तप गच्छपति श्री विजयप्रभसूरि सूरि तेजइ झगमगइ ॥२॥
श्री हीर विजय सूरी सीस वाचक श्री कीर्तिविजय सुर गुरु समो ।
तस सीस वाचक विनय विणयइ, थुरयो जिन चोवीस मो ॥३॥
सइ सत्तर संवत् उगणसीयइ रही राते रचउ मास ए ।
विजय दसमी विजय कारयां कीउ गुण अभ्यासए ॥४॥
नरभव अराधना सिद्धि साधन सुकृत लीला विलासए ।
निर्जरा हेत इठवन रचिउ नामइ पुण्य प्रकासए ॥५॥

६२२. आलोचना पाठ ...... । पत्र सख्या–१ से १२ । साइज–१०½×४½ इच । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तवन । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । एक एक प्रति और है ।

६२३. इष्टछत्तीसी .. । पत्र सख्या–८ । साइज–९½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५३ ।

६२४. इष्टछत्तीसी—बुधजन । पत्र संख्या–६ । साइज–१२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२३ ।

६२५. ऋषिमंडलस्तोत्र—गौतम गणधर । पत्र संख्या–७ । साइज–८×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । रचना काल–× । लेखन काल–स० १९२५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६० ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६२६. एक सौ आठ (१०८) नामों की गुणमाला—द्यानत । पत्र सख्या–३ । साइज–८×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–स० १९२५ । पूर्ण । वेष्टन न० ५५८ ।

६२७. एकीभावस्तोत्र—वादिराज । पत्र संख्या–९ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० २६४ ।

विशेष—सक्षिप्त संस्कृत टीका सहित है । ५ प्रतियां और हैं ।

६२८. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्राचार्य । पत्र संख्या–६ । साइज–११×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६७ ।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई थी । अन्त में शान्तिनाथ स्तोत्र भी है । ७ प्रतियां और हैं ।

६२९. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा—बनारसीदास। पत्र संख्या ११ से २६। साइज-८×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८८० ज्येष्ठ सुदी १३। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६८०।

विशेष—नानूलाल बज ने प्रतिलिपि की १६ से २६ तक पत्र नहीं हैं। २७ से २६ तक सोलह कारण पूजा जयमाल है।

६३०. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा—अखयराज। पत्र संख्या-७ से २६। साइज ६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ११०५।

६३१. चौबीस महाराज को विनती—रामचन्द्र। पत्र संख्या-७। साइज-१०½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४०५।

६३२. ज्वालामालिनी स्तोत्र ×। पत्र संख्या-८। साइज-८×४¼ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५७।

६३३. जिन दर्शन ×। पत्र संख्या-३। साइज-६½×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५२७।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

६३४. जिनपंजरस्तोत्र—कमलप्रभ। पत्र संख्या-३। साइज-८×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६२५। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५६।

६३५. जिनसहस्रनाम—जिनसेनाचार्य। पत्र संख्या-१२। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४७६।

विशेष—लक्ष्मीस्तोत्र भी दिया हुआ है। दो प्रतियां और हैं।

६३६. जिनसहस्रनाम—पं० आशाधर। पत्र संख्या-८। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८४६। पूर्ण। वेष्टन नं० ७८६।

विशेष—एक प्रति और है।

६३७. जिनसहस्रनाम टीका—पं० आशाधर (मूल कर्त्ता) टीकाकार श्रुतसागर सूरि। पत्र संख्या-१२१। साइज-१०×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८०४ पौष सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन नं० १२।

विशेष—प्रति सुन्दर एवं शुद्ध है।

६३८. जिनसहस्रनाम भाषा—बनारसीदास । पत्र संख्या–७ । साइज–११×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–सं० १६६० । लेखन काल–सं० १६७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६० ।

६३६. जिन स्तुति । पत्र संख्या–५ । साइज–१२×५½ इच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–स्तवन । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८५ ।

६४०. दर्शन दशक—चैनसुख । पत्र संख्या–२ । साइज–११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६४१. दर्शन पाठ । पत्र सख्या–४ । साइज–११×५ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७७ ।

विशेष—दर्शन विधि भी दी है ।

६४२. निर्वाणकाण्ड गाथा । पत्र संख्या–१२ । साइज–४×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६० ।

विशेष—गुटका साइज है । तीन प्रतियां और हैं ।

६४३. निर्वाणकाण्ड भाषा—भैया भगवतीदास । पत्र संख्या–२ । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४६ ।

६४४. पद व भजन संग्रह । पत्र संख्या–७६ । साइज–१२×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६३ ।

विशेष—जैन कवियों के पदों का सग्रह है ।

६४५. पद व भजन संग्रह । पत्र संख्या–२०६ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद संग्रह । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६२ ।

विशेष—निम्न रागिनियों के भजन हैं—

राग भैरु,	भैरवी,	रामकली,	ललित,	सारंग,	विलावल,	टोडी,
पत्र — १–६	१६–२२	२३–४०	४१–४६	५०–७१	७२–१०५	१०६–११४
पूरवी,	मल्हार,	ईमण,	सोरठ,	आसावरी,		
११५–११८	११६–१३१	१३१–१५०	१५६–२०४	२०६		

इनके अतिरिक्त नेमिदशभववर्णन भी दिया हुआ है ।

६४६. पद संग्रह ....। पत्र संख्या-४। साइज-८×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पद (स्तवन)। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८४४। पूर्ण। वेष्टन नं० १०५४।

६४७. पद संग्रह ..। पत्र संख्या-४७। साइज-७×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७६८। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१३।

६४८. पद संग्रह। पत्र संख्या-१ से ६। साइज-१०½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६३३।

६४६. पद संग्रह। पत्र संख्या-१ (लंबा पत्र)। साइज-१५½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६८२।

विशेष—किशनदास तथा द्यानतराय के पद हैं।

६५०. पद संग्रह—ब्रह्मदयाल। पत्र संख्या-८। साइज-४½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६६१।

६५१. पद संग्रह ..। पत्र संख्या-१। साइज-१४×२७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६६७।

विशेष—लंबा पत्र है।

६५२. पद संग्रह ...। पत्र संख्या-१७। साइज-६½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६६८।

६५३. पद संग्रह ....। पत्र संख्या-३५। साइज-५×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११६७।

६५४ पद संग्रह .....। पत्र संख्या-१४। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १११४।

६५५. पद्मावती अष्टक वृत्ति .....। पत्र संख्या-१६। साइज-१२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६३।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत टीका सहित है।

६५६. पद्मावतीस्तोत्र .....। पत्र संख्या-६। साइज-८½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५४।

६५७. पद्मावतीस्तोत्र । पत्र सख्या–४ । साइज–१०½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–स० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन न० १०६७ ।

६५८. पंचमंगल—रूपचन्द । पत्र सख्या–२ से १२ । साइज–६½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६५६ पार्श्वनाथ स्तोत्र । पत्र संख्या–१० । साइज–८×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ५५४ ।

६६०. पार्श्व लघु पाठ । पत्र संख्या–३ । साइज–१०×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५६ ।

६६१. वडा दर्शन । पत्र सख्या–६ । साइज–११½×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ५०७ ।

विशेष– पत्र ३ से आगे रूपचन्द कृत पच मंगल पाठ है ।

६६२ विनती सग्रह । पत्र संख्या–५ । साइज–६×५ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ११३५ ।

६६३. विनती—किशनसिंह । पत्र संख्या–१ । साइज–६×६ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १०१५ ।

६६४. भक्तामर स्तोत्र—मानतुंगाचार्य । पत्र संख्या–१२ । साइज–१०×४½ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–स० १६७४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४८६ ।

विशेष—१० प्रतियां और हैं ।

६६५. भक्तामरस्तोत्र भाषा—हेमराज । पत्र संख्या–१० । साइज–१०½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ५२५ ।

६६६ भक्तामर स्तोत्र सटीक—मानतुंगाचार्य टीकाकार । पत्र संख्या–४ । साइज–११½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचनाकाल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० २६६ ।

विशेष—श्वेताम्बरीय टीका है, ४४ पद्य हैं तथा टीका हिन्दी में है ।

एक प्रति और है जिसमें मत्र आदि भी दिये हुए हैं

६६७. भक्तामर स्तोत्र टीका" ' " ''' । पत्र सख्या-१२ । साइज-८ $\frac{1}{2}$×६ $\frac{3}{4}$ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६४६ ।

विशेष—१० से आगे पत्र नहीं हैं ।

६६८. भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र सख्या-४५ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-स० १६६७ अषाढ सुदी ५ । लेखन काल-स० १६८१ । पूर्ण । वेष्टन न० ६५ ।

विशेष—आचार्य भुवनकीर्ति के लिए घारपुर में लालचन्द ने यह पुस्तक प्रदान की ।

६६९. भूपालचतुर्विंशति—भूपाल कवि । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २८१ ।

विशेष—१ प्रति और है ।

६७०. मगलाष्टक ' । पत्र संख्या-२ । साइज-१३×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४५ ।

६७१. लघु सामायिक पाठ ' । पत्र सख्या-१ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४४ ।

६७२. लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मनदि । पत्र सख्या-२ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११२१ ।

६७३ विषापहारस्तोत्र—धनंजय । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २६६ ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं, जिनमें एक सस्कृत टीका सहित है ।

६७४. विषापहारस्तोत्र भाषा—अचलकीर्त्ति । पत्र संख्या-५ । साइज-८×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५४४ ।

६७५. बृहद्शान्ति स्तोत्र । पत्र सख्या-१४ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत प्राकृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३०१ ।

विशेष—प्रारम्भ में भयहार स्तोत्र, अजित शान्ति स्तोत्र, व भक्तामर स्तोत्र हैं ।

६७६ वीरतपसज्झाय''' " ' । पत्र संख्या-२ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५८ ।

भाषा गुजराती है । ६५ पद्य हैं

प्रारम्भ में ३४ पद्य में कुमति निघटिन श्रीमधर जिनस्तवन है।

६७७. शान्तिस्तवनस्तोत्र । पत्र संख्या–३ । साइज–८३/४×४१/२ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५३ ।

६७८. सरस्वतीस्तोत्र—विरंचि । पत्र संख्या–२ । साइज–१०×५१/२ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२६ ।

विशेष—सारस्वत स्तोत्र नाम दिया हुआ है । ब्रह्मांड पुराण के उत्तर खंड का पाठ है ।

६७९. स्तोत्र पाठ संग्रह । पत्र संख्या–८० । साइज–११×५१/२ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०० ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है—

(१) निर्वाण काण्ड	—
(२) तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वाति
(३) भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य
(४) लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव
(५) जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य
(६) मृत्यु महोत्सव	—
(७) द्रव्य संग्रह गाथा	नेमिचन्द्राचार्य
(८) विषापहार स्तोत्र	धनंजय

६८०. स्तोत्र संग्रह । पत्र संख्या–२१ से ६५ । साइज–११३/४×५१/२ इन्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–स्तोत्र । लेखन काल–सं० १९२६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६२४ ।

६ स्तोत्रों का संग्रह हैं ।

६८१ स्तोत्र । पत्र संख्या–८ । साइज–१२×५१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७२ ।

विशेष—अक्षर मोटे हैं तथा प्रति प्राचीन है ।

६८२. स्वयंभूस्तोत्र—समंतभद्र । पत्र संख्या–४ । साइज–११३/४×४३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६७ ।

विशेष—विसर्जन पाठ भी है । दो प्रतियां और हैं ।

६८३ समतभद्रस्तुति (बृहद् स्वयभू स्तोत्र) —समतभद्र । पत्र संख्या–१४ । साइज–११½×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २१४ ।

६८४ साधु वदना । पत्र सख्या–४ । साइज–१०½×४ इञ्च भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । रचना काल–× । लेखन काल–स० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७३ ।

६८५ सामायिक पाठ । पत्र सख्या–२६ । साइज–७×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ५४ ।

विशेष—गुटका साइज है तथा निम्न सग्रह और है

निरजन स्तोत्र—पत्र सख्या ३

सामायिक—पत्र सख्या

चौबीस तीर्थंकर स्तुति—पत्र सख्या–२४ से २५

निर्वाण काण्ड गाथा—पत्र सख्या–२५ से २६

६८६. सामायिक पाठ । पत्र संख्या–६१ । साइज–११×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–पौष बदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० ५४८ ।

विशेष—जोशी श्रीपति ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७. सामायिक पाठ भाषा–त्रिलोकेन्द्रकीर्ति । पत्र सख्या–६४ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी विषय–स्तोत्र । रचना काल–स० १८३२ वैशाख सुदी १४ । लेखन काल–स० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८२० ।

प्रारम्भ—श्री जिन वदौं भाव धरि जा प्रसाद शिव बोध ।
जिन वाणी अरु जैन गुरु वदौ मान निरोध ॥
सामायिक टीका करी प्रभाचद मुनिराज ।
सस्कृत वाणी जो निपुण ताहि के वो काज ॥२॥
जो व्याकरण बिना लहैं सामायिक को अर्थ ।
सो भाषा टीका करू अल्पमती जन अर्थ ॥३॥

अन्तिम—अठारासै और बत्तीस संवत् जाणो विमवा बीस ।
मास भलो वैसाख बखाण किसन पक्ष चोदसि तिथि जाण ॥
शुक्रवार शुभ वेला योग पुर अजमेर वसै भवि लोग ।
मूल सघ नद्याम्नाय बलात्कार गण है सुखदाय ॥
गच्छ सारदा अन्वयसार कुन्दकुन्द मुनिराज विचार ।

श्री भट्टारक कीर्ति निधान विजयकीर्ति नामैं गुण खान ॥
तिन इह भाषा टीका करी प्रभाचन्द टीका अनुसरी ।

दोहा—संस्कृत शब्द नहीं लिख्यौ सब थानक इण माहि ।
किहीं किहा लिखियो कठिन घणी वधाई नाहि ॥
यू भावारथ सूचिनी इह टीका को नाम ।
जाणों बांचो उर धरो ज्यूं सीझै शिव काम ॥
प्रभाचन्द की मति कहां किहां हमारी बुद्धि ।
रवि की कान्ति किहौ किहां अर दीपक की शुद्धि ॥
पै हम मति माफिक करी इण में अर्थ विरुद्ध ।
जो प्रमाद वसि होय सो सुमति कीजिये शुद्ध ॥

सोरठा—भाषा टीका एह कीई जिनेसर भक्ति वसि ।
जो चाहो शिव गेह इण को पाठ करो सदा ॥१॥

इति श्रीमद्भट्टारक श्री तिलोकेन्द्रकीर्त्ति विरचिता सामायिक टीका भावार्थसूचिनी नाम्नी सिद्धमगमत् ।

गद्य का उदाहरण—भलो है पार्श्व कहतां सामधि जैह को असा हे सुपार्श्वनाथ भगवन् आप जय जय कहतां वार वार जयवता रहो । आपनै म्हारो बारवार नमस्कार होवो । (पत्र ३८)

६८८. **सामायिक वचनिका—जयचन्द छाबड़ा** । पत्र सख्या–५० । साइज–१२×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ४०५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६८६. **सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनन्दि** । पत्र सख्या–३ । साइज–११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५ ।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं जिसमें एक हिन्दी टीका सहित है ।



विषय-संग्रह

६६०. गुटका नं० १। पत्र संख्या-१५५। साइज-१०×७ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३१८।

मुख्यतया निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
षट्पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	—
आराधनासार	देवसेन	"	—
तत्त्वसार	देवसेन	"	—
समाधि शतक	पूज्यपाद	संस्कृत	—
त्रिभंगीसार	नेमिचन्द	प्राकृत	—
श्रावकाचार दोहा	लक्ष्मीचन्द	"	—

६६१. गुटका नं० २। पत्र संख्या-१२६। साइज-८½×६ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन काल-सं० १८१५ माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३१६।

विशेष—पूजा पाठ तथा सिंदूरप्रकरण आदि का संग्रह है। करौली में पाठ संग्रह किये गये थे। श्री राजाराम के पुत्र मौजीराम लुहाडिया ने प्रति लिखवाई थी।

६६२. गुटका नं० ३। पत्र संख्या-६८। साइज-६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चर्चा। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६०।

विशेष - धार्मिक चर्चाओं का संग्रह है।

६६३ गुटका नं० ४। पत्र संख्या-१६६। साइज-८½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ३७३।

विशेष—अष्टकर्म-प्रकृति वर्णन तथा तीनलोक वर्णन है।

६६४ गुटका नं० ५। पत्र संख्या-१८१। साइज-१०½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-सं० १८६५। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३३।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
पार्श्व पुराण	भूधरदास	हिन्दी	पत्र १–७२
चौवीस तीर्थंकर पूजा	रामचन्द्र	"	७३–१२६
देवसिद्धपूजा एव	—	हिन्दी	१२६–१८१
अन्य पाठ संग्रह	—	"	

६६५. **गुटका नं० ६** । पत्र सख्या–१५२ । साइज–७×६¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३७ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
चाणक्य नीति शास्त्र	चाणक्य	संस्कृत	×
वृन्दविनोद सतसई	वृन्द	हिन्दी	७१० पद्य हैं ।
विहारी सतसई	विहारी	हिन्दी	७०६ पद्य हैं ।
कोकसार	आनंद कवि	हिन्दी	४४४ पद्य हैं ।

६६६. **गुटका न० ७** । पत्र सख्या–१५२ । साइज–६½×६½ इच । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । लेखन काल–स० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन न० ४४७ ।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है—

भक्तामर आदि पञ्च स्तोत्र	—	सस्कृत
तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वाति	"
सुदर्शनरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी
भविष्यदत्त चौपई	"	"

६६७. **गुटका नं० ८** । पत्र संख्या–१८७ । साइज–८½×६ इन्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । लेखन काल–सं० १७२७ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४४८ ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है—

प्रवचनसार भाषा	हेमराज	हिन्दी	
पद	रूपचन्द	"	
परमार्थ दोहा शतक	"	"	लेखन काल १७२१
पञ्च मगल	"	"	

भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	,,	
चिन्तामणि मान बावनी	मनोहर कवि	,,	२० पद्य हैं । अपूर्ण
कलियुग चरित	—	,,	१० पद्य हैं ।

६६८. गुटका नं० ६ । पत्र संख्या–१३८ । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–सं० १८१२ पूर्ण । वेष्टन नं० ४४६ ।

विशेष—सामायिक पाठ हिन्दी टीका सहित तथा अन्य पाठों का संग्रह है ।

६६६ गुटका नं० १० । पत्र संख्या–४४ । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–सं० १८८५ असाढ सुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४५० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

७००. गुटका नं० ११ । पत्र संख्या–२६४ । साइज–६×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी–प्राकृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५१ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत	—
कल्याणमंदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	,,	—
कर्मकाण्ड गाथा	नेमिचन्द्र	प्राकृत	—
द्रव्यसंग्रह गाथा	,,	,,	—
तत्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	—
नाम माला	—	,,	—
चौरासी बोल	हेमराज	हिन्दी	—
निर्वाण काण्ड	—	प्राकृत	—
स्वयंभू स्तोत्र	समंतभद्र	संस्कृत	—
परमानंद स्तोत्र	—	,,	—
दर्शन पाठ	—	,,	—
करुणाष्टक	—	,,	—
पार्श्वस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	,,	—
पार्श्वस्तोत्र	—	,,	—
चौबीस तीर्थंकर पूजा	रामचंद्र	हिन्दी	—
पूजा संग्रह	—	,, संस्कृत	—

स्तुति	—	हिन्दी

पदसंग्रह—रूपचन्द्र, दीपचन्द, टेकचन्द, हर्षचन्द, धर्मदास, भूधरदास और बनारसीदास आदि कवियों के हैं।

७०१. **गुटका नं० १२** । पत्र संख्या-७२ । साइज-१०×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ४८६ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

७०२. **गुटका नं० १३** । पत्र संख्या-६४ । साइज-६×६¾ इञ्च । भाषा-हिंन्दी । लेखन काल-स० १८४२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८८ ।

विशेष—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चौवीस ठाणा चर्चा	—	हिन्दी	
कुदेव स्वरूप वर्णन	—	"	
मोक्षपैडी	बनारसीदास	"	

७०३. **गुटका न० १४** । पत्र संख्या-४३ । साइज-७×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ५८६ ।

विशेष—पूजा संग्रह, कल्याणमन्दिर स्तोत्र समयसार नाटक भाषा-(बनारसीदास) आदि पाठों का सग्रह है।

७०४. **गुटका नं० १५** । पत्र संख्या-२६२ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १७५६ । पूर्ण । वेष्टन न० ६३५ ।

सूची	कर्त्ता का नाम	पत्र	भाषा	विशेष
श्रीपालरास	ब्रह्मरायमल्ल	१-२६	हिन्दी	रचनाकाल १६३० आषाढ सुदी १३
प्रद्युम्नरास	"	२६-४४	"	१६२८ भादवा सुदी २
नेमीश्वररास	"	४४-५६	"	१६१५ श्रावण सुदी १३
सुदर्शनरास	"	५६-७६	"	१६२६ वैशाख सुदी ७
शीलरास	विजयदेव सूरि	७६-८८	"	—
अठारह नाता का वर्णन	लोहट	८८-६२	"	—
धर्मरास	—	६२-११४	"	—
रविवार की कथा	भाऊ कवि	१०४-११३	"	—
अध्यात्म दोहा	रूपचन्द	११३-११७	"	१०३ दोहे हैं।

सीताचरित्र	कविवालक	११७–२३७	,,	—
पुरन्दर चौपई	मालदेव सूरि	२३७–२५६	,,	लेखनकाल १७५६
योगसार	योगचन्द्र	२५७–२६२	,,	—

७०५. गुटका नं० १६। पत्र संख्या–३७६। साइज–६×४½ इञ्च। भाषा–सस्कृत–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६३१।

निम्न पाठों का सग्रह है—

जिनसहस्रनाम पूजा	धर्मभूषण	संस्कृत	पत्र १–१५६
समवशरण पूजा	लालचन्द		
	विनोदीलाल	हिन्दी	१५७–३७६
			रचना काल–१८३४

७०६. गुटका नं० १७। पत्र सख्या–२० से ४१०। साइज–६×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६३६।

मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है —

रचना का नाम	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
पथीगीत	छीहल	हिन्दी	
परमात्म प्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	
बनारसी विलास के कुछ अंश	बनारसीदास	हिन्दी	
सीताचरित्र	कवि बालक	,,	रचना काल १७१३
पद सग्रह	—	,,	विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है
मांगी तु गीतीर्थ वर्णन	परिखाराम	,,	
दोहा शतक	हेमराज	,,	अध्यात्म, र० का० स० १७२५ कार्तिक सुदी ५, १०१ पद्य हैं।
दोहा शतक	रूपचन्द	,,	अध्यात्म १०१ पद्य हैं।
सिन्दूर प्रकरण	बनारसीदास	,,	
भक्तामर स्तोत्र टीका	अखयराज श्रीमाल	,,	स्तोत्र अंतिम पद्य हेमराज कृत है।
सबोध पचासिका	त्रिभुवनचन्द	,,	
अणुव्रत की जखडी	—	,,	
अकृत्रिम चैत्यालय की जयमाल	—	,,	
पद—चेतन गो घर नाहीं तेरो	मनराम	,,	

पद—जिय तैं नर भवि यों ही खोयो	मनराम	हिन्दी	
रोगापहार स्तोत्र	”	”	
पद—सुख घडी कब आवली नहीं हो ह'कीर्ति ससार मझार—		”	१२ अतरे हैं।

७०७. **गुटका नं० १८**। पत्र संख्या–१६४। साइज–७×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६३७।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामर भाषा	हेमराज	”	—
कर्म बत्तीसी	अचलकीर्ति	”	र० का० १७७७ पावा नगर में रचना की गयी थी।
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	”	—
मेघ कुमार गीत	पूनो	”	—
सिन्दूर प्रकरण	बनारसीदास	”	—
बनारसी विलास के पद एवं पाठ	”	”	—
जम्बूस्वामी पूजा	पांडे जिनराय	”	ले० का० १७४६ पौष सुदी १०

विशेष—जबलपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

विशेष—१२० पत्र से आगे की लिपि पढने में नहीं आता।

७०८ **गुटका नं० १६**। पत्र सख्या–२०। साइज–५×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८०४।

विशेष—जीवों की सख्या का वर्णन है।

७०६ **गुटका नं० २०**। पत्र सख्या–१३५। साइज–६½×१० इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १७८८। पूर्ण। वेष्टन नं० ८३८।

निम्न पाठों का संग्रह है—

समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी	रचना काल सं० १६६१
बनारसी विलास	”	”	—
कर्म प्रकृति वर्णन	”	”	—

७१० गुटका नं० २१ । पत्र संख्या–२४१ । साइज ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–सं० १८१७ माघ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८५८ ।

निम्न पाठों का संग्रह है ।

चौदह मार्गणा चर्चा	—	हिन्दी	विशेष
स्वर्ग नर्क और मोक्ष का वर्णन	—	"	
अंतर काल का वर्णन	—	"	
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	

७११. गुटका नं० २२ । पत्र संख्या–३१ । साइज–६½×७ इंच । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६५ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

७१२. गुटका नं० २३ । पत्र संख्या–१२ । साइज–८×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६४ ।

विशेष—सम्मेद शिखर पूजा एवं रामचन्द्र कृत समुच्चय चौबीसी पूजा संग्रह है ।

७१३. गुटका नं० २४ । पत्र संख्या–३४ । साइज–६½×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६७० ।

विशेष—

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
दशलक्षण जयमाल	—	हिन्दी
मोक्ष पैडी	बनारसीदास	"
सबोध पचासिका	द्यानत	"
पंचमंगल	रूपचन्द	"
पद	परमानन्द	"
योगसार	योगीन्द्र देव	अपभ्रंश

७१४. गुटका नं० २५ । पत्र संख्या–२५३ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत–प्राकृत । विषय–संग्रह । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७१ ।

विशेष—गुटके में लगभग ३३ से अधिक पाठों का संग्रह है जिनमें मुख्य निम्न पाठ है—

नाम ग्रथ	कर्त्ता	भाषा	विशेष
नेमीश्वर जयमाल	भडारी नेमचंद	अपभ्र श	पत्र १५
गीत	बूचा	हिन्दी	पद्य ४
नेमीश्वर गीत	वील्हव	हिन्दी	पत्र २०
शांतिनाथ स्तोत्र	गुरुभद्र	सस्कृत	सरल सस्कृत में है। गुरुभद्र की जगह गुणभद्र भी नाम मिलता है। स्तोत्र सुन्दर है।
जिनवरस्वामी वीनती	सुमतिकीर्त्ति	हिन्दी	
मुनिसुव्रतानुप्रेक्षा	प० योगदेव	अपभ्रंश	
हसा भावना	ब्रह्म अजित	हिन्दी	पत्र १६० तक कुल ३७ पद्य हैं
मेघ कुमार गीत	पूनो	हिन्दी	पत्र २१४
जोगीरासा	जिणदास	"	"
ग्यारह प्रतिमावर्णन	नि कनकामर	"	२१६
पद—रेमन काहे को भूलि रह्यो विषया वन भारी	छीहल	"	२१६ ४ पद्य हैं
नेमिराजमति वेलि	ठक्कुरसी	"	२२४
जिण लाडू गीत	ब्रह्मरायमल्ल	"	२२४
पचेंद्रिय वेलि	ठक्कुरसी	"	२२७
सार मनोरथमाला	साह अचल	"	२३३
विज्जुच्चर अणुवेहा	—	अपभ्रंश	२४०
भरतेश्वर वैराग्य	—	"	२४१
रोष (क्रोध) वर्णन	गोयम	"	२४२
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	—
पट्टावलि भद्रबाहु से पद्मनंदि तक	—	सस्कृत	—

७१५ **गुटका न० २६।** पत्र सख्या—२७६। साइज—५ इन्च। भाषा—हिन्दी। लेखन काल—स० १७१८। पूर्ण। वेष्टन न० ६७२।

विषय सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
पचमगतिवेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	रचना काल—स० १६८३। लेखन काल स० १७१४। मधुपुरा में चूहडमल ने प्रतिलिपि की थी। अत में इसका नाम चहुँगतिवेलि भी दिया है।

समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी	रचना काल सं० १६६३ । ले. का. सं० १७५८ ।
कृष्ण रुक्मणी वेलि	पृथ्वीराज राठौड	हिन्दी	रचना काल सं० १६१४ । ले० काल सं० १७५४ ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है।

३ नुसखे	—	हिन्दी

(१) शिलाजीत शुद्ध करने की विधि।

(२) फोडे फुन्सियों की औषध।

(३) घोड़ा के 'जहवाद' रोग की औषध।

सिंदूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	रचना काल सं० १६९१ लेखन सं० १७५२ ।

विशेष—राजसिंह ने मथुपुरा में प्रतिलिपि की थी।

७१६. गुटका नं० ९७ । पत्र संख्या–२८९ । साइज–११×६ इंच । भाषा–हिन्दी प्राकृत । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७३ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	११५ गाथा हैं।
सबोधपंचासिका	"	"	५० "
परमात्मप्रकाश दोहा	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	३४५ "
योगसार	"	"	१०८ पद्य हैं।
सुप्पय दोहा	—	प्राकृत	७६ "
द्वादशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीचन्द	"	४७ "
नयमाल संग्रह	—	"	—
समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	—
बनारसीविलास	"	"	ले० का० सं० १७०२ मगसिर सुदी ६
त्रिलोकसार चौपाई	सुमतिकीर्ति	"	रचनाकाल सं० १६२७

प्रारम्भ—सुमतिनाथ पंचमो जिनराय। सरसति सदगुर सेवइपाय॥
त्रिलोकसार चौपाइ कहु। तेहि विचार सुणो तम्हें सहु॥१॥
अलोकाकास माहि छै लोक। अधोमध्य उर्द्ध छै थोक॥
छ द्रव्ये भर्यो लोकाकास। अलोक माहि केवल आकास॥२॥

घन घनोदधि तनु आधार। धातें वेध्यै त्रिणि प्रकार ॥
छाल वेढ्यौ तर वर जेम। लोकाकास कहैं छं जेम ॥३॥

अंतिम—श्री मूलसंघ गुरु लक्ष्मीचन्द। तास पाटि वीरचन्द मुणिंद ॥
ज्ञानभूषण तसु पाटि चंग। प्रभाचंद वादी मनरंग ॥५७॥
सुमतिकीर्त्ति सरोवर कहिसार। त्रिलोकसार धर्म ध्यान विचार ॥
जे मणै गुणै ते सुखिय थाय। रयण भूषण धरि मुगति जाइ ॥५८॥
वीर वदन विनिर्गत वाक। सुणता पामि संसारा थाक ॥
भावक जन सवि ज्यौ जोय। सुमतिकीर्त्ति सुख सागर होय ॥५९॥
सिंहपुरी वंसी शृंगार। दान सील तप भावन अपार ॥
साहता माइ सिंघाधिपसार। कुंअरजी कुबेर अर दातार ॥६०॥
संवत सोलनि सत्तावीस। माघ शुक्ल नैं वारसि दिस ॥
कोदादी रचिये ए सार। भवि भगतें भाखो भाभार ॥६१॥

इति श्री त्रिलोकसार धर्मध्यान विचार चउपई वद्ध रासा समाप्ता।

मान बावनी	मनोहर	हिंदी	५२ पद्य हैं।
लघु बावनी	"	"	"
जोगी रासो	जिणदास	"	४० पद्य हैं।
द्वादशानुप्रेक्षा	—	"	—
निर्वाण कांड गाथा	—	प्राकृत	—
द्वादशानुप्रेक्षा	श्रीधू	हिन्दी	—
चेतन गीत	जिणदास	"	५ पद्य हैं।
उदर गीत	छीहल	"	४ पद्य हैं।
पंथी गीत	"	"	६ पद्य हैं।
पंचेंद्रिय बेलि	ठकुरसी	"	रचना काल सं० १५८५ कार्तिक सुदी १३
विरचर जखडी	जिणदास	"	
गुण गाथा गीत	ब्रह्म वर्द्धमान	"	१७ पद्य
जखडी	रूपचन्द	"	—
परमार्थ गीत	"	"	—
जखडी	दरिगह	"	—
दोहा शतक	रूपचन्द	"	२०१ पद्य हैं।

सुदर्शन जयमाल	—	प्राकृत	—
दशरथ जयमाल	—	,	—
मेघकुमार गीत	पूनो	हिंदी	७१ पद्य
पंच कल्याणक पाठ	रूपचन्द	"	—
द्वादशानुप्रेक्षा	—	"	—

७१७ गुटका नं० २८ । पत्र संख्या-२६७ । साइज-६½×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८७३ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७४ ।

विशेष—पूजाओं तथा पदों का वृहद् संग्रह है । बनारसीदास कृत मांझा भी है जो अज्ञात रचना है ।

७१८. गुटका नं० २६ । पत्र संख्या-२७ । साइज ६½×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८४१ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६७६ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
पद	जगजीवन	हिंदी
नेमिनाथ का ब्याहला	नाथू	"
निर्वाण काण्ड भाषा	भगवतीदास	"
पद	मनराम	"
साधुओं के आहार के समय ४६ दोषों का वर्णन	भगवतीदास	रचना काल सं० १७५०

विशेष संतोष राम अजमेरा सांगानेर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

७१६. गुटका नं० ३० । पत्र संख्या-२५१ । साइज-८×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७७ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
समयसार	बनारसीदास	हिंदी	
बनारसी विलास	"	"	
पंचमंगल	रूपचंद	"	
योगी रासो	जिणदास	"	

७२० गुटका नं० ३१ । पत्र संख्या-७५ । साइज-१०½×७ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८६ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	पत्र संख्या
वाणिक प्रिया	कवि सुखदेव	१-१७ रचना काल सं० १७६० लेखन काल सं० १६५५

विशेष—इसमें ३२१ पद्य हैं। व्यापार सम्बन्धी बातों का वर्णन किया गया है।

स्नेहसागर लीला	बक्षी हंसराज	१८ से ७०

विशेष—वणिक प्रिया का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम—सिध श्री गनेसाय नमः श्री सरुसते न्म. जानुकी वलमाइ न्म. अथा लिखते वनक प्रिया ॥

चौपई—गुर गने [स] कहै सुखदेव, श्री सरसुती वतायो भेव।
वनिक प्रिया वनिक वाचयौ, दिया उजियार हाथ के दयौ ॥१॥

दोहा—गोला पूरव पच्च विसे वारि विहारीदास।
तिनके सुत सुखदेव कहि, वनिक प्रिया प्रकास ॥२॥
वनिकनि को वनिक पिया, मडसारि कौ हेत ॥
आदि अत श्रोता सुनो, मतो मत्र सौ देत ॥३॥
माह मास कातक करे, संवतु सौधे साठ।
मते याह के जो चले कवहू न आवै घाट ॥२॥

चौपई—फागुन देव दलसु आइयौ सकल वस्तु सुरपति चाहयौ ॥
चार मास इहिरे है आइ पुन पताल सूता हो जाइ ॥५॥

मध्य भाग—अथा जेठ वस्तु लीवे को विचार।

दोहा—तीन लोक दमऊ दिसा, सुरनर एक विचार।
जेठै वस्तु विकात है पावस की दरकार ॥१४०॥
घटै घटी सो घटि गई, वस्तु वैच षतकार।
विक्री कौ दिन वाहरौ कीजे वाच विचार ॥१४१॥
जेठी विक्री जेठ की सव जेठन मिल माख।
सकल वस्तु पानी भई जौ पानी लौ राख ॥१४२॥

चौपई—ग्रीष्म ऋतु वरसै लछिमी वैच वस्तु न आवै कमी।
यहि मत जौ न मान है कोइ, वीधै सारै व्याज गये सोइ ॥१४३॥
जेठै वस्तु न धरिये धाइ, अपनै होइ तौ वेचो जाइ।
साहु सम्हारै रहियौ वाकी, जलके वरसै दुलभ गहकी ॥१४४॥

अंतिम भाग—

दोहा—देखीं सुनी सो मैं कही, मत्रा जो मति मान।
जानी जाति जो न सब को आगै की जान ॥३१७॥

चौपई – मतो हथियारु हाथ लै जोर, साहु सुमऋन करत कछु मोर।
मारगहान हर मन मानियों, दिल क़ुसाद हरष न बानियों ॥३१८॥
कवि सोधे संवत्सर साठ, इह मत चलै परै नहि घाट।
इहि मति अन्नु पेट भर खाई, एही चीरन को पहराई ॥३१९॥

दोहा—बनक प्रिया में सुभ असुभ सबही गयो बताइ।
जिहि जैसी नीकी लगै तैसी की जो जाइ ॥३२०॥
सत्रह सै सत्रह बरस सवत्सर के नाम।
कवि करता सुखदेव कह लेखक मायाराम ॥३२१॥

इति बनिक प्रिया सपूर्ण समाप्ता।

भादौ सुदी १२ शुक्रवासरे सं० १८५५ मुकाम छिरारी लिखत लाला उदैतसिंघ राजमान छिरारी वारे जो बाचै वाको राम राम।

दोहा—लिखी जथा प्रत देखकै कहि उदेत प्रधान।
जो बाचै श्रवननि सुनै ताको मोर प्रनाम ॥

७२१ **गुटका नं० ३२**। पत्र संख्या–१९८। साइज–६$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा–हिन्दी–संस्कृत–प्राकृत। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६८७।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
लघु सहस्रनाम	—	सस्कृत	पूर्ण
योगीरासो	जिणदास	हिन्दी	"
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	"
" भाषा	—	हिन्दी	अपूर्ण
वैराग्य गीत	देवीदास नन्दन गणि	"	पूर्ण
पद सग्रह	जिणदास	"	" जेठ वदी १३ सं० १६७१ में लाहोर में रचना तथा लिपि हुई।
द्रव्य सग्रह	आ० नेमिचन्द्र	प्राकृत	" लेखन काल सं० १६६६
द्वादशानुप्रेक्षा	—	प्राचीन हिंदी	

धर्मतरुगीत (मव तरु सींचै हो मालिया ··)	जिणदत्त	हिन्दी	पूर्ण
पद (जिय पर सौं कत प्रीति करीरे)	रुपचन्द	हिन्दी	"
पद संग्रह			
आदिनाथजी की आरती	बालचन्द	हिन्दी	"
			लेखन काल १७९६
नेमिनाथ मगल	—	हिन्दी	"
बीस तीर्थंकरों की जयमाल	—	"	"

विशेष—"पद संग्रह जिणदत्त" का नाम "जिणदत्त विलास" भी दिया है।

७२२. गुटका नं० ३३ । पत्र संख्या–४१ । साइज–३×३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ९८८ ।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
जिनदर्शन	—	संस्कृत
संबोध पचासिका	द्यानतराय	हिन्दी
पंच मगल	रुपचन्द	"

७२३. गुटका न० ३४ । पत्र सख्या–७ । साइज–४×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ९८९ ।

विशेष—नित्य पूजा का सग्रह है।

७२४. गुटका नं० ३५ । पत्र सख्या–२१ । साइज–६×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ९९४ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

७२५. गुटका न० ३६ । पत्र सख्या–४१ । साइज–४×४ इच । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । लेखन काल–सं० १७३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ९९५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

संबोध पंचासिका	गोतम स्वामी	प्राकृत	संस्कृत टीका सहित है।
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज	सस्कृत	"

७२६. गुटका नं० ३७। पत्र संख्या-१८८। साइज-८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १००१।

विशेष—केवल पूजाओं का संग्रह है।

७२७. गुटका नं० ३८। पत्र संख्या-८४०। साइज-७½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८२३। पूर्ण। वेष्टन नं० १००२।

ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता का नाम	भाषा	र० का० सं०	ले० का०	विशेष
यशोधर चरित्र भाषा	खुशालचन्द	हिन्दी	१७८१	सं० १८२३	

विशेष—छीतरमल सेठी ने प्रतिलिपि की।

चौवीस तीर्थकरों के नांव गांव वर्णन		हिन्दी	—	सं० १८२३	

विशेष—नरहेडा में प्रतिलिपि हुई।

षट् द्रव्य चर्चा	—	हिन्दी	—	सं० १८२३	

विशेष—छीतरमल सेठी ने नरहेडा में प्रतिलिपि की।

तीन लोक के चैत्यालयों का वर्णन	—	हिन्दी	—	—	
निश्चय व्यवहार दर्शन	—	"	—	सं० १८२३	

विशेष—छीतरमल सेठी वासी लूणूटको ने लाडखाणों के रामगढ में खेतसी काला की पुस्तक से उतारी।

कवित्त पृथ्वीराज चौहाणका	—	हिन्दी	—	—	

महाराज प्रथीराज लेण परधान पठायो।
लेण काजि लाखीक वडम चवाण सवायो॥
दाहिमैंक वासि लाख अखु मालिन लीना।
देखि स्यंघ गाडरी कोट का आरम्भ कीना॥
ग्यारा सै पंदरोत्तरै गढ नागौर अजीत गिर।
सुभ लगनं तीज वैसाख सुदि नींव देय थाप्यो नगर॥
ऐसी श्रष्ट उपासना खान पान पैरान।
ऐसा ब्रो मिलिवो सही तो मिलिन वो प्रमाण॥

विषापहार भाषा	अचलकीर्त्ति	हिन्दी	रचना काल १७१५ नारनौल में रचना हुई।
भक्तामर भाषा	—	"	
कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	"	सं० १८२३

विशेष—छीतरमल सेठी ने लिखा।

पाशाकेवली (अवजद केवली)	—	हिन्दी	—
पुण्याश्रवकथाकोश	किशनसिंह	"	रचनाकाल सं० १७७३
सम्यक्त्वकौमुदीकथा	जोधराज गोदीका	"	—

७२८ गुटका न० ३६। पत्र संख्या-५१। साइज-६×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १००३।

विशेष—पत्र २६ तक रुपचन्द के पदों का संग्रह है इसके आगे जगतराम तथा रुपचन्द दोनों के पद हैं। करीब २०० पद एवं भजनों का सग्रह है।

७२६ गुटका न० ४०। पत्र सख्या-१६। साइज-६×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८२३ ज्येष्ठ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० १००४।

विशेष—मृगीसंवाद वर्णन है। २५७ पद्य संख्या है। रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि पाठ—सकल देव सारद नमौ प्रणमौ गौतम पाय।
कथा करूं रलियामणी सद्‌गुरु तणौ पसाय ॥१॥
जंबू द्वीप सुहामणौ, महियर मेर उतंग।
जहिये दक्षिण दिसि भलौ, भरत क्षेत्र सुचंग ॥२॥

अन्तिम पाठ—एणि समै आयौ केवली, वंधा चरण वचन मुनि भणी।
तीनि प्रदक्षणा दीधी सार, धरम उपदेस सुण्यौ तिण वार ॥२५६॥
दोहा—दोइ भेद धरमा तणा मुनी श्रावक करि हेत।
मन वच काया पालता, दोइ लोक सुख देत ॥२५७॥

इति श्री मृगीसंवाद चौपइ कथा संपूरण। लिखित सेवाराम राधौदास स्याधु । पोथी पडित रायचन्दजी सिख प० चोखचन्दजी वासी टौंक का की सू देउरा स्यौंधूका मये। मिती जेठ सुदी २ सोमवार संवत् १८२३ का।

७३० गुटका न० ४१। पत्र सख्या-२३४। साइज-६×५। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १००५।

विशेष—मुख्य २ पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है।

विषय सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
नवतत्व वर्णन	—	प्राकृत	हिन्दी अर्थ दिया हुआ है।

पद संग्रह	—	हिन्दी	श्वेताम्बर जैन कवियों के पद है।
ज्ञान सूखडी	शोभचन्द्र	"	रचनाकाल सं० १७६७
भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	—
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"	—
क्षमा बत्तीसी	समयसुन्दर	हिन्दी	—
शत्रु जयोद्धार	पं० भानुमेरु का शिष्य नयसुदर	"	सं० १७७० वैशाख सुदी ६

७३१. **गुटका नं० ४२** । पत्र संख्या-१० । साइज ६×१½ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १००७ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
पद	द्यानतराय	हिन्दी
पद	रूपचन्द	"
पद	रामदास	"
जखडी	रूपचन्द	"
भक्तामरस्तोत्र भाषा	गगाराम पांड्या	"

विशेष—इसमें संस्कृत की ४८ वीं काव्य का ४७ वें पद्य में निम्न प्रकार अनुवाद है।

हे जिन तुम्हारे गुण कथन, पहुप माल,
भक्ति प्रतीति भावधरि कै बनाई है।
प्रेम की सुरुचि नाना वरन सुमन धरि,
गुणगण उत्तम अनेक सुखदाई है॥
जेई भव्य जन कठ धारि है उछाह करि,
फुलक्ति अग ह्वै कै आनद सो गाई है॥
तेई मानतु ग करि मुकति वधू सो हेत,
गगन सरित राम सोभा सुख पाई है॥

हुक्का निषेध	भूधरमल्ल	हिन्दी
विनती (प्रभु पाइ लागू करू सेव थारी)	जगतराम	गुजराती, लिपि हिन्दी।
विषापहारस्तोत्र भाषा	अचलकीर्त्ति	हिन्दी रचना काल सं० १७१५ नारनोल
पद-मैं पायो दुख अपार वसि ससार में-	द्यानतराय	हिन्दी

पद	दीपचन्द	हिन्दी
पद	हरीसिंह	"
पद—डोरी थे लगावो जी प्रभुजी के नांव सू	नाथू	"
अक्षरमाला	मनराम	"
दश क्षेत्रों की चौवीसी के नाम	—	"
१५ प्रकार के पात्र वर्णन	—	"
पद	किशोरदास	"

७३२. **गुटका न० ४३** । पत्र सख्या-४२० । साइज-८½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १७८२ । पूर्ण । वेष्टन न० १००८ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा		विशेष
श्रेणिक चरित्र की कथा	—	हिन्दी गद्य		अपूर्ण
प्रीत्यंकर चौपई	नेमिचन्द	हिन्दी पद्य	लेखनकाल स० १७८२	पूर्ण

विशेष—तुलसीराम चांदवाड ने पांडे रूपचन्द की पुस्तक से स० १७८२ सावन सुदी १५ में पलवल में प्रतिलिपि की । पोथी बिजैराम मौसा की ।

नेमीश्वररास (हरिवंश पुराण) नेमिचन्द्र " र. का. स. १७६६ ले. का. स. १७८२

विशेष—सं० १७७६ की प्रति से बिजैराम मौसा ने प्रतिलिपि की थी । १३०८ पद्य हैं । ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है ।

चन्दराजा की चौपई — र का. सं० १६०३ फागुन सुदी २ ले का. सं० १७८२

विशेष—आमानपुरी (गिरनार के पश्चिम दिशा में) के राजा चन्द की कथा है । बिजैराम मौसा ने मथुरा में प्रतिलिपि की थी । इसका दूसरा नाम चदन मलियागिरि कथा भी है । कथा बड़ी है ।

विशेष—चंद राजा की चौपई का आदि अत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—दोहा—सिधि सुबुधि दातार तुव गौरी नद कुमार । चद कथा आरम्भ किय सुमति देहि अपार ॥१॥
ब्रह्म सुता सरस्वती तुव हस चढी अति रूढ । तुव पसाय वाणी विमल होय मया मति मूढ ॥२॥

चौपई—प्रथम समरौहु सरजन हार, थौ जिन थंभ रच्यौ गढ गीरनारि ।
मेरु समौ दीसै सिरधार, तिहु' लोक तिहि कौ वीसतार ॥३॥

समरौं संकर दोय कर जोडि, सुमरौं सुर तेतीसौं कोडि ।
सदगुर कँहू लागी पाय, सुखी अखिर यौं समुझाय ॥४॥
सोलासँर तीडोतरँ, जाणि, चंद कथा ज्यौं चढै परमाणी ।
मैं म्हारी मति सारु कहु, अखिर मात्र पदा सो लहु ॥५॥

दोहा—फागुण मास वसंत रिति, दुतिया सुरु गुरु रीति ।
चंद कथा आरम्भ कीयी धूरी वुधि तुरंत ॥६॥
आमानपुरी अवि दिसि पश्चिम दिसा गिरनारी ।
वेहू सजोग अमी रच्यौ चद परमला नारी ॥७॥

अन्तिम—अरध रेखा अचपला जोगि । तीजी और परमला भोग ।
याकै सत्य सारथ्या सब काज, विलसँ चद आपणी राज ॥
॥ इति श्री राजा चद चौपई संपूर्ण ॥

बीस विरहमान तथा तीस चौबीसी के नाम	—	हिन्दी	पूर्ण
तीन लोक कथन	—	”	पत्र सं० २३२ से २६५ तक
वेलि के विषै कथन (चतुर्गति की वेलि)	हर्षकीर्ति	”	पूर्ण
कर्म हिंडोलणा	—	”	—

विशेष—इस गुटके की प्रतिलिपि महाराम च शे की पुस्तक में जैपुर में स० १७६४ में हुई थी ।

सम्यक्त्व के आठ अंगो का कथा सहित वर्णन		” गद्य	—
चेतनशिक्षा गीत	—	” पद्य	—
पद—ठहु तेरो मुख देखूं नाभि जिनंदा	टोडर	”	—

७३३. गुटका नं० ४४ । पत्र सख्या—२४ । साइज—८×३ इन्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० १००६ ।

विशेष—नरक दोहा एवं पद संग्रह है ।

७३४. गुटका नं० ४५ । पत्र संख्या—२५ । साइज—$4\frac{1}{2}\times4\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१० ।

विशेष—विनती संग्रह है।

७३५ **गुटका नं० ४६** । पत्र संख्या–२५ । साइज–११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०११ ।

विशेष—शिखर विलास, निर्वाणकांड एवं आदिनाथ पूजा हैं।

७३६. **गुटका नं० ४७** । पत्र संख्या–३८ । साइज–८½×६ इञ्च भाषा–संस्कृत । लेखनकाल–सं० १८८१ पूर्ण । वेष्टन नं० १०१२ (क) ।

विशेष—पूजा संग्रह है।

७३७ **गुटका नं० ४८** । पत्र संख्या–१६६ । साइज–७×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत–प्राकृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन १०१२ (ख) ।

विशेष—पूजाओं, यशोधरचरित्र रास (सोमदत्तसूरि) तथा स्तोत्रों का संग्रह है।

७ ८ **गुटका नं० ४६** । पत्र संख्या–१६७ । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । लेखन काल–सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१३ (ग) ।

विशेष मुख्यतः नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है।

७३६. **गुटका नं० ५०** । पत्र संख्या–२०० । साइज–५½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१४ ।

विशेष—कल्याण मन्दिर स्तोत्र को सिद्धसेन दिवाकर कृत लिखा है। स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है। अजयराज पाटणी कृत पत्र १३१ पर एक रचना संवत् १७६३ की है जो पाक शास्त्र सम्बन्धी हैं। रचना का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है।

प्रारंभ—श्री जिनजी की कहूं रसोई। ताको सुणत बहुत सुख होइ ॥
तुम रूसो मत मेरे चमना। खेलौ बहुविधि घरके अंगना ॥
देव अनेक बहोत खिलावै। माता देखि बहुत सुख पावै ॥१॥

मध्यमें—छिमक चणा किया अति भला। हलद मिरच दे घृत में तला ॥
मेसी रोटी अधिक बणाई। आरोगो त्रिभुवन पति राई ॥२४॥

अंतिम—अजैराज इह कियो बखाण। भूल चूक मति हसो सुजाण ॥
संवत सत्रासै त्रेणावै। जेठ मास पूरण हवै ॥५३॥

जिनजी की रसोई में सब प्रकार के व्यजनों एवं भोजनों के नाम गिनाये हैं। भगवान की बाल लीला का अच्छा वर्णन किया है। भोजन के बाद वन विहार आदि का वर्णन भी है।

रसोई वर्णन दो जगह दिया हुआ है। एक में ३६ पद्य हैं वह अपूर्ण है। दूसरे में ४३ पद्य हैं तथा पूर्ण है।

पद—मेवग पर महर करो जिनराज	अजयराज	१० अंतरे हैं। पत्र १०५-११३
मेव कुमार गीत	पूनो	२१ पद्य हैं।
शांतिनाथ जयमाल	अजयराज	६ पद हैं।
पद—प्रभु हस्तनागपुर जनम जाय		
„ श्री जिनपूज सुहावणी	„	१४ पद हैं।
„ मन मनरकट चनेक आतम जपवाटे।	„	१५ पद्य हैं।
चौवीस तार्थंकर स्तुति	„	२० पद हैं।
अहो सिवगामी खेलो हो मुनिजन राचि मुव संजम फाग सुहावणो	„	७ पद
धाल्य वर्णन	„	४१ पद
श्री सिरियांस सकल गुण धार	„	८ पद
नदीश्वर पूजा	„	६ पद
आदिनाथ पूजा	„	— पूर्ण
चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा	„	
पार्श्वनाथजी का सालेहा	„	रचना स० १७९३ ज्येष्ठ सुदी १५
पंचमेरु पूजा	„	
महावीर, नेमीश्वर आदि सभी	„	—
तीर्थंकरों के पद		—
सिद्ध स्तुति	„	—
बीसतीर्थंकरों की जयमाल	„	—
वंदना	„	—

७४०. गुटका नं० ४१। पत्र संख्या—२६६। साइज—६¾×६ इंच। भाषा—हिन्दी—संस्कृत। लेखन काल—सं० १७०३ कार्तिक सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१७।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
आयुर्वेद के नुसखे	—	हिन्दी (पद्य)	—
८४ शिक्षा की बातें	—	„	—
पंचम गति की वेलि	हर्षकिर्ति	„ (पद्य)	रचना काल सं० १६८३

चेतन शिक्षा गीत	किशनसिंह	हिन्दी	—
णमोकार सिद्ध	अजयराज	"	—
पद	ऋषभनाथ	"	—
(मोहि त्यारो जी सरणे तुम आइयो)			
बधावा	—	"	—
(जहां जन्मे हो स्वामी नामकुमार)			
राजुल पच्चीसी	लालचंद विनोदीलाल	"	—
पद	विश्व भूषण	"	—
(जिण जपि जिण जपि जीयडा)			
विनती	पूनो	हिन्दी	—
सहेलीगीत	सुंदर	"	—
विनती	कनककीर्त्ति	"	—
मंगल	विनोदीलाल	"	—
ज्ञान चिन्तामणि	मनोहरदास	"	कुल १२८ पद्य हैं।
पंच परमेष्ठि गुण	—	हिन्दी गद्य	—
सूतक भेद	—	"	—
जोगी रासा	जिणदास	" पद्य	४१ पद्य हैं।
धर्मरासा	—	"	—
सुदर्शन शील रासो	ब्र० रायमल्ल	"	—
जम्बूस्वामी चौपई	जिणदास	"	—

विशेष—जिणदास का पूर्ण परिचय दिया हुआ है। जयचंद साह ने लिपि की थी।

श्रीपाल रासो	ब्र० राइमल्ल	"	

विशेष—जयचंद साह ने चाकसू में सं० १८३२ में प्रतिलिपि की।

विषापहार भाषा	अचलकीर्त्ति	हिन्दी	—

७४१. **गुटका नं० ५२**। पत्र संख्या–१८८। साइज–६×६ इञ्च। भाषा–प्राकृत अपभ्रंश। लेखन काल–सं० १५७०। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१८।

ग्रन्थ–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
मुनिसुव्रतानुप्रेक्षा	प० योगदेव	अपभ्रंश	१५८५ वै० सुदी १३
योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	"	

उपासकाचार	पूज्यपाद	संस्कृत	
परमात्मप्रकाश दोहा	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	
षट्पाहुड सटीक	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	
आराधनासार	देवसेन	"	टीका सहित है।
समयसार गाथा	कुन्दकुन्दाचार्य	"	"
ज्ञानसार गाथा	—	"	

७४३. **गुटका नं० ४३** । पत्र संख्या–११३ । साइज–६३/४×४३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२० ।

विशेष—प्रथम संस्कृत में पद्य स्तोत्र आदि हैं फिर उनकी भाषा की गई है।

७४४. **गुटका नं० ४४** । पत्र संख्या–३२ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२२ ।

विशेष—देवब्रह्म कृत विनती संग्रह है।

७४५. **गुटका नं० ४५** । पत्र संख्या–६८ । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२१ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा पाठों का सग्रह है।

७४६. **गुटका नं० ४६** । पत्र संख्या–५३ । साइज–६१/२×६ इच । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२३ ।

विशेष—चारों गति दुःख वर्णन, राजुल पच्चीसी, जोगी रासो, अठारह नाता का चोढाल्या के अतिरिक्त वृन्द, दीपचन्द, विश्वभूषण, पूनो, रामदास, अजयराम, भूधरदास के पद भी हैं।

७४७. **गुटका नं० ४७** । पत्र संख्या–१६० । साइज–७×५१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखनकाल–सं० १७६० ज्येष्ठ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२५ ।

विशेष—भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य डालूराम ने प्रतिलिपि की थी।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
प्रद्युम्न रासो	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	रचना सं० १६२८
नेमिकुमार रासो	"	"	" १६१५
सुदर्शन रासो	"	"	" १६३३
हनुमत कथा	"	"	" १६१६

७४८. **गुटका नं० ५८** । पत्र संख्या-५८ । साइज-६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२६ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम ।	भाषा ।
तीर्थमाला स्तोत्र	—	संस्कृत
जैन गायत्री	—	"
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	प्राचीन हिन्दी
पद	अजयराम	हिन्दी
कक्का बत्तीसी	"	"
पद संग्रह	"	"
सिन्दूर प्रकरण	बनारसीदास	"
परमानन्द स्तोत्र	—	संस्कृत

७४९. **गुटका नं० ५९** । पत्र संख्या-५७ । साइज-५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२७ ।

विषय-सूची ।	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
वैराग्य पच्चीसी	भगवतीदास	हिन्दी	—
चेतन कर्म चरित्र	"	"	रचनाकाल सं० १७३६
वज्रदन्त चक्रवर्ति की भावना	—	"	
स्फुट पद	—	"	—

७५० **गुटका नं० ६०** । पत्र संख्या २८० । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिंन्दी-संस्कृत काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२८ ।

विशेष—मुख्यत पूजाओं का संग्रह है ।

७५१. **गुटका नं० ६१** । पत्र संख्या-२१६ । साइज-६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०२९ ।

विशेष—मुख्यत पूजा संग्रह है । कुछ जगतराम कृत पद संग्रह भी है ।

७५२. **गुटका नं० ६२** । पत्र संख्या-३४ । साइज-६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३० ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह भाषा एवं निर्वाणकाण्ड भाषा आदि हैं ।

७५३ गुटका नं० ६३। पत्र संख्या-३०। साइज-४×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८१६। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३१।

विशेष -शनिश्चर देव की कथा है।

७५४ गुटका नं० ६४। पत्र संख्या-५७। साइज-६×३½ इन्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३२।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चरचाशतक	द्यानतराय	हिंदी	
ढाल गण	—	,, ६२ पद्य	
स्तुति	द्यानतराय	,,	

७५५ गुटका नं० ६५। पत्र संख्या-२१०। साइज-६×८½ इन्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३३।

विशेष—षड्भक्ति पाठ, आराधनासार, जिनसहस्रनाम स्तवन आशाधर कृत, तथा अन्य स्तोत्र संग्रह है।

७५६. गुटका नं० ६६। पत्र संख्या-७४। साइज-५½×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८८० आषाढ बुदी १। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३४।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा		विशेष
जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	रचना काल सं० १७८१	—
धर्मविलास	द्यानतराय	,,	—	—

७५७. गुटका नं० ६७। पत्र संख्या-१११। साइज-५½×४½ इन्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३५।

विशेष- स्तोत्र संग्रह है।

७५८. गुटका नं० ६८। पत्र संख्या-४६ से १४३। साइज-७½×२¾ इन्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८१० मंगसिर सुदी १५। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०३७।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
बिहारी सतसई	बिहारीलाल	हिन्दी	अपूर्ण
नागदमन कथा	—	,,	पूर्ण

आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

आरम्भ—वलतो सारद वरणउ, सारद पूरो पसाय ।
पवाडो पन्नग तणौ जादुपति कीधों जाय ॥
प्रभु आणये पाडीया देत वडा चादन्त ।
केइ पालण पौढीया केई पय पान करत ॥

अन्तिम—सुणौ सुणौ समवाद नद नदन अहि नारी ।
समझा पार संभार हूवो द्रोपत अनहारी ॥

अनत अनंत के सघु अह वधाई रमीयो स्वरत राधा रमण दद्दू कर भुज काली दवण ।
त्रिभुवन सुणण महि रख तन गमण'तास आवो गमण ॥

७५६. **गुटका नं० ६६** । पत्र संख्या-४० । साइज-६×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३८ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थ सूत्र हैं ।

७६०. **गुटका नं० ७०** । पत्र सख्या-६४ । साइज-७½×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३९ ।

विशेष—कर्म प्रकृति गाथा—नेमिचन्द्राचार्य कृत एव द्रव्य सग्रह तथा स्तोत्र संग्रह है ।

७६१. **गुटका नं० ७१** । पत्र संख्या-७१ । साइज-५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४० ।

विशेष—पद संग्रह, भक्तामर स्तोत्र भाषा चौपई वंध ऋद्धि मत्र मूलमत्र गुण संयुक्त षट् विधान सहित है ।

७६२. **गुटका नं० ७२** । पत्र सख्या-२०६ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७६ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है अवस्था जीर्ण है ।

७६३. **गुटका नं० ७३** । पत्र सख्या-६३ । साइज-६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०७७ ।

विशेष—पूजा पाठों का सग्रह है । कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

७६४ **गुटका नं० ७४** । पत्र सख्या-१० । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०७८ ।

विशेष—पूजा तथा पद सग्रह है ।

७६५ गुटका नं० ७५ । पत्र संख्या-३५ । साइज-६¾×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८० ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

७६६ गुटका नं० ७६ । पत्र संख्या-६२ । साइज-६¾×४ इन्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८१ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चतुर्विंशति जिन स्तुति	पद्मनंदि	संस्कृत	
बहत्तरि जिनेन्द्र जयमाल	—	"	
स्वयंभू स्तोत्र	आ० समन्तभद्र	"	
द्रव्य संग्रह	—	प्राकृत हिन्दी	
तपोद्योतन अधिकार सत्तावनी	—	संस्कृत	

७६७. गुटका नं० ७७ । पत्र संख्या-६० । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८३ ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखों का संग्रह है ।

७६८. गुटका नं० ७८ । पत्र संख्या-६४ । साइज-६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०८४ ।

फुटकर कवित्त	—	हिन्दी	अपूर्ण
कवित्त	कवि पृथ्वीराज	"	संगीत संबंधी कवित्त है ।
कवित्त	गिरधर	"	—
कवित्त खुणस (कमी) और खुशी के	—	"	६ कवित्त है ।
सर्वसुखजी के पुत्र अभयचन्दजी की पुत्री—की जन्म पत्री (चांदबाई)	—	"	जन्म सं० १६१०
चिट्ठी चांदबाई की सर्वसुखजी आदि को		"	सं० १६१६
दसोत्तरा (पहेलियां)	—	"	२५ पहेलियां उत्तर सहित है ।
पहेलियां	—	"	" "
दोहे	वृन्द	"	अपूर्ण
कुंडलियां (गणित प्रश्नोत्तर)	—	"	पूर्ण

फुटका दोहे तथा कुण्डलिया	गिरधरदास	हिन्दी	अपूर्ण
कवित्त	खेमदास	"	
भावों का कथन	—	"	अपूर्ण
छह ढाला	द्यानतराय	"	लेखनकाल सं० १६१६ चंदो के पठनार्थ ने लिखा गया था।
मध्यमलोक चैत्यालय वर्णन	—	"	—
बधाई	बालक-अशीनन्द	"	पूर्ण
जखडी	भूधरदास	"	"
उपदेश जखडी	रामकृष्ण	"	"

७६९. गुटका नं० ७९। पत्र संख्या-६५। साइज-१०×८ इञ्च। भाषा-संस्कृत प्राकृत। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०८५।

विशेष—गुणस्थान चर्चा, कर्म प्रकृति वर्णन, तथा तीर्थंकरों के कल्याणकों के दिनों का वर्णन है। कल्याणक वर्णन अपभ्रंश में हैं। रचनाकार मनसुख हैं।

७७०. गुटका नं० ८०। पत्र संख्या-३१। साइज-८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८६।

विशेष—नवलराम, जगतराम, हरीसिंह, भूधरदास, द्यानतराय, मलजी, बखतराम, जोधा आदि के पदों का संग्रह है।

७७१. गुटका नं० ८१। पत्र संख्या-९६। साइज-६½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८७।

विशेष—पदों का संग्रह है। इसके अतिरिक्त परमार्थ जखडी तथा जोगी रासा भी है। भूधरदास, जगतराम, द्यानत, नवलराम, बुधजन आदि के पद हैं।

७७२. गुटका नं० ८२। पत्र संख्या-६०। साइज-६×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८८।

विशेष—जिन सहस्र नाम भाषा, प्रश्नोत्तर माला, कवित्त, एवं बनारसी विलास आदि हैं।

७७३. गुटका नं० ८३। पत्र संख्या-६०। साइज-६×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८९

विशेष—पदों व भजनों का संग्रह है।

७७४. गुटका नं० ८४ । पत्र संख्या-३४ । साइज-६½×८इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६० ।

विशेष—षट द्रव्य आदि की चर्चा, नरक दुःख वर्णन, द्वादशानुप्रेक्षा आदि हैं ।

७७५. गुटका नं० ८५ । पत्र संख्या-१४ से १४६ । साइज-६×५ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०६१ ।

विशेष—सामान्य पाठों के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं । बीच के बहुत से पत्र नहीं हैं ।

७७६. गुटका नं० ८६ । पत्र संख्या-१३१ । साइज-६×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८२ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है ।

७७७ गुटका नं० ८७ । पत्र संख्या-१७ । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । लेखन काल-× । , । वेष्टन नं० १०६३ ।

विशेष— िक चर्चाओं का संग्रह है ।

७७८. गुटका नं० ८८ । पत्र संख्या-५८ । साइज-६×४¾ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६४ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
दीतवार कथा	भाऊ	हिन्दी	१५७ पद्य
शनीश्चर देव की कथा	—	,, (गद्य)	ले० का० सं० १७६८ चैत सुदी २
तारातंबोल की वार्त्ता	—	,,	—
पार्श्वनाथ स्तवन	—	,,	—
बिनती	—	,,	—
नेमराजुल वर्णन पद	—	,,	ले० का० सं० १८११

७७६. गुटका नं० ८६ । पत्र संख्या-६६ । साइज-६×६ इन्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६५ ।

विशेष—गुटके में पूजा संग्रह तथा स्वर्ग नरक का वर्णन दिया हुआ है ।

७८०. गुटका नं० ६० । पत्र संख्या-११० । साइज-५×३½ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६६ ।

विषय-सूची	का नाम	भाषा	विशेष
श्रवनद केवली	—	हिन्दी	
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	
,, भाषा	हेमराज	हिन्दी	
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुमदचन्द्र	संस्कृत	
अध्यात्म फाग	—	हिन्दी	
साधु वंदना	बनारसीदास	,,	
बारहभावना	—	,,	
संबोधपंचासिका	—	प्राकृत	
स्तोत्रसंग्रह	—	संस्कृत	

७८१. गुटका नं० ६१। पत्र संख्या-२०४। साइज-६×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १७८६। अपूर्ण। वेष्टन नं०/१०९८।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
कंसलीला	—	हिन्दी	४६ पद्य है।
मोरध्वज लीला	—	,,	१५ पद्य है।
महादेव का ब्याहलो	—	,,	लेखनकाल १७८७
भक्तमाल	—	,,	
सुदामा चरित	—	,,	,, १७८७
गंगायात्रा वर्णन	—	,,	
कछवाहा राजाओं की बंशावली	—	,,	
तारातंबोल की वार्ता	—	,,	
नासिकेतोपाख्यान	नंददास	,,	,, १७८६
महाभारत कथा	लालदास	,,	
देहली के राजाओं की बंशावलि	—	,,	,, १७८८
ईचरित	—	,,	

७८२. गुटका नं० ६२। पत्र संख्या-१३१। साइज-८×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-संग्रह। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०९८।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष	
अजितशान्ति स्तोत्र	उपाध्याय मेरुनदन	हिन्दी	३२ पद्य	
सीमधरस्वामी स्तवन	उपाध्याय भगतिलाभ	„	१८ पद्य	
पार्श्वनाथस्तोत्र	जिनराज सूरि	सस्कृत	—	
विघ्नहरस्तोत्र	—	प्राकृत	२४ गाथा	
भक्तामरस्तोत्र	मानतु ंग	संस्कृत	—	
शनिश्चरस्तोत्र	दशरथ महाराज	„	—	
पार्श्वनाथ जिनस्तवन	—	„	ले० का० स० १७१६ पौष बदी २	
जिनकुशल सूरि का सुन्दर चित्र है और चित्रकार जग जीवन है।				
थमण पार्श्वनाथ स्तवन	कुशललाभ	हिन्दी	राजरंगगणि ने लिपि की थी। १८ पद्य	
चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन	जिनरंग	„	१५ पद्य	
राजुल को बारह मासा	पदमराज	„	४ पद्य	अपूर्ण
श्री जिनकुशल सूरि स्तुति	उपाध्याय जयसागर	„	१५ पद्य	पूर्ण
पार्श्वनाथ स्तवन	रंगवल्लभ	„	६	
आदिनाथ स्तवन	विजय तिलक	„	२१ पद्य	
श्री अजितशांति स्तोत्र	—	प्राकृत	३६ गाथा	
भयहर पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	„	२१ गाथा	पूर्ण
सर्वाधिष्टायक स्तोत्र	—	„	२६ गाथा	
कोकसार	आनंद कवि	हिन्दी		
नैणसी (नैनसिंहजी) के व्यापार का प्रमाण	—	„	सं० १७२६	
पार्श्वनाथ स्तोत्र	कमल लाभ	„	७ पद्य	
„ लघुस्तोत्र	समयराज	„		पूर्ण
सखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन	—	„		
चिंतामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	भुवनकीर्त्ति	„		
पार्श्वनाथ स्तोत्र	मनरग	„		
„	जिनरंग	„		
ऋषभदेव स्तवन	—	„	रचनाकाल स० १७०० लेखनकाल सं० १७२०	
फलवधी पार्श्वनाथ स्तवन	पदमराज	„		

पार्श्वनाथ स्तवन	विजयकीर्ति	हिन्दी	पूर्ण
महावीरस्तवन	जिनवल्लभ	संस्कृत	पूर्ण ३० श्लोक
प्रतिमास्तवन	राजसमुद्र	हिन्दी	
चतुर्विंशति जिनस्तोत्र	जिनरंगसूरि	"	
बीस विरहमान स्तुति	प्रेमराज	"	
पंचपरमेष्ठि मंत्र स्तवन	"	"	
सोलहसती स्तवन	"	"	
प्रबोध बावनी	जिनरंग	"	रचना सं० १७३१, ५४ पद्य हैं।
दानशील संवाद	समयसुन्दर	"	पूर्ण
प्रस्ताविक दोहा	जिनरंगसूरि	"	

इसका दूसरा नाम "दूहा बंध बहुत्तरी" भी है। ७२ दोहा हैं। लेखनकाल स० १७४५। बापना नगराजी के पठनार्थ कृष्णगढ में प्रतिलिपि हुई थी।

अखयराज बाफना के पुत्र की कुंडली	—	"	स० १७७२

७८३. **गुटका नं० ९३**। पत्र संख्या—८ से ५४ तक। साइज—५½×५¾ इञ्च। भाषा—हिन्दी। लेखन काल—×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०९९।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
जैन रासो	—	हिन्दी	लेखनकाल स० १७९८ जेठ सुदी १५

विशेष—दौलतराम पाटनी ने बसवा मनोहरपुर में लिखा था। प्रारम्भ के १८ पद्य नहीं हैं।

सिद्धिप्रिय स्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	२६ पद्य, इसे लघु स्वयम्भू स्तोत्र भी कह
तीर्थंकर बीनती	कल्याणकीर्ति	हिन्दी	रचनाकाल सं० १७२३ चैत सुदी ३
पद	विश्वभूषण	"	
पंच मंगल	रूपचन्द	"	अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के ७ पत्र तथा ९, १० और १२ वा पत्र नहीं हैं। ५४ से आगे पत्र खाली हैं।

७८४. **गुटका नं० ९४**। पत्र संख्या—२६। साइज—५×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११००।

विशेष—

बारहखडी	सूरत	हिन्दी	पत्र स० १ से १६
बाईस परीषह	—	"	१७-२६ अपूर्ण

७८५ गुटका नं० ६५ । पत्र सख्या-२२ । साइज-५×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११०१ ।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

७८६ गुटका नं० ६६ । पत्र सख्या-१६४ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखनकाल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०२ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
श्रावकनी सज्झाय	जिनहर्ष	हिन्दी	—
अजितशांति स्तवन	—	"	—
पचमी स्तुति	—	सस्कृत	—
चतुर्विंशतिस्तुति	समयसुन्दर	हिन्दी	—
गौडीपार्श्वस्तवन	—	हिन्दी	—
बारहखडी	—	—	अपूर्ण
वैराग्य शतक	भर्तृहरि	सस्कृत	लेखनकाल स० १७७३

विशेष—रूपामपुर में प्रतिलिपि हुई थी । प्रति हिन्दी टीका सहित है, टीकाकार इन्द्रजीत है ।

अतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति श्री सकलमौलिमण्डनमनिश्रीमधुकरनृपतितनुज श्रीमदिन्द्रजीतविरचितायां विवेकदीपकायां वैराग्यशत समाप्तं ।

नाकौडा पार्श्वनाथ स्तवन	समयसुन्दर	हिन्दी	पूर्ण
पद (अखियां आज पवित्र भई मेरी)	मनराम	हिन्दी	—

७८७. गुटका नं० ६७ । पत्र सख्या-१० । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०३ ।

विशेष—पद, चन्द्र गुप्त के सोलह स्वप्न (भावभद्र) जखडी, सोलह कारण भावना (कनककीर्ति) सग्रह है ।

७८८ गुटका नं० ६८ । पत्र सख्या-६४ । साइज-४½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०४ ।

विशेष—स्तोत्र एव पूजा सग्रह है ।

७८९. गुटका नं० ६९ । पत्र सख्या-६५ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०५ ।

विशेष—नित्य पाठ पूजा आदि का संग्रह है।

७६० गुटका नं० १०० । पत्र संख्या-१८ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०७ ।

विशेष—पद व स्तोत्रसंग्रह है ।

७६१. गुटका नं० १०१ । पत्र संख्या-२०० । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०८ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	
चतुर्विंशति स्तुति	शुभचन्द्र	"	
श्रीपाल स्तोत्र	—	"	
पद संग्रह	—	"	
त्रेसठ शलाका पुरुषों का वर्णन	ब्र० कामराज	"	कामराज का परिचय दिया हुआ है ।
श्रीपाल स्तुति	कनककीर्ति	"	
अजित जिननाथ की विनती (मोई प्यारो लागैजी)	चन्द्र	"	पूर्ण

७६२ गुटका नं० १०२ । पत्र संख्या-१७७ । साइज-६×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०९ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों के अतिरिक्त मुख्य निम्न पाठ हैं—

नाम	कर्ता	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	—
श्रीपाल दर्शन	—	"	—
षटमाल वर्णन	श्रुतसागर	"	पूर्ण

प्रारम—दोहा—प्रथम जिनेसुर वंद करि भगति भाव उर लाय ।

फरु वर्णन षटमाल कछु " " ।

चौपाई—एक समै श्री वीर जिणंद, विपलाचल आये गुण वृंद ।

श्री जिनजी कै अतिसै भाय, सब जीवन को वैर पलाय ।

चटरित वन ते फल फुलत भये, माली लखि इचरज लहये ।
समोसरण कि महमा माल, ऐसे मन चितवै वनपाल ।

अंतिम—ए पटमाल त्ररण महान, पुरिव वरन कियो गुणधाम ।
तिन वाणि सुणि वरणन कियो, और व्याकरण नहि देखियो ।
तैसे घर्ज कणि मोती विधियो सुतसिमलता पै गम कियो ।
तैसे बुधि जन वाणि माल वरण कियो भाषा गुण माल ।।

दोहा—देस काठहड विरजि में बदनरच्ध राजान ।
ताकै पुत्र है भलो सूरिजमल गुणधाम ।।
तेज पुज रवि है भलो, न्याय नीति गुणवान ।
ताको सुजस है जगत में, तपै दूसरो भान ।।
तिनह नगर जु बसाइयो, नाम भरतपुर तास ।
सा राजा समकिटष्टि है भला, परवि च्यारि उपवास ।।
जिन मदिर तह बणत है, जिन महमा प्रकास ।
इन्द्र पुरि अभिराम हैं सोमा सुरग निवास ।।
ताहा नगर को चौधरि, विवहरि बेणिदास ।
तिनकै मदर उपरो, श्री जिन मंदिर अवास ।।
श्री जिन सेवग है भलो श्री जिनहि को दास ।
वाह के वार गोत्र है भलो, हम भया जिणदास ।।
वाहि समिपै आय करि वर्णा कियो हर विलास ।
बासि सांगानेर को जाति जु अग्रवाल ।।
मुगिल गोत उदोत है सगही रामसघ को लाल ।
उतर दिसम वैराठि है नग्र भलो, काहलो करू बखान ।।
पांडव से पुनिवान नर मिखो काढियो आन ।
ताहि नगर को वाणिकवर संगही पदारथ जानि ।।
वाकै पैसो स्वामि को ऐ दोष जिये आनि ।
माहचन्द्र भटारग भलो सुरचंद्र कै पाट ।।
कासटासगा गच्छ में व्रत थन्या थठाट ।
निज गुरु सु विनति करि, पाप हरण के काजि ।।
स्वामी तुम उपदेस दोह, तारै धर्म जिहाज ।

तब गुरुमुख वाणि खिरी; सुणो बात गुणवान ॥
सिध षेत्र वंदन करो, पुरि वर्म टान ।
तब गुरु के उपदेस तै चतुरविधि सग ठानि ॥
सजन भ्राता संग ले आये उजत मिलान ।
जिन बाईस मों पूजि करि, भली भगति वर आनि ।
अष्ट द्रव्य ले निरमला हरे करम वसु खानि ।
चतुर सग निज आहार दे अंग प्रभावना सार ॥
सर्व सग की भगति सु भयो सु जै जै कार ।
सब भ्राता निज हेत करि, धरौ ज संगहि नाम ॥
तातै संगहि कहत सब नहि कियो पतेसटा धाम ॥
सवत अठारा सै भला ऊपरि एकाइस जानि ।
जेठ सुकल पंचमि भली श्रुतसागर वखाणि ॥
सुवाति नषित्र है भलो व्रत हौ रविवार ।
फकिरचंद उपदेस तै रच्यो माल विस्तार ॥
हमारो मित्र है सही जाति जु पलिवाल ।
वह वसतु हैं हींडोण मे अबै रहै भरतपुर रसाल ॥
तिनसु हम मेलो भयो शुभ उदै कै काल ।
उनहि का संजोग तै करि भाषा षटमाल ॥

इति षटमाल वर्णन सपूर्ण • विलास अग्रवाल बाचै तीने जुहार वच्या ।

७६३. **गुटका नं० १०४** । पत्र सख्या–६४ । साइज–५×४¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ११२२ ।

विशेष—हिन्दी पदों का सग्रह हैं ।

७६४. **गुटका नं० १०५** । पत्र सख्या–१३ से ५० । साइज–६×४½ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११११ ।

७६५. **गुटका न० १०६** । पत्र संख्या–१५६ । साइज–५×४ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १११५ ।

विशेष—पद संग्रह है ।

७६६. **गुटका नं० १०७** । पत्र सख्या–४५ । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–स० १८०१ । पूर्ण । वेष्टन न० १११६ ।

७९७. गुटका नं० १०८। पत्र संख्या-१६०। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १११८।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठ हैं—

श्रीपाल की स्तुति		हिन्दी	पूर्ण
राजुलपच्चीसी	लालचंद विनोदीलाल	"	"
उपदेश पच्चीसी	बनारसीदास	"	"
कर्मघटावलि	कनककीर्ति	"	"
पद तथा आलोचना पाठ	—	"	"
पद	हरीसिंह	"	"
पंचमंगल	रूपचंद	"	अपूर्ण
विनती—वंदू श्री जिनराई	कनककीर्ति	"	" ले० का० १७८० आणंदा चांदवाड ने प्रतिलिपि की।
कल्याणमंदिर भाषा	बनारसीदास	"	पूर्ण
आरती	—	"	"
रविवार कथा	—	"	"

७९८. गुटका नं० १०९। पत्र संख्या-२४०। साइज-८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १११९।

विशेष—स्तोत्र तथा पदों का संग्रह है। अक्षर बहुत मोटे हैं। एक पत्र में तीन तथा चार पंक्तियां हैं।

७९९. गुटका नं० ११०। पत्र संख्या-७२। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११२०।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

सामायिक पाठ	—	संस्कृत
[illegible] के दोष	—	"
मृत्यु महोत्सव	—	"
स्तोत्र संग्रह	—	"

८००. गुटका नं० १११। पत्र संख्या-१३। साइज-६×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११२१।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

८०१ गुटका न० ११२ । पत्र संख्या-८ । साइज-७X६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ११२६ ।

विशेष—दर्शन तथा पार्श्वनाथ स्तोत्र आदि हैं ।

८०२ गुटका नं० ११३ । पत्र सख्या-४ । साइज-१४X८ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४० ।

विशेष—सिद्धाष्टक, १२ अनुप्रेक्षा-डालूराम कृत, देवाष्टक, पद-डालूराम, गुरु अष्टक आदि हैं ।

८०३. गुटका नं० ११४ । पत्र सख्या-१० । साइज-४X४ । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११४८ ।

विशेष—दर्शन शास्त्र पर सग्रह है ।

८०४. गुटका नं० ११५ । पत्र संख्या-५ । साइज-५X४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४९ ।

विशेष—बीस तीर्थंकर नाम व निर्वाण काल है ।

८०५. गुटका नं० ११६ । पत्र संख्या-२०८ । साइज-६X४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ११५५ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चैत्री विधि	अमरमणिक	हिन्दी	—
पार्श्व भजन	सहजकीर्ति	,,	
पंचमी स्तवन	समयसुन्दर	,,	
पोसा पडिकम्मण उठावना विधि	—	,,	
चउवीस जिनगणधर वर्णन	सहजकीर्ति	,,	
वीस तीर्थंकर स्तुति	,,	,,	
नन्दीश्वर जयमाल	—	,,	
पार्श्व जिन स्थान वर्णन	सहजकीर्ति	,,	
सीमधर स्तवन	—	,,	
नेमिराजमति गीत	जिनहर्ष	,,	
चौवीस तीर्थंकर स्तुति	—	,,	
सिद्धचक्र स्तवन	जिनहर्ष	,,	

८०१ गुटका नं० ११२ । पत्र संख्या-८ । साइज-७×६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२६ ।

विशेष—दर्शन तथा पार्श्वनाथ स्तोत्र आदि हैं ।

८०२ गुटका नं० ११३ । पत्र संख्या-४ । साइज-१४×८ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४० ।

विशेष—सिद्धाष्टक, १२ अनुप्रेक्षा-डालूराम कृत, देवाष्टक, पद-डालूराम, गुरू अष्टक आदि हैं ।

८०३. गुटका नं० ११४ । पत्र संख्या-१० । साइज-४×४ । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११४८ ।

विशेष—दर्शन शास्त्र पर संग्रह है ।

८०४. गुटका नं० ११५ । पत्र संख्या-५ । साइज-५×४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४९ ।

विशेष—बीस तीर्थंकर नाम व निर्वाण काल है ।

८०५. गुटका नं० ११६ । पत्र संख्या-२०८ । साइज-६×४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५५ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चैत्री विधि	अमरमणिक	हिन्दी	—
पार्श्व भजन	सहजकीर्ति	"	
पंचमी स्तवन	समयसुन्दर	"	
पोसा पडिकम्मण उठावना विधि	—	"	
चउवीस जिनगणधर वर्णन	सहजकीर्ति	"	
वीस तीर्थंकर स्तुति	"	"	
नन्दीश्वर जयमाल	—	"	
पार्श्व जिन स्थान वर्णन	सहजकीर्ति	"	
सीमंधर स्तवन	—	"	
नेमिराजमति गीत	जिनहर्ष	"	
चौबीस तीर्थंकर स्तुति	—	"	
सिद्धचक्र स्तवन	जिनहर्ष	"	

गुरु विनती	—	हिन्दि
सुबाहु रिषि सधि	माणिक सूरि	"
अगोपांग फुरकन वर्णन	—	"
ब्रह्मचर्य नव वाडि वर्णन	पुण्यसागर	"
लघु स्नपन विधि	—	"
अष्टाह्निका स्नपन विधि	—	"
मुनि माला	—	"
क्षेत्रपाल का गीत	—	"

८०६. गुटका नं० ११७ । पत्र संख्या–२० से ३१ । साइज–१०×४½ । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× अपूर्ण । वेष्टन नं० ११८४ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
नूरकी शकुनावली	नूर	हिन्दी	अपूर्ण
आयुर्वेद के नुसखे	—	"	"
वायगोला का मंत्र तथा अभ्रक मारण विधि	—	"	"
नूरकी शकुनावली	नूर	"	

विशेष—माईछंद में लिखा है ।

मातृका पाठ	—	"	
मंत्र स्तोत्र	—	"	
आयुर्वेद के नुसखे	—	"	

८०७. गुटका नं० ११८ । पत्र संख्या–५३ से ८६ । साइज–६×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११८५ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
समाधि मरण	—	प्राकृत	५३ से ६२ पत्र तक
मोढा	हर्षकीर्ति	हिन्दी	६४ से ६७ पत्र तक

आरम्भ – राग सोरठी:—

म्हारो रे मन मोढा तू तो गिरनारया उठि आयरे ।
नेमिजी स्यों यु कहिज्यो राजमती दुख ये सीसे ॥म्हारो०॥

अतिम—मोक्ष गया जिण राजइ प्रभु गढ गिरनारि मझार रे ।
राजल तौ सुरपति हुवौ स्वामी हर्षकीर्ति सुकारौ रे ॥ म्हारो० ३० ॥
॥ इति मोडो समाप्ता ॥

भक्ति वर्णन	—	प्राकृत	६८ से ८५ तक
पद	—	हिन्दी	८६ पत्र पर

प्रारम्भ—जय अरहत सत भगवत देव तू त्रिभुवन भूप ।

८०८. गुटका न० ११६ । पत्र सख्या-२० । साइज-८×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १२१६ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशे
पद	महमद	हिन्दी	—

प्रारम्भ—भूलो मन भमरा रे कांई भमै ।

अतिम भाग—महमद कहै वसत वोरीये ज्यों क्यू आवै साथी ।
लाहा आपण उगाहीलें लेखो साहिब हाथी ॥

सवैया	बनारसीदास	हिन्दी	
नववाडसज्झाय	जिनहर्ष	"	

विशेष—अतिम—रूप कूप देखि करि रे मांहि पडै किम अध ।
दुख माणै जाणै नही हो कहै जिनहरष प्रबंध ॥
सुगुण रे नारि रूप न जोइये रे ॥ १० ॥

इति नववाडसज्झाय सपूर्ण ।

राजुल बारहमासा	—	हिन्दी	अपूर्ण ।
पार्श्वनाथ स्तुति	भावकुशल	गुजराती	पूर्ण

अतिम—भवि भवि दीज्यो देव सेव इक ताहरी ।
सिर सिर तुम्ह भी आण आस ए माहरी ॥
पदम सुन्दर उवझाय पसाय गुण भणै ।
भाव कुशल भरपूर सुख सपति घणै ॥

इति पार्श्व जिन स्तुति ॥

सखेश्वर पार्श्वनाथ स्तुति   रामविजय   पूर्ण

लें० का० सं० १७६० चैत सुदी ५

अंतिम—सेव्यो श्री जिनराज। आपै अविचल राज॥

रामविजय भणीःए। सु प्रसन तूँ वर्णाए॥

इति श्री सखेश्वर पार्श्वनाथ जिन स्तुति। इमें लिखिता भाव कुशलेन। श्री केसरि वाचन कृते॥

नंद छत्तीसी   —   संस्कृत   अपूर्ण

शृंगार ले० का० सं० १७६३ पौष बदी ७

विशेष—केवल १७ से ३६ तक पद्य हैं। बाई केसर के पठनार्थ लिपि की गई थी।

नेमिनाथ बारहमासा   हिन्दी   (गु०) २४ पद्य हैं।

विशेष—रागभरा राजीमती लियो संजम भार।

कहै जाण सेहर जसुमालीया मुगत मंझार॥१४॥

वियोग शृंगार का अच्छा वर्णन है।

बुधरास   हिन्दी   अपूर्ण

विशेष—आरम्भ के पत्र गल गये हैं।

अंतिम—गांठि गरथ मत लूखो खाय   ।

भूखो मत चालै सियालै। जीमर मत चालै उन्हालै॥

बांमण होय अणन्हायो।

कापथ हो पर लेखो भूले। ए तिनु किण हीनै तोलै॥१२०॥

एह बुधसार तणोर विचार। आलन आवै इण ससार॥

सयो पालय रोपम सुता। राज करो पसार संजुता॥२१०॥

॥ इति बुधरास सपूर्ण॥

तमाखू की जयमाल   आणद मुनि।   हिन्दी   पूर्ण

विशेष—आरम्भ—प्रीतम सेती बीनवै प्रमदा गुण विज्ञान।

मोरा लाल मन मोहण एकें चितै तू समाल॥ चतुर सुजाण॥

अंतिम—दया धरम जाणी करी सेवो सदगुरु साध मोरा लाल।

आणद मुनि इम उच्चरे जग मांही जस वाध मोरा लाल॥

चतुर तमाखु परिहरो।

॥ इति तमाखू जयमाल सपूर्ण॥

॥ लिखत ऋषि हीरा॥

८०६. गुटका नं० १२० । पत्र संख्या–२२ । साइज–५३/४×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल– । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२१७ ।

विशेष—जीवों की संख्या का वर्णन दिया हुआ है ।

८१० गुटका नं० १२१ । पत्र संख्या–५६ । साइज–६×४१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२१८ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
कक्का बत्तीसी	अजयराज	हिन्दी	
पद	वारी हो शिव का लोभी	”	
नारी चरित्र	—	”	
मनुष्य की उत्पत्ति	—	”	
पद	दीपचंद	”	
श्री जिनराजै ज्ञान तणौ अधिकार ॥			
विनती	अजयराज	”	
श्री जिन रिखव महंत गाऊ ॥		”	
उपदेश बत्तीसी	राज	”	

८११ गुटका नं० १२२ । पत्र संख्या–३५ । साइज–४३/४×६१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२१९ ।

विशेष—मतिसागर सेठ की कथा है । पद्य संख्या १८१ है । प्रारम्भ में मंत्र जंत्र भी दिये हुए

८१२. गुटका नं० १२३ । पत्र संख्या–८६ । साइज–८३/४×६१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२२० ।

विशेष—गुणस्थान की चर्चा एवं नवल तथा भूधरदास के पद और खंडेलवाल गोत्रोत्पत्ति वर्णन है ।

८१३. गुटका नं० १२४ । पत्र संख्या–५० । साइज–६३/४×४१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२२१ ।

निम्न पाठों का संग्रह है —

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	हिन्दी	
नेमिकुमार बारहमासा	—	”	

नेमि राजमति जखडी हेमराज ,,

जखडी का अंतिम—तीस दिन अरु निरधारजी ।

हेम भणे जीन जानिये । ते पावै भव पार जी ॥

दिल्ली में प्रतिलिपि हुई थी ।

तिलोकचंद पटवारी गोधा चाटसू वाले ने सं० १७८२ में प्रतिलिपि की थी ।

फल पासा (फल चिंतामणि) तीर्थंकरों की जयमाल एवं पार्श्वनाथ की विनती आदि और है ।

८१४. गुटका नं० १२५ । पत्र संख्या-३२ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२२२ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
जिनराज स्तुति	कनककीर्ति	हिन्दी (गुजराती)	ले० का० सं० १७५६ फागुण सुदी ६ सांगानेर में प्रतिलिपि हुई ।
चिंतामणि स्तोत्र	—	,,	—
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	,,	र० का० सं० १७०४ आषाढ सुदी ५ । ले० का० सं० १७६०
नेमीश्वर लहरी	—	हिन्दी	—
पंचमेरु पूजा	विश्वभूषण	,,	—
अष्ट विधि पूजा	सिद्धराज	,,	—
आदित्यवार कथा (छोटी)	—	,,	—
फुटकर कवित्त—	—	,,	—
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	,,	—
भक्तिमंगल	,,	,,	—
नित्यपूजा	—	हिन्दी	पूर्ण
जिनस्तुति	रूपचन्द	,,	,,
आदीश्वरजी का बधावा	कल्याणकीर्ति	,,	,,
सम्यक्त्वी का बधावा	—	,,	अपूर्ण

८१५. गुटका नं० १२६ । पत्र संख्या-१०२ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १७०४ अषाढ सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२२४ ।

विशेष—पूजाओं के अतिरिक्त निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	
सहेली सबोधन	—	"	
बडा कक्का	मनराम	"	
ज्ञानचिंतामणि	मनोहर	"	

८१६ गुटका न० १२७। पत्र संख्या-६२। साइज-६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १२२६।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
कर्म प्रकृति वर्णन भाषा	—	हिन्दी	—
चौबीस तीर्थकर पूजा	अजयराज	"	ले० का० स० १८१३ असाढ बुदी २
ध्यान बत्तीसी	बनारसीदास	"	
पद	दीपचद	"	
जोगीरासा	जिनदास	"	
जिनराज विनती	—	"	१४ चरण हैं।

८१७. गुटका नं० १२८। पत्र संख्या-१०१। साइज-६×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन न० १२२८।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
कक्का बत्तीसी	गुलाबराय	हिन्दी	ले० का० स० १८९३ कार्तिक सुदी ५
विशेष—हीरालाल ने प्रतिलिपि की।			
सबोध पचासिका भाषा	बिहारीदास	"	र० का० १७५८ कार्तिक बुदी १३।
विशेष—बिहारीदास आगरे के रहने वाले थे।			
आदिनाथ का बधावा (वाजा बाजीया घणा जहा जनम्या हो प्रभु रीखबकुमार)			
पच मगल	रुपचन्द	"	
पद (मस्तग आजि हो पवित्र मोहि भयो)		"	
आठ द्रव्य की भावना	जगराम	"	
जैन पच्चीसी	नवलराम	"	
पद संग्रह	जोधराज बनारसीदास आदि के पद है।		
चार मित्रों की कथा	अजयराज	"	र० का० १७२१ जेठ सुदी १३। ले० का० सं० १८२१ असाढ बुदी ६।

वज्रनाभि चक्रवर्ति की वैराग्य भावना	भूधरदास	हिन्दी

८१८. गुटका नं० १२६ । पत्र संख्या-१६ । साइज-८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२३० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

८१९. गुटका नं० १३० । पत्र संख्या-७३ से ११४ । साइज-५½×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२३२ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है । प्रारम्भ के ७१ पत्र तथा ७४, ७५ पत्र नहीं है ।

८२०. गुटका नं० १३१ । पत्र संख्या-१६ । साइज-६×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-सं० १६३६ भादवा सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२३८ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है । जयपुर नगर स्थित चैत्यालयों की सूची दी हुई है ।

८२१. गुटका नं० १३२ । पत्र संख्या-१५६ । साइज-६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२३६ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा, साधु वंदना, भक्तामर भाषा आदि पाठ हैं बीच में कहीं २ पत्र नहीं हैं ।

८२२. गुटका नं० १३३ । पत्र संख्या-१७० । साइज-४½×२½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२३८ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	—
चतुर्दशी कथा	हरिकृष्ण पाण्डे	"	—
पंच मंगल	रूपचन्द	"	—
नित्य पूजा पाठ	—	संस्कृत	—
जिन वाणी स्तुति	—	"	—

स्नपन पूजा, क्षेत्रपाल पूजा आदि नैमित्तिक पूजा-संग्रह भी है ।

८२३. गुटका नं० १३४ । पत्र संख्या-१७० । साइज-६×३½ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२३९ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
नेमीश्वर विनती	—	हिन्दी	७ पद्य हैं।
पुण्य पाप जग मूल पच्चीसी	भगवतीदास	"	२७ पद्य हैं।
४६ दोष रहित आहार वर्णन	—	"	—
जिन धर्म पच्चीसी	भगवतीदास	"	अपूर्ण
पद संग्रह	जगतराम	"	—
पद	शोभाचन्द	"	—
(भज श्री रिषव जिनिंद कूं)			
पद	जिणदास	"	—
(जैन धर्म नहीं कीना नरदेही पाई)			
पद	जीवनराम	"	—
(अश्वसेन राय कुल मंडन उग्र वंश अवतारी)			
सप्त व्यसन कवित्त	—	"	—

जिनके प्रभु के नाम की भई हिये प्रतीति ।
विस्तराय ते नर भजे नरक वास भयभीत ॥

सोलह स्वप्न (स्वप्न बत्तीसी)	भगवतीदास	"	—

विशेष—अन्तिम—निज दौलत पावै भया हरै दोष दुख रास ॥
भरत चक्रवर्त्ती के १६ स्वप्नों का वर्णन है ।

पद	कृष्ण गुलाब	"	—
(समरि जिनद समरना है निदान)			
छहढाला	बुधजन	"	ले० का० सं० १८१७।
शभूराम ने प्रतिलिपि की थी।			
ननद भौजाई का झगडा	आनंदवर्धन	"	—
चतुर्विंशति स्तुति	विनोदीलाल	"	—
पद संग्रह	बनारसीदास एवं भूधरदास	"	—
बाईस परीषह	भूधरदास	"	—
चरखा चउपई	अजयराज	"	—
बारहखडी	—	"	—

८२४   गुटका नं० १३५ । पत्र संख्या–७८ । साइज–६¾×४½ इन्च । भाषा–प्राकृत–संस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२४० ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
दर्शन सार	देवसेन	प्राकृत	५२ गाथाऐ हैं ।
त्रिलोक प्रज्ञप्ति	—	”	१२६ ”
सामुद्रिक श्लोक	—	संस्कृत	—
सोलह कारण पायडी	—	”	२० श्लोक हैं ।
सप्त ऋषि पूजा	—	”	—
राज पट्टावली	—	”	—

राजाओं के वंशों की पट्टावलि संवत् ८२६ से १६०२ तक की दी हुई है ।

सज्जन चित्त वल्लभ	मल्लिषेणाचार्य	”	—
त्रिलोक प्रज्ञप्ति	—	प्राकृत	—

विशेष—गुटके के अन्त के ४ पृष्ठ आधे फटे हुये हैं ।

८२५   गुटका नं० १३६ । पत्र संख्या–१८८ । साइज–७×६ । भाषा–हिन्दी–संस्कृत–प्राकृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२४१ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	१५८ पद्य हैं ।
भावना बत्तीसी	अमितिगति	संस्कृत	—
अनादिनिधन स्तोत्र	—	”	—
कर्म प्रकृति वर्णन	—	”	—

१४८ प्रकृतियों का वर्णन है तथा ८ गुणस्थान तक सात मोहनीय की प्रकृतियों का व्यौरा भी है ।

त्रिभुवन विजयी स्तोत्र	—	संस्कृत	—
गुणस्थान जीव संख्या समूह वर्णन	—	हिन्दी	—

७ वें गुणस्थान से १४ वें गुणस्थान तक एक समय में कितने जीव अधिक से अधिक व कम से कम हो सकते है इसका व्यौरा है ।

चौवीस ठाणा चर्चा	—	हिन्दी	—
त्रेपटशलाका पुरुषों की नामावलि	—	”	—

परमानद स्तोत्र	—	संस्कृत	—
नेमीश्वर के दश भवांतर	ब्रह्म० धर्मरुचि	हिन्दी	—

अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है ।
बूंदी गढ में भासज कीधी भणिसी जे नर नारी जो ।
श्री संघ मगल कारणि कीधी मयौ धर्मरुचि ब्रह्मचारीजी ॥

निर्वाण काण्ड गाथा	—	प्राकृत	—
लघु सहस्त्र नाम	—	संस्कृत	—
विषापहार स्तोत्र	धनजय	"	—
बडा कल्याण	—	हिन्दी	—

तीर्थंकरों के गर्भ जन्मादिक कल्याणों की तिथियां दी हैं ।

पल्य विधान	—	"	—
गुरुभक्ति स्तोत्र	—	प्राकृत	—
णमोकार महिमा	—	हिन्दी	—
पल्य विधान कथा	—	संस्कृत	—

८२६. **गुटका नं० १३७** । पत्र सख्या–८४ । साइज–६३/४×४१/२ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२४२ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
पच मगल	रूपचन्द	हिन्दी	—
तीन चौवीसी एवं बीस तीर्थंकरों की नामावलि	—	"	—
त्रिनर्ता सग्रह	—	"	—
बारह भावना	भूधरदास	"	—
वज्रनाभि चक्रवर्त्ती की वैराग्य भावना	—	"	—

८२७. **गुटका नं० १३८** । पत्र सख्या–६ से ४१ । साइज–६×४३/४ इन्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२४३ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
पूजा सग्रह	—	संस्कृत	—

विशेष—देव पूजा बीस विरहमान सिद्ध पूजा आदि का सग्रह हैं ।

समुच्चय चौबीस तीर्थंकर पूजा	अजयराज	हिन्दी	पूर्ण

पंचमेरु पूजा	—	हिंदी	अपूर्ण
तीन चौबीसी तीर्थंकरों की नामावलि	—	"	पूर्ण
समुच्चय चौबीस तीर्थंकर जयमाल	—	"	—

८२८. गुटका नं० १३६ । पत्र संख्या-३३ से ७० । साइज-५३×५ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२४४ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
पद्मावती पूजा	—	संस्कृत	अपूर्ण
चन्द्रप्रभस्तुति	—	हिन्दी	पूर्ण
(चन्द्रप्रभु जिन ध्यायज्यौं । भवि हो चन्द्रप्रभु जिन ध्यायज्यौ ॥ टेक			
पंच बधावा	—	"	—
आदिनाथ स्तुति	—	"	अपूर्ण
आरती विनती	—	"	ले० का० सं० १७७७ मंगसर सुदी ४
पद	—	"	ले० का० सं० १७७४ पौष सुदी १०
विनती	—	"	—
पूजा	—	"	—
दर्शनपाठ	—	संस्कृत	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"	—
सीख गुरुजनों की	—	हिन्दी	—
कल्याणमंदिर भाषा	बनारसीदास	"	ले० का० सं० १७६५ आसोज सुदी ४
देवपूजा	—	"	ले० का० सं० १७६६ श्रावण सुदी २

विशेष—गुलाबचन्द पाटनी की पोथी है । सांगानेर में प्रतिलिपि की गई थी ।

८२६. गुटका नं० १४० । पत्र संख्या-१० से १२० । साइज-५×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२४५ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
समयसार भाषा	बनारसीदास	हिंदी	—
भक्तामर स्तोत्र एवं पूजा	—	संस्कृत	—

सिद्धि प्रिय स्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	—
कल्याणमंदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"	—
विषापहार स्तोत्र	धनजय	"	—
नेमीश्वरगीत	जिनहर्ष	हिन्दी	—
जखडी	अनतकीर्ति	"	रचना काल सं० १७५० भादवा सुदी १०
नेमीश्वर राजमति गीत	विनोदीलाल	"	—
मेघकुमार गीत	पूनो	"	—
मुनिवर स्तुति	—	"	—
ज्येष्ठजिनवर कथा	—	"	—

गुटके के प्रारम्भ के ६ पत्र नहीं हैं।

८३०. गुटका नं० १४१ । पत्र संख्या–१२ । साइज–७×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५३ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

८३१. गुटका नं० १४२ । पत्र संख्या–१५ से ४८ । साइज–६×५ इन्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । लेखन काल–सं० १८११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५४ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
पार्श्वनाथ जयमाल	—	संस्कृत	—
कलिकुंड पूजा	—	"	—
चिंतामणिपूजा	—	"	—
शान्ति पाठ	—	"	—
सरस्वती पूजा	—	"	ले० का० सं० १८११ जेठ बुदी १
क्षेत्रपाल पूजा	—	"	—
महावीर विनती	—	हिन्दी	—

विशेष—चाँदनगांव के महावीर की विनती है। इसमें ११ अतरे हैं। अन्य पाठ भी है ।

८३२. गुटका नं० १४३ । पत्र संख्या–६० । साइज–४½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–सं० १८१३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

(१) निर्वाण काण्ड, भक्तामर भाषा, पच मगल, कल्याण मदिर आदि स्तोत्र ।

(२) ४८ यत्र विधि सहित दिए हुए हैं एव उनके फल भी दिये हुए हैं । ये भक्तामर स्तोत्र के यत्र नहीं हैं ।

(३) गज करणादि की औषधि, हितोपदेश भाषा, लाला तिलोकचंद की स० १८१२ की जन्म कुडली भी दी हुई है ।

(४) कवित्त—केई खड खड के निरदन कू जिति आयो ।

पलक मे तोरि डारयो किलो जिन धारको ॥

म्हा मगरूर कोऊ सूझत न सूर ।

राहु केत सौ गरूर हूँ वहीया वडे सारकौ ॥

मोर है हजार च्यारि असवार और ।

लगी नहीं वार जोग विरच्यौ वजार को ॥

माधव प्रताप सेती जैपुर सवाई माझ ।

मारि कडारयो मगज महाजना मलारकौ ॥

(५) नौ कोठे मे तीस का यत्र—

			२	
१	६	०	१०	
	०	३	०	
	७	०	८	५
	४			

यंत्र का फल भी दिया हुआ है ।

८३३. गुटका नं० १४४ । पत्र संख्या–२२ । साइज–६×४½ इच । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० १२५६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

८३४. गुटका नं० १४५ । पत्र सख्या–७५ । साइज–६×४ इन्च । भाषा–हिन्दी– । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० १२५७ ।

विशेष—नखतराम कृत आसावरी है पद्य संख्या ३६ है ।

८३५. गुटका न० १४६ । पत्र सख्या–३ से २७ । साइज–६×४ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० १२५८ ।

विशेष—पच मगल पाठ तथा चौबीस ठाणा का व्यौरा है।

८३६. **गुटका न० १४७**। पत्र सख्या–१५ से ६१। साइज–६×४ इन्च। भाषा–हिन्दी। लेखनकाल–स० १८३८ आषाढ बुदी ७। अपूर्ण। वेष्टन न० १२५६।

विशेष—सामान्य पाठों का सग्रह है तथा सूरत की बारह खडी है जिसके ११३ पद्य हैं।

८३७. **गुटका न० १४८**। पत्र सख्या–२७६। साइज–७½×६ इश्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १७६६ ज्येष्ठ बुदी ११। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२६०।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
हनुमत कथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	—
भविष्यदत्त कथा	—	,,	ले० का० स० १७२७ फाल्गुण सुदी ११
जैनरासो	—	,,	—
साधु वदना	बनारसीदास	,,	—
चतुर्गति वेलि	हर्षकीर्ति	,,	—
अठारह नाता का चौढाला	साह लोहट	,,	—
स्फुट पाठ	—	,,	—

८३८ **गुटका न० १४६**। पत्र सख्या–२०। साइज–६½×४½ इश्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन न० १२६५।

विशेष—सामान्य पाठों का सग्रह है।

८३९. **गुटका नं० १५०**। पत्र संख्या–११०। साइज–५½×५½ इश्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन न० १२६६।

विशेष—पूजाओं का सग्रह है।

८४०. **गुटका न० १५१**। पत्र संख्या–१६४। साइज–६½×५½ इन्च। भाषा–हिन्दी। लेखनकाल–×। पूर्ण। वेष्टन न० १२६७।

विशेष—पद व स्तोत्रों का सग्रह है।

८४१. **गुटका नं० १५२**। पत्र संख्या–१३०। साइज–६½×६½ इश्च। भाषा–हिन्दी–सस्कृत–प्राकृत। लेखन काल–सं० १७६३। पूर्ण। वेष्टन न० १२६६।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं, जयमाल तथा भाऊ कवि कृत आदित्यवार कथा आदि का सग्रह है।

८४२ गुटका नं० १५३ । पत्र सख्या-२८ । साइज-६½×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२७० ।

मुख्यत: निम्न पाठों का संग्रह है —

भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	—
बारह खडी	श्रीदतलाल	हिन्दी	—

प्रारम्भ—कका केवल कृष्ण भज, जब लग रहे शरीर ।
बहोर न ऐसा दाव है, आन पडेगी भीड ॥१॥

अंतिम—हा हा इह भव हसत हो, हरजन हूँ न कोइ ।
वेस हँस खाली गये ए जुर रहे सुभ जोय ॥
जे जुर रहे सुभ जोय होय तीनु रे पुरक ।
होनहार थी रहे सुरापन गऐ जु धरक ॥
सुरग अत पाताल काल ग्रह वाली ।
भाइदतलाल वह साहिब खाली ॥

॥ बाराखडी सपूर्ण ॥

८४३. गुटका नं० १५४ । पत्र सख्या-१७ । साइज-६×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२७१ ।

विशेष—जगराम, नवल, सालिग भागचद, आदि कवियों के पद हैं तथा बनारसीदास कृत कुछ कवित्त और सवैये भी हैं ।

८४४ गुटका नं० १५५ । पत्र संख्या-६४ । साइज-६½×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १६०५ आसोज सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२७२ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
सुगुरु शतक	जिनदास	हिन्दी	र० का० स० १८५२ चैत बुदी ८
मोक्ष पैडी	बनारसीदास	”	—
बारह भावना	भगवतीदास	”	—
निर्वाण काण्ड भाषा	”	”	र० का० स० १७४३ आसोज सुदी १०
जैन शतक	भूधरदास	”	र० का० सं० १७८१ पौष बुदी १३

८४५ गुटका नं० १५६ । पत्र सख्या-४४ । साइज-७×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२७३ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजादि का संग्रह एवं ६३ शलाका पुरुष तथा १६१ पुण्य जीवों का ब्यौरा दिया हुआ है।

८४६ गुटका नं० १५७। पत्र संख्या–२३८। साइज–११½×५¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत। लेखन काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२७४।

रचना का नाम	कर्त्ता	भाषा	विशेष
समयसार वचनिका	—	हिन्दी	ले. का. सं० १६६७ चैत्र सुदी ७।

प्रशस्ति—सं० १६६७ चैत्र शुक्ल पक्षे तिथौ सप्तम्यां अंबावती मध्ये राजा जैसिंघ प्रतापे लिखाइत सहि देवसी जी। लिखत जोसी अखिराज प्रसिद्धा।

पद संग्रह	बनारसीदास, रूपचंद	"	—
धर्म धमाल	धर्मचंद	"	ले का. सं० १६६६ श्रावण बुदी ८।
आत्म हिंडोलना	केशवदास	"	—
वणिजारो रास	रूपचंद	"	ले का. सं० १६६६ श्रावण सुदी ८।
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	"	—
कर्म छत्तीसी	—	"	
ज्ञान बतीसी	बनारसीदास	हिन्दी	—
चंद्रगुप्त के सोलह स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	"	—
द्वादशानुप्रेक्षा	आलू	"	—
शुभाषितार्णव	—	संस्कृत	—

८४७. गुटका नं० १५८। पत्र संख्या–१२६। साइज–६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२७५।

विशेष—मुख्य रूप से निम्न पाठों का संग्रह है—

पूजा स्तोत्र एवं पद संग्रह	—	हिन्दी	—
जिनगीत	अजयराज	"	—
शिवरमणी को विवाह	"	"	१७ पद्य हैं।

किशनसिंह, अजयराज, द्यानतराय, दीपचंद आदि कवियों के पदों का संग्रह है।

८४८. गुटका नं० १५६। पत्र संख्या–१५ से ६४। साइज–६×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२७६।

विशेष—चन्द्रायण व्रत कथा है। पद्य संख्या १ ८ से १३७ तक है। कथा गद्य पद्य दोनों में ही है। गद्य का उदाहरण निम्न प्रकार है—

जदी सारा लोगा कही। आप तो जाणी प्रवीण छो। जया चल ग्यान कुला सो तो काम को नहीं। अर पाहर सामर आदर नहीं अर जमारो अधीको धीसर होई। जीसु काइ कहवाम आव। अर वनी तो तीखोध लीतो छो। जीसु आपका मनम आवतो कजर नै बुलाइ लीनावो॥

८४६. गुटका नं० १६०। पत्र संख्या—१३ से १४४। साइज—६×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। लेखन काल—सं० १७२८ कार्तिक बुदी १३। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२७७।

निम्न पाठों का संग्रह है.—

विषय—सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति की पूजा	—	संस्कृत	पत्र १३ से १४
सिद्धि प्रिय स्तोत्र टीका	—	हिन्दी	१४ से ३२
योगसार	योगचन्द्र	”	३२ से ४६ ले० का० सं० १७३५ चैत्र सुदी ५। सांगानेर में लिखा गया।
अनित्य पचासिका	त्रिभुवनचद	”	पत्र ४७ से ५६, ५५ पद्य हैं।
अष्टकर्म प्रकृति वर्णन	—	”	६० से ६८
मुनीश्वरों की जयमाल	जिणदास	”	६८ से ७२
पंचलब्धि	—	संस्कृत	७२ से ७३
धमाल	धर्मचद	हिन्दी	७३ से ७४
जिन विनती	सुमतिकीर्त्ति	”	पत्र ७४ से ७८, २३ पद्य हैं।
गुणस्थान गीत	ब्रह्मवर्द्धन	”	७८ से ८१
समकित भावना	—	”	८१ से ८४
परमार्थ गीत	रूपचद	”	८४ से ८५
पंच बधावा	—	”	८५ से ८८
मेघकुमार गीत	पूनो	”	८८ से ८९
भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	”	८९ से ९५
मनोरथ माला	—	”	९५ से ९६
पद	श्यामदास जिनदास आदि	”	९६ से १०१

मोह विवेक युद्ध	बनारसीदास	हिन्दी	१०१ से ११०
योगीरासो	जिनदास	,,	१११ से ११३
जखडी	रूपचद	,,	११४ से १२४
पचेन्द्रिय बेलि	ठक्कुरसी	,,	१२४ से १२६
			र० का० स० १५८५
पचगति की वेलि	हर्षकीर्ति	,,	१२६ से १३२
पथीगीत	छीहल	,,	१३२ से १३४
पद	रूपचद	,,	१३४ से १३६
द्वादशानुप्रेक्षा	—	,,	१३७ से १४४

८५०. गुटका न० १६१ । पत्र संख्या–१५० । साइज–८½×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२७८ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
सवैया	केशवदास	हिन्दी	अपूर्ण ।
सोलह घडी जिन धर्म पूजा की	—	,,	—
कन्हीराम गोधा ने लिपि की ।			
पंच बधावा	पं० हरीबैस	,,	ले. का १७७१
पार्श्वनाथ स्तुति	—	,,	र. का. स १७०४ आषाढ सुदी ५ ।
पद	हर्षकीर्ति	,,	१३ पद्य है ।

प्रारम्भ—जिन जपु जिन जपु जीयडा भुवण में सारोजी ।

अंतिम—सुभ परणाम का हेत स्यों उपजै पुनि अनतो जी ।

हरष कीरती जीन नाम सुमरणी दीनी मति चुको जी ।

जिन जपु जिन जपि जीवडो ॥

आदिनाथ जी का पद	कुशलसिंह	हिन्दी	ले. का. स १७७१
मयाचद गगवाल ने रोभडी में लिपि की थी ।			
नेमिजी की लहर	प० डू गो	,,	—
सुगुरु सीख	मनोहर	,,	—
साह हरीदास ने प्रतिलिपि की थी ।			

राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	"	लै. का स १७६३
अठारह नाता का चौदाला	लोहट	"	—
नेमिनाथ का बारहमासा	श्यामदास गोधा	"	ले. प. १७८६ आषाढ सुदी १४ ।

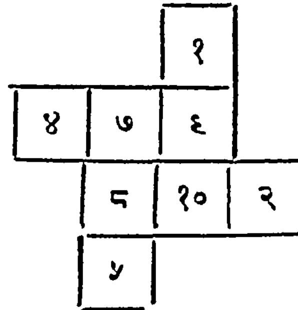
अंतिम—बाराजी मासो नेम को राजल सोलैहगी गाइ जी।

नेम जी मुक्ती पहुतण श्यामदास गोधा उरि लावो जादुराइतो।

इति बारहमासा सपूर्ण।

कक्का	—	हिंदी	ले० का० सं० १७७४

यंत्र २० का ८ कोष्ठको क'—



बारह भावना	भगवतीदास	हिंदी	ले० का० सं० १८५० मानमल ने प्रतिलिपि की थी।
कर्म प्रकृति	—	"	—

८५१. गुटका नं० १६२। पत्र सख्या-५१ से २१२। साइज-८×३½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १२७६।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
माली रासा	जिणदास	हिन्दी	पत्र ६३
नेमीश्वर राजमति गीत	—	"	६५
नेमिनाथ राजुल गीत	हर्षकीर्त्ति	"	६८

आरम्भ—म्हारो रे मन मोरडा गिरनारयाँ उडि दैसो रे।

अन्तिम—मोषि गयो जिण राजइ गढ गिरनारि मझारे।
राजमति सुरपति हुई हरष कीरति सुख करारे।

नेमीश्वर गीत	हर्षकीर्त्ति	"	६६
आचार रासा	—	"	७०

वंदेतान जयमाल	—	संस्कृत	पत्र ७२
गीत	हेमराज	हिन्दी	७२

चौबीस तीर्थंकर स्तुति के २ पद्य हैं।

जीयडा गीत	—	"	७४

विशेष—तु मेरो पीव साजना रै हु तेरी वर नारि मेरा जीवडा।
तुम विन छिण एक ना रहो रे लाल तुझमे प्रेम पियार मेरा जीवडा।
काया कामिणी वीनउ रै लाल ॥१॥ ६ पद्य हैं।

पूजा संग्रह	—	संस्कृत हिन्दी	६८
श्री जिनस्तुति	ब्र० तेजपाल	"	११६
श्रीजिन नमस्कार	यशोनंदि	"	११७, ११ पद्य हैं।
धर्म सहेली	मनराम	"	१६३, २० पद्य हैं।
मेघकुमार गीत	पूनो	"	१६६, २१ पद्य हैं।
पद	कवि सुन्दर	"	१६७, १० पद्य हैं।
जीवकी भावना	—	"	१७२, ६ पद्य हैं।
ऋषभनाथ बेलि	—	"	१७३
नेमि राजुल गीत	बुगरसी बैनाडा	"	१७५
पंचेन्द्रिय वेलि	ठक्कुरसी	"	१७६ र. का. स. १५८५
कर्म हिंडोलना	हर्षकीर्त्ति	"	१८१
नेमिगीत	—	"	१८४
नेमिराजमती गीत	—	"	१८६ १७ पद्य हैं।
दीतवार कथा	भाऊकवि	"	—
बारह खडी	—	"	—
सीता की धमाल	लक्ष्मीचंद	"	२०२
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	२१२

स्फुट एवं अवशिष्ट साहित्य

८५२. अइमताकुमार रास—मुनि नारायण। पत्र संख्या–८। साइज–१०×४½ इञ्च। भाषा–हिंदी (मध्य) गुजराती मिश्रित। विषय–कथा। रचना काल–सं० १६८३। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ११६१।

विशेष—१ तथा ५ वां पत्र नहीं है।

अंतिम—अरिहत वाणी हृदय धाणी पूरा इति निज आसए।

श्री रत्नसीह गणि गछ नायक पाय प्रणमी तासए ॥३३॥

सवत सोल त्रिहासी आ वर्षि वुधि वदि पोस मासए।

कल्प वल्ली माहि रंगिइ रच्यउ सु दर रास ए ॥३४॥

वाचारिवि शिष्य समरचद मुनी विमल गुण आवासए ॥३५॥

८५३. अजीर्ण मजरी—पत्र संख्या–८। साइज–६½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५४१।

८५४. अर्द्धकथानक—बनारसीदास। पत्र संख्या–६ से ३०। साइज–६×८½ इञ्च। भाषा–हिंदी पद्य। विषय–आत्म चरित्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ११६३।

विशेष—कवि ने स्वय का आत्म चरित लिखा है।

८५५. अर्हन् सहस्रनाम—पत्र संख्या–६। साइज–१०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२०३।

विशेष—चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र एव मंत्र भी दिया हुआ है। पडित श्री सिंघ सौभाग्य गणि ने प्रतिलिपि की थी।

८५६. आदिनाथ के पच मगल—अमरपाल। पत्र संख्या–८। साइज–६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७७२ सावण सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० १२१०।

विशेष—सं० १७७२ मे जहानाबाद के जैसिंहपुरा में स्वय अमरपाल गंगवाल ने प्रतिलिपि की थी।

अतिम छंद—अमरपाल के चित सदा आदि चरन ल्यो लाइ।

भव भव मांझि उपासना रहो सदा ही थाइ ॥

जिनवर स्तुति दीपचन्द की भी दी हुई है।

८५७. **किशोर कल्पद्रुम** —शिव कवि । पत्र सख्या–१८४ । साइज–८३/४×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पाक शास्त्र । रचना काल–X । लेखन काल–X । अपूर्ण । वेष्टन न० १०१२ ।

विशेष—इति श्री महाराजि नृपति किशोरदास आज्ञा प्रमाणेन शिव कवि विरचित ग्र थ किशोर कल्पद्रुमे सिखरादि विधि वरनन नाम नवविंसत साखा समाप्ता । ६२० पद्य तक है । आगे के पत्र नही हैं ।

८५८ **कुवलयानंद कारिका**—पत्र सख्या–८ । साइज–१२×७ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–रस अलकार । रचना काल–X लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७१ ।

विशेष—एक प्रति और है । इसका दूसरा नाम चन्द्रालोक भी है ।

८५६ **ग्रन्थ-सूची**—पत्र सख्या– । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सूची । रचना काल–X । लेखन काल–X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११५२ ।

८६० **चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न**—पत्र संख्या–३ । साइज–६३/४×४१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–विविध । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६३ ।

विशेष—सम्राट् चन्द्रगुप्त को जो सोलह स्वप्न हुये ये उनका फल दिया हुआ है ।

८६१ **चौवीस ठाणा चौपई**—साह लोहट । पत्र सख्या–६२ । साइज–११३/४×६ इञ्च । भाषा–हिदी । विषय–सिद्धात । रचना काल–स० १७३६ मंगसिर सुदी ५ । लेखन काल–स० १७६३ फाल्गुण सुदी १४ शाके १६२३ । पूर्ण । वेष्टन न० ४२७ ।

विशेष—कपूरचन्द ने टोंक मे प्रतिलिपि की थी । प्रशस्ति में लोहट का पूर्ण परिचय है ।

रचना चौपई छन्द में है जिनकी संख्या १३०० है । साह लोहट अच्छे कवि थे जो श्री धर्मा के पुत्र थे । प० लक्ष्मीदास के आग्रह से इस ग्र थ की रचना की गयी थी । भाषा सरल है ।

प्रारभ—श्री जिन नेमि जिनदचद वदिय आनंद मन ।
सिध सुध अकलक ग्यंक सर मरि मयंक तन ॥
ए अष्टादश दोष रहत उन अभ्रत कोइय ।
ए गुण रत्न प्रकास सुजस जग उन मजोइय ॥
ए ज्ञान वहै यमृत स्रवै इवै साति वहै सीतधर ।
ए जीव स्वरूप दिखाय दे वहै लखावै लोक वर ॥

अतिम—बुध सज्जन सब ते अरदास, लखि चौपई करोमत हासि ।
इनकी पारन कोऊलही, मैं मोरी मति सारू कही ॥१८५॥

लाख पचीस निन्यायव कोडि एक अव भुव लीज्य नोडि ।

सो रचना लख ज्योन लाय । जंत्रग कदे धरु बनाय ॥१८६॥

८६२. जखडी—पत्र संख्या–३ । साइज–११३⁄४×५१⁄२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्फुट । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४६ ।

८६३. जीतकल्पावचूरि—पत्र संख्या–५ । साइज–१०×४१⁄२ इन्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११६२ ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण भी दिया हुआ है ।

८६४ दस्तूर मालिका-वंशीधर । पत्र संख्या ६ । साइज १०×७ । भाषा–हिन्दी । विषय–अर्थशास्त्र । रचना काल सं० १७६५ । लेखन काल–X । अपूर्ण एवं जीर्ण । वेष्टन नं० १२८० ।

विशेष—इसमें व्यापार संबधी दस्तूर दिये हुए हैं ।

प्रारंभ— जो धरत गनपति ध्यानें मे धरत जे लोइ ।

गुन वदत इकदंत के सुर मुनि जन सब कोइ ॥ १ ॥

हीव अक चक धुज पग पर प्रय पाप प्रसाद ।

वसीधर वरननि कियौ सुनत होय यहलाद ॥ २ ॥

जदि यदुनी लेखे घनै लेखे के करतार ।

मटकत विनि दस्तूर है अटकत बारबार ॥ ३ ॥

सूध पंथ जो जनिरिंग पहुचहि मजल ऊताल ।

रहिवीना विसराइ है सकट वकट जाल ॥ ४ ॥

पातसाहि आलम अमिल सालिम प्रबल प्रताप ।

आलम मे जागे सबै घर घर जापत जाप ॥ ५ ॥

छत्र साल भुवपाल कौ राजन राज विसाल ।

सकल हिन्दु उग जाल मे मनौ इन्द्रदुत जाल ॥ ६ ॥

ताके अता सोमिजे सक्तसिंघ बलवान ।

उग्रसईंगा रव हके नद दीह दलवान ॥ ७ ॥

सहर सक्तपुर राज ही सब समाज सब ठौर ।

परम धरम सुकरन जहा सबै जगत सिर मौर ॥ ८ ॥

सवत सत्रासैकरा पैंसठ परम पुनीत

करि वरननि यहि ग्रंथ को छइ चरनन करि मीत ॥ ६ ॥

अथ कपडा खरीद को दस्तूर—

जिते रुपैया मोल को गज प्रत जो पट लेइ ।
गिरह एक आना तिते लेख लिखारी देह ॥ १० ॥
आना उपर हौय गज प्रति रुपिया अक ।
तीन दाम अठ असु बद मह प्रति लिखौ निसक ॥ ११ ॥

इसमें कुल १४३ तक पद्य है । प्रति अपूर्ण है ।

८६५ नख शिख वर्णन—पत्र सख्या–६ से १६ । साइज–६×६ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–शृंगार रस । रचना काल–× । लेखनकाल–स० १८०६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०१३ ।

विशेष—बखतराम साह ने लिखी थी ।

८६६. नित्य पूजा पाठ सग्रह । पत्र सख्या–१० । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७०५ ।

८६७ पत्रिका—पत्र सख्या–१ ।साइज–× । भाषा–सस्कृत–हिन्दी । विषय–प्रतिष्ठा का वर्णन । रचना काल–× । लेखनकाल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १२६१

विशेष—स० १६२१ में जयपुर में होने वाले पच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की निमत्रण पत्रिका है ।

८६८. पद सग्रह—जौंहरीलाल । पत्र सख्या–२४ । साइज–१०½×५½ इच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पद । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२१२ ।

विशेष—२४ पदों का सग्रह हैं ।

८६९ पन्नाशाहजादा की बात—पत्र सख्या–२० । साइज–६½×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७६० आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० ५५ ।

विशेष—श्राविका कुशला ने बाई केशर के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

२० से आगे के पत्र पानी में भीगे हुए हैं । इनके अतिरिक्त मुख्य पाठ ये हैं—

पद	हरीसिंह	
सुमति कुमति का गीत	विनोदीलाल	१८७२
जोगीरासा	जिणदास	—

८७०. परमात्म प्रकाश—योगीन्द्रदेव । पत्र सख्या–५ से १४ । साइज–११½×५ इन्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–स० १५६७ चैत्र बुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन न० ११६६ ।

विशेष—ईडर के दुर्ग में लेखक डूंगर ने प्रतिलिपि की।

अंत में यह भी लिखा है:—श्रीमूलसंघे श्री मत् हर्ष सुकीर्ति न पुस्तक मिद ॥ ब्रह्मपुरे ॥

८७१. पल्य विधान पूजा—रत्न नंदि। पत्र संख्या-१। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२११।

८७२. पाठ संग्रह—पत्र संख्या-६१। साइज-१२×५ इंच। भाषा-संस्कृत-प्राकृत। विषय-संग्रह। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१७।

विशेष - आशाधर विरचित प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का संग्रह है।

८७३ पाठ संग्रह—पत्र संख्या-२०। साइज-१२×८ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८०।

विशेष—इष्ट छत्तीसी, एकीभाव, स्तोत्र भक्तामर स्तोत्र, निर्वाणकांड, परञ्ज्योति, कल्याण मन्दिर और विषापहार स्तोत्र हैं।

८७४. पाठ संग्रह—भगवतीदास। पत्र संख्या-३। साइज-१०×५½ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ९६७।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

मूढाष्टक वर्णन—
सम्यक्त्व पच्चीसी—
वैराग्य पच्चीसी— र० का० सं० १७५०।

८७५. पाठ संग्रह—पत्र संख्या-२५। साइज-१२×८ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-संग्रह। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४७५।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, सहस्र नाम तथा तत्वार्थ सूत्र का संग्रह है।

८७६ पाठ संग्रह—पत्र संख्या-१०। साइज-८×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। लेखन काल-। पूर्ण। वेष्टन नं० ८४६।

विशेष—सास बहू का झगडा आदि पाठों का संग्रह है।

८७७ बनारसी विलास—बनारसीदास। पत्र संख्या-७ से ८७। साइज-११½×४½ इन्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-संग्रह। रचना काल-×। संग्रह काल-१७०१। लेखन काल-सं० १७०८ माघ बुदी ६। अपूर्ण वेष्टन नं० ७३६।

विशेष—सकलकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी। प्रारम्भ के २१ पत्र फिर लिखवाये गये हैं।

८७८ प्रति नं० २। पत्र संख्या-१३७। साइज-१०½×५ इन्च। लेखन काल-सं० १७०७ फागुण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० ७६३।

विशेष—३ प्रतियां और हैं।

८७९ बुधजन विलास—बुधजन। पत्र संख्या-११६। साइज-१०½×७½ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७२०।

८८ मजलसराय की चिट्ठी—पत्र संख्या-२२। साइज-६×४ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-यात्रा वर्णन। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८४७ भादवा बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० १२६४।

विशेष—मजलसराय पानीपत वाले की चिट्ठी है। चिट्ठी के अन्त में पदों का संग्रह भी है।

८८१ रागमाला—पत्र संख्या-६। साइज-६½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-संगीत शास्त्र रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०६।

८८२ लघु क्षेत्र समास—पत्र संख्या-४६। साइज-६½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। रचना काल-×। लेखनकाल-×। पूर्ण। जीर्ण। वेष्टन नं० ११८८।

विशेष—मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा में है जो रत्नशेखर कृत है। यह इसकी टीका है।

८८३. लीलावती भाषा—पत्र संख्या-१ से २४। साइज-१०½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-गणित शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६३४।

८८४. वर्द्धमानचरित्र टिप्पण—प। संख्या-३८ से ५१। साइज-१०½×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १४८१ आसोज सुदी १०। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२६३।

विशेष—वर्द्धमानचरित्र संस्कृत टिप्पण। यह टिप्पण जयमित्रहल के वड्ढमाण कव्व (अपभ्रंश) का संस्कृत टिप्पण है। टिप्पण का अन्तिम भाग ही अवशिष्ट है।

८८५. व्यसनराजवर्णन—टेकचन्द। पत्र संख्या-१८। साइज-१२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-विविध। रचना काल-सं० १८२७। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८७४।

विशेष—सप्त व्यसनों का वर्णन है पद्य संख्या २५६ है।

८८६. श्रावक धर्म वर्णन—पत्र संख्या-१०। साइज-४½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विशेष-आचार शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२२३।

विशेष—गुटका साइज हैं।

८८७ **सज्झाय—विजयभद्र** । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७१ ।

विशेष—इसके अतिरिक्त आनंद विमल सूरि की सज्झाय भी दी हुई है ।

८८८ **साधर्मी भाई रायमल्लजी की चिट्ठी—रायमल्ल** । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । रचना काल-सं० १८२१ माह बुदी ६ । लेखन काल-सं० १८२१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७०८ ।

विशेष—रायमल्लजी के हाथ की चिट्ठी है ।

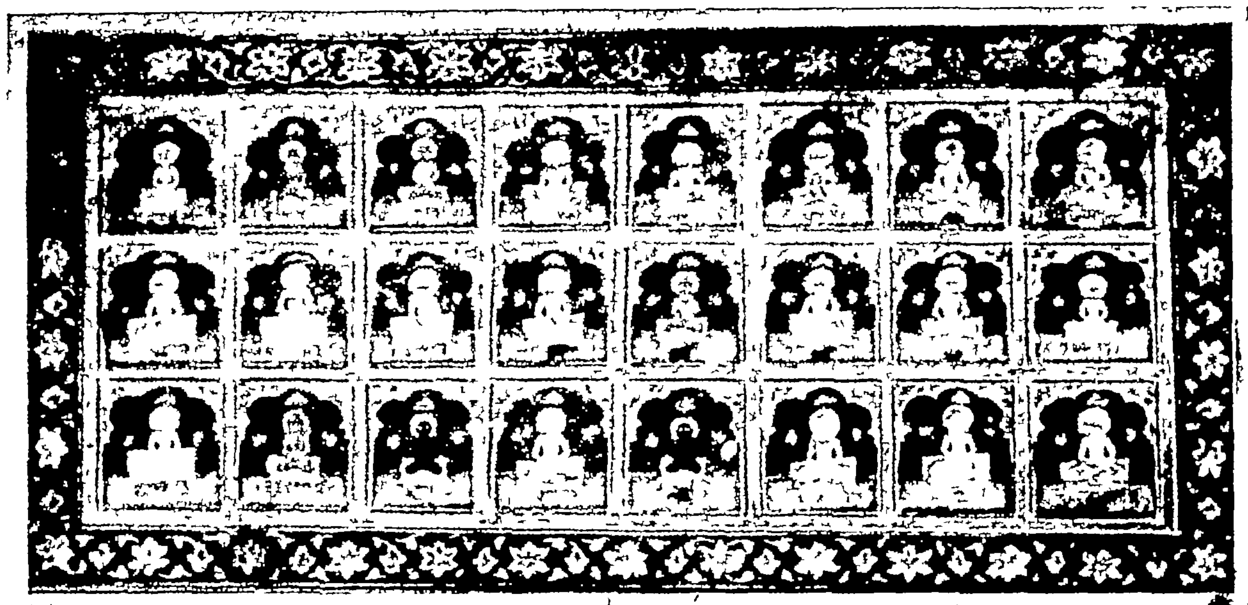
८८९ **शालिभद्र सज्झाय—मुनि लावंन स्वामी** । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७२६ चैत्र बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७० ।

विशेष—रामजी ने प्रतिलिपि की थी ।

८९० **हरिवंश पुराण—महाकवि धवल** । पत्र संख्या-१६ से ३६ । साइज-१२×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण एवं जीर्ण । वेष्टन नं० १२५० ।



जयपुर मे ठोलियो के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत एक कलात्मक पुट्ठा
जिस पर चौवीस तीर्थङ्करों के रगीन चित्र दिये हुये हैं।





जयपुर के दिगम्वर जैन मन्दिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत
यशोधर चरित्र के सचित्र प्रति का एक चित्र।

श्री दि० जैन मन्दिर ठोलियों

के

ग्रन्थ

विषय–सिद्धान्त एवं चर्चा

१ आगमसार—मुनि देवचद्र। पत्र सख्या-४६। साइज-१०×४¾ इन्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-स० १७७६। लेखन काल-स० १७६६। पूर्ण। वेष्टन न० ४०४।

प्रारम्भ—अथ भव्य जीव नै प्रतिबोधवा निमित्तै मोक्ष मार्गनी वचनिका कहे छै। तिहा प्रथम जीव अनादि काल नौ मिथ्याती थो। काल लवधि पामी नें तीन करण करै छै प्रथम यथाप्रवृति करण १ वीजौ अपूरव करण २ तीजौ अनिवृत्ति करण ३ तिहां यथा प्रवृत्ति कहे छै।

अन्तिम—सवत् सतर छिहोतरै मन सुद्ध फागुण मास।
मोटै कोट मरोट में वसतां सुख चौमास ॥५॥
सुविहत खतर गछ सुथिर जुगवर जिणचद्र सूर।
पुण्य प्रधान प्रधान गुण पाठक गुणेय भूर ॥६॥
तास सीस पाठक प्रवर जिन मत परमत जाण।
भविक कमल प्रतिवोधवा राज सार गुर भाण ॥७॥
ज्ञान धरम पाठक प्रवर खम दम गुणे आगाह।
राज हस गुरु सकति सहज न करै सराह ॥८॥
तास सीस आगम रूची जैन धर्म को दास।
देवचद आनद मय कीनौ ग्रन्थ प्रकाश ॥९॥
आगम सारोद्धार यह प्राकृत सस्कृत रूप।
ग्र थ कियो देवचद मुनि ज्ञानामृत रस कूप ॥१०॥
धर्मामृत जिन धर्म रति भविजन समकित वत।
सुद्ध अमर पदउ लषण ग्र थ कियौ गुण वत ॥११॥
तत्व ज्ञान मय ग्र थ यह जो रवै वालावोध।
निज पर सत्ता सब लखै श्रोता लहै सुवोध ॥१२॥

ता कारण देवचद कीनो भाषा ग्रंथ ।
गणसी गुणसी जे भविक लहसी ते सिव पंथ ॥१३॥
कथक शुद्ध श्रोता रूची मिल ज्यो ए सयोग ।
तत्व ज्ञान श्रद्धा सहित वल काया नीरोग ॥१४॥
परमागम सु राचज्यो लहस्यो परमानद ।
धर्म राग गुरु धर्म सु धरि ज्यों ए सुख वृन्द ॥१५॥
ग्रथ कियो मनरंग सु सित पख फागुण मास ।
सोमवार श्रव तीज तिथि सफल फली मन श्रास ॥१६॥

इति श्री आगमसार ग्रथ सपूर्ण । स० १७६६ वर्षे मार्गसीस सुदी १२ भृगुवासरे त्रेभमनगरमध्ये रावत देवीसिंह राज्ये लिपि कृत भट्ट अखैराम पठनार्थ । वाई माणा थी ।

२. **आश्रवत्रिभंगी** । पत्र संख्या–११० । साइज–१२×५ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धा त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२२ ।

विशेष—पत्र २० से ८५ तक सत्ता त्रिभंगी तथा इसमे आगे भाव त्रिभंगी है । गुणस्थान तथा मार्गणा का वर्णन है ।

३. **कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र सख्या–२१ । साइज–११×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धा त । रचना काल–× । लेखन काल– । पूर्ण । वेष्टन न० १६७ ।

विशेष—दो प्रतियां और हैं

४ **कर्मप्रकृति वृति—सुमतिकीर्त्ति** । पत्र सख्या–४६ । साइज–११$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८५५ वैसाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३७८ ।

विशेष—जयपुर मे शातिनाथ चैत्यालय मे प० आनन्दराम के शिष्य श्री चद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

५. **गुणस्थान चर्चा**—पत्र सख्या–११० । साइज–१२×६ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १७६० । पूर्ण । वेष्टन न० ३१३ ।

विशेष—गोमट्टसार के आधार से हैं ।

६. **गुणस्थान चर्चा** । पत्र सख्या–४८ । साइज–१२$\frac{1}{2}$×६ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ३१४ ।

विशेष—गोमट्टसार के आधार से वर्णन है ।

७ **गोमट्टसार (कर्मकाण्ड)—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र सख्या–४२ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १७८५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६५ ।

विशेष—संस्कृत हिन्दी टीका सहित है । केवल कर्म प्रकृति का वर्णन है ।

८ **गोमट्टसार जीवकाण्ड भाषा—प० टोडरमल** । पत्र सख्या–१६६ । साइज–१३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–स० १८१८ । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२८ ।

विशेष—ग्रन्थ की एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

९ **गोमट्टसार कर्मकाण्ड भाषा—हेमराज** । पत्र सख्या–१०१ । साइज–११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १७७० मगसिर सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६ ।

विशेष—दीना ने रामपुर मे प्रतिलिपि की थी ।
एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है । इस प्रति के पुट्ठे पर सुन्दर चित्रकारी है ।

१० **चरचा सग्रह** । पत्र संख्या–१५ । साइज–१०½×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चर्चा (धर्म) । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४७ ।

११ **चर्चाशतक—द्यानतरायजी** । पत्र सख्या–२८ । साइज–८×६ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चर्चा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । २ प्रतिया और हैं ।

१२ **चर्चा समाधान-भूधरदासजी** । पत्र संख्या–१११ । साइज–१०½×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–स० १८०६ माघ सुदी ५ । लेखन काल–स० १८१३ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६ ।

विशेष—यति निहालचद ने प्रतिलिपि की थी ।

१३ **चौवीस ठाणा चर्चा - नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र सख्या–३० । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १७४१ कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० १८६ ।

विशेष—जहानाबाद मध्ये राजा के बाजार मे पडित माया राम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई । तीन प्रतियां और हैं । ये सस्कृत छाया टीका सहित हैं ।

१४. **चौवीस ठाणा चर्चा—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र सख्या ८ । साइज–११½×५ इन्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—पत्र सख्या ४ से आगे कलियुग की बीनती है भाषा–हिन्दी तथा ब्रह्मदेव कृत है

१५ ज्ञान क्रिया सवाद—पत्र संख्या-३ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७४६ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१७ ।

विशेष—श्लोक सख्या-१५ हैं । तृतीय पत्र पर धर्मचर्चा भी दी हुई है ।

१६ तत्त्वसार दोहा—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र संख्या-७ । साइज-११×८½ इन्च । भाषा-गुजराती लिपि देवनागरी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६१ ।

आरम्भ—समय सार रस सांमलो, रे समरवि श्री समिसार ।
समय सार सुख सिद्धनां, सोभि सुवख विचार ॥१॥
अप्पा अप्पि आपसु' रे आपण हेतिं आप ।
आप निमित्त आपणो ध्यानु' रहित संताप ॥२॥
च्यार प्राण प्रीणित सदा रे निश्चय न्याय विगाण ।
सत्ता सुख वर वोधमि चेतना चुभ प्राण ॥३॥
च्यार प्राण व्यवहार थी रे दश दीसि एह भेद ।
इंदिय वल उस्सास सु' आयु तणा वहु छेद ॥४॥

अंतिम—भणो मनीयण २ भक्तिभर भारि चेता चिद्रूप ।
चितता चिंत्ति चेतन चतुर भाव आवए ॥
सातु धात देहवेगलो अमल सकल सु विमल भावए ।
आतम सरुप परूवण पटज्यो पावन मत ।
ध्याजो ध्यानि ध्येयस्यु ध्याता भार महंत ॥६०॥
सात शिव कर ०
भ्रान निज भाव शुद्ध चिदानद चींततो मूकी माया मोह गेह देहए ।
सिद्ध तणा सुखजि मल हरहि आतमा भावि शुभ एहए ॥
श्री विजय कीर्त्ति गुरु मनि धरी ध्याउ शुद्ध चिद्रूप ।
भट्टारक श्री शुभचन्द्र भणि या तु शुद्ध सरूप ॥६१॥

॥ इति तत्त्वसार दूहा ॥

१७ तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—भट्टारक प्रभाचन्द्र देव । पत्र सख्या-१०६ । साइज-११½×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १७० ।

विशेष—यह तत्त्वार्थ सूत्र की टीका है । सरल संस्कृत में है । कहीं २ हिन्दी भी दृष्ट होती है । ६ अध्याय तक है ।

अध्याय ८ सूत्र-३४ हिंसानृस्ते-रौद्र ध्यान कथयति तद्यथा प्रकार ४ भवन्ति । हिसानद कार्य । जीव घात को काइ । सूली चोरु सती होय, संग्रामु होय तजइ आनन्दु सुखु मानइ त हिंसानन्दु होइ । रौद्र ध्यान प्रथम पद नरक कारण इति ज्ञात्वा । हिंसानद न कर्त्तव्य ।

इति तत्वार्थ रत्नप्रभाकर ग्रन्थे सर्वार्थसिद्धो मुनि श्री धर्मचद्र शिष्य प्रभाचन्द्र देव विरचिते ब्रह्म जैयतु साधु हाबदेव भावना पढणनिमित्ते सवरनिर्जरा पदार्थकथन मनुष्यत्वेन नव सूत्र विचारप्रकरण ।

बीचमें २ से ७ पत्र भी नही हैं ।

१८. **तत्वार्थसार—अमृतचद्र सूरि** । पत्र सख्या-२५ । साइज-१२×८½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेख। काल-× । पूर्ण । वेष्टन २१४ ।

प्रति प्राचीन है ।

१९ **तत्वार्थसूत्र—उमास्वाति** । पत्र सख्या-१४८ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० १०५ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२०. **प्रति न० २** । पत्र सख्या-४० । साइज-८×५½ इञ्च । लेखन काल-स० १८७६ चैत्र सुदी ६ पूर्ण । वेष्टन नं० १३३ ।

विशेष—सूत्रों पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । चार प्रतियां और हैं किंतु वे मूल मात्र हैं ।

२१. **तत्वार्थसूत्र टीका (टब्बा)** । पत्र सख्या-२५ । साइज-१३×७½ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १९१२ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७० ।

विशेष—लाला रतनलाल ने करवा शमसावाद मे प्रतिलिपि की ।

२२. **प्रति न० २** । पत्र सख्या-४६ । साइज-१२½×८ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन न० ३६७ ।

प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२३. **तत्वार्थसूत्र भाषा टीका -कनककीर्त्ति** । पत्र सख्या-१८२ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७४४ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ४३ ।

विशेष—कनककीर्ति ने जोशी जगन्नाथ से लिपि कराई ।

उमा स्वाति रचित तत्त्वार्थ सूत्र पर श्रुतसागरी टीका की हिन्दी व्याख्या है । एक प्रति और है ।

२४ **त्रिभगीसार—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र संख्या-३६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४३ ।

विशेष – एक प्रति और है।

२५   त्रिलोकसारसदृष्टि—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र संख्या-८३। साइज-११½×८½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८८८ पौष सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५।

विशेष—जयपुर में कवक ज्ञानजी ने महात्मा दयाचंद से प्रतिलिपि कराई थी।

२६   द्रव्यसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र संख्या-६। साइज-११½×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १७३।

विशेष—४ प्रतियां और हैं।

२७.   प्रति नं० २। पत्र संख्या-५७। साइज-१०×४ इञ्च। लेखन काल-सं० १७५० फागुन सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० २६४।

विशेष—हिन्दी और संस्कृत में भी अर्थ दिया है।

२८.   द्रव्यसंग्रह टीका—ब्रह्मदेव। पत्र संख्या-१११। साइज-११×३½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल सं० १४१६ भादवा सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० १७६।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १४१६ वर्षे भादवा सुदी १३ गुरौ दिने श्रीमद्योगिनीपुरे सकल राज्य शिरोमुकुट माणिक्य मरीचिकृत चरण-कमल पाद पीठस्य श्रीमत् पेरोज साहि सकल साम्राज्यधुरा बिभ्राणस्य समये वर्तमाने श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे भट्टारक रत्नकीर्ति क्रम कमल सुवर्णकीर्णा श्री प्रभाचन्द्राणां । स्य शिष्य ब्रह्म नाथू पठनार्थं अग्रोतकान्वये गोहिल गोत्रे भरथल वास्तव्य परम श्रावक साधू साउ भार्या बीरो तयो पुत्र साधु उधम भर्या बालही तस्य पुत्र कुलधर भार्या पाणधरही तस्य पुत्र मरहपाली भार्या लोधा ही मरहपाल लिखा पित कर्म क्षयार्थं। कमलदेव पंडित लिखितं। शुभ भवतु।

२६   द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी। पत्र संख्या-२६। साइज-१२×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी गुजराती लिपि देवनागरी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-सं १८४३ फागुन बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन नं० १८।

विशेष—पं० केशरीसिंह ने अलवर में प्रतिलिपि की थी।

३०.   नामकर्म प्रकृतियों का वर्णन—पत्र संख्या-१६। साइज-१२½×५½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६१।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है।

३१.   पंचास्तिकाय टीका मूलकर्त्ता-आ० कुन्दकुन्द। टीककार अमृतचंद सूरि। पत्र संख्या-६५। साइज-१३½×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १५०।

विशेष – २ प्रतियां और हैं।

३२. **पंचास्तिकाय भाषा टीका – पांडे हेमराज** । पत्र संख्या–१६१ । साइज१०३/४×५३/४ इंच । भाषा–प्राकृत हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल– सं० १७१६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४ ।

विशेष—रामपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३ **पाक्षिक सूत्र**—पत्र संख्या–६ । साइज–१३/४×३३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२४ ।

३४ **भगवती सूत्र**—पत्र संख्या–५७८ से ८५४ । साइज १३×६३/४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८२४ आसोज सुदी १ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १६२ ।

विशेष—टब्बा टीका गुजराती, लिपि हिन्दी में है। निहालचंद के शिष्य तुलसा ने किशनगढ नगर में प्रतिलिपि की थी ।

३५. **भावसंग्रह—पंडित वामदेव** । पत्र संख्या–३८ । साइज–११×५३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८५८ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

विशेष—सवाई जयपुर में शान्तिनाथ चैत्यालय (इसी ठोलियों के मन्दिर में) विबुध आनन्दराम के शिष्य श्रीचंद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३६ **भावसंग्रह—देवसेन** । पत्र संख्या–२० । साइज–११३/४×५३/४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३० ।

३७. **भावसंग्रह—श्रुतमुनि** । पत्र संख्या–१३ । साइज–११३/४×५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १५६६ माघ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २८६ ।

विशेष—ब्रह्म हरिदास ने प्रतिलिपि की । ३ प्रतियां और हैं ।

३८. **रत्नसंचय—विनयराज गणि** । पत्र संख्या–१४ । साइज–१०३/४×४३/४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७७० कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २०७ ।

श्री विद्यासागर सूरि के शिष्य लक्ष्मीसागर गणि ने प्रतिलिपि की थी । पं० जीवा वाकलीवाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

३६. **लब्धिसार टीका–माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव** । पत्र संख्या–७७ । साइज–११×७३/४ इंच । भाषा–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल×–सं० १८८४ फागुन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८२ ।

४०. विशेष सत्ता त्रिभंगी । पत्र संख्या-२६ । साइज-१२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३०३ ।

४१ सिद्धान्तसार दीपक—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-१२८ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२१ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५० ।

विशेष—कुल १६ अधिकार हैं तथा ग्रंथ (श्लोक) संख्या ४८१६ है । २ प्रतियां और हैं ।

४२ सिद्धान्तसार संग्रह—आचार्य नरेन्द्रसेन । पत्र संख्या-६६ । साइज-१०×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२३ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण वेष्टन नं० ७५ ।

विशेष—जयपुर में चंद्रप्रभ चैत्यालय में पंडित रामचन्द्र ने माधवसिंह के शासन में प्रतिलिपि की थी । श्लोक संख्या २४१६ । एक प्रति और है ।

विषय—धर्म एवं आचार शास्त्र

४३. अनुभव प्रकाश—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र संख्या-५५ । साइज-८½×७½ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १७८१ । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० ११६ ।

४४. आचार शास्त्र । पत्र संख्या-०० । साइज-११×८ । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-× । लेखन का-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ००० ।

४५. आचारसार—वीरनंदि । पत्र संख्या-१०८ । साइज-११½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० २५१ ।

विशेष—कुल १२ अधिकार हैं। प्रारम्भ के पत्र जीर्ण हो चुके हैं।

४६. **उनतीसबोल दंडक**—पत्र संख्या-१०। साइज-१०×४½ इंच। भाषा-हिंदी। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २६५।

४७. **उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला भाषा—भागचंद**। पत्र संख्या-४२। साइज-१०½×५½ इंच। विषय-धर्म। रचना काल-सं० १९१२ आषाढ बुदी २। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६।

विशेष—मूलग्रंथ की गाथाएँ भी दी हुई हैं।

४८. **उपासकाध्यन—आ० वसुनंदि**। पत्र संख्या-५५। साइज-१२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८०८ भादवा सुदी ६। पूर्ण वेष्टन नं० ५४।

विशेष—प्रति हिंदी अर्थ सहित है। ग्रंथ का दूसरा नाम वसुनन्दि श्रावकाचार भी है। एक प्रति और है।

४९. **प्रति नं० २**। पत्र संख्या-३८। साइज-६½×४½ इन्च। लेखन काल-सं० १५६५ चैत्र बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६४।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ संवत्सरेस्मिन श्री नृप विक्रमादित्यगताब्द संवत १५६५ वर्षे चैत्र बुदी ५ आदित्यवारे श्रीकुरुजांगल देशे श्री सुवर्णपत्र सुभदुर्गे पातिसाह हम्माऊराज्यप्रवत्त माने श्री काष्टासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक गुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे उभय भाषा प्रवीण भट्टारक श्री सहसकीर्तिदेवा तत्पट्टे विनेस्कलाकमलिनीविकाशनैकभास्कर भट्टारक श्री मलयकीर्तिदेवा तत्पट्टे वादीभ-कुंभस्थलविदारणैककेसरि, भव्यांबुजविकाशनैकमार्त्तण्ड भट्टा० श्री गुणभद्रसूरिदेवा. तदाम्नाये पात्रू वंशे गर्गगोत्रे गोधानइ वास्तव्य अनेक गुण विराजमान् साधु सरणी तस्य समुद्रइव गंभीरान् मेरुवद्धीरान चतुर्विध दानवितरणैक श्रेयांसावतारान् सरस्वती कंठा कठितान् राज्यसभा जैनसभा शृंगारहारान् परोपकारी पंडित साधु गोपी तेन इदं श्रावकाचार लिखापित। कर्म क्षयार्थं।

पत्र नं० ३७ के कोने पर एक म्होर लगी हुई है जिसमे उर्दू में चमनदास मूलचन्द पंडित लिखा है। ग्रंथ में कुछ परिचय ग्रंथ कर्त्ता का भी दिया हुआ है।

५०. **एषणा दोष (छियालीस दोष)-भैया भगवतीदास**। पत्र संख्या-७। साइज-१०½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०४।

५१. **क्रियाकोष भाषा—दौलतराम**। पत्र संख्या-८५। साइज-१२×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-आचार। रचना काल-सं० १७९५ भादवा सुदी १२। लेखन काल-सं० १८६४ भादवा बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० १६३।

विशेष एक प्रति और है।

५२. ग्यारह प्रतिमा वर्णन । पत्र संख्या–२ । साइज–८३⁄४×४३⁄४ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण वेष्टन नं० ६५ ।

५३ चर्चासागर भाषा—पत्र संख्या–२०० । साइज–१३३⁄४×८ इन्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६१ ।

विशेष—२०० से आगे पत्र नहीं है । दो तीन तरह की लिपियां हैं ।

५४ चौबीसदडक—दौलतराम । पत्र संख्या–८ । साइज–८×६१⁄२ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१२ ।

विशेष—८७ पद्य हैं । दो प्रतियां और हैं ।

५५. जिनपालित मुनि स्वाध्याय—विमल हर्ष वाचक । पत्र संख्या–२ । साइज–१०×४ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २५३ ।

विशेष—

प्रारम्भ—सिरि पास मखेसर अलवेसर भगवंत ।
पाय प्रणमि जिण पालित मुनि सत ॥१॥

अंतिम—सत एहनीय परिजय छडय, अरुविरुग्रा विषयविनाडी ।
एह परभव ने थाइ सुखिया तेहनी कीर्ति गवाणी ॥
जगगुरु हीर यह सोहाकार श्री विजयसेन सुरिंद ।
श्री विमल हर्ष वाचक तउ सेवक भाव कहइ सानंद ॥१६॥

प्रति प्राचीन है ।

५६ त्रिवर्णाचार—सोमसेन । पत्र संख्या–१३४ । साइज–११ १⁄२×७३⁄४ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार । रचना काल–सं० १६६७ । लेखन काल–सं० १६८२ वैसाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० २८७ ।

विशेष—पाटलिपुत्र (पटना) में प्रतिलिपि हुई । कुल १३ अध्याय हैं । ग्रंथ ग्रंथ सं० ७०० है । एक प्रति और है ।

५७ धर्म परीक्षा—हरिषेण । पत्र संख्या–२ से ७६ । साइज–११ १⁄२×४३⁄४ इन्च । विषय–धर्म । भाषा–अपभ्रंश । रचना काल–सं० १०४४ । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०१ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

५८ धर्म परीक्षा—अमितगति । पत्र संख्या–८५ । साइज–१२×५१⁄२ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १०१७ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१६ ।

५९ धर्मपरीक्षा भाषा ··· । पत्र संख्या–३० । साइज–११ १⁄२×४१⁄२ इन्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०० ।

६०. **धर्मरत्नाकर—जयसेन** । पत्र संख्या-१२१ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६० । पूर्ण । वेष्टन नं० २०६ ।

६१. **धर्मरसायन—पद्मनंदि** । पत्र संख्या-८ । साइज-११½×५½ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२८ ।

६२. **धर्मसंग्रहश्रावकाचार—पं० मेधावी** । पत्र संख्या-५२ । साइज-११¾×५¾ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १५४१ कार्तिक बुदी १३ । लेखन काल-सं० १८३५ माघ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४६ ।

विशेष—कुल दश अधिकार हैं । ग्रंथ १४४० श्लोक प्रमाण है । ग्रंथकार प्रशस्ति विस्तृत है पूर्ण परिचय दिया हुआ है । श्रीचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

६३. **धर्मोपदेशश्रावकाचार-ब्रह्मनेमिदत्त** । पत्र संख्या-३५ । साइज-६×६ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७३ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६६ ।

६४. **नास्तिकवाद**—पत्र संख्या-२ । साइज-११×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२५ ।

६५. **नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव** । पत्र संख्या-१२७ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८५ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१८ ।

६६. **पंचसंसारस्वरूपनिरूपण**—पत्र संख्या-६ । साइज-१०×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६७ **पाखण्डदलन—वीरभद्र** । पत्र संख्या-१६ । साइज-६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८४१ माघ बुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४७४ ।

विशेष—पत्र २ व ४ नहीं हैं । मानवगढ में मंगलदास के पठनार्थ पेमदास ने प्रतिलिपि की थी ।

६८. **पुरुषार्थसिद्धयुपाय—अमृतचंद्र सूरि** । पत्र संख्या-१०६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीका सुन्दर एवं सरल है ।

६९. **पुरुषार्थसिद्धयुपाय भाषा—दौलतराम** । पत्र संख्या-१२४ । साइज-१२×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १८२७ मंगसिर सुदी २ । लेखन काल-सं० १९५१ सावन बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६ ।

विशेष—चिमनलाल मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी। २ प्रतियां और हैं।

७०. **पुरुषार्थानुशासन—गोविन्द** । पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७८ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३ ।

विशेष—विस्तृत लेखक प्रशस्ति दी हुई है। श्रीचंद ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

७१. **पुष्पमाल—हेमचंद्र सूरि** । पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० ३८५ ।

विशेष—कहीं २ गुजराती भाषा में अर्थ दिया है जोकि सं० १५८६ का लिखा हुआ है प्रति प्राचीन है। इसमें कुल ५०५ गाथाऐं दी हुई हैं। मं० वाछा ने प्रतिलिपि की थी।

पत्र संख्या-३ गुजराती गद्य —

रति सुन्दरी राजपुत्री नंदनपुर नइ राजाइ परिणी। अतिरूप पात्र सांभली हस्तिनपुर नो राजाइ प्राण लीधां तीण इव मनादिक अशुचि पणउ दिखाला राजा प्रतिबोधउ साल राखिउ रिद्धि सुन्दरी श्रेष्टि श्री व्यवहारि पुत्र परिणी समुद्र चढिउ प्रवहण भागउ। काष्ट प्रयोगि शून्य द्वीपि पहुता। बीजा प्रवहणि चढया रूपि मोहि तिणि मछरि ममई गाहिला खिउ प्राचीने इह प्रवन्यन ।

७२. **प्रश्नोत्तरोपासकाचार—सकलकीर्त्ति** । पत्र संख्या-७६ से १४७ । साइज-१०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल सं० १७५३ मगसिर सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०८ ।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि हुई थी। दो प्रतियां और हैं।

७३ **प्रश्नोत्तरश्रावकाचार—बुलाकीदास** । पत्र संख्या-१३८ । साइज-१२½×८ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १७४७ वैशाख सुदी ३ । लेखन काल-सं० १९५७ सावन सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३ ।

विशेष—चिमनलाल बडजात्या ने अजमेर में स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

७४ **प्रायश्चितसमुच्चय चूलिका - श्री नंदिगुरु** । पत्र संख्या-६७ । साइज-१२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८०८ कातिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१८ ।

विशेष—लालचंद टोग्या ने प्रतिलिपि करवाकर शान्तिनाथ चैत्यालय में चढाई। श्वेताम्बर मोतीराम ने प्रतिलिपि की थी।

७५. **प्रायश्चितसमुह—अकलंक देव** । पत्र संख्या ८ । साइज-८½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २१७ ।

७६. बाईसपरीषह — पत्र सख्या—६ । साइज—८×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

७७. भगवती आराधना भाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या—५७८ । साइज—११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १६०८ भादवा सुदी २ । लेखन काल—स० १६४५ आषाढ़ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ८५ ।

विशेष—श्लोक सख्या २१६७ । एक प्रति और है ।

७८. मिथ्यात्व खंडन—बखतराम साह । पत्र सख्या—८६ । साइज—८¾×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म (नाटक) । रचना काल—स० १८२१ पौष सुदी ५ । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० १४८ ।

पद्य सख्या—१४२८ दिया हुआ है । एक प्रति और है ।

७६. मिथ्यात्व निषेध—बनारसीदास । पत्र संख्या—३२ । साइज—१२×७ इञ्च । भाषा—हिन्द विषय—धर्म । रचना काल—× । लेखन काल—स० १६०७ सावन सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५० ।

विशेष—२८ पत्र से सूम सूमनी कथा धानतराय कृत दी हुई है ।

८०. मोक्षमार्गप्रकाश—प० टोडरमल । पत्र संख्या—२११ । साइज—११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । रचना काल—× । लेखन काल—स० १६४८ आषाढ़ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

८१. रत्नकरंडश्रावकाचार—प० सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या—४३० । साइज—११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १६२० चैत्र बुदी १४ । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० ८३ ।

विशेष—पं० सदासुखजी के हाथ के खरडे से प्रतिलिपि की गयी है ।

८२ रत्नकरडश्रावकाचार—थानजी । पत्र सख्या—२१ । साइज—१२¾×५¼ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—स० १८२१ चैत्र बुदी ५ । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० १५१ ।

विशेष—हरदेव के मन्दिर में लिवाली नगर में फूलचंद की प्रेरणा से ग्रंथ रचना हुई थी ।

८३. रयणसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या—१८ । साइज—८×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । रचना काल—× । लेखन काल—सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन न० ४८७ ।

विशेष—बसवा नगर में महात्मा गोरधन ने प्रतिलिपि की थी । गाथा स० १०० है । एक प्रति और है ।

८४. लाटीसहिता (श्रावकाचार)—राजमल्ल । पत्र संख्या—६४ । साइज—११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—स० १६४१ । लेखन काल—स० १८५३ आषाढ़ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० १८५ ।

विशेष—सं० १६४१ में बादशाह अकबर के शासनकाल में श्रावक इदा के पुत्र फागन ने ग्रंथ रचना कराई थी।

८५ षटकर्मोपदेशमाला—अमरकीर्त्ति। पत्र संख्या-१२०। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-आचार शास्त्र। रचना काल-सं० १२४७ भादवा सुदी १०। लेखन काल-सं० १६४५ आसोज सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० २१८।

विशेष—१४ संधियां है। लेखक का परिचय दिया हुआ है।

८६ षटकर्मोपदेशमाला—भट्टारक श्री सकलभूषण। पत्र संख्या-१५०। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। रचना काल-सं० १६२७ सावन सुदी ६। लेखन काल-सं० १६४४। पूर्ण। वेष्टन नं० २०३।

विशेष—संवत् १६४४ वर्षे जेष्ठमासे शुक्लपक्षे नवाम्यां तिथौ रविवासरे हस्तनक्षत्रे सिधियोगे श्री रणथंम दुर्गे राजाधिराजराजाश्रीजगन्नाथराज्ये प्रवर्तमाने श्री मल्लिनाथचैत्यालय श्री काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भट्टारक श्री क्षेमकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक कमलकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जयसेणिदेवा। तदाम्नाये अग्रवालान्वये गोयलगोत्रे देव्याना वडि साहजी पदारथ तस्य भार्या भावो। तस्य पुत्र ५। प्रथम पुत्र साह श्री भवानीदास तस्य भार्या गोमा तस्य पुत्र साह खेमचन्द तस्य भार्या छाजी तस्य पुत्र द्वय। प्रथम पुत्र मोहनदास तस्य भार्या कौंजी। द्वितीय पुत्र चिरंजीव धूडो। द्वितीय पुत्र साहयान तृतीय पुत्र साह बीरदास। चतुर्थ पुत्र साह श्री रामदास तस्य भार्या भागोती तस्य पुत्र त्रय:। प्रथम पुत्र साह मेघा द्वितीय पुत्र चिरजीव साह चोखा तस्य भार्या पार्वती तस्य पुत्र चिरजीव देवसी तृतीय पुत्र साह नेतसी। पंचमो पुत्र रमीला। एतेषां मध्ये चतुर्विधि-दानवितरणकल्पवृक्ष साह चोखा तस्य भार्या पार्वती इदं शास्त्र लिखाप्य ज्ञानावर्णीकर्मनिमित्तं रत्नत्रयपुन्यनिमित्तं ज्ञानपात्राय ब्रह्म श्री रूपाचन्दये दत्तं ॥ इति ॥

८७. षोडशकारणभावना—पत्र संख्या-१६। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १४२।

८८ षोडशकारणभावना व दशलक्षण धर्म—पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र संख्या-११३। साइज-११×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १३६।

८६ शिखरविलास—मनसुखराम। पत्र संख्या-६३। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-धर्म। रचना काल-सं० १८४५ आसोज सुदी १०। लेखन काल-सं० १८८५ आषाढ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५।

विशेष—शिखर महात्म्य में से वर्णन है। मनसुख ब्रह्मगुलाल के शिष्य थे।

६० श्रावकाचार। पत्र संख्या-६०। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आचार शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७३१ बैशाख सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० १६३।

विशेष:—राजनगर में प्रतिलिपि हुई थी। प्रागवाट ज्ञातीय बाई अमरा ने लिखवाया था।

९१ श्रावकाचार—योगीन्द्रदेव। पत्र संख्या–१४। साइज–११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १७३।

विशेष—दोहा संख्या २२१ है।

९२. संबोधपचासिका—गौतमस्वामी। पत्र संख्या–३। साइज–११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इन्च। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८७।

९३ संबोधपचासिका टीका—पत्र संख्या–१३। साइज–१०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च। भाषा–प्राकृत-संस्कृत। विषय–धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। वेष्टन नं० ३८८।

९४. सयमप्रवहण—मुनि मेघराज। पत्र संख्या–४। साइज–१०×४$\frac{1}{2}$ इन्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–धर्म। रचना काल–सं० १६६१। लेखन काल–सं० १६८१ आषाढ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३२१।

विशेष—

प्रारम्भ दोहा:—रिसह जिणेसर जगतिलउ नामि नरिंद मल्हार।
प्रथम नरेसर प्रथम जिन त्रिभोवन जन साधार ॥१॥
चक्री पचम जाणीइ सोलमउ जिनराय।
शान्तिनाथ जगि शान्तिकर नर सुर प्रणमइ पाय ॥२॥

अन्तिम-राग धन्यासी—

गछपति दरिसणि अति आणंद।
श्रीराजचंद सूरीसर प्रतपउ जा लगि हु रविचद ॥ ४६ ॥ आंकणी ॥
संयम प्रवहण मालिमगायउ नयर खम्भायत माहि ॥
संवत सोल अनह इकसठई आणी अति उछाह ॥ गछ० ॥
सरवण ऋषि गुरु साधु शिरोमणि, मुनि मेघराज तसु सीस ॥
गुण गछपति ना भावइ भावइ पहुचइ आस जगीस ॥ १५२ ॥

॥ इति श्री सयम प्रवहण सपूर्ण ॥

श्रुश्राविका पुन्यप्रभाविका धर्मधूनिर्वाहिका सम्यक्त्वमूलद्वादसव्रत कर्पूरपूरवासितोक्तमांगा श्रुश्राविकामध बाई पठनार्थम ॥

सवत् १६८१ वर्षे आषाढ मासे शुक्ल पक्षे पुर्णिमादित्यवारे स्थंभ तीर्थे लिखित ऋषि कल्याणेन।

श्लोक संख्या २०० है ।

६५ सम्मेदशिखरमहात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र सख्या–७८ । साइज–११×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–स० १८४५ । लेखन काल–सं० १८४८ । पूर्ण । वेष्टन न० ७१६ ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६६. सागारधर्मामृत—पं० आशाधर । पत्र सख्या–१८१ । साइज–११×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–सं० १२९६ । लेखन काल–स० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन न० ३०७ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६७ सामायिक टीका—पत्र सख्या–३६ । साइज–१२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत प्राकृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ३२१ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

६८ सामायिक पाठ—पत्र संख्या–१२ । साइज–१०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

६९. सामायिक पाठ भाषा—जयचन्द छाबडा । पत्र संख्या–५३ । साइज–११×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १९०१ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ८२ ।

विशेष—३ प्रति और है ।

१००. सुदृष्टितरगिणि—टेकचन्द । पत्र संख्या–४९७ । साइज–११ ×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १८३८ सावन सुदी ११ । लेखन काल–सं० १९६२ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ४८६ ।

विशेष—४२ संधियां हैं । चन्द्रलाल वज ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१ सूतक वर्णन—पत्र संख्या–२ । साइज–६×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ४४७ ।

१०२. हितोपदेशएकोत्तरी—श्री रत्नहर्ष । पत्र संख्या–२ । साइज–१०×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५२ ।

विशेष—किशनविजय ने विक्रमपुर में प्रतिलिपि की थी । श्लोक संख्या ७१ है ।

विषय-अध्यात्म एवं योग शास्त्र

१०३ **अष्टपाहुड भाषा—जयचद छाबडा** । पत्र सख्या-१७८ । साइज-१३$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६५० फागुन बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८ ।

१०४. **आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य** । पत्र संख्या-३० । साइज-११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७६४ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० २८६ ।

विशेष—बसवा नगर में श्री चद्रप्रभ चैत्यालय में श्री क्षेमकर के शिष्य त्रिलोकचद ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

१०५. **आत्मानुशासन टीका—प्रभाचन्द्र** । पत्र संख्या-६५ । साइज-६×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८२६/१५८२६ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २८० ।

१०६. **आत्मानुशासन भाषा टीका—प० टोडरमल** । पत्र सख्या-१०५ । साइज-१२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-स० १७६६ भादवा सुदी २ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५१ ।

विशेष—राजा की मडी (आगरा) के मदिर में महात्मा शंभूराम ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

१०७ **आराधनासार—देवसेन** । पत्र सख्या-१३ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १५२ ।

विशेष—एक प्रति और है वह सस्कृत टीका सहित है ।

१०८ **आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी** । पत्र सख्या-१८ । साइज-१२$\frac{1}{2}$×८ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८२ ।

१०९. **कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामीकार्तिकेय** । पत्र सख्या-७८ । साइज-११×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १० ।

विशेष—प्रथम ७ पत्र तक सस्कृत मे संकेत दिया हुआ है ।

११०. **कार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा-पं० जयचद छाबडा** । पत्र संख्या-१४७ । साइज-११×७$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-स० १८६३ सावन सुदी ३ । लेखन काल-स० १६१४ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

१११. चारित्रपाहुड भाषा—पं० जयचंद छाबडा। पत्र संख्या-१५। साइज-१२×८ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१।

११२. ज्ञानार्णव—शुभचन्द्र। पत्र संख्या-१७६। साइज-११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-योग। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६१८। पूर्ण। वेष्टन नं० २८५।

विशेष—संवत् १७८२ में कुछ नवीन पत्र लिखे गये हैं। संस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है।

प्रति-एक प्रति और है।

११३. दर्शनपाहुड—पं० जयचंद छाबडा। पत्र संख्या-२०। साइज-१२×८ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०।

११४. द्वादशानुप्रेक्षा—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र संख्या-१२। साइज-१०¾×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-चिंतन। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८८२ द्वि० वैसाख सुदी ७। अपूर्ण। वेष्टन नं० १७३।

विशेष—हिन्दी संस्कृत में छाया भी दी हुई है।

११५. द्वादशानुप्रेक्षा—आलू कवि। पत्र संख्या-१६। साइज-८½×४¾ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चिंतन। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५।

विशेष—बारह भावना के ३८ पद्य हैं। इसके अतिरिक्त निम्न हिन्दी पाठ और हैं:—

(१) जखडी—हरीसिंह।

(२) पद (वंदू श्री अरहंत देव सारद नित सुमरण हृदय धरू)—हरीसिंह

(३) समाधि मरन—द्यानतराय।

(४) वज्रनाभि चक्रवर्ती की वैराग्य भावना—भूधरदास।

(५) बधावा-(बाजा बाजिया भला)

(६) बाईस परीषह।

रामलाल तेरा पंथी छाबडा ने दौसा में प्रतिलिपि की थी।

११६. दोहाशतक—योगीन्द्र देव। पत्र संख्या-६। साइज-६½×४½ इन्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२७ कार्तिक बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० १२०।

विशेष—श्रीचंद्र ने बसवा में प्रतिलिपि की थी।

११७. नवतत्वबालावोध-पत्र संख्या-३१। साइज-१०¾×४¾ इंच। भाषा-गुजराती हिन्दी। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८८५ आसोज सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० १७५।

विशेष—हिम्मतराय उदयपुरिया ने प्रतिलिपि की थी

११८. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव। पत्र संख्या–२० । साइज–११½×५¾ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७७८ फागुन बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५० ।

विशेष—वृन्दावती नगरी में श्री चंद्रप्रभु चैत्यालय में श्री उदयराम लक्ष्मीराम ने प्रतिलिपि की थी। संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं। कुल दोहे ३४६ हैं। ७ प्रति और हैं।

११६ प्रति नं० २ । पत्र संख्या–१२३ । साइज–११×४½ इञ्च । लेखन काल–सं० १४८६ पौष बुदी । पूर्ण । वेष्टन नं० २४६ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। इसमें कुल ४५ अधिकार हैं। प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १४८६ वर्षे पौष बुदी ६ रवौदिने श्री गोपगिरे तोमरवंशमहाराजाधिराजश्रीमद्डोंगरसीदेवराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री क्षेमेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तद्गुरु शिष्य श्री पद्मकीर्त्तिदेवा: तस्य शिष्यश्री वादीन्द्रचूडामणी महासिद्धान्ती श्रीब्रह्म हीराख्यानामदेवा। अग्रोतकान्वये मीतलगोत्रे साधु श्री गल्हा भार्या खेमा तयो. पुत्री मौणी एक पत्ता। द्वितीय पत्ता अग्रोतकान्वये गर्ग गोत्र साधु श्री खेमचरा भार्या हरो। तयोपुत्राश्चत्वार प्रथम पुत्र देसलु, द्वितीय वील्हा, तृतीय आल्हा, चतुर्थ भरया देसल भार्या रुपा. वील्हा भार्या नाथी साधु आल्हा भार्या धानी तयो पुत्राश्चत्वार, साधु श्री चंदा साधु हरिचंद, सा०, रता, सा०, साल्हा। श्रीचंद्र पुत्रमेषा स्वधर्मरत साधु श्री भर्या भार्या मौणा शीलशालिनी धर्म प्रभावनी रत्नत्रयपराधिनी बाई जौणी आत्मकर्मक्षयार्थं इदं परमात्मप्रकाश ग्रंथ लिखापितं ।

इसमें ३४५ दोहा हैं। प्रथम पत्र नया लिखा गया है।

१२० प्रवचनसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या–३३ । साइज–१०¾×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५८ ।

विशेष—पत्र ८ तक संस्कृत टीका भी दी है।

१२१ प्रवचनसार सटीक–अमृतचन्द्र सूरि । पत्र संख्या–१०७ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है। बीच में ७४ पत्र कम हैं। आगरे में प्रतिलिपि हुई था। प्रति प्राचीन है

१२२ प्रवचनसार भाषा—पांडे हेमराज । पत्र संख्या–३० । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–अध्यात्म । रचना काल–सं० १७०६ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४ ।

१२३. प्रवचनसार भाषा —पांडे हेमराज । पत्र संख्या–१४२ । साइज–१३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । रचना काल–सं० १७०६ माघ सुदी ५ । लेखन काल–सं० १९५२ आषाढ बुदी २ । पूर्ण वेष्टन नं० ६७ ।

एक प्रति और है।

१२४. बोधपाहुड भाषा—पं० जयचंद छाबडा। पत्र संख्या-२१। साइज-१२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८४।

१२५. भव वैराग्य शतक—पत्र संख्या-११। साइज-१०¾×५ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १७३।

विशेष—हिन्दी में छाया दी हुई है।

१२६. मृत्युमहोत्सव—बुधजन। पत्र संख्या-३। साइज-८×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १३०।

१२७. योगसमुच्चय—नवनिधिराम। पत्र संख्या १२३। साइज-६×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-योग। रचना काल-×। लेखन काल ×। वेष्टन नं० ८६०।

विशेष—५० पत्र तक श्लोकों पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

१२८. योगसार—योगीन्द्रदेव। पत्र संख्या-६। साइज-११½×४½ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८७२ मंगसिर सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० ३२६।

विशेष—एक प्रति और है।

१२९. षट्पाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र संख्या-६७। साइज-१२×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २४५।

विशेष—२ प्रतियां और हैं जिनमें केवल लिंगपाहुड तथा शीलपाहुड दिया हुआ है।

१३० षट्पाहुड टीका—टीकाकार भूधर। पत्र संख्या-९२। साइज-११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७५१। पूर्ण। वेष्टन नं० २४४।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है। यह टीका भूधर ने प्रतापसिंह के लिए बनाई थी।

१३१ समयसार कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र संख्या-१५१। साइज-११×६ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२६ भादवा सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० ५०।

विशेष—दौसा में पृथ्वीसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।
अमृतचन्द्र कृत आत्मख्याति टीका सहित है। एक प्रति और है।

१३२. समयसार कलशा—अमृतचंद्रसूरि। पत्र संख्या-५६। साइज-११×८ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२७।

१३३. प्रति न० २ । पत्र संख्या–११२ । साइज–१०×५¾ इञ्च । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० २४

विशेष—आनदराम के वाचनार्थ नित्य विजय ने यह टिप्पण लिखा था । टिप्पण टब्बा टीका के सदृश है । प्रति सुन्दर है ।

१३४. **समयसारनाटक—बनारसीदास** । पत्र संख्या–७३ । साइज–१२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–स० १६९३ । लेखन काल–सं० १८०० चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० ३२० ।

विशेष—बसवा में श्री निरमैराम के बेटा श्री मनसाराम ने फतेराम के पठनार्थ लिखी थी । ४ प्रतियां और हैं ।

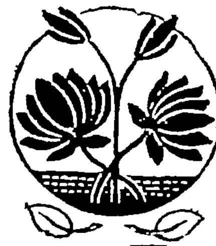
१३५. **समयसार वचनिका—राजमल्ल** । पत्र संख्या–१६८ । साइज–११×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३ ।

१३६. **समाधितंत्र भाषा—पर्वतधर्मार्थी** । पत्र संख्या–७७ । साइज–६¾×५ इच । भाषा–गुजराती देवनागरी लिपि । विषय–योग । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७५५ फागुन बदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८३ ।

विशेष—सागपत्तन में श्री आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । एक प्रति और है ।

१३७. **समाधिमरण भाषा**—पत्र संख्या–१३ । साइज–१२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ८१ ।

१३८. **सूत्रपाहुड—जयचद छाबडा** । पत्र संख्या–१५ । साइज–१२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२ ।



विषय-न्याय एवं दर्शन शास्त्र

१३९. आप्तपरीक्षा—विद्यानंदि। पत्र सख्या-६। साइज-१०½×४½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-दर्शन शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २६०।

विशेष—पडित धरमू के पठनार्थ गयासुसाहि के राज्य में प्रतिलिपि की गई थी।

१४० आलापपद्धति—देवसेन। पत्र सख्या-११। साइज-१०×४½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-दर्शन शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०६।

विशेष—एक प्रति और है।

१४१ तर्कसग्रह-अन्नभट्ट। पत्र सख्या-६। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-न्याय शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३०३।

विशेष—मोतीलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है।

१४२ दर्शनसार—देवसेन। पत्र सख्या-३। साइज-११½×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-दर्शन शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८७२ मगसिर बुदी अमावस। पूर्ण। वेष्टन न० २१७।

विशेष—२ प्रतियां और हैं।

१४३. नयचक्र—देवसेन। पत्र सख्या-३३। साइज-११½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-न्याय शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८७६ फागुन बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन नं० ३=६।

श्लोक सख्या-४५३ है।

१४४. न्यायदीपिका—धर्मभूषण। पत्र सख्या-४८। साइज-८½×४ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८०६ द्वि० भादवा सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन न० २६८।

विशेष—देवीदास ने स्वपठनार्थ लिखी थी।

१४५. परिभाषा परिच्छेद (नयमूल सूत्र)—पचानन भट्टाचार्य। पत्र सख्या-११। साइज-१०½× इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-दर्शन शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४३७।

अन्तिम—इति श्री महामहोपाध्यायसिद्धान्त पचानन भट्टाचार्य कृत परिभाषा परिच्छेद: समाप्त।

१६६ श्लोक हैं प्रति प्राचीन मालूम देती है।

१४६ षट्दर्शन समुच्चय—हरिभद्रसूरि। पत्र सख्या-७। साइज-१०×४ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-दर्शन शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २८४।

विशेष—६६ श्लोक हैं।

१४७. सन्मतितर्क—सिद्धसेन दिवाकर। पत्र सख्या–८। साइज–८×४¾ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–न्याय शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०२।



पूजा एवं प्रतिष्ठादि अन्य विधान

१४८. अक्षयनिधिपूजा—पत्र सख्या–३। साइज–११×४½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११४।

विशेष—लब्धि विधान पूजा भी दी हुई है।

१४९ अकुरारोपण विधि—पत्र सख्या–७। साइज–१०×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–विधि विधान। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ३८०।

विशेष—छठा पत्र नहीं है।

१५० अनतव्रतपूजा—श्री भूषण। पत्र सख्या–६। साइज–१०×४¾ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१।

१५१. अनतव्रतोद्यापन—पत्र सख्या–२०। साइज–११½×५¾ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६।

१५२. अभिषेकविधि–पत्र सख्या–३। साइज–७¾×४½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–विधि विधान। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०५।

विशेष—एक प्रति और है।

१५३ अर्हत्पूजा—पद्मनंदि। पत्र सख्या–५। साइज–९×६½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८।

१५४. अष्टक—पत्र संख्या–१ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

१५५. अष्टाह्निकापूजा । पत्र संख्या–१० । साइज–७¾×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत प्राकृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

१५६. अष्टाह्निकापूजा—पत्र संख्या–७ । साइज–६×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—जाप्य से आगे पाठ नहीं है ।

१५७ अष्टाह्निकापूजा—शुभचंद्र । पत्र संख्या–३ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । ब्र० श्री मेघराज के शिष्य ब्र० सवजी के पठनार्थ लिपि की गई थी ।

१५८ इन्द्रध्वजपूजा—विश्वभूषण । पत्र संख्या–६६ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८२० चैत सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३ ।

१५९. कलिकुंडपार्श्वनाथपूजा—पत्र संख्या–६ । साइज–९×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—पत्र ४ से चिन्तामणिपार्श्वनाथ पूजा भी है ।

१६०. कर्मदहनपूजा—टेकचंद । पत्र संख्या–१६ । साइज–१½×७¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३ ।

१६१. कौलकुतूहल—पत्र संख्या–२८४ । साइज–८×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६०१ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७ ।

विशेष—यज्ञादि की सामग्री एवं विधि विधान का वर्णन है । कुल ६१ अध्याय हैं ।

१६२. गणधरवलयपूजा—शुभचंद्र । पत्र संख्या–१० । साइज–१०¾×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१६३. गिरनारसिद्धक्षेत्रपूजा—हजारीमल्ल । पत्र संख्या–३६ । साइज–१२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–सं० १६२० आसोज बुदी १२ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ।

विशेष—हजारीमल्ल के पिता का नाम हरीकिसन था। ये अग्रवाल गोयल ज्ञातीय थे तथा लश्कर के रहने वाले थे कवि ने साहपुर में आकर दौलतराम की सहायता से रचना की थी।

१६४ **चन्द्रायणव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति** । पत्र सख्या-४ । साइज-१२३/४×७३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १७ ।

विशेष—२ प्रतिया और हैं।

१६५ **चारित्रशुद्धिविधान (बारहसोचौतीसविधान)—श्री भूषण** । पत्र सख्या-७६ । साइज-१२×५३/४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन न० ३२ ।

विशेष—दक्षिण में देवगिरि दुर्ग में पार्श्वनाथ चैत्यालय में ग्रथ रचना की गयी थी। तथा जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

१६६. **चौवीसतीर्थंकरपूजा**—पत्र सख्या-५१ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६१ ।

१६७ **चौवीसतीर्थंकरपूजा—सेवाराम** । पत्र सख्या-४३ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८५४ माह सुदी ६ । लेखन काल-स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन न० २८ ।

१६८ **चौवीसतीर्थंकरपूजा—रामचद्र** । पत्र सख्या-५० । साइज-१०१/२×७१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८८६ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० १० ।

विशेष—प्रति सुन्दर व दर्शनीय है। पत्रों के चारों ओर भिन्न २ प्रकार के सुन्दर बेल बूटे हैं। स्योजीराम भांवसा ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

१० प्रतियां और हैं।

१६६ **चौवीसतीर्थंकरपूजा—मनरंगलाल** । पत्र सख्या-५१ । साइज-१२१/२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८ ।

१७०. **चौवीस तीर्थंकर पूजा—वृन्दावन** । पत्र सख्या-१५१ । साइज-११×७१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय-पूजन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २० ।

विशेष—३ प्रतियां और हैं।

१७१ **चौवीसतीर्थंकर समुच्चय पूजा**—पत्र संख्या-४ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७१ ।

१७२ चौसठ ऋद्धिपूजा (गुरावली)—स्वरूपचन्द । पत्र संख्या–७१ । साइज–११×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–सं० १६०० श्रावण सुदी ७ । लेखन काल–सं० १६५८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २ ।

विशेष—इस प्रति को बहादरजी ठोलिया ने ठोलियों के मन्दिर में चढाई थी ।

१७३. जम्बूद्वीप पूजा—जिणदास । पत्र संख्या–३१ । साइज–११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५ ।

१७४ जलहर तेला को पूजा—पत्र संख्या–४ । साइज–११×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२ ।

१७५. जिनयज्ञ कल्प (प्रतिष्ठापाठ)—आशाधर । पत्र संख्या–१२० । साइज–१०×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । रचना काल–सं० १२८५ । लेखन काल–सं० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६१ ।

ग्रन्थाग्रन्थ संख्या–२१०० श्लोक प्रमाण है ।

विशेष—संवद्बाणधरास्मृतिप्रमिते मार्गशीर्षभूतिष्टा सिते लिखितमिद पुस्तकं विदुषा श्वेतांबर मुंदरदासेन श्रीमज्जयपुरे जयपत्तने ।

१७६ जैनविवाहविधि—जिनसेनाचार्य । पत्र संख्या–४४ । साइज–१२×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । रचना काल–X । लेखन काल–सं० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५ ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । भाषाकार पन्नालालजी दूनी वाले हैं । सं० १६३३ में इसकी भाषा पूर्ण हुई थी ।

१७७. ज्ञानपूजा—पत्र संख्या–८ । साइज–११×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण वेष्टन नं० ११५ ।

विशेष—श्री मूलसंघ के आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७८ तीनचौबीसी पूजा–पत्र संख्या–२१ से ६८ । साइज–११×४½ इञ्च भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–X । लेखन काल–X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६७ ।

१७९. त्रिंशत्चतुर्विंशतिपूजा-शुभचन्द्र । पत्र संख्या–१२० । साइज–६½×८½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१ क ।

गुटका के आकार में है ।

१८०. तेलाव्रत की पूजा—पत्र संख्या–४ । साइज१०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–X । लेखन काल–X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५ ।

१८१. दक्षिणयोगीन्द्र पूजा—आ० सोमसेन। पत्र संख्या–५। साइज–११½×५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–स० १७६४ माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन न० ८५।

विशेष—पडित मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

१८२. दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा—पत्र सख्या–५२। साइज–१½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ११८।

विशेष—अन्तिम दोहा—

धारि मत दश धर्म को लुब्ध हो गृह सेव।
राचत सुर नर सर्म इत मरि परभव शिव लेव॥

१८३ दशलक्षणपूजा—पत्र संख्या–३। साइज–११½×५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११०।

विशेष—नंदीश्वर पूजा (प्राकृत) भी दी है।

१८४. दशलक्षणपूजा—पत्र सख्या–१७ से २४। साइज–८½×४ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन न० १२२।

१८५. दशलक्षणपूजा—अभयनन्दि। पत्र सख्या–१४। साइज–११½×५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन न० ७१।

१८६ दशलक्षणजयमाल—भावशर्मा। पत्र सख्या–११। साइज–१०½×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–स० १७३३ द्वि० सावन सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन न० ७१।

विशेष—रामकीर्ति के शिष्य प० श्रीहर्ष तथा कल्याण तथा उनके शिष्य प० चिन्तामणि ने खेम रतनसिंह के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१८७ दशलक्षणपूजा जयमाल–रइधू। पत्र संख्या–१६। साइज–११×४½ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८।

सस्कृत टिप्पण सहित है। ४ प्रतियां और हैं।

१८८. द्वादशव्रतपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र संख्या–१५। साइज–१२×५½ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–स० १७७२ माघ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन न० ८०।

१८९. देवपूजा–पत्र सख्या–६। साइज–१०×४½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६।

विशेष—२ प्रतियां और हैं। एक प्रति हिन्दी भाषा की है।

१६० नन्दीश्वरविधान—रत्ननंदि। पत्र संख्या-१७। साइज-११×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२७ फागुन बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२।

विशेष—महाराजाधिराज श्री सवाई पृथ्वीसिंहजी के राज्यकाल में बसवा नगर में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पंडित आनन्दराम के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है।

१६१ नदूसप्तमीव्रतपूजा—पत्र संख्या-५। साइज-१२½×७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १६।

१६२. नवग्रहअरिष्टनिवारकपूजा—पत्र संख्या-१८। साइज-१२½×८ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६।

१६३. नित्यनियमपूजा—पत्र संख्या-४०। साइज-८×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२५।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। ३ प्रतियां और हैं।

१६४. निर्वाणक्षेत्रपूजा-स्वरुपचंद। पत्र संख्या-२६। साइज-११×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १६१६ कार्तिक बुदी १३। लेखन काल-सं० १६३८ चैत्र सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ८२।

विशेष—गणेशलाल पांड्या चाकसू वाले ने प्रतिलिपि की थी।

१६५. निर्वाणकाण्डपूजा—द्यानतराय। पत्र संख्या-२। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४।

विशेष—निर्वाणकाण्ड गाथा भी दी हुई है।

१६६. पद्मावती पूजा—पत्र संख्या-१३। साइज-११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७।

विशेष—निम्न पाठों का और संग्रह है—

पद्मावती स्तोत्र, श्लोक संख्या २३, पद्मावती सहस्रनाम, पद्मावती कवच, पद्मावती पटल, और घंटाकरण मंत्र।

१६७. पंचकल्याणपूजा—लक्ष्मीचंद। पत्र संख्या-२ से २४ तक। साइज-११×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६०६। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६।

१६८. पंचकल्याणकपूजा—टेकचंद। पत्र संख्या-२४। साइज-८½×६ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६५४ असाढ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ४७।

१९९. **पंचकल्याणकपूजा पाठ**—पत्र संख्या-२२। साइज-१०½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १९०० वैशाख सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० २३।

विशेष—चिम्मनलाल भांवसा ने जयपुर में बख्शीराम से प्रतिलिपि कराई थी।

२००. **पंचपरमेष्टीपूजा**—पत्र संख्या-४। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७३१। पूर्ण। वेष्टन नं० १११।

विशेष—श्लोक संख्या १०० है।

२०१. **पंचपरमेष्टीपूजा**—पत्र संख्या-८८। साइज-९×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६२।

२०२ **पंचमेरुपूजा**—पत्र संख्या-७। साइज-७¾×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२५।

२०३. **पूजा एवं अभिषेक विधि**। पत्र संख्या-१४। साइज-८½×६¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी गद्य। विषय-विधि विधान। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०६।

विशेष—गुटका साइज है।

२०४. **पूजापाठसंग्रह**—पत्र संख्या-६८। साइज-११×८ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७३।

विशेष—नित्य नैमित्तक पूजा पाठ आदि संग्रह है। पूजा पाठ संग्रह की ८ प्रतियां और हैं।

२०५. **बीसतीर्थंकरपूजा—पन्नालाल संघी**। पत्र संख्या-६२। साइज-१२½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १९३४। लेखन काल-सं० १९५४ सावन सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ५।

विशेष—टोंक में भोजसिंह के पुत्र पन्नालाल ने रचना की तथा अजमेर में प्रतिलिपि हुई थी। ३ प्रतियां और हैं।

२०६ **भक्तामर स्तोत्र पूजा—सोमसेन**। पत्र संख्या-२०। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७८४ कार्तिक सुदी। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३।

विशेष—पंडित नानकदास ने प्रतिलिपि की थी।

—::—

२०७   मंडल विधान एवं पूजा पाठ संग्रह—पत्र संख्या-३४१ । साइज-११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखन काल-सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नाम पाठ	कर्त्ता	पत्र संख्या	ले० काल	विशेष
(१) जिन सहस्रनाम	आशाधर	१ से १६	—	—
(२) ,, ,,	जिनसेनाचार्य			
(३) तीन चौबीसी पूजा	—	१६ से ३३	—	—
(४) पंचकल्याणकपूजा	—	३४ से ५५	—	मंडल चित्र सहित
(५) पंचपरमेष्ठीपूजा,	शुभचन्द्र	५६ से ७७	ले० काल १८६५	—
(६) कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	७८ से ९७	—	चित्र सहित
(७) बीसतीर्थंकरपूजा	नरेन्द्रकीर्ति	९८ से १०१	—	—
(८) भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्रीभूषण	१०२ से ११२	—	मंडल चित्र सहित
(९) धर्मचक्र	रणमल्ल	११३ से १२९	—	—
(१०) शास्त्रमंडल पूजा	ज्ञानभूषण	१३० से १३४	—	चित्र सहित
(११) ऋषिमंडलपूजा	आ० गणिनंदि	१३५ से १५५	—	,,
(१२) शांतिचक्रपूजा	—	१५६ से १६१	—	चित्र सहित
(१३) पद्मावतीस्तोत्र पूजा	—	१६२ से १६६	—	—
(१४) पद्मावतीसहस्रनाम	—	१६७ से १७३	—	—
(१५) षोडशकारणपूजा उद्यापन	केशव सेन	१७४ से १९८	—	—
(१६) मेघमाला उद्यापन	—	१९९ से २१३	—	चित्र सहित
(१७) चौबीसीनामव्रतमंडलविधान		२१४ से २३०	—	—
(१८) दशलक्षणव्रतपूजा	—	२३१ से २६०	—	चित्र सहित
(१९) पंचमीव्रतोद्यापन	—	२६१ से २६७	—	,,
(२०) पुष्पांजलिव्रतोद्यापन	—	२६८ से २८३	—	,,
(२१) कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	२८३ से २९१	—	—
(२२) अक्षयनिधिव्रतोद्यापन	ज्ञानभूषण	२९२ से ३०५	—	—
(२३) पंचमासचतुर्दशी व्रतोद्यापन	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	३०६ से ३११	—	—
(२४) अनंत व्रत पूजा	—	३१२ से ३४१	—	चित्र सहित

नाम	कर्त्ता	पत्र सं०	काल	विशेष
(२५) अनंतव्रतपूजा	गुणचन्द्र	३४२ से ३७४	र० का० १६३०	सचित्र
(२६) रत्नत्रय पूजा	केशवसेन	३७५ से ३९६	—	—
(२७) रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	३९७ से ४१२	—	—
(२८) पल्यव्रतोद्यापन पूजा	शुभचन्द्र	४१३ से ४२६	—	चित्र सहित
(२९) मासांत चतुर्दशी पूजा	अक्षयराम	४२७ से ४४४	—	चित्र सहित
(३०) णमोकार पैंतीसी पूजा	अक्षयराम	४४५ से ४५०	—	चित्र सहित
(३१) जिनगुणसंपत्तिव्रतोद्यापन	—	४५१ से ४५८	—	सचित्र
(३२) त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	४५९ से ४६६	—	सचित्र
(३३) सौख्यव्रतोद्यापन	अक्षयराम	४६७ से ४८१	—	सचित्र
(३४) सप्तपरमस्थान पूजा	—	४८१ से ४८८	—	—
(३५) अष्टाह्निका पूजा	—	४८९ से ५११	—	सचित्र
(३६) रोहिणीव्रतोद्यापन	—	५१२ से ५२४	ले० का० १८८९	—

विशेष—जयपुर में लिपि हुई थी ।

नाम	कर्त्ता	पत्र सं०	काल	विशेष
(३७) रत्नावलीव्रतोद्यापन	—	४२५ से ४३६	—	सचित्र
(३८) ज्ञानपच्चीसीव्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्ति	५३७ से ५४५	ले० का० सं० १८४०	—

विशेष—जयपुर में चद्रप्रभु चैत्यालय में लिपि हुई थी।

नाम	कर्त्ता	पत्र सं०	काल	विशेष
(३९) पंचमेरुपूजा	भ० रत्नचंद्र	५४६ से ५५२	—	—
(४०) आदित्यवारव्रतोद्यापन	—	५५२ से ५६१	—	सचित्र
(४१) अक्षयदशमीव्रतपूजा	—	५६२ से ५६५	—	—
(४२) द्वादशव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	५६६ से ५७९	—	—
(४३) चदनषष्टीव्रतपूजा	—	५८० से ५८६	—	सचित्र पर अपूर्ण

विशेष—५८७ से ६०५ तक पृष्ट नही हैं ।

नाम	कर्त्ता	पत्र सं०	काल	विशेष
(४४) मौनिव्रतोद्यापन	—	६०६ से ६२१	—	—
(४५) श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	६२२ से ६३६	—	—
(४६) कांजीव्रतोद्यापन	—	६३६ से ६५४	—	—
(४७) पूजाटीका संस्कृत	—	६४५ से ६५४	—	—

इसके अतिरिक्त २ फुटकर पत्र हैं। और २ पत्रों में व्रत पजाओं की सूची दी है महत्वपूर्ण पाठ संग्रह है।

२०८ मुक्तावलीव्रतोद्यापनपूजा—पत्र संख्या-१८ । साइज-१४×६¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६०२ सावन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७ ।

विशेष—चाकसू के मंदिर चन्द्रप्रभ-चैत्यालय में पंडित रत्नाराम के शिष्य रामवक्स ने प्रतिलिपि की थी ।

२०६ रत्नत्रयजयमाल—पत्र संख्या-५ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११० ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है । ३ प्रतियां और हैं ।

२१०. रत्नत्रयपूजा—पत्र संख्या-६ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८६६ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१ ।

विशेष—पं० श्रीचन्द्र ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

२११. रत्नत्रयपूजा—आशाधर । पत्र संख्या-४ । साइज-१२×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६० ।

२१२. रत्नत्रयपूजा—पत्र संख्या-३४ । साइज-१२½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६ ।

२१३. रविव्रतपूजा—पत्र संख्या-१५ । साइज-८¾×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

२१४. रोहिणीव्रत पूजा—केशवसेन । पत्र संख्या-६ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०० ।

२१५. लब्धि विधान पूजा—पत्र संख्या-२१ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१ ।

२१६. लब्धि विधान व्रतोद्यापन—पत्र संख्या-८ । साइज-१३×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१ ।

२१७. विमलनाथ पूजा—रामचंद्र । पत्र संख्या-३ । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

२१८. षोडशकारण पूजा—पत्र संख्या-८ । साइज-६×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—दशलक्षण पूजा भी है वह भी संस्कृत में है ।

२१६ षोडश कारण व्रतोद्यापन पूजा—आचार्य केशव सेन। पत्र संख्या-२१। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ४४।

२२०. शान्तिनाथ पूजा—सुरेश्वर कीर्त्ति। पत्र संख्या-५। साइज-११×८ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६।

विशेष—अंत में आरती भी है।

सुज्ञानी जन आरती नित्य करो। गुरु वृषचंद सुरेश्वर कीर्ति भव दुख हरो। प्रभु के पद आरती नित्य करो।

२२१. श्रुतज्ञान पूजा—पत्र संख्या-१३। साइज-११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ६२।

विशेष—पत्र ६ से आगे पाठों की सूची दी हुई है। हेमचद्र कृत श्रुत स्कंध के आधार से लिखा गया है। मडल तथा तिथि दी हुई है।

२२२. सप्त ऋषि पूजा—पत्र संख्या-८। साइज-१०½×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८।

२२३. समवशरण पूजा—ललितकीर्त्ति। पत्र संख्या-४। साइज-११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-सं० १७६८ आसोज सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१।

विशेष—बसवा नगर में प्रतिलिपि हुई थी।

२२४. समवशरण पूजा—पन्नालाल। पत्र संख्या-६७। साइज-१२½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १६२१ आसोज सुदी २। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ३।

विशेष—जवाहरलालजी की सहायता से रचना की गयी थी। पन्नालालजी जीवतसिंह जैपुर के कामदार थे।

२२५. सम्मेदशिखरपूजा—पत्र संख्या-१०। साइज-६×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ६६।

२२६ सम्मेदशिखरपूजा—नंदराम। पत्र संख्या-१२। साइज-१३×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १६११ माघ बुदी ५। लेखन काल-सं० १६१२ पौष सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ११।

विशेष—रतनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२२७. सम्मेदशिखर पूजा—जवाहरलाल। पत्र संख्या-११। साइज-१२½×८½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ८३।

विशेष—एक प्रति और है।

२२८. सहस्रगुणितपूजाश्रीशुभचन्द्र । पत्र संख्या-५८ । साइज-१०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६६८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६० ।

विशेष—संवत् १६६८ वर्षे शाके १५३३ प्रवर्तमाने पौष बुदी ७ महाराजाधिराज महाराज श्री मानसिंह प्रवर्त्तमाने अवावति मध्ये ।

२२९ सहस्रनाम पूजा—धर्मभूषण । पत्र संख्या-८७ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७७ ।

विशेष—शान्तिनाथ मंदिर के पास जयपुर में पं० जगन्नाथ ने प्रतिलिपि की थी ।

२३०. सहस्रनाम पूजा—चैनसुख । पत्र संख्या-१८ । साइज-१२½×८ इंच । भाषा-हिंदी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८ ।

विशेष—पद्य संख्या २२० है ।

२३१. सार्द्धद्वय द्वीप पूजा—विश्वभूषण । पत्र संख्या-२०८ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८५७ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८ ।

प्रति नं० २—पत्र संख्या-६९ । साइज-११×५½ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७९ ।

विशेष—अढाई द्वीप के तीन नक्शे भी हैं उनमें एक कपडे पर है जिसका नाप ८' ५'×२' ७" फीट है । नक्शे के पीछे द्वीपों का परिचय दिया हुआ है । इसके अतिरिक्त तीन लोक का नक्शा भी है ।

२३२ सिद्धक्षेत्र पूजा— । पत्र संख्या-४५ से ५० तक । साइज-१०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८६ ।

विषय—निर्वाणकाण्ड गाथा भी हैं । ५ प्रतियां और हैं ।

२३३ सिद्धचक्र पूजा (अष्टाह्निका)—नथमल बिलाला । पत्र संख्या-१० । साइज-१२½×८ इंच । भाषा-हिंदी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १६ ।

२३४. सिद्धचक्र पूजा—सन्तलाल । पत्र संख्या-११० । साइज-१२½×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजन । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १९८६ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० १ ।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड ने अजमेर वालों के चौबारे में प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १९८७ में अष्टाह्निका व्रतोद्यापन में केसरलालजी साह की पत्नी नंदलाल पीजे वालों की पुत्री ने ठोलियों के मंदिर में भेंट की थी ।

२३५ सिद्धपूजा—पद्मनंदि । पत्र संख्या-४ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल- आसोज बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

विशेष—एक प्रति और है।

२३६. सुगंधदशमीव्रतोद्यापन पूजा—पत्र संख्या-२२। साइज-८३/४×६१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६।

विशेष—कंजिकाव्रतोद्यापन भी है वह भी संस्कृत में है।

२३७. सोलहकारणजयमाल—पत्र संख्या-१४। साइज-११३/४×५ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८३५ सावन सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ७०।

विशेष—श्रीचंद ने जयपुर में श्री शान्तिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

२३८. सौख्यकाख्यव्रतोद्यापन विधि—अक्षयराम। पत्र संख्या ८। साइज-६३/४×४१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १८२० भादवा बुदी ४। लेखन काल-सं० १८२८ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन न० ११३।



विषय-चरित्र एवं काव्य

२३६. ऋषभनाथचरित्र—सकलकीर्ति। पत्र संख्या-२३१। साइज-११×४१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६१६ माह बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० २२०।

विशेष—मल्लहारपुर में चांदवाड गोत्र वाली बाई लाडा तत्सिष्या मागा ने प्रतिलिपि कराई थी। एक प्रति और है।

२४०. किरातार्जुनीय—महाकवि भारवि। पत्र संख्या-१६८। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४८१।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पत्र दूसरी प्रति के हैं। पत्र ५२ से १६८ तक दूसरी प्रति के है जिसमें श्लोकों पर हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है।

२४१. **कुमारसभव—कालिदास**। पत्र संख्या–१३ । साइज–१०३/४×५३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १४८६ आषाढ। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८५।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

प्रशस्ति—संवत् १४८६ वर्षे आषाढमासे वटपद्रवास्तव्य दीसावालजातीय नरवद सुत व्यास पद्मनामेन कुमार सभवकाव्यमलेखि। शुभमवतु। मट्टारक प्रभु ससारवारणविदारणसिंह श्री सोमसुन्दर सूरिश्चिरंनदतु। प्रति सुन्दर है।

२४२. **चदनाचरित्र—शुभचद्र**। पत्र संख्या–२७। साइज–११३/४×४३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८६१ भादवा बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० १५७।

विशेष—शिवलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी।

२४३. **चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनन्दि**। पत्र संख्या–१८३। साइज–१३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १५५७ भादवा सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० ६७।

विशेष—इसमें कुल १८ सर्ग हैं ग्रंथा ग्रथ सख्या २५०० श्लोक प्रमाण हैं। प्रारम्भ के १४ पृष्ठों पर संस्कृत टीका भी दी हुई है।

२४४. **चन्द्रप्रभचरित्र–कवि दामोदर**। पत्र सख्या–२०२। साइज–१२३/४×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। रचना काल–सं० १७०३। लेखन काल–१८५० माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० २३३।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

२४५. **चारुदत्तचरित्र—भारामल्ल**। पत्र संख्या–५१। साइज–१२×८ इंच। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–चरित्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७६।

विशेष—पद्य सख्या ११०६ है।

२४६. **जम्बूस्वामीचरित्र—ब्रह्म जिनदास**। पत्रसंख्या–७२। साइज–१२×४ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–चरित्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० २४२।

२४७ **जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम**। पत्र संख्या–३२। साइज–१२३/४×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–चरित्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८०।

प्रारम्भ—प्रथम प्रणमी परमेष्टिगण, प्रणमो सारद माय।
गुरु निर्ग्रंथ नमो सदा, भव भव में सुखदाय ॥१॥
धर्म दया हरदै धरूं, सब विधि मंगलकार
जम्बू स्वामी चरित, की करूं वचनिका सार ॥२॥

अथ वचनिका प्रारम्भ । मध्यलोक के असंख्यात द्वीप और समुद्रों के मध्य एक लाख योजन के व्यास वाला थाली के आकार सद्रस गोल जम्बू नाम की द्वीप है । जिसके मध्य मे नाभि के सद्रस सोभा देने वाला एक सुदर्शन नाम का पर्वत पृथ्वी से दस हजार योजन ऊंचा है और जिसकी जड पृथ्वी में १०००० दश हजार योजन की है ।

अन्तिम - जंबूस्वामी चरित जो, पढे सुने मनलाय ।
मनवांछित सुख भोग के, अनुक्रम शिवपुर जाय ॥
सस्कृत से भाषा करी, धर्म बुद्धि जिनदास ।
लमेचू नाथूराम पुनि, छंद बद्ध की तास ॥
किसनदास सुत मूलचद, करी प्रेरणा सार ।
जंबूस्वामी चरित की, करो वचनिका सार ॥
तव तिनके आदेश से भाषा सरल विचार ।
लघु मति नाथूराम सुत दीपचंद परवार ॥
जगत राग अर द्वेष वश, चहुँगति भमैं सदीव ।
पावै सम्यक रत्न जो, काटे कर्म अदीव ॥
गत संवत निर्वाण को महावीर जिनराय ।
एकम श्रावण शुक्ल को करी पूर्ण हरषाय ॥
अंतिम है इक प्रार्थना सुनो सुधी नरनार ।
जो हित चाहो तो करो स्वाध्याय परचार ॥
इति श्री जंबूस्वामी चरित्र भाषा मय वचनिका संपूर्ण ।

२४८. **जीवंधरचरित्र—आचार्य शुभचद्र** । पत्र सख्या-८० । साइज-११¾×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १६२७ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २१३ ।

२४९. **दुर्घटकाव्य—कालिदास** । पत्र सख्या-२० । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८४ ।

प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२५०. **धन्यकुमारचरित्र—गुणभद्राचार्य** । पत्र सख्या-१६ । साइज-१२×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १७२

विशेष—लवकञ्चुकगोत्रेभूच्छुभचन्द्रो महामना ।
साधु सुशीलवान् शांत श्रावको धर्मवत्सल ॥
तस्य पुत्रो वभूवात्र वल्हणो दानवान् वशी ।

परोपकारचित्तस्य न्यायेनार्जितसद्धनः ॥
धर्मानुरागिणा तेन धर्मकर्मनिबंधन ।
चरितं कारितं पुण्यं शिवापेचि शिवार्थिचिनः ॥
इति धन्यकुमार चरित्र समाप्त ।

संस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ भी दिया हुआ है । ७ परिच्छेद हैं ।

२५१. **धन्यकुमार चरित्र—सकलकीर्त्ति** । पत्र संख्या-४० । साइज-१२×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५६४ मगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१८ ।

प्रशस्ति—संवत् १५६४ वर्षे आषाढादि ६५ वर्षे शाके १४३१ प्रथम मार्गसिर सुदि १३ श्री गिरिपुरे श्री आदिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिः तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्त्ति स्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषणस्तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयकीर्त्तिस्तत् शिष्य ब्रह्म मल्लिदासपठनार्थं हुंबड ज्ञातीय वृद्ध शाखायां चोखडी आवाछा तद्भार्या वभलदे तयो द्वौ पुत्रौ । चोखडी साखपा तद्भार्या राजलदे। एते ज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थं श्री धन्यकुमार-लिखाप्यदत्त शुभं भवतु पश्चात् ब्रह्म श्री मल्दिासात् शिष्य उल्ही आकेन पठितं । प० हीरा की पोथी है। सात अधिकार हैं ।

२५२ **धन्यकुमारचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त** । पत्र संख्या-२५ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४८६ ।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है इसके आगे अपूर्ण है ।

२५३. **धन्यकुमारचरित्र—खुशालचंद** । पत्र संख्या-३८ । साइज-१४×८½ इञ्च । भाषा-हिंदी पद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८५६ मंगसिर सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२५४. **धर्मशर्माभ्युदय—हरिचन्द्र** । पत्र संख्या-१०१ । साइज-१२×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३२ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है बीच के कुछ पत्र जीर्ण है । धर्मनाथ तीर्थंकर का जीवन चरित्र वर्णित है ।

२५५. **नागकुमारचरित्र**—पत्र संख्या-३६ । साइज-१३×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं०७६ ।

२५६ **नेमिदूतकाव्य—विक्रम** । पत्र संख्या-१३ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०३ ।

२५७ **नेमिदूतकाव्य सटीक—मूलकर्त्ता विक्रम कवि। टीकाकार प० गुण विनय।** पत्र सख्या—२३। साइज—१०½×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—काव्य। टीका काल—स० १६८४। लेखन काल—सं० १६४४। पूर्ण। वेष्टन न० २६२।

२५८ **प्रद्युम्नकाव्य पंजिका**—पत्र संख्या—८। साइज—१०×६ इन्च। भाषा—प्राकृत। विषय—काव्य। रचना काल—×। लेखन काल—×। अपूर्ण। वेष्टन न० ३४२।

विशेष—१४ सर्ग तक है।

२५९ **प्रद्युम्नचरित्र—महसेनाचार्य।** पत्र संख्या—८८। साइज—११¾×५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। रचना काल—×। लेखन काल—सं० १७११ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन न० २६४।

विशेष—कुल'२४ परिच्छेद हैं, कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं।

२६०. **प्रद्युम्नचरित्र—आ० सोमकीर्ति।** पत्र सख्या—२३६। साइज—११×५ इन्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। रचना काल—×। लेखन काल—×।। पूर्ण। वेष्टन न० २६३।

विशेष—प्रति प्राचीन है। ग्र थ स० ४८५० श्लोक प्रमाण है। एक प्रति संवत् १६४७ की लिखी हुई और है।

२६१ **प्रद्युम्नचरित्र—कवि सिंह।** पत्र संख्या—१४३। साइज—११×४½ इन्च। भाषा—अपभ्र श। विषय—चरित्र। रचना काल—×। लेखन काल—स० १५९८ चैत सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० १८१।

विशेष—तत्तकगढ (टोडारायसिंह) में सोलकी वंशोत्पन्न सूर्यसेन के राज्य दावणइया स्थाने खडेलवालजातीय सोगाणी गोत्रोत्पन्न सघी सोढा के वंशज डू गा पत्ता सांगा आदि ने प्रतिलिपि कराकर मुनि पद्मकीर्ति को भेंट किया।

२६२. **पार्श्वपुराण—भूधरदास।** पत्र सख्या—८२। साइज—११×६ इञ्च।। भाषा—हिन्दी। विषय—काव्य। रचना काल—स० १७८९। लेखन काल—स० १९१९ श्रावण सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन न० १७।

विशेष—२ प्रतियां और हैं।

२६३. **पार्श्वनाथचरित्र—भ० सकलकीर्ति।** पत्र संख्या—१०३। साइज—११×५ इन्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। रचना काल—×। लेखन काल—स० १६०५ कार्तिक बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन नं० ५३।

विशेष—श्री बादशाह सलीमशाह (जहांगीर के) शासन काल में प्रयाग में श्री आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिप की थी। ब्रह्म आसे ने इसे सुमतिदास के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। आचार्य श्री हेमकीर्ति के शिष्य सा० मेघराज की पुस्तक है ऐसा लिखा है।

इस ग्र थ की भण्डार में एक प्रति और है।

२६४. **प्रीतिंकरचरित्र—ब्रह्मनेमिदत्त।** पत्र सख्या—२७। साइज—१२×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। रचना काल—×। लेखन काल—स० १८०५ द्वि० वैशाख सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० २७९।

विशेष—वसुपुर नगर में श्री चंद्रप्रभचैत्यालय में प० परसराम जी के शिष्य आनन्दराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

२६५. **भद्रबाहुचरित्र—रत्ननंदि** । पत्र संख्या-३० । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचनाकाल-× । लेखन काल-सं० १६५२ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६७ ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है ग्रंथ ६८८ श्लोक संख्या प्रमाण है।

२६६. **भद्रबाहुचरित्र भाषा—चपाराम** । पत्र संख्या-३८ । साइज-१०½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १८०० सावन सुदी १५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८ ।

विशेष—ग्रंथ १३२५ श्लोक प्रमाण है।

प्रारम्भ—जैवतो वरतौ सदा, चौबीसू जिनराज ।
तिन वंदत वंदक लहै, निश्चय थल सुखदाय ॥

चौपई—रिषव अजित संभव अभिनंदन ।
सुमति पद्म सुपारिस चद ॥
पुप्पदंत शीतल जिन राय ।
जिन श्रीहांस नमू सिर नाय ॥१॥

पत्र सख्या-२३ पर—अथानतर जे जीव तिस ही भव विषै स्त्री कूं मोक्ष गमन कहै है, ते जीव आग्रह रूप ग्रह करि ग्रस्य है अथवा तिनकूं वाय लगी है ॥८३॥ कदाचि स्त्री परयाय धारि अर दुर्द्धर घोर वीर तप करें। तथापि स्त्रीकूं तद्भव मोक्ष नाहीं ॥८४॥

अन्त—इह चरित्र गुर गम्य लखि रत्ननदि मुनिराय ।
रच्यौ पंसत श्लोक मय मूल महा सुख दाय ॥१॥
लेय तिस अनुसार कछु रच्यौ वचनका रूप ।
जात नाम कुल तास अब कहूं सुनौ गुन भूप ॥२॥
देश ढुंडाहड मध्यपुर माधव सूवस्थान ।
जगतसंघ ता नगरपति पातल राज महान ॥३॥
तहां वसे इक वैश्य शुभ हीरालाल सु जान ।
जाति श्रावग न्याति मैं खंडेलवाल शुभ जानि ॥४॥
गोत भांवसा फुनि धरै परम गुनी गुन धाम ।
तिनकै अति मति दीन सुत उपनौ चपाराम ॥५॥

ताके फुनि अ ता जुगम लसे सुजन सुख दाय ।
तानै कछू अक्षर समझि सीखी पाय सहाय ॥६॥
तिस पुर मध्य जिन भवन इक राजत अधिक उदार ।
मध्य लसै जिन वृषभ सुर नर वंदित पद सार ॥७॥
तहा जात दिन रैन मुझि भयौ कछू अभ्यास ।
तब लखि कै सुचरित्र इह रची वचनका तास ॥ ८ ॥
होय दोस यामैं जहां अमिलत अक्षर होय ।
सोधौ ताकूं सुघड नर निज लक्षण अव लोय ॥ ९ ॥
संत सदा गुन दुर्जन ग्रहै औगण लेय ।
सुख तैं तिष्टौ भूमि पार मो पर कृपा करेय ॥ १० ॥
बुद्धहीन तैं भूलवत अर्थ भयो नही होय ।
ता परि सजन पुरुष मो क्षमा करो गुन जोय ॥ ११ ॥
अर सोधौ वर बोर तैं लखि अक्षर विनास ।
यह मेरी अरजी शुभग धरौ चित्त गुण रासि ॥ १२ ॥
अधिक कहे किम होत है जे है सत पुमान ।
ते थोरे ही कहन तैं समझि लेत उर आन ॥ १३ ॥
नर सुर पति वंदत चरण करन हरन गुन पूर ।
पर दरसत भजन करै धर्म रूप विधि चूर ॥ १४ ॥
जो जिनेश इन गुण सहित सो वदूं सिर नाय ।
सोहु इहा मंगल करन हरन विघ्न अधिकाय ॥ १५ ॥
श्रावण सुदि पूनिम सु रविवार अर्थ रस जानि ।
मद ससि संवत्सर विषै भयौ ग्रंथ सुख खानि ॥ १६ ॥
चर थिर चवगति जीवत निति होहु सुखी जगथान ।
टरो विघन दुख रोष सब वधौ धर्म भगवान ॥ १८ ॥

— छंद अनुष्टया—

भद्रबाहुमुनेरेतत् चरित्र प्रति दसंता ।
भाषा मय कृतं चपारामेण मदबुद्धिना ॥ १९ ॥

—सोरठा—

तस्य दोष परित्यज्य ग्रहू तु गुन सज्जना ।
यथा घृष्टौपि सौरम्य ददाति चदनोल्वणं ॥ २१ ॥

तेरह से पचीस श्लोक रूप संख्या गिनौ ।
भद्रबाहु मुनि ईस चरित तनी भाषा भई ॥ २२ ॥

इति श्री आचार्य रत्ननंदि विरचित भद्रबाहु चरित्र संस्कृत ग्रंथ ताकी बालबोध वचनका विषै श्वेताम्बर मत उत्पति वा पर्यसंघ की उत्पति तथा लुंकामत की उत्पति नाम वर्ननों नाम चतुर्थ अधिकार पूर्ण भया ॥ इति ॥

२६७ **भद्रबाहु चरित्र भाषा—किशनसिंह** । पत्र संख्या-३५ । साइज-११×५ इन्च । भाषा-हिंदी गद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७८३ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२६८ **भविष्यदत्त चरित्र—श्रीधर** । पत्र संख्या-६६ । साइज-१२×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५८६ मगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २३५ ।

विशेष—खंडेलवाल जातीय साह गोत्रोत्पन्न साह लाला के वंशज नाथा खीमा छीतर आदि ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२६९. **भविष्यदत्तचरित्र—ब्र० रायमल** । पत्र संख्या-३९ । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६१६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५ ।

२७०. **भविष्यदत्त चरित्र—धनपाल** । पत्र संख्या-११२ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६६२ माघ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६५ ।

विशेष—सं० १६६२ वर्षे माघ सुदी ११ गुरुवासरे रोहिणीनक्षत्रे श्री मूलसंघे लिखितं खेमकरण कायस्थ हाजीपुरनगरे ।

एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

२७१. **भोजप्रबंध—पंडित अल्लारी** । पत्र संख्या-२६ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६८ ।

विशेष—श्लोक संख्या ११०० प्रमाण है ।

२७२. **महीपालचरित्र—नथमल** । पत्र संख्या-७० । साइज-१२½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १९१८ आषाढ सुदी ४ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३९ ।

विशेष—प्रारम्भ के २ तथा अन्तिम पत्र नहीं है ।

श्री नथमल दोसी दुलीचंद के पौत्र तथा शिवचंदजी के पुत्र थे । इनने पं० सदासुखजी के पास रहकर अध्ययन व रचनाएँ की थी ।

२७३. **मेघदूत—कालिदास** । पत्र संख्या-२७ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१२ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीकाकार सरस्वतीतीर्थ हैं । काशी में टीका लिखी गई थी । पत्र १२ तक मूल सहित (श्लोक ५५) टीका है शेष पत्रों में मूल श्लोकों के लिए स्थान खाली है ।

२७४ **यशोधरचरित्र—वादिराजसूरि** । पत्र संख्या-१७ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७०० ज्येष्ठ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७७ ।

२७५. **यशोधरचरित्र—सकलकीर्त्ति** । पत्र संख्या-५१ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २७१ ।

विशेष—आठ सर्ग हैं । प्रति प्राचीन है । पत्र पानी में भीगे हुए हैं । एक प्रति और है ।

२७६. **यशोधरचरित्र—ज्ञानकीर्ति** । पत्र संख्या-७६ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६५६ माघ सुदी ५ । लेखन काल-सं० १६६१ जेष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७५ ।

विशेष—९ सर्ग हैं । राजमहल नगर के श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में महाराजाधिराज श्री मानसिंह के राज्य काल में उनके प्रधान अमात्य श्री नानू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२७७ **यशोधरचरित्र—वासवसेन** । पत्र संख्या-६२ । साइज-१०½×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६१४ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७४ ।

प्रशस्ति—संवत् १६१४ वर्षे चैत्र सुदि ५ शुक्रवारे तक्षकमहादुर्गे महाराजाधिराजरावश्रीकल्याणराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचंद्रदेवा तत्पट्टे श्रीप्रभाचंद्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्यश्रीधर्मचंद्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्यश्री ललितकीतिदेवा स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा दामा तद्भार्या चादो तत्पुत्रौ द्वौ । प्र० सायो जिनपूजापुरंदर चतुर्दानवितरणकल्पवृक्ष शीलगंगेव सा बोहिथ, द्वि० सा नाना । सा० बोहिथ तद्भार्या बालहदे । तत्पुत्रौ द्वौ । प्र० सा. सुरताण द्वि० सा. साधु । सा, सुरताण भार्या द्वे ।

२७८ **यशोधरचरित्र—पद्मनाभ कायस्थ** । पत्र संख्या-८६ । साइज-११½×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० २७२ ।

विशेष—९ सर्ग तक है, प्रति प्राचीन है ।

२७९ **यशोधरचरित्र—सोमकीर्ति** । पत्र संख्या-५१ । साइज-१०½×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १५३६ पौष बुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २७० ।

विशेष—आठ सर्ग हैं। श्री शीतलनाथ चैत्यालय गोटियामेव पाट में ग्रन्थ रचना की गई थी। ग्रंथ श्लोक संख्या—१०१८ प्रमाण है। २० से ४१ तक पत्र दूसरी प्रति के हैं। प्रति प्राचीन है। एक प्रति और है।

२८०. यशोधरचरित्र—लिखमीदास। पत्र संख्या—३६। साइज—१३×७½ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—चरित्र। रचना काल—सं० १७८१ कार्तिक सुदी ६। लेखन काल—सं० १९५२। पूर्ण। वेष्टन नं० १७२।

२८१. यशोधरचरित्र भाषा—खुशालचन्द। पत्र संख्या—३३। साइज—१३×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—चरित्र। रचना काल—सं० १७८१ कार्तिक सुदी ८। लेखन काल—सं० १९०० असाढ सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० ६४।

विशेष—पं० कालीचरन ने प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है।

२८२ रघुवंश—कालिदास। पत्र संख्या—११०। साइज—१०×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। रचना काल—×। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२०।

विशेष—प्रति प्राचीन है। संस्कृत टीका सहित है। पत्रों के मध्य में मूल सूत्र है तथा उपर नीचे टीका दी है। अथ टीका श्लोक संख्या—५२४० है। मूल श्लोक संख्या—२००० है।

एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है।

२८३. रामकृष्ण काव्य-पं० सूर्य कवि। पत्र संख्या—२३। साइज—११×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। रचना काल—×। लेखन काल—सं० १८१७ चैत्र सुदी ११। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४०२।

विशेष—अन्वयदीपिका नाम की टीका है। पंडि आनन्दराम ने प्रतिलिपि की थी।

आरम्भ—श्रीमज्जानकीनाथाय नमः।

श्रीमन्मंगलमूर्तिमार्तिशमनं नत्वा विदित्वा तत।

शब्दब्रह्ममनोरमं सुगुणकलाधिर जातमन॥

अंतिम—सुलब्धवठास्तु विलोमवर्ण काव्येऽत्र सन्धैरतिमादधातु।

चातुर्यमायाति यतः कविर्त्वे, नाशां तथा पाक जातमेति॥

इति श्री सूर्यकवि कृता रामकृष्णकाव्यस्यान्वयदीपिका नाम्नी टीका सपूर्णा।

२८४ वरांगचरित्र—भट्टारक वर्द्धमान देव। पत्र संख्या—६७। साइज ११½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। रचना काल—×। लेखन काल—१८६३ आषाढ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७०।

विशेष—जयपुर के शान्तिनाथ चैत्यालय में विबुध अमृतचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२८५ वासवदत्ता—महाकवि सुबंधु। पत्र संख्या—१६। साइज—१०½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। रचना काल—×। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४७६

२८६ विदग्धमुखमंडन—धर्मदास। पत्र संख्या-२१। साइज-११×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८६१। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४०।

विशेष—यति अमरदत्त ने जयपुर में सं. १८२१ में पंडित श्रीचंद्र के शिष्य चि० मनोरथराम के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२८७ शिशुपालवध—महाकवि माघ। पत्र संख्या-११। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२६।

विशेष—केवल १४ वें सर्ग की टीका है, टीकाकार मल्लिनाथ सूरि है।

२८८. श्रीपालचरित्र—ब्रह्मनेमिदत्त। पत्र संख्या-६६। साइज-११×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १५८५ आषाढ सुदी १५। लेखन काल-सं० १८४८ आसोज सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० ७७६।

विशेष—पूर्णासा नगर के आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ रचना की गई थी।

२८९. श्रीपालचरित्र—परिमल। पत्र संख्या-१३५। साइज-१२×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २७।

विशेष—४ प्रतियां और हैं।

२९०. श्रेणिकचरित्र—शुभचन्द्र। पत्र संख्या-११३। साइज-११½×४½ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७८५ श्रावण सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० २४१।

विशेष—कोडी ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी।

२९१ सप्तव्यसन चरित्र भाषा। पत्र संख्या-१३। साइज-१२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १६२१। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८७।

विशेष—रचना के मूलकर्त्ता सोमकीर्ति हैं।

२९२. सुकुमालचरित्र—सकलकीर्त्ति। पत्र संख्या-८३। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४११।

विशेष—९ सर्ग हैं। श्लोक संख्या १२०१ है पत्र पानी में भीगे हुए हैं।

२९३. सुकुमालचरित्र भाषा—नाथूलाल दोसी। पत्र संख्या-९५। साइज-१३×८½ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १४०।

विशेष—प्रारम्भ में चरित्र पद्य में दिया हुआ है फिर उसकी वचनिका लिखी गई है।

आरम्भ (पद्य)—श्रीमत वीर जिनेश पद, कमल नमूं शिरनाय।
जिनवाणी उर में धरूं जजूं सुगुरु के पाय ॥ १ ॥
पंच परम गुरु जगत में परम इष्ट पहिचान।
मन वच तन करि ध्यावते होत कर्म की हानि ॥ २ ॥

अंतिम—सर्वारथ सिध लौं गये, शाध जना तज प्रान।
जानो भवि संक्षेप तें ईह विध चरित बखान ॥ १२५ ॥
श्री सुकुमाल चरित्र का संस्कृत ज्ञान के हेत।
देश वचनिका मय लिखूं पढौ सुनो धरि चित ॥ १२६ ॥
वशि प्रमाद कछू भूलि कै अरथ लिख्या न जो होय।
पंडित जन सब सोधियो, मूल ग्रंथ अवलोय ॥ १२७ ॥

वचनिका पद्य नं० ८८ की—

अर झूठ वचनका बोलना तैं बुद्धि को नाश हो है। अपजस फैलै है। अर सर्व जीवन के अविश्वास की पात्र हो है। बहुरि राजादिकनि तैं हाथ पांव कान नाक जीभ आदि का छेद रूप दंड पावै है।

अंतिम—आदि अंत मंगल करो श्री वृषभादि जिनेश।
जैन धर्म जिन भारती, हर संसार कलेश ॥

सवैया—ढुंढाहडे देश मध्य जैपुर नगर सो है,
च्यार वर्ण राह चालें अपने सुधर्म की।
रामसिंह भूपत के राज माहि कमी नाहि,
कमी कछु दृष्टि परै जानो निज कर्म की ॥
वैश्यकुल जैनी को पूरब कृत्य पुण्य भरी,
पायो यह खोलो अब मूदी दृष्टि धर्म की।
जैन वैन कान सुनो आतमस्वरूप मूनो,
चारु अनुयोग भनो यही सीख मर्म की ॥ २ ॥

चौपाई—दोसी गोत दुलीचंद नाम। ताको सुत शिवचंद अभिराम ॥
नाथुलाल तासु सुत भयो। जैन धर्म को सरणो लयो ॥ ३ ॥
श्रीदीवाण संगही अमरेश। पाय सहाय पढ्यो श्रुत लेश ॥
कासलीवाल सदासुख पास। फिर कीनो श्रुत को अभ्यास ॥ ४ ॥
श्री सुकुमाल चरित्र रसाल। देख कही हरचंद गंगवाल ॥
होत वचनिका मय जो ऐह। सब जन वांचै हित गेह ॥ ५ ॥

विन व्याकरण पढे नही ज्ञान । मूलग्र थ को होइ निदान ॥
ऐसी प्रार्थना तने वसाय । मूल ग्र थ को पाय सहाय ॥ ६ ॥
भावारथ सो लिखयो एह । देश वचनिका मय धरि नेह ॥
वाचौ पढो पढावौ सुनौ । आतम हित कू नीकृ मुनौ ॥ ७ ॥
जो प्रमाद वस तै कुछ इहा । भोलपने तैं मैने कहा ॥
सो सब मूल ग्र थ अनुसार । सुध करयो बुध जन सुविचार ॥ ८ ॥
उनवीससतठारहसार । सावण सुदी दशमी गुरुवार ॥
पूरण भई वचनिका एह । वाचौ पढौ सुनौ धरि नेह ॥ ९ ॥

दोहा—मगलमय मगल करन वीतराग चिद्रूप ।
मन वच कर ध्यावतै, हो है त्रिभुवन भूप ॥ १० ॥

इति श्री सकलकीर्ति आचार्य विरचित सुकुमाल चरित्र सस्कृत ग्र थ ताकी देशभाषा वचनिका समाप्ता ॥

२६४ **सीताचरित्र—कवि बालक** । पत्र सख्या-११३ । साइज-१३×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १७०३ मगसिर सुदी ५ । लेखन काल-स० १७६८ सावन सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ६२

विशेष—प० सुखलाल ने केथूण नगर मे प्रतिलिपि की थी । पं० सुखराम का गोत ठोलिया, वासी शेखावाटी, वास हिंगूणया था ।

२६५. **हनुमतचौपई—ब्रह्मरायमल्ल** । पत्र सख्या-४० । साइज-१०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६१६ । लेखन काल-स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८७ ।

विशेष—छोटेलालजी ठोल्या ने मन्दिर दाणावलि (दीवानजी) के पडित सवाई रामजी से ~) देकर पुस्तक सवत १९०२ मे ली थी ।

२६६. **हनुमच्चरित्र—ब्रह्म अजित** । पत्र सख्या-८६ । साइज-१०¾×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २३६ ।

विशेष—ग्र थ २००० श्लोक प्रमाण है प्रति प्राचीन है ।

२६७ **होलिकाचरित्र—जिनदास** । पत्र सख्या-१०६ । साइज-११¾×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २३८ ।

विशेष—ग्र थ श्लोक संख्या ६४२ प्रमाण है ।



विषय—पुराण साहित्य

२६८ आदिपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सख्या-३४५ । साइज-१२$\frac{3}{4}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७३६ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० १५८ ।

विशेष—पालुम्ब नगर निवासी विहारीदास के पुत्र निहालचद जैसवाल ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

२६६ आदिपुराण—पुष्पदत । पत्र सख्या-४ से २७६ । साइज-१२×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । भाषा-अपभ्रं श । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५४३ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० १६४ ।

विशेष—एक प्रति और है । लेकिन वह अपूर्ण है ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—अथ श्रीविक्रमादित्यराज्यात् सवत् १५४३ वर्षे आसोज सुदी ६ गुरुवारे श्री हिसारपेरोजाकोटे सुलतान श्रीवहलोलसाहराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसघे नद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचद्रदेवा तत् शिष्य श्री मुनि जयनंदिदेवा तत् शिष्यणी बाई गूजरी निमित्त श्री खंडेलवाला वये खेत्रपालीय गोत्रे सुनामपुरवास्तव्ये जिनशासनप्रभावकपरमश्रावकसघपतिकल्हू नामा तत्पत्नी शीलशालिनी साध्वी राणी नाम्नी तयो चत्वार पुत्रा अनेकतीर्थयात्रादिमहामहोत्सवकारायिका अर्हंतादिपंचपरमेष्ठिचरणारविंदसेवनैकचचरीका सघपति हवा सं० धीरा स० कामा, स० सुरपति नामधेया तन्मध्ये संघपति कामा भार्या विहितानेकव्रतनियमतपोविधानादिधर्मकार्या साध्वी कमलश्री तत्पुत्रौ देवपूजादिषट्कर्मपद्मिनीखडमार्त्तण्डौ हस्तिनागपुरतीर्थयात्राप्रभावनाकारणोपपन्न पुण्यबलप्रचडौ स० भीवा स वच्छकौ सघपति भीमाख्यजाया देवगुरुशास्त्रभक्तिविधानप्रलब्धछाया साध्वी भीवश्री इति प्रसिद्धि तन्नन्दने प्रथननामा गुरुदास तत् कलत्र शीलाद्यनेकगुणपात्रे गुणश्री नामिक तत्सुतौ चिरजीव जैरणमल सघपति वह्न गेहनी विनयादिगुणावुतद्वाहिनी वडलसिरि इति रुधि । तत् तनुजो जिनचरणकमल सेवनैकचचरीका, स० रायणदासाख्य तज्जननी शालविनयादिगुणशायद सरस्वती सज्ञिका । एतेषामध्ये साध्वीया कमलश्री तया निज पुत्र स० भीवा वच्छकयो न्यायोपार्जित वित्तेन इ दश्री आदिपुराणपुस्तक लिखापित ॥ लिखित महेश्वर शोभा सुत ऊधाकेन इद पुस्तक ।

३०० आदिपुराण भाषा—प० दौलतराम । पत्र सख्या-६४८ । साइज-१०$\frac{3}{4}$×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६६ ।

ग्रन्थ २३७०० श्लोक प्रमाण हैं । एक प्रति और है ।

३०१. उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या-३८१ । साइज-१२$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६० चैत्र सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन न० १५१ ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है। अजमेर पट्ट के भ० देवेन्द्रकीर्ति के पट्ट में आचार्य रामकीर्ति के समय मे लश्कर (ग्वालियर) में आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गयी थी। इसमें ६६ से ६८ तक पत्र नहीं हैं।

एक प्रति और है। यह प्रति प्राचीन है।

३०२ **नेमिजिनपुराण—ब्रह्मनेमिदत्त**। पत्र संख्या–१८३। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। रचना काल–×। लेखन काल–स० १६१० आषाढ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन न० २३०।

विशेष—तक्षकगढ में राजा रामचन्द्र के शासन काल मे आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गई थी। २ प्रतिया और हैं।

३०३ **पद्मपुराण—रविषेणाचार्य**। पत्र सख्या–१ से १५०। साइज–१३×६½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पुराण। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन न० १६१।

३०४. **पद्मपुराण—प० दौलतराम**। पत्र सख्या–६२१। साइज–१२×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–पुराण। रचना काल–सं० १८२३ माघ सुदी ६। लेखन काल–स० १६०० आषाढ सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन न० ५८

विशेष—दयाचद चादवाड ने लिपि की की।

३०५ **पाण्डवपुराण—शुभचन्द्र**। पत्र सख्या–२०२। साइज१२½×६½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पुराण। रचना काल–स० १६०६ भादवा बुदी २। लेखन काल–सं० १७६२ आसोज सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन न० ४१।

विशेष—श्वेताम्बर यति गोरखदास ने बसवा मे प्रतिलिपि की थी।

३०६ **बलभद्रपुराण—रइधू**। पत्र सख्या–२५५। साइज–१२×४½ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–पुराण। रचना काल–×। लेखन काल–स० १७३२ फागुन बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन न० १६६।

विशेष—औरगजेब के शासनकाल में बैराठ नगर मे अग्रवाल वशोत्पन्न मुगिल गोत्रीय सघी साधु के वशज सघी श्री कुशलसिंह ने पेमराज से प्रतिलिपि कराई थी।

३०७ **रामपुराण पद्मपुराण)—भ० सोमसेन**। पत्र सख्या–२०४। साइज–११½×५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पुराण। रचना काल–स० १६५६। लेखन काल–स० १८०८ माह सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन न० २५६

विशेष— श्वेताम्बर जयदास ने प्रतिलिपि की थी। कुल ३३ अधिकार हैं। ग्रथाग्रथ सख्या–७३० श्लोक प्रमाण है।

३०८ **वर्द्धमानपुराण—सकलकीर्ति**। पत्र सख्या–१६०। साइज–१०½×६ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पुराण। रचना काल–×। लेखन काल–स० १८५८। पूर्ण। वेष्टन न० २५७।

विशेष—इसमें कुल १६ अधिकार हैं। महात्मा पालगराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०६　शान्तिनाथपुराण—सकलकीर्ति। पत्र सख्या-४६ से १८८। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पुराण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६१८ माह सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० २५८।

विशेष—कुल १६ अधिकार हैं। श्लोक सख्या ४३८० है। एक प्रति और है।

३१०　हरिवशपुराण—यश कीर्त्ति। पत्र सख्या-१५१। साइज-११½×५¾ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-पुराण। रचना काल-×। लेखन काल-स० १६१५ सावनसुदी १३। पूर्ण। वेष्टन न० १६६।

विशेष—४००० प्रमाणश्लोक ग्रन्थ है। बादशाह अकबर के शासन काल में अग्रवाल वशोत्पन्न मित्तल गोत्रीय ग्वाडी निवासी साह असराज के वशज सा. भीमसेन ने प्रतिलिपि कराई थी। लेखक प्रशस्ति काफी विस्तृत है।

३११　हरिवशपुराण—ब्र० जिनदास। पत्र सख्या-३६६। साइज-१०¾×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पुराण। रचना काल-×। लेखन काल-स० १७१२ अगहन बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन न० १६८।

लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। एक प्रति और है।

३१२　हरिवशपुराण—प० दौलतराम। पत्र सख्या-६८४। साइज-१३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पुराण। रचना काल-स० १८२६ चैत्र सुदी १। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १४५।

विशेष—बलदेव कृत जयपुर वंदना भी है।

विषय-कथा एवं रासा साहित्य

३१३.　अष्टाह्निकाकथा—पत्र सख्या-३८। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-स० १९१० मगसिर बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन न० ७२।

विशेष—गुजराती हिन्दी मिश्रत है। प्राकृत गाथाएँ हैं उन पर टीका है। पन्नालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी

प्रारम्भ—शाति देव प्रणाम करि निश्चय मन में ध्याय।
　　कथा अठाईनी लिखी, भाषा सुगम बनाय॥

यहा समस्त खोट कर्म री पालने वाली, निमल धर्म री उपजावने वाली और कर्म तिणरी नासरी करिने वाली केर, यह लोग रे विषै परलोक रे विषै परलोक रे विणै कियौ छै। घणौ सुख जिन्हे ऐसा पर्यूषणा पर्व आयो थको समस्त देवता भवनपति इन्द्र मेल्या होय ते नंदीश्वर नामा आठमा द्वीप रे विणै धर्म री महिमा करनावे जावे ॥

अन्तिम—मति मंदिर किनी सरस कथा अठाई देख।
पद में असुध केई हुवो कबि जन लीजो देख ॥

३१४. **अष्टाह्निका कथा**—पत्र सख्या-३३। साइज-१०×४½ इन्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८८२ आषाढ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८१।

विशेष—पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी। अन्त में निम्न दोहा भी है.—
रतन कोह मुख संकडो अलवेली पणीयार।
दपत पाणि भरै तीसै पुरष री नार ॥ १ ॥

३१५ **अनतव्रतकथा**—पत्र सख्या-६। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-स० १६०१ भादवा सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन न० ४२५।

३१६. **अष्टाह्निका कथा—रत्ननदि**। पत्र सख्या-४। साइज-११½×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ७५।

विशेष—संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिया हुआ है। प्रति प्राचीन है। श्लोक सख्या-८६ है।

३१७. **आराधनाकथाकोष**—पत्र सख्या-८२। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-स० १५४५ माघ सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन न० ३२५।

विशेष—हिसार पैरोजावादपत्तने सुरत्राण मयलोलिसाहि राज्ये गुणभद्र देवा-तेषा आम्नाये साधु चौढा
एतत कथाकोषम् म लिखापितं। ब्रह्म धांदस योगदत्त।

प्रति प्राचीन एव जीर्ण है। पत्र ३४ से ८२ तक फिर लिखाये गये हैं। अतिम पत्र जीर्ण तथा फटा हुआ है।

३१८. **कमलचन्द्रायणकथा**—पत्र सख्या-२। साइज-१०×४½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४२५।

विशेष—१५४ और १५५ वां पत्र अन्य ग्रन्थ के हैं।

३१६. **कालिकाचार्यकथानक—भावदेवाचार्य**। पत्र सख्या-८। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३८४।

विशेष—गाथा सख्या १०० है। पत्रों पर सुनहरी पंक्ति है।

३२० आराधनाकथाकोश—पत्र संख्या-५६ । साइज-१२½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । रचनाकाल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८ ।

निम्न कथाओं का संग्रह है —

सम्यक्त्वोद्योत कथा, अकलंक स्वामी की कथा, समंतभद्राचार्य की कथा, सनतकुमार चक्रवर्ती की कथा, संजयंत मुनि की कथा, मधुपिंगल की कथा, नागदत्त मुनि की कथा, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की कथा, अंजन चोर की कथा, अनंतमति की कथा, उद्यायन राजा की कथा रेवती रानी की कथा, जिनेन्द्र भक्त सेठ की कथा, वारिषेण की कथा, विष्णुकुमार कथा, वज्रकुमार कथा, पातिक कथा, तथा जम्बूस्वामी कथा । ये कुल १८ कथाएं हैं ।

३२१ नन्दीश्वरविधान कथा—पत्र संख्या-५ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३२२. नन्दीश्वरव्रत कथा—शुभचन्द्र । पत्र संख्या-७ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३२३. नागकुमारपंचमी कथा—मल्लिषेण सूरि । पत्र संख्या-२१ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २८१ ।

विशेष—४ सर्ग हैं । ग्रंथ श्लोक संख्या ४६५ प्रमाण है ।

३२४ निशिभोजनकथा—भारामल्ल । पत्र संख्या-१० । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २१३ ।

प्रति प्राचीन है ।

३२५ पुण्याश्रवकथाकोष—दौलतराम । पत्र संख्या-४१ । साइज-१३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । गद्य । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल सं० १७०७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३२६. भक्तामरस्तोत्र कथा—पत्र संख्या-३७ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० २१५ ।

३२७ भक्तामरस्तोत्रकथा भाषा—विनोदीलाल । पत्र संख्या-१७३ । साइज-११½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७४७ सावन सुदी २ । लेखन काल-सं० १९४७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

विशेष—थानजीलाल जी ने प्रतिलिपि कराई थी। कुल ३८ कथाऐं हैं। एक प्रति और है।

३२८ **मदनमजरीकथा प्रबन्ध—पोपटशाह** । पत्र सख्या-२५ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-मगसिर सुदी १० । लेखन काल-स० १७०६ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० २६३ ।

३२६ **मुक्तावलिव्रतकथा—खुशालचद** । पत्र सख्या-५ । साइज-८½×७¾ इञ्च । विषय-कथा । रचना काल-स० १८७२ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १६६ ।

३३०. **मेघकुमारगीत—कनककीर्त्ति** । पत्र सख्या-२ । साइज-१०×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४४० ।

विशेष—प्रति प्राचीन है —४६ पद्य हैं।

श्री वीर जिणद पसाइ, जे मेघकुमार रिषि गाइ।
ताही आगली वीनस वीजाइ, वसी सपति सगली पाइ ॥ ८६ ॥ धन धन रें० ॥
जे मुनीवर मेघकुमार, जीणी चारित पालउसार।
गुणैरू श्री जीन माणीक सीस, इम कनक भणय नीस दीस ॥

॥ इति मेघकुमार गीत सपूर्ण ॥

३३१ **राजुलपच्चीसी—लालचद विनोदीलाल** । पत्र सख्या-४ । साइज-१०¾×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन न० १६६ ।

३३२. **रैदव्रत कथा—देवेन्द्रकीर्त्ति** । पत्र सख्या-४ । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७२ ।

३३३ **रोहिणीव्रत कथा—भानुकीर्ति** । पत्र सख्या-८ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८२५ ।

३३४ **वकचोर कथा (धनदत्त सेठ की कथा)—नथमल** । पत्र सख्या-१४ । साइज-१२¾×७½ इञ्च भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । रचना काल-स० १७२५ अषाढ बुदी २ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३७ ।

विशेष—एक प्रति और है। चाकसू का विस्तृत वर्णन है। पद्य सख्या २६१ है।

प्रारम्भ— —चौपाई—

प्रणमू पच परमेष्ठी सार। तिह्र सुमरत पावें भवपार ॥
दूजा सारद नैं विस्तरू। बुधि प्रकास कवित उचरू ॥
गुरु निग्रर्थ नमू जगदीस। सख्या तीस सहस चौबीस ॥
वाणी तिह्र कहै जनमार। सुणत भव्य जिन उतरै पार ॥

गणधर मुनिवर करू वदना । वंक चोर की कथा मन तणां ॥
ता सीशा पाली निज मांस । ताको भयो सोलहो निवास ॥ ३ ॥
दूजी कथा सेठ की कही । नाम धनदत्त धर्म नगरी सही ॥
सदा व्रत पालै निज सार । ऊँच नीच को नही विचार ॥ ४ ॥

अन्तिम—पढसी सुणसी जे नर कोय । क्रम २ ते मुक्ति ही होय ॥
सहर चाटसू सुवस वास । तिह पुर नाना भोग विलास ॥ २७७ ॥
नवसै कूवा नव सै ठाय । ताल पोखरी कह्या न जाय ॥
तामें बडो जगोली राव । सबै लोग देखण को भाव ॥ २७८ ॥
पैडीत माहि वणी चोकोर । नीर भरै नारी चहु ओर ॥
चकवा चकवी केल कराहि । वधिक ताहि नहीं दुख दाय ॥ २७९ ॥
छत्री चोंतरा वैठक वणी । अर मसजद तुरका की वणी ॥
चहुँधा रूप वृक्ष वहु छाय । पथी देखि रहे विरमाय ॥ २८० ॥
चहु धा घाट अधिक वणाय । पीवै संग वछा अर गाय ॥
सहर वीचि तें कोट उतंग । ताहि बुरज अति वणी सुचग ॥ २८१ ॥
चहुंधा खाई भरी सुभाय । एक कोस जाणी गिरदाव ॥
चहु धा वणे अधिक बाजार । वसै वणिक करै व्यापार ॥ २८२ ॥
कोई सोनो रूपौ कसै । कोई मोती माणिक लसै ॥
कोई वेचै टका रोक । केई बजाजी रोका ठोकि ॥ २८३ ॥
कोई परचूना वेचै नाज । केई एकठे मेलै साज ॥
केई उधार दाम की गांठि । केई पसारी माडै हाटि ॥ २८४ ॥
च्यार देव ए जिणवर तणा । ता महि जिन बदो अति घणा ॥
करै महोछे पूजा सार । श्रावक लीया सब आचार ॥ २८५ ॥
बाई जती रहण को चाव । उनही हार दीजे करि भाव ॥
और देहुरे वैसनु तणा । धर्म करै सगला आपणा ॥ २८६ ॥
नौरंगमाहि राज ते धरै । पौण छतीसौ लीला करै ॥
कहू चोवा चदन महकाय । कहू अरगजा फल विकसाय ॥ २८७ ॥
नगर नायका सोभा धरै । पातु नवु रचित वोली करै ॥
असो सहर और नही सही । दुखी, दलिद्री दीसै नही ॥ २८८ ॥
हाकिम सै मदारखां सही । और जोर कोउ दीसै नही ॥
पाजे परजा चारि न्याय । सीलवत नर लाभ लहाय ॥ २८९ ॥

संवत सतरा से पचीस । आषाढ़ वदी जाणो वरतीज ॥
वारज सोमवार ते जाणि । कथा संपूर्ण भई परमाण ॥ २८० ॥
पढसी सुणसी जे नर कोय । ते नर स्वर्ग देवता होय ॥
भूल चूक कही लिखयो होय । नथमल क्षमा करो सब कोय ॥ २८१ ॥

॥ इति श्री वकचोर धनदत्त कथा संपूर्णम् ॥

विशेष—एक प्रति और है ।

३३५. व्रतकथाकोष—श्रुतसागर । पत्र संख्या–८० । साइज–१२×५½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७८४ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५३ ।

विशेष—भिलाय में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । ४ प्रतियां और हैं ।

३३६. व्रतकथाकोष—खुशालचंद । पत्र संख्या–८० । साइज–१२×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन नं० २० ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

निम्न १३ कथाओं का संग्रह है—

मेरुपंक्ति कथा, दशलक्षण कथा, मुक्तावलीव्रतकथा, तपकथा, चंदनषष्ठीकथा, षोडषकारणकथा, ज्येष्ठ जिनवरकथा, आकाशपंचमीव्रतकथा, मोक्षसप्तमीव्रतकथा, अक्षयनिधिकथा, मेघमालाव्रतकथा, लब्धिविधानकथा और पुष्पांजलिव्रतकथा ।

३३७. शुकराज कथा (शत्रु जय गिरि गौरव वर्णन)—माणिक्य सुन्दर । पत्र संख्या–२१ । साइज–१०½×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७६ ।

३३८. सप्तव्यसनकथा—सोमकीर्ति । पत्र संख्या–६६ । साइज–११×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–सं० १५२६ । लेखन काल–सं० १७१७ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० १९६ ।

विशेष—जोशी भगवान ने सिलोर में प्रतिलिपी की थी कुल ७ अध्याय हैं । श्लोक संख्या २१६७ प्रमाण है ।

३३९. सिंहासनद्वात्रिंशका—पत्र संख्या–४१ । साइज–६×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३८६ ।

विशेष—बत्तीसों कथाएँ पूर्ण हैं पर इसके बाद जो कुछ और विवरण है वह अपूर्ण है ।

विषय—व्याकरण शास्त्र

३४०. आख्यात प्रक्रिया । पत्र संख्या—२२ । साइज—१०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१६ ।

विशेष—श्लोक संख्या १५० हैं ।

३४१. दुर्गपदप्रबोध—श्री वल्लभवाचक हेमचद्राचार्य । पत्र संख्या—३६ । साइज—१०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । रचना काल—सं० १६६१ । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४५ ।

विशेष—लिंगानुशासन की वृत्ति है । प्रति प्राचीन है ।

३४२. धातु पाठ—वोपदेव । पत्र संख्या—१४ । साइज—१०½×४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । रचना काल—× । लेखन काल—सं० १८११ मगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०० ।

विशेष—ग्रंथाग्रंथ संख्या ४०५ हैं । एक प्रति और है वह संस्कृत टीका सहित है ।

३४३. पचसन्धि । पत्र संख्या—६ । साइज—८¾×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

३४४. पच सन्धि टीका । पत्र संख्या—२८ । साइज—८¾×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । रचना काल—× । लेखन काल—सं० १७८२ ज्येष्ठ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

विशेष—स० १७८२ जेष्ठ में नंदलाल यति ने टीका लिखी थी ।

३४५. प्रक्रियाकौमुदी—रामचन्द्राचार्य । पत्र संख्या—११ । साइज ११½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०८ ।

प्रति प्राचीन है । श्लोक संख्या—२५०० है ।

३४६. प्रयोगमुख्यसार । पत्र संख्या—११ । साइज—८×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । रचना काल—× । लेखन काल—सं० १७८८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८८ ।

३४७. प्राकृतव्याकरण—चन्द्र । पत्र संख्या—३ । साइज—१०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । रचना काल—× । लेखन काल—सं० १८६६ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८८ ।

३४८ प्राकृतव्याकरण । पत्र संख्या—१८ । साइज—११¾×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

३४९. लिंगानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र संख्या—५ । साइज—१०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन ४४१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३५०. सारस्वत धातुपाठ—हर्षकीर्ति। पत्र संख्या-१८। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७८१ चैत्र सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० २६७।

विशेष खंडेलवाल ज्ञातीय हेमसिंह के पठनार्थ ग्रन्थ रचना की गई तथा वसु ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी।

३५१ सारस्वत प्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य। पत्र संख्या-१७। साइज-११×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८६४ सावन सुदी १। पूर्ण। वेष्टन नं० २६६।

विशेष—६ प्रतियां और हैं।

३५२. सारस्वत प्रक्रिया—नरेन्द्रसूरि। पत्र संख्या-५४ से १३३। साइज-१०×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४१५।

विशेष—केवल कृदंत प्रकरण है।

३५३. सारस्वतप्रक्रिया टीका—परमहंस परिव्राजकाचार्य। पत्र संख्या-५६। साइज-१०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३५०।

विशेष—द्वितीय वृत्ति तक पूर्ण है।

३५४. सारस्वत रूपमाला—पद्मसुन्दर। पत्र संख्या-६। साइज-१०¾×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१६।

विशेष—श्लोक संख्या-५२ है। पंडित ऋषभदास ने प्रतिलिपि की थी।

३५५. सिद्धान्त चन्द्रिका (कृदन्त प्रकरण)—रामचन्द्राश्रम। पत्र संख्या-२१। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८६६ द्वितीय वैशाख सुदी १। पूर्ण। वेष्टन नं० ३३८।

विशेष—जयनगर में घासीराम ने महात्मा फतेहचंद से प्रतिलिपि कराई। तृतीत वृत्ति है। एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण है।

३५६ सिद्धान्त चन्द्रिका वृत्ति—सदानन्द। पत्र संख्या-२८४। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८६१। पूर्ण। वेष्टन नं० ३५४।

३५७. हेमव्याकरण—आचार्य हेमचन्द्र। पत्र संख्या-२५। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२१।

विशेष—पत्र के कुछ हिस्से में मूल दिया हुआ है तथा शेष में टीका दी हुई है। चुरादि गण तक दिया हुआ है।

विषय-कोश एवं छन्द शास्त्र

३५८. **अनेकार्थ मंजरी—नंददास** । पत्र संख्या-५ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-हिंदी पद्य । विषय-कोष । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०६ ।

विशेष—पद्य संख्या-११४ है ।

३५९. **अनेकार्थ संग्रह—हेमचंद्र सूरि** । पत्र संख्या-६६ साइज-१२½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १४७७ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१५ ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ संख्या २०४ है । पत्र जीर्ण है । पत्र ५८ तक संस्कृत टीका भी है ।

३६०. **प्रति नं० २** । पत्र संख्या-५४ । साइज-१३×५ इञ्च । लेखन काल-सं० १४८० असाढ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१६ ।

विशेष—७ काण्ड तक है । सागरचंद सूरि ने प्रतिलिपि की थी ।

३६१. **अभिधानचिंतामणि नाममाला—आचार्य हेमचंद्र** । पत्र संख्या-१२६ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८०४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३६२. **अमर कोष (नाम लिङ्गानुशासन)—अमरसिंह** । पत्र संख्या-११२ । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३९१ ।

विशेष—द्वितीय काण्ड तक है । पत्रों के बीच २ में श्लोक हैं । एक प्रति और है उसमें तृतीय काण्ड तक है ।

३६३. **प्रति नं० २** । पत्र संख्या-१८७ । साइज-१०½×४½ इञ्च । टीका काल-सं० १६८१ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८२ ।

विशेष—संस्कृत में टीका दी हुई है एवं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुऐ हैं ।

३६४. **धनंजय नाम माला—धनंजय** । पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७४७ माघ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०५ ।

श्लोक संख्या-२०० है ।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई तथा दोधराज ने संशोधन किया ।

एक प्रति और है ।

३६५ शब्दानुशासन-वृत्ति—हेमचन्द्राचार्य। पत्र संख्या-१५८ । साइज-१०½×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५२४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१४ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५२४ वर्षे श्री खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्रसूरिविजय लब्धविसालगणि, वा० शान्तिरत्नगणि शिष्य वा० धमगणि नाम पुस्तक चिरनंद्यात् ।

३६६ वृत्तरत्नाकर—भट्ट केदार । पत्र संख्या-७ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६२ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६ ।

विशेष—५ प्रतियां और हैं जिनमें एक संस्कृत टीका सहित है ।

३६७ वृत्तरत्नाकर टीका—सोमचंद्रगणि । पत्र संख्या-४७ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । टीका काल-सं० १३२६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २१६ ।

३६८. श्रुतबोध—कालिदास । पत्र संख्या-१ । साइज-६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३३ ।

विशेष—६ फुट लम्बा एक ही पत्र है । पद्य संख्या ४३ है । इसके बाद स्वप्नाध्याय दिया हुआ है जिसके ७६ पद्य हैं । इसकी प्रतिलिपि सुखराम मोटे ने (खंडेलवाल) स्वपठनार्थ सं० १८४५ मगसिर बुदी ६ को वटेश्वर में की थी ।

विशेष—एक प्रति और है ।



विषय-नाटक

३६९. प्रबोधचन्द्रोदय नाटक—श्रीकृष्ण मिश्र । पत्र संख्या-४७ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८३ फाल्गुन सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

३७०. **मदन पराजय—जिनदेव** । पत्र संख्या-५० । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । रचनाकाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २४० ।

विषय-लोकविज्ञान

३७१. **त्रिलोकप्रज्ञप्ति—यति वृषभ** । पत्र संख्या-२८३ । साइज-१२½×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४ ।

३७२ **प्रति नं० २** । पत्र संख्या-२०६ । साइज-१२×६ इञ्च । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३३२ ।

विशेष—ग्रंथ के साथ जो लकड़ी का पुट्ठा है उस पर चौबीस तीर्थंकरों के चित्र हैं । पुट्ठा सुन्दर तथा सुनहरी है ।

३७३ **त्रिलोकसार—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र संख्या-२६ । साइज-६¾×४¾ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखनकाल-सं० १७६६ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २०८ ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३७४. **त्रैलोक्यसार चौपई—सुमतिकीर्ति** । पत्र संख्या-२३ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-सं० १६२७ माघ सुदी १२ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४१ ।

विशेष—१६ पत्र से आगे अजयराज कृत सामायिक क्षमावाणी है । जिसका रचना काल-सं० १७६४ है ।

३७५. **त्रिलोकसार सटीक-मू० कर्त्ता-नेमिचन्द्राचार्य । टीकाकार-सहस्रकीर्ति** । पत्र संख्या-८८ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७९ माघ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २६ ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

विषय—सुभाषित एवं नीतिशास्त्र

३७६. **कामदकीय नीतिसार भाषा—कामन्द** । पत्र सख्या—४ । साइज—१०×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—नीति । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२८ ।

प्रारम्भ—अथ कामंदकीय नीतिसार की बात लिख्यते । जाकै प्रभावतै सनातन मारग विषै प्रवर्तै । सो दंड को धारक लक्ष्मीवान राज जयवंत प्रवरतो ॥ १ ॥ जो विष्णुगुप्त नामां आचारिज वडे वश विषै उपजै अयाचक गुणनि करि वडे जे रिषीश्वर तिनके वश मैं प्रथिवी विषै प्रसिद्ध होतो भयो ॥ २ ॥ जो अग्नि समान तेजस्वी वेद के ज्ञातानि में श्रेष्ठ अति चतुर च्यारू वेदनि कौ एक वेद नाई अध्ययन करतो हुवो ॥ ४ ॥

अन्तिम—विस्तीर्ण विषय रूप वन विषै दोटतो पीडा उपजायवेको है स्वभाव जाको अैसो इन्द्रिय रूप हस्ती ताहि आत्मज्ञान रुप अकुश करि वशीभूत करै ॥ २७ ॥ प्रयत्न करि आत्मा विषयनि ग्रह ॥ क्मदकी ॥ गारशरामजी की लीख ॥

३७७. **चाणक्यनीतिशास्त्र—चाणक्य** । पत्र संख्या—२ से १५ तक । साइज—१०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—नीति । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४३० ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है तथा आठवें अध्याय तक है । एक प्रति और है । लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

३७८ **ज्ञानचितामणि—मनोहरदास** । पत्र सख्या—६ । साइज—१२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । रचना काल—सं० १७२६ माह सुदी ७ । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० ६३ ।

३७६ **जैनशतक—भूधरदास** । पत्र सख्या—१८ । साइज—११×५ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । रचना काल—स० १७८३ पौष बुदी १३ । लेखन काल—स० १८६६ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४ ।

३८० **प्रति नं० २** । पत्र सख्या—१३ । साइज—१०½×५ इन्च । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० ११८ ।

विशेष—इस प्रति में रचना काल स० १७८१ पौष बुदी १३ दिया है ।

३८१. **नीति शतक—भर्तृहरि** । पत्र सख्या—६ । साइज—१२×५½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—नीति । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७६ ।

विशेष—श्लोक सख्या—१११ है । एक प्रति और है ।

३८२. **नीतिसार—इन्द्रनदि** । पत्र सख्या—५ । साइज—११×८ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—नीति । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० ३३० ।

विशेष—श्लोक संख्या ११३ प्रमाण है।

३८३ शतकत्रय—भर्तृहरि। पत्र संख्या-६७। साइज-१०×४½ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८५८ वैशाख सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ३५१।

विशेष-पत्र ३६ तक संस्कृत टीका भी दी हुई है। नीतिशतक वैराग्य शतक एवं शृंगार शतक दिये गये हैं।

३८४ मनराम विलास—मनराम। पत्र संख्या-१०। साइज-१०×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६५।

विशेष—दोहा, सवैया, कवित्त आदि छंदों का प्रयोग किया गया है तथा बिहारीदास ने संग्रह किया है।

आरम्भ—करमादिक अरिन को हरै अरहंत नाम, सिद्ध करै काज सब सिद्ध को भजन है।
उत्तम सुगुन गुन आचरत जाकी संग, आचारज भग'त बसत जाके मन है॥
उपाध्याय ध्यान तैं उपाधि सम होत, साध परि पूरण को सुमरन है।
पंच परमेष्टी को नमस्कार मनराज यावै मनराम जोई पावै निज धन है॥

३८५ राजनीति कवित्त—देवीदास। पत्र संख्या-२४। साइज-६×६ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नीति। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८७३।

विशेष—११६ कवित्त हैं एवं गुटका साइज है। पत्र १,२,५ तथा अंतिम बाद के लिखे हुए हैं। ताजगंज आगरे के रहने वाले थे तथा औरंगजेब के शासन काल में आगरे में ही रचना की।

३८६. सद्भाषितावली—पन्नालाल। पत्र संख्या-५३। साइज-१३×८ इन्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६४२ पौष बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० ८८।

३८७ सिंदूर प्रकरण—बनारसीदास। पत्र संख्या-३७। साइज-८×६ इन्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित। रचना काल-सं० १६९१। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १३६।

विशेष—१८ पत्र से आगे भैया भगवतीदासजी कृत चेतन कर्म चरित्र है जो अपूर्ण है।

३८८ सुभाषितरत्न सन्दोह—अमितगति। पत्र संख्या-७२। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। रचना काल-सं० १३५०। लेखन काल-सं० १८०६ वैशाख बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन नं० २४३

विशेष—मेवात देश में सहाजहानाबाद में प्रतिलिपि हुई। अहमदशाह के शासन काल में लाल इन्द्रराज ने देवीदास के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई।

३८९ सुभाषित संग्रह । पत्र संख्या-२२। साइज-१०×४½ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१८।

श्लोक सख्या-१११ है।

३६० सद्भाषितावली—सकलकीर्ति। पत्र संख्या-२८। साइज-१०×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-स० १७७६। पूर्ण। वेष्टन न० २२१।

विशेष—अमरसिंह छाबडा ने टोंक में प्रतिलिपि की थी।

३६१ सुभाषितार्णव—शुभचद्र। पत्र सख्या-६५। साइज-११×८ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७६० भादवा बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन न० २०४।

विशेष—घमवा में ठीपचद सघी ने प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है जो सवत् १०८० की लिखी हुई है।

३६२ सुभाषितावली—चौधरी पन्नालाल। पत्र सख्या-१०५। साइज-११×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४९।

३६३ सूक्तिमुक्तावलि—सोमप्रभाचार्य। पत्र सख्या-४५। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० २०८।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। अन्तिम पुष्पिका मे टीकाकार भीमराज वैद्य लिखा हुआ है। २ प्रतियां और हैं। जो केवल मूल मात्र हैं।

३६४ प्रति न० २। पत्र सख्या-१८। साइज-१०×४½ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १५२।

३६५ प्रति न० ३। पत्र सख्या-६०। साइज-१२×६½ इञ्च। लेखन काल-स० १८६०। पूर्ण। वेष्टन न० ३१०।

विशेष—प्रति सटीक है। टीकाकार हर्षकीत्ति है।



विषय-स्तोत्र

३९६ **इष्टोपदेश—पूज्यपाद** । पत्र संख्या-५ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०५ ।

विशेष—ब्र० धर्मसागर के शिष्य पं० केशव ने प्रतिलिपि की थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३९७. **एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास** । पत्र संख्या-८ । साइज-७३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

३९८. **एकीभावस्तोत्र—वादिराज** । पत्र संख्या-४ । साइज-१०३/४×५३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८९३ वैशाख सुदी ? । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं । जिसमें एक प्रति टीका सहित है ।

३९९ **कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्र** । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६९५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३ ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है । तथा ग्रंथ कर्त्ता का नाम सिद्धसेन दिवाकर दिया हुआ है । ऋषि रामदास ने प्रतिलिपि की थी । निम्न श्लोक टीका के अंत में दिया हुआ है ।

मालवाख्ये महादेशे सारंगपुरपत्तने ।
स्तोत्रस्यार्थो कृतो नव्य छात्राय उत्तमविधा ॥

विशेष—६ प्रतियां और है जो केवल मूलमात्र हैं ।

४०० **कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा—बनारसीदास** । पत्र संख्या-८ । साइज-११३/४×६ इञ्च । भाषा-हिंदी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

विशेष—इसके अतिरिक्त पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है ।

४०१. **कुबेरस्तोत्र** । पत्र संख्या-१ । साइज-१२३/४×६३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× लेखन काल-सं० १८१४ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

४०२ **चैत्यवंदना** । पत्र संख्या-८ । साइज-७१/२×३१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८ ।

विशेष—इसके अतिरिक्त महावीराष्टक (संस्कृत) भी हैं ।

४०३ चौवीसजिनस्तुति—शोभन मुनि । पत्र संख्या-१० । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३८८ ।

विशेष—श्लोक संख्या ९८ है । प्रथम पत्र नहीं हैं प्रति प्राचीन है । इसका शासन सूत्र नाम भी है ।

४०४ चौबीसतीर्थंकरस्तवन—ललित विनोद । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६६ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२५ ।

४०५ ज्वालामालिनी स्तोत्र । पत्र संख्या-२ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८३ ।

४०६. ज्वालामालिनी स्तोत्र । पत्र संख्या-२ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६८ प्र० आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—छोटेलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

४०७ जिनसहस्रनाम—जिनसेनाचार्य । पत्र संख्या-२३ । साइज-११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १५० ।

४०८ जिनसहस्रनाम—आशाधर । पत्र संख्या-१४ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३४ ।

४०९ जिनसहस्रनाम टीका—श्रुतसागर । पत्र संख्या-१०८ । साइज-१२×५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० २५६ ।

विशेष—कुल इसमें १००० (१२३४) पद्य हैं ।

४१० जिनसहस्रनाम टीका—अमर कीर्ति । पत्र संख्या-८४ । साइज-११¾×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २५५ ।

प्रति प्राचीन है । मूल कर्त्ता जिनसेनाचार्य है । एक प्रति और है ।

४११. जखडी—बिहारीदास । पत्र संख्या-४ । साइज-६¾×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—३६ पद्य हैं ।

४१२ दर्शन । पत्र संख्या-२ । साइज-६½×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४७ ।

४१३ दर्शनाष्टक । पत्र संख्या-१। साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

४१४. दृष्टकषड्त्रिंशतिका । पत्र संख्या-३ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६० ।

४१५ देवागमस्तोत्र—आचार्य समंतभद्र । पत्र संख्या-६ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४५ ।

विशेष—श्लोक संख्या-११७ प्रमाण है ।

४१६ देवप्रभास्तोत्र—जयानंदिसूरि । पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८५८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७८ ।

विशेष—संस्कृत वृत्ति सहित है । सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४१७ निर्वाणकाण्डगाथा ... । पत्र संख्या-२ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४१८ नेमिनाथस्तोत्र—शालिपंडित । पत्र संख्या-२ । साइज १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १५२ ।

४१९. पद्मावतीस्तोत्रकवच । पत्र संख्या-२ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र एवं मंत्र शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२५ ।

४२० पंचपरमेष्ठीगुणस्तवन—पं० डालूराम । पत्र संख्या-३६ । साइज-७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३८ ।

४२१. पंचमंगल—रूपचंद । पत्र संख्या-१८ । साइज-७¾×५½ इञ्च । भाषा-हिंदी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

४२२. पार्श्वदेशान्तरछंद ... । पत्र संख्या-८ । साइज-११¾×६ इञ्च । भाषा-हिंदी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

४२३ पार्श्वनाथस्तोत्र—मुनिपद्मनंदि । पत्र संख्या-१७ से २५ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५ ।

४२४. **पार्श्वनाथस्तवन** । पत्र सख्या-१ साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६५ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० २०१ ।

४२५. **पार्श्वनाथस्तोत्र** । पत्र सख्या-१ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २०१ ।

४२६ **भगवानदास के पद—भगवानदास** । पत्र सख्या-६५ । साइज-८¾×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पद । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८०३ । पूर्ण । वेष्टन न० ८७१ ।

विशेष—१८८ पदों का सग्रह है । विभिन्न राग रागिनि यो में कृष्ण भक्ति के पद हैं ।

श्रीराग—हरि का नाम विसाहौ रे सतगुरु चोखा वनिज बनाया ।

गोविंद के गुन रतन पदारथ नफा साथ ही पाया । जनम पदारथ पाइ कै किनहूँ विरलै नेग लगाया ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह मैं मूरख मूल गवाया । हरि हरि नाम अराधि कै जिनि हरि ही सौ मन लाया ।
कहि भगवान हित रामराय तिनि जग मैं आनि कमाया ॥११२॥

विशेष—प्रत्येक पद के अन्त में "कहि भगवान हित रामराय" लिखा हुआ है । ६५ पत्र के अतिरिक्त अन्त मे ६ पत्रों में विषय वार भिन्न २ रागिनियों की सूची दी है । इसमें कुल १५३ पद तथा ४०० श्लोकों के लिये लिखा है । गोविंदप्रसाद साह के पठनार्थ रूपराम नदीश्वर के गुसाई ने प्रतिलिपि की । पदों की सूची के लेखन का सम्वत् १८२२ दिया है ।

४२७ **भक्तामरस्तोत्र—मानतुंगाचार्य** । पत्र सख्या-१६ । साइज-५¾×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १४३ ।

विशेष—१२ पत्र से कल्याण मदिर स्तोत्र है जो कि अपूर्ण है । इसी में २ फुटकर पत्रों पर सस्कृत में लक्ष्मी स्तोत्र भी है ।

विशेष—२ प्रति और है ।

४२८ **भक्तामर टीका** । पत्र सख्या-४३ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० २८३ ।

४२९ **भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—भ० रत्नचन्द्र सूरि** । पत्र सख्या-८४ । साइज-१०×८ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-स० १६६७ आषाढ सुदी ५ । लेखन काल-स० १७२५ कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० ३४६ ।

विशेष—वृन्दावती नगर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय में आचार्य कनककीर्त्ति के शिष्य प० रायमल्ल ने स्वपठनार्थ व परोपकारार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति मत्र तथा कथाओं सहित है ।

ग्रन्थकार परिचयात्मक श्लोक—

श्रीमद्‌ बडवंशमंडणमणिर्महीपेति नामा वणिक् ।
तद्भार्या गुणमंडित व्रतयुता चंपामिति नामधा ॥
तत्पुत्रो जिनपादपंकज मधुपो श्रीरत्नचन्द्रो मुनि ।
चक्रे वृत्तिमिमा स्तवस्य नितरां नत्वा श्रीवादीन्दुकम् ॥ ॥
सप्तपष्ठ्यांकिते वर्षे शोडपाख्येहि सवते ।
आपाढश्वेतपक्षस्य पंचम्यां बुधवारके ॥६॥
श्रीवापुरे महीसिन्धोस्तट भाग समाश्रिते ।
श्रोत्तुं गदुर्गसयुक्ते श्री चन्द्रप्रभसद्मनि ॥७॥
वणिन' कर्मसी नाम्नः वचनात मया व्यारचि ।
भक्तामरस्य सद्वृत्ति रत्नचन्द्रेण सूरिणा ॥८॥

४३०. भक्तामरस्तोत्र भाषा—जयचंदजी छाबड़ा । पत्र संख्या-२७ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । रचना काल-स० १८७० कातिक बुदी १२ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ७ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

४३१. भक्तामर स्तोत्र भाषा कथा सहित—नथमल । पत्र सख्या-४७ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र एव कथा । रचना काल-स० १८२९ ज्येष्ठ सुदी १० । लेखन काल-स० १८५२ सावन बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ४० ।

विशेष—यह ग्र थ लिखवाकर ब्रह्मचारी देवकरणजी को दिया गया ।

४३२. भारती स्तोत्र । पत्र सख्या-१ । साइज-१७×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० २०१ ।

४३३. भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र—भूपाल कवि । पत्र सख्या-६ । साइज-११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १६६ ।

विशेष - सस्कृत मे कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं । एक प्रति और है ।

४३४. लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मनन्दि । पत्र संख्या-१ । साइज-१०¾×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४८ ।

४३५ लघु सस्त्रहनाम । पत्र सख्या-२ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १५२ ।

४३६ विचारषडत्रिंशिका स्तोत्र—धवलचन्द के शिष्य गजसार। पत्र सख्या-४। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३५६।

विशेष—सिरि जिणहंस मुणीसर रजे धवलचद।
सिसण गजसारेण लहिआ एसा अप्प हिया ॥४२॥

४३७ विषापहार स्तोत्र—धनजय। पत्र सख्या-३। साइज-११×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३५६।

पद्य संख्या ४० है।

४३८ विषापहारस्तोत्र भाषा—अचलकीर्ति। पत्र संख्या-१३। साइज-१०½×५। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०१।

विशेष—पत्र ५ से आगे हेमराज कृत भक्तामर स्तोत्र भाषा भी है। २ प्रतियां और हैं।

४३९. विषापहार टीका—नागचद्रसूरि पत्र सख्या-२६। साइज-८½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० २१०।

विशेष—भट्टारक ललितकीर्ति के पट्ट शिष्यों में नागचद सूरि थे।

४४० विनती—अजयराज। पत्र संख्या-२। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४२५।

विशेष - दूसरे पत्र पर रविवार कथा भी दी हुई है पर वह अपूर्ण है। २३ पद्य तक है।

४४१ शत्रुञ्जय मुख मडन स्तोत्र (युगादि देव स्तवन)। पत्र सख्या-१०। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-गुजराती। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० २६६।

विशेष—ग्रन्थ मे २१ गाथाएं हैं जिन पर गुजराती भाषा मे अर्थ दिया हुआ है। अर्थ के स्थान पर "बखान" नाम दिया है।

४४२ शान्तिनाथ स्तोत्र—कुशलवर्धन शिष्य नगागणि। पत्र सख्या-४। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३६२।

विशेष—पद्य सख्या ५२ है।

प्रारम्भ—सकल मनोरथ पूरणो वाछित फल दातार।
वीर जिणेसर नायके जय जय जगदाधार ॥१॥

अन्तिम—ईय वीर जिणवर सयल सुखकर नयर वडली मडनो।
सिधुएयो भगति प्रवर युगति रोग सोग विहडनो ॥

तप गच्छ निरमल नयण दिनयर श्री विजयसेन सूरिसरो ।

कवि कुशलवर्धन नाम ए मणइ नगागणि मगल करो ॥२०॥

४४३ समवशरण स्तोत्र । पत्र सख्या-७ । साइज-११½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २०० ।

४४४ स्तुति सग्रह—चद कवि । पत्र सख्या-६ साइज-८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०४ ।

विशेष—शान्तिनाथ, महावीर तथा आदिनाथ की स्तुतियां हैं ।

दोहा—स्तुति फल तें मै ना चहू इन्द्रादिक सुरवास । चद तणी यह वीनती दीज्यो मुक्ति निवास ॥१८॥

॥ इति आदिनाथजी स्तुति सपूर्ण ॥

४४५. स्तोत्रटीका—आशाधर । पत्र सख्या-३० । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६१ कातिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६३ ।

विशेष—रायमल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

४४६ स्तोत्र सग्रह । पत्र सख्या-८ । साइज-११½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-सग्रह । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४२ ।

निम्न लिखित स्तोत्र हैं—

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	र० का०	ले० का०	विशेष
पार्श्वनाथस्तोत्र	जगतभूषण	हिन्दी	×	×	
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मनन्दि	सस्कृत	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	,,	×	×	
कलिकुण्ड पार्श्वनाथस्तोत्र	×	,,	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	,,	×	×	मंत्र सहित
चिंतामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	×	,,	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	,,	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	द्यानतराय	हिन्दी	×	×	

४४७ सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनन्दि । पत्र सख्या-८ । साइज-८½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३१ ।

विशेष—७८ प्रति और हैं ।

विषय—ज्योतिष एवं निमित्तज्ञानशास्त्र

४४८ अरिष्टाध्याय—पत्र सख्या–१० । साइज–१०३/४×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–ज्योतिष । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८५६ मगसिर बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ३३१ ।

विशेष—कुल २०३ गाथाएँ हैं । अन्त में ८ पद्य में छाया पुरुष लक्षण है । प० श्रीचद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४४६. क्षीरार्णव—विश्वकर्मा । पत्र सख्या–१८ । साइज–१२×५१/२ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष (शकुन शास्त्र) । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० ३७१ ।

४५०. चमत्कारचितामणि—नारायण । पत्र सख्या–७ । साइज–१०१/२×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८६६ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६१ ।

विशेष—सवाई जयपुर में महाराजा जगतसिंह के शासन काल में प्रतिलिपि हुई थी ।

४५१. ज्योतिषरत्नमाला–श्रीपति भट्ट । पत्र सख्या–१५ । साइज–१०×४१/२ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४६४ ।

४५२ नीलकठज्योतिष—नीलकठ । पत्र सख्या–५६ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । रचना काल–शक स० १५०१ आसोज सुदी ६ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ४६७ ।

विशेष—नीलकठ काशी के रहने वाले थे ।

४५३. पाशाकेवली—पत्र सख्या–६ । साइज–१११/२×५१/२ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ४०० ।

श्लोक सख्या ८५ है । पाशा फेंक कर उसके फल निकालने की विधि दी हुई है ।

४५४ भद्दलीविचार—सारस्वत शर्मा । पत्र सख्या–१४ । साइज–११३/४×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–ज्योतिष । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ४६८ ।

विशेष—प्रत्येक नक्षत्र तथा तिथियों में मेघ की गर्जना को देखकर वर्ष फल जानने की विधि दी हुई है । कुल ३१६ पद्य हैं ।

४५५. शीघ्रबोध—काशीनाथ । पत्र सख्या–३४ । साइज–१०×६१/२ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८६६ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६९ ।

विशेष—चतुर्थ प्रकरण तक है । श्लोक सख्या–७७ है । उदयचन्द ने स्वपठनार्थ लिपि की थी । गुटका साइज है ।

४५६ षट्पंचासिका बालावोध—भट्टोत्पल। पत्र संख्या-१५। साइज-१०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६५० वैशाख सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६३।

विशेष—मुनि नोरत्नवीर ने नदासा ग्राम में प्रतिलिपि की थी। यह ग्रन्थ कपूर विजय का था। संस्कृत मूल के साथ गुजराती भाषा में गद्य टीका दी हुई है।

प्रारम्भ—प्रणिपत्य रविं मूर्द्ध्ना वराहमिहरात्मजेन सतयशसा।
प्रश्नो कृतार्थ गहनापरार्थमुद्दिश्य पृथु यशसा ॥१॥

टीका—प्रणिपत्य कहीइ नमस्कार करी नइ सूर्य प्रति मूर्द्धा मस्तकि करी वराहमिहरज पंडित तेह आत्मज कहीइ पुत्र पृथुयत्ता एहु नर नामि प्रश्न नइ विषइ प्रश्न तीविया कृता कहीइ की धी।

४५७. संक्रान्ति तथा ग्रहातिचारफल—पत्र संख्या-१८ से ४२ तक। साइज-८×६½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७७२ माघ सुदी ४। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६७०।

विशेष—व्यास दयाराम ने प्रतिलिपि की थी।

विषय—आयुर्वेद शास्त्र

४५८ अंजनशास्त्र—अग्निवेश। पत्र संख्या-१३। साइज-११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७५८ आश्विन सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ४५१।

विशेष—श्लोक संख्या २३८ है। नेत्र संबंधी रोगों का वर्णन है। मुल्तान नगर में रामकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी।

४५६. अष्टांगहृदयसंहिता—वाग्भट्ट। पत्र संख्या-१२। साइज-११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५५०।

विशेष—सूत्र मात्र है। जयमल ने प्रतिलिपि की थी।

४६०. कालज्ञान—पत्र संख्या-१६। साइज-१०×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२७ पौष सुदी १५। वेष्टन नं० ४५८।

विशेष—श्लोक संख्या-१०० है। सहजराम ने चित्रकोट में अन्नपुराण जी के पास प्रतिलिपि की थी।

४६१. त्रिशतिकाटीका—पत्र संख्या-२० । साइज-११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५८ ।

४६२. योगशत—अमृतप्रभसूरि । पत्र सख्या-१६ । साइज-१०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८५५ श्रावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२ ।

विशेष—संपतराम छाबडा ने प्रतिलिपि की थी ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री अमृतप्रभ सूरि विरचित योगशत । सपूर्ण ॥

स० १८५५ का वर्षे शाके १७२० प्रवर्तमाने मासानामाशुभमासे दुतियश्रावणमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ षष्ठम्यां भृगवासरे लिखित सपतिराम श्रावक गोत्र छाबडा निज पठनार्थं ।

४६३. रसरत्नसमुच्चय—पत्र सख्या-१२२ । साइज-११$\frac{3}{4}$×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८१२ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५६ ।

विशेष—गुलाबचंद छाबडा ने जयपुर में भवानीराम तिवारी की प्रति से लिपि की थी ।

४६४. रससार—पत्र संख्या-८ । साइज-१०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७३६ । पूर्ण । वेष्टन न० ४५५ ।

विशेष—

प्रारम्भ—श्री गौडीपार्श्वनाथाय नम पंडित श्री ५ भावनिधानमणि सद्गुरुभ्य. नम ।

अन्त—इति श्री रससार ग्रंथ निर्विषम् अनभूतिसंग्रीहतम् बहुशास्त्रसम्मत सम्पूर्ण ।

४६५ रोगपरीक्षा—पत्र सख्या-७ । साइज-१२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ४५७ ।

४६६. वैद्यजीवन—लोलिम्बराज । पत्र सख्या-२६ । साइज-१०×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८१३ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५३ ।

विशेष—श्लोकों के ऊपर टीका दी हुई है ।

४६७. सर्वज्वरसमुच्चयदर्पण—पत्र संख्या-२६ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५२ ।



विपय–गणित शास्त्र

४६८. षटत्रिंशिका—महावीराचार्य । पत्र स्या–४५ । साइज–११×४३/४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । वषय–गणित । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६६५ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६५ ।

विशेष—सवत् १६६५ वर्षे आसोज सुदी ८ गुरौ श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्तिदेवा । तत्पट्टे भ० शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० सुमतिकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीगुणकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे वादिभूषणदेवास्तद्गुरुभ्राता ब्र० श्री भीमा तत् शिष्य ब्र० श्री मेघराज तत् शिष्य ब्र० केशव पठनार्थं । ब्र० नेमिदास की पुस्तक है ।

४६९. प्रति न० २ । पत्र सख्या–१८ । साइज–११×४१/२ इञ्च । लेखन काल–१६३२ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६६ ।

विशेष—प्रति पर छत्तीसी टीका भी लिखी है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है:—

सवत् १६३२ वर्षे जेन्ठमासे शुक्लपक्षे नवम्यां तिथौ गुरुवासरे इलाप्राकारे श्रीसमवनाथचैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टानुसरिण भ० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्री सुमतिकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य ब्र० श्री सुमतिदास लिखापित शास्त्र । भट्टारक श्री गुणकीर्त्ति शिष्य श्रीमुनिश्रुतकीर्त्ति पुस्तकं ।

विपय–रस एवं अलंकार शास्त्र

४७० इश्कचिमन—नागरीदास । पत्र संख्या–३ । साइज–११३/४×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विपय–शृंगार रस । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४३८ ।

आरम्भ—इस्क उसी की झलक है ज्यौं सूरज की धूप ।

जहां इस्क तांहां आपहि कादर नागर रूप ॥१॥

कहु कीया नहि इस्क का इस्तमाल सवार ।
सौ साहिब सू इस्क हैं करि क्यां सकै गंवार ॥१॥

अन्तिम—जिरद जदम जारी जहां नित लोहू का कीच ।
नागर आसिक लुट रहे इस्क चिमन के बीच ॥४४॥
चलै तेज नागर इफ है इस्क तेज की धार।
और कटैं नहीं वार सौ कट्टै करै रिझवार ॥४५॥

४७१ कविकुलकठाभरण—दूलह । पत्र सख्या–११ । साइज–६×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अलंकार शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ४७२ ।

प्रारम्भ—पारवती शिव चरन में कवि दूलह करि प्रीति ।
थोरे क्रम कम तें कहे अलकार की रीति ॥१॥
चरन वरन लछन ललित रचिरी क्यों करतारु ।
विन भूसन नहि भूषई कविता वनिता चारु ॥२॥
दीरघ मत सत कविन के अरथा सै लघु तरन ।
कवि दूलह याते कियौ कविकुलकठाभरन ॥३॥
जो यह कठाभरन को कठ करै सुख पाई ।
समामध्य सोमा लहै अलकृती ठहराई ॥४॥
चद्रादिक उपमान है वदनादिक उपमेय ।
तुल्य अरथ वाचक लहै धर्म एक सो लेय ॥५॥

मध्य—अप्रस्तुत वरनै प्रससा लिए प्रस्तुत की ।
पचधा अप्रस्तुत प्रससा होति चाहे तै ॥
पच्छिन में याही तें वडो है राजहस ।
एक सदा नीर छीर के विवेक अवगाह तै ॥
प्रस्तुत में प्रस्तुत को धोतन जहाई होइ
प्रस्तुत अकुर तहां वरनौ उछाह तैं ।
फूली रस रली भली मालती समीप तें
अली कनैर कली कोकले सुदेत काह तैं ॥३२॥

अन्तिम—सूरता उदारता कौ अदभुत वरनन ।
मिथ्यारुप अति उक्ति मापै सब लोग है ॥
दानि ह्वै कें जाचक हुवे रक भरे तेज ।

सूखे सिंधु तेरी रिपु रानी करि सोग्रु है ॥
नाम जोग औरे अर्थ थापिए निरूक्ति ।
सांचे गुपाल भए जो रच्यो राधे सो वियोगु है।
प्रगट निषेध को अनुकथन प्रतिषेध ।
गिर गहिवो नयो तो मानिन को मोग्रु है ॥

४७२ वैनविलास—नागरीदास । पत्र संख्या-६ । साइज-१०३/४X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-शृंगार । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७७ ।

विशेष—आरम्भ के ४ पत्रों में स्नेहसंग्राम प्रतापतेज कृत दिया है जिसके २५ पद्य हैं। इसे सं० १८६८ में छोटेलाल ठोलिया ने ३ आने में खरीदा था ॥१॥

स्नेहसंग्राम—आरम्भ—कुंडलिया—

मौं है बाकी बाकसा लखी कुंज की ओट।
समर सस्त्र विछुवा लग्यो लालन लोटहि पोट ॥
लालन लोटहि पोट चोट जब उर में लागी ।
कियो हियो दुसमार पीर प्रान्न में पागी ॥
ब्रजनिधि बाकेवीर खेत में खडे अगोहे ।
तहां घाव पर घाव करत राधे की मोहे ॥१॥

अन्तिम—नेही वृजनिधि राधिका दोउ समर सधीर
हेत खेत छाडत तही छाके बाके वीर ॥
छाके बाके वीर हथ्थ वथ्थ न मरि जुट्टे ।
दोऊ करि करि दाव घाव छिन हू नहि छुट्टे ॥
यह सनेह संग्राम सुनत चित होत विदेही ।
प्रताप तेज की बात जानि है सुघर सनेही ॥२५॥

वैनविलास—आरम्भ —

अहे बावरी बसुरिया ते तप कीनौं कौन ।
अधर सुधारस तै विमौ हम तरफत विच मोन ॥१॥

अन्तिम - मुरली मुनित में भई आसू द्रगनि विसाल ।
मुख आवै सोही कहे प्रेम विवस ब्रज बाल ॥२६॥
नागर हरहि पलाग की दारु धरी दवाय।
अंग राग बशी लपट्यो हौ चिउडी नमं काय ॥३०॥
इति श्री नागरीदास कृत वैनविलास संपूर्ण ।

४७३. **रसिकप्रिया—केशवदास** । पत्र सख्या-५६ । साइज-१२½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-शृ गार । रचना काल-X । लेखन काल-स० १७३३ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६८ ।

विशेष—पद्य सख्या-५२४ हैं । मिश्र श्रामानेरी वाले ने धसवा में प्रतिलिपि की थी । स्वामी गोविंददास की पोथी से प्रतिलिपि हुई थी । स० १८६८ माह सुदी ६ को छोटेलाल ठोलिया मारोठ वाले ने सवाई जयपुर में १॥) रू० निछरावलि देकर यह प्रति खरीदी थी ।

४७४. **शृंगारतिलक—कालिदास** । पत्र सख्या-४ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-शृ गार । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४०६ ।

विशेष—२३ पद्य हैं ।

४७५ **शृगारपच्चीसी—छविनाथ** । पत्र सख्या-६ । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-शृ गार । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७५ ।

प्रारम्भ—कोकिल न हो हिये मतंग महा मस्तक कै ।
वात मानु मत्र की वताई मली वस्त है ॥
फूलै न पलास लाल पौष श्राइ फैलि गये ।
जग चहुंधा राखिवे को वडी दस्त है ॥
मेरी समझाई हिल मिल प्यारी पीतम सौं ।
कानि काम भूपति की मान वो प्रस्त है ॥
कहै छविनाथ श्राज वकसीय सत छेडि ।
मान गड पस्त करिवे की क्री करत है ॥१॥

अन्तिम—छाडि मकरद कमलन के मरंद भई पाइ कै ।
सुगध जाको हरत न टारै है ॥
खजन चकोर मृग मीन सेदखत जाहि ।
चौकत से जहां तहां छपत निचारै हैं ॥
कहै छविनाथ छवि अगन की देखि ।
जासों हारि गई तिलोत्तमा जाने जग वारे हैं ॥
प्यारे नद नदन तिहारे मुख चद पर ।
वारि वारि डारे वहि नैनन के तारे हैं ॥२५॥

दोहा—माधव नृप की रीझ को कवि छविनाथ विसाल ।
कीन्हे रस शृ गार के कवित्त पच्चीस रसाल ॥२६॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज श्री माधवेश प्रसन्नता व्यवस्थापक गोविंददासात्मज कवि छविनाथ विरचिता शृंगारपच्चीसी सौंमते ॥ विजैय नाम सवत्सरे दक्षिणायणे हेमत ऋतौ पौषमासे शुक्लपक्षे द्वितीया शुक्रवासरे लिखितमिंद पुस्तक।

महाराजा माधवसिंह के प्रसन्न करने को गोविंददास के पुत्र छविनाथ ने रचना की थी।

४७६. हृदयालोकलोचन—पत्र सख्या-१६। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-अलंकार। रचना काल ×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन न० ४७८।

स्फुट-रचनायें

४७७. अकलनामा—पत्र सख्या ३। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-स्फुट। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन न० ४८२।

४७८. अक्षरबत्तीसी—मुनि महिसिंह। पत्र सख्या-२। साइज-९½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-स्फुट। रचना काल-स० १७२५। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १९९।

विशेष अन्तिम पद्य—

सतरइसई पच्चीस सवत् कीयो बखाण।
उदयपुर उद्यम कीयो मुनि महसहि जाण॥

४७९. ज्ञानार्णव तत्वप्रकरण टीका—पत्र संख्या-१०। साइज-१०½×६¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-योग। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ३१२।

४८०. गोरसविधि—पत्र सख्या-४। साइज-९½×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ७१।

४८१. गोत्रवर्णन—पत्र संख्या-१०। साइज-६×३ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-इतिहास। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १८४।

विशेष—गोत्रों के नाम दिये हुये हैं।

४८२ **चौरासी गोत्र**—पत्र सख्या-१। साइज-२१½×१० इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८९२। पूर्ण। वेष्टन नं० १८४।

विशेष—खण्डेलवालों के चौरासी गोत्रों के नाम हैं।

४८३. **चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन—नन्दनन्द**। पत्र सख्या-१२। साइज-६×३½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य विषय-इतिहास। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८८६। पूर्ण। वेष्टन न० १८४।

विशेष—पद्य सख्या-१११ है। खण्डेलवालों के ८४ गोत्रों की उत्पत्ति का वर्णन है।

प्रारम्भ दोहा—श्री युगादि रिसमादि गुण, सरण श्राय गुण गाय।
श्रावक वंस सुग्रंथ रचि श्रतुल सु सपति थाय ॥१॥
वैस्य वरण मैं उच्य पद, धर्म दया कौ पामि।
श्रय कल्यान श्रावक प्रगट, रच्ये गोत्र कुल ग्राम ॥२॥

छद—श्रावक व्रत तीर्थ कर सेय सुच्यारहि वर्ण सु पालत है।
च्यार ही वर्ण सुकर्म क्रिया तव मुक्ति गया सु मालत है॥
श्रीवरवर्द्ध सु मान्य सु स्वामी जु मुक्ति गया सुभ तालत हैं।
फेर सुवर्स छह सतीयासिंह वा तव मुनि प्रगटालत है।

चौपाई—श्रपराजित मुनि नाम सुस्वामी। थान सीघाडा मध कहामी॥
श्रपराजित मुनि तप सु प्रमाक। जिणसेनाचार्य सु भये ताक॥
श्री जिणसैनचार्य तव होये। सवत येक साल मध्य जोये॥
जिणसैनाचार्य सु मध्य सारा। छह सात मुनि काजु सिधारा॥
प्रभु पदम पद्म ध्यान तहां धर्ता। श्री जिण जोग रटण मुनि कर्ता॥
फिर श्रवसर इक श्रसहु श्राया। ग्राम खडेला वन मधि श्राया॥
मुनिहुँ पाच सह पक्षावलि तह। भूत भवपित वर्त ज्ञान लह॥
मूनी सकल सुनि मुनि की वानी। हैगौ यह उपसर्ग विछानी॥
होनहार उपसर्ग श्रठही। होनहार नहि मिटै कठही॥
सावधान मुनि ध्यान सुहावा। जोग सु ध्यान समर्थ सु जूवा॥
ग्राम लगै चतुरासि खडेलै। ताहां इक विघ्न मरी उपजेलै॥
ताहां नरनारी वहुत श्रति होये। ताहां नृपति चौंता उपजोये॥
तवै नृपति सब वीप्र वूलाये। विघ्न मिटै सो करो दुजोये॥

तब इक वीप्र कही सुणि राउये । नरहि मेध को जज्ञ कराज्ये ॥
तब उह न्रपति वाक्य सत्य कीन्हों । नरहि मेध सायत रचि दीन्हो ॥
नर सब चौरासी के श्राए । बध्यो विघ्न ताहा वहोत कहाये ॥
दुज्य कहि न्रपति मनुष सत चाहे । मिटै विघ्न यह होन कराहे ॥
ताहा मुनी तप करै सु त्याक्ष । पकडि मंगाय होन किये ज्याक्ष ॥
हाहाकार वोहोत तहां होयो । न्रपति दुष्टतै काहा कर थोयो ॥
तब वाहा मुनिराज सब आये । जैनसैन आचार्य ताहाये ॥
वडा वडा सब मुनि का स्वामी । जोग ध्यान श्री अंतरयामी ॥
नगर सुफल सध्यान लगायो । चक्रेसुरी सु जाप जजायो ॥
बहुरी गुडो जिन थापन कीनो । शांत भई न्रप ग्यान उपीनो ॥
तब आय न्रप बंदन कीनी । छमा करो अपराध मुनीनी ॥
न्रपति कहै मुनिराज दयाल । विघ्न मिटै सो करो कृपाल ॥
न्रप सु कही मुनी सर वानी । लग्यो पाप मानुष को थानी ॥
स्व आतम क्रत नींदत राजा । पर्‍यो पाय मुनि के ज्ञ समाजा ॥
कही भूप मम अघ मेटो । तुम पारस्य मुनिराज सु मेटो ॥
कही मुनि सुनि हे न्रप राजा । श्री जिणधर्म सर्ण तुव आजा ॥
दया रूप जिण धर्म प्रकासा । मिटे पाप बुधि निर्मल मासा ॥
श्रावक धर्म न्रपति मुनि लीन्हों । मीटे पाप निर्मल अग तीन्हों ॥
नगर खडेल गांव बयासी । बव्या छा छत्री त्या वासी ॥
द्वय सुनार बव्या छा त्याही । कही भूप ये दोउ व्याही ॥
दोउ कैसु दीहाडी न्यारी । श्रावक धर्म मूल सुखकारी ॥
इक कही श्रामणी देवी । दूजा कसु मोहणी तेवी ॥
चोरासी सुगोत्र श्रावक का । नीकै रचौ मली बुधि सुखका ॥
गोत्र वस अरु नाम की हाडी । जिणसु धर्म तरु नीकी वाडी ॥

अन्तिम—सवत १८ सह गिनो अन्दनीवासी साल ।
चैत क्रम्न तेरसि गुरु सुम ग्रथ पूर्णाल ॥ १०९ ॥
मन वछित पठियो सुनै कुल श्रावक गुणसार ।
नंद नद देदत सुख, न देखा सिर मार ॥ ११० ॥

इति श्री ग्रंथ श्रावक गोत्र गुण सार नद नद रचिते सपूर्ण । सुभ ॥

लीखी गणेश लाल कवी स्वतं कृत । लिखायत राज्य श्री चपाराम का नद चिरजीव ।। पुत्र पौत्र कुल वृद्धि सुख सपति फल प्राप्ती सत्येव वाक्य ।। १११ ।।

४८४ **जैनमार्तण्डपुराण—भ० महेन्द्र भूषण** । पत्र सख्या—१०२ । साइज—१२×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त एव आचार । रचना काल—× । लेखन काल—स० १८५३ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० १६७ ।

विशेष—भ० महेन्द्रभूषण ने प्रतिलिपि कराई थी । ग्रन्थ का दूसरा नाम कर्म विपाक चरित्र भी है ।

प्रारम्भ —अखडात्मप्रज्ञानलजनित: तीव्रातिशयितज्वल. ।
ज्वालावलीनिचय परिदग्धाखिलमल ॥
महासिद्ध: सिद्धै कृतचरणपकेरुहनुति ।
महावीरस्वामी जयति जगतां नाथ उदत ॥१॥
अन्तिमस्तीर्थंकरो महात्मा महाशय शीलमहांवुराशि ।
नमोस्तु तस्मै जगदीश्वराय श्रीमन्महावीरजिनेश्वराय ॥२॥

अन्तिम पुष्पिका—इति श्रीमज्जैनमार्तंडमहापुराणे श्रीमद्भट्टारक जिनेन्द्रभूषण पट्टाभरण श्री भट्टारक महेन्द्रभूषण द्वितिय नाम कर्मविपाक चरित्र कृते चित्रांगदादि मोक्षप्राप्तवर्णनो नवमोऽधिकार समाप्तोयग्रंथ ॥

४८५. **नदवत्तीसी—हेमविमल सूरि** । पत्र संख्या—४ । साइज—१०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । रचना काल—स० १५६० । लेखन काल—स० १६ ॰ ॰ । पूर्ण । वेष्टन न० २०४ ।

प्रारम्भ—गाथा—
आगमवेदपुराणमग्गे अजकवति कवीयण तं शारद तुह पसायउ ।

दूहा—पहिलउ प्रणमउ सरसती, जगवति लील विलास ।
श्री जिणवर शंकर नमु मांगु वुद्धि पयास ॥१॥
आपीय अविरल वुद्धि घण जन मन रंजन जेह ।
नद वत्तीसी जे सुणउ चरीयर चपुरि तेह ॥२॥
नयरागर अहि ठाण जे तेह तणा वोलेस ।
नंद वत्तीसी चुपई एहज नामठ व्योस ॥

चौपई—पुर पाडलीय नगर अभिराम । पुहवि प्रगटउ जेह तु नाम ॥
वरण वरण वसि तहां लोक । जायस जाण तणा तिहा थोक ॥
सजल सरोवरनि वन खड । राजा लोक न लेवि दड ॥
गद मढ मदिर मैडी पोलि । चुरासी चहुटा नीरा डलि ॥

अन्तिम—हीयडि अति ऊमाहु करी । नदरायनु बोल्यु चरी ॥

सुण विनोद कथा चुपई । नद वत्तीसी चुपई ॥५१॥

तप गछ नायक एह मुणिंद । जय श्री हेम विमल सूरंद ॥

ज्ञान सील पडित सुविचार । तास सिस्य कहि येह विचार ॥

सवत १५ साठा मझार । चैत सुदि तेरसि वार ॥

जे नर विदुर विसेष सुणि । मुनिवर कुल सघ भणि ॥

भणतां गुणतां लहीर बुद्धि वुद्धि सयल काज त्री सिद्धि ॥

ववुधि फलीइ वछित सदा नितु नवर सपदा ॥१५४॥

॥ इति विनोदे नंद वत्तीसी चुपई समाप्त ॥

सवत् १६ श्रीमत् काष्ठासघे नदीतट्टगच्छे विद्यागणे भ० रामसेनान्वये तदाम्नाये भ० उदयसेन तत्पट्टे भ० श्री त्रिभुवनकीर्त्ति तत्पट्टाभरण वादिगजकेसरी उभयभाषाचक्रवर्ति भ० श्री रत्नभूषण नरसिंह पुरा ज्ञातीय सांपडीया गोत्रे सा० योगा भार्या विनादे सूत ब्रह्म श्री वछराज तत्सिष्य ब्र० श्री मगलदास ।

४८६. **दशस्थानचौवीसी—द्यानतराय** । पत्र सख्या-७ । साइज-८×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन न० १२५ ।

विशेष—चौवीस तीर्थकरों के नाम, माता पिता के नाम, ऊचाई, आयु आदि १०, वातों का वर्णन है ।

मीठालाल शाह पावटा वाले ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४८७. **समयसार कलशा—अमृतचद्र** । पत्र सख्या-१४ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २८८ ।

४८८ **पद्मनन्दिपचविंशतिका—पद्मनदि** । पत्र सख्या-५६ । साइज-११½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १ ।

विशेष—१०५ से आगे के पत्र नहीं हैं । २ प्रतियां और हैं ।

४८६ **पचदशशरीरवर्णन** – पत्र सख्या-१ । साइज-११½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्फुट । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७५ ।

४६० **प्रतिक्रमण सूत्र** · · । पत्र सख्या-४ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४१० ।

४६१ **प्रशस्तिका**—पत्र सख्या-१६ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विविध । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४२३ ।

४९२. फुटकर गाथा—पत्र संख्या-२ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० ६२५ ।

४९३. बारहव्रतोद्यापन (द्वादस व्रत विधान)—पत्र संख्या-५ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७ ।

४९४ बारहखडी—सूरत । पत्र संख्या-१६ । साइज-७¾×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

४९५ भावनाबत्तीसी—अमितिगति । पत्र संख्या-३ । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चितन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६१ ।

विशेष—पद्य संख्या ३३ है।

४९६. मानवर्णन—पत्र संख्या-५ । साइज-१०⅞×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्फुट । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २२२ ।

४९७. मालपचीसी—विनोदीलाल । पत्र संख्या-४ । साइज-६½× इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९०४ पौष सुदी ११ । अपूर्ण वेष्टन नं० १८४ ।

४९८. सास बहु का झगडा—देवाब्रह्म । पत्र संख्या-१ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-समाज शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३८ ।

विशेष—देवाब्रह्म यो देखि समामो ढाल वरणई सार । मात पिता की सेवा कीज्यो कुलवता नर नारी ॥१७॥ सांची बात कहू छू जी ॥

५०० लीलावती—पत्र संख्या-८ । साइज-१०⅞×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-गणित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६२ ।

विशेष—संक्रमण सूत्र तक दिया हुआ है ।

५०१. स्नानविधि—पत्र संख्या-४५ । साइज-८⅞×३½ इञ्च । भाषा-प्राकृत संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४ ।

प्रति प्राचीन है ।

५०२ समस्तकर्मसन्यास भावना—पत्र संख्या-७ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८६ ।

श्लोक संख्या-१३३ है ।

५०३. स्तवन—पत्र संख्या-१ । साइज-१०½×५½ इन्च । भाषा-फारसी । लिपि-देवनागरी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४७ ।

विशेष—अदालत में मुकदमा पेश होने का पूरा रूपक है । जिस प्रकार अदालत में अर्ज की जाती है ठीक उसी तरह भगवान से प्रार्थना की गई है ।



गुटके एवं संग्रह ग्रन्थ

५०४. गुटका नं० १—पत्र संख्या-२७५ । साइज-११×५ इन्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-सं० १८५३ । पूर्ण ।

मुख्य रूप से निम्न पाठों का संग्रह है—

(१) व्रत विधान रासो—संगही दौलतराम । पत्र संख्या-१ से २२ । भाषा-हिन्दी । रचना काल-सं० १७६७ आसोज सुदी १० । लेखन काल-सं० १८३८ आसोज सुदी ३ । पूर्ण ।

प्रारम्भ—प्रथम सुमिरो स्वामी वृषभ जिनंद, आदि तीर्थंकर सुख के जी वृंद ।
तो नमो तिर्थंकर बीस है, नमो सनमति सदा सिव सुखधाम ।
नमो परमेष्ठी जी पंच पद, ता सुमिरें होय सुख अभिराम ।
तो बरत करौ भवि जैन का ।। १ ।।

रस ओजली—अहो तप रस ओजली मास वैशाख, सुक्ल तीजसों जी करि अभिलाष ।
तो व्रत चौईस अति निर्मला, तीन रस ओजली जल मन भाय ।।

बहुरी जल लेन सख्या नही, ईसु चढाई जे जिन पद जाप ॥
तो वरत करौ भवि जैन का ॥ १४१ ॥

अन्तिम पाठ—अहो बूदी जी नग्र हाडा तनौ थान, राज करै बुधसिंह कुल भानु ।
पोन छत्तीस लीला करै, गढ अरु कोट वन उपवन वाय ।
महल तलाव देवल छत्रां, श्रावण धर्म चलै बहु भाय ॥ तो वरत० ॥
अहो जगत कीरति भट्टारक परमान, मूल सघी सरस्वती गच्छ जान ।
तो कुदकुदा मुनि पाटई, ब्रह्मचार आचारिज पडित भाय ॥
और आरयिका जी सग मैं, मानत श्रावग यह अमनाय ॥ तो० ॥
अहो पार्श्वनाथ चैत्यालौ जी गाय, तहां पंडित तुलसी जी दास रहाय ।
तो सास्त्र समूह विद्या घणी करइ, निरतर धर्म दिद्राव सुख स्यों काल पूरण करै ।
तास चरचा रचि गंथ पसाव ॥ तो० ॥
अहो साह मामां सुतधर धनपाल, ताकौ चतुरभुज रूप दसाय ।
तो सुत दौलतिराम हुव कछुयक, जिन गुण कहि अभिराम ॥
वरत विधान रासौ रच्यौ, ताकै पुत्र हरदैराम सदाराम ॥ तो० ॥
अहो पाटणी गोत परसिद्ध मही मांहीं, खडेलवाल जिन म तिय कहांहि ।
तो श्रावग धर्म्म मारग मालै, करहि चरचा जिन वचन विलास ।
ओन वर्म नही ऊचरै, सहु परिवार बूदी गढ वास ॥ तो० ॥

× × ×

अहो सवत् सतरासै सत सठि लीन, आसोज सुक्ल दशों दिन परवीन ॥
तो लगन मुहुरत सुभ घरी वार, गुरु वार नक्षत्र जो ता मांहि ॥
ग्रथ पूरण भयो भविय सबोधन यह उपयोग ॥
अहो दोय सें इक्स्या जी छद निवास, सातसै पचास सख्या तास ॥
तो एक सौ इकसठि तामै तप कह्या, दौलतराम विविध बुरणाय ॥
भवि करि मन वच काय सौं, अनुक्रम सुर सुख शिव पद पाय ॥ २८१ ॥

॥ इति श्री व्रत विधान रासो सगही दौलतराम कृत सपूर्ण ॥

(२) १५८ व्रतों के नाम – पत्र सख्या २३–२४ ।

(३) पूजा स्तोत्र सग्रह—पत्र सख्या-१ से २५१ तक ।

विशेष– ६३ प्रकार के पाठ व पूजा स्तोत्र आदि का सग्रह है । गुटका के कुल पत्रों की सख्या २७५ है ।

४०५. गुटका न० २—पत्र सख्या-२४ । साइज–८¾×६ इश्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं। एव मंत्रों का सकलन है। सभी मंत्र आयुर्वेद से सम्बन्धित हैं। स्तोत्र आदि भी हैं।

५०६. गुटका नं० ३—पत्र संख्या-२८। साइज-७×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—नित्य नियम पूजा पाठ हैं।

५०७ गुटका नं० ४—पत्र संख्या-६० | साइज-६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

निम्न पाठों का संग्रह है —

(१) ज्ञानसार—रघुनाथ। पत्र सं० १ से ३८। भाषा-हिन्दी। पद्य संख्या-१७०।

प्रारम्भ - छप्पय छद—

गनपति मनपति प्रथम सकल शुभ फल मगलकर।
सरसति अति मति गूढ देत आरूढ हस पर॥
निगम धरन जग भरन करन लगि चरन गगधर।
अमर कोटि तेतीस कहत रघुनाथ जोरकर॥
भवि तिरन हरन जामन मरन सरनि जानि इह देह वर।
श्री हरि पद को पाऊ गुननि गाऊ मन वच काय कर॥१॥

दोहा—हरि दरसावन सब सुखद अघ हर ज्ञान उदोत।
गगनीर गुरु के चरन छुवत सुचि गति होत॥२॥
तुम सर्वज्ञ दयाल प्रभु कहो कृपा करि बात।
अनत रूप हरि गति अलख लखे कौन विधि जात॥३॥
तव अपनो जन जानि मन मानि करी प्रतिपाल।
स्वै दयाल तिह काल कर बोले वचन रसाल॥४॥

सत दशा वर्णन सवैया—

जग सौं उदास मन वास किये नास मन, धारत न आस रघुनाथ यों कहत है।
क्रोधी से न क्रोध, न विरोधी से विरोध, नहिं लोभी सौं प्रमोध नित ऐसे निवहत है॥
जीव सकल समानि समझै न कछु अनुराग दोग, अभिमान भ्रम तो देहत है।
ज्ञान जल मजन मलीन कर्म भजन कै, राचै है निरजन सो, अजन रहत है॥१०६॥

× × ×

अमल रूप माया मिल्यो मलनि भयो सब ठांव।
सोनों सोनों संग तें भूषन नाना नांव॥१४३॥

विन जानै वहु दुख है जांनै तें उडि जात ।
तीन काल में एक रस सो निज रूप रहात ॥१८७॥
गृह त्यागी रागी नही, मागी भ्रम जग प्रीति ।
हरि पागी जागी सुबुधि इह वैरागी रीति ॥२०७॥

अन्तिम पाठ—ऐसो हरि को निज धर्म सुनि मन भयो हुलास ।
तातै इह भाषा करी लघु मति राघो दास ॥२६४॥
गुनी मुनी पडित कवि चतुर विवेकी सोध ।
कियो ग्रन्थ उनमान विधि छिमा सकल अपराध ॥
वक्ति जुक्ति तुक छद गति भाव वरन गन हीन ।
इक गुन हरि को गुन वरन तातै गुन्यौ प्रवीन ॥२६६॥
सतरसै चालीसत्रिय सवत् माघ अनूप ।
प्रगट भयो सुदि पचमी ज्ञान सार सुख रूप ॥२६७॥
सुनत गुनत जे ज्ञान सत नसत अस्त भ्रम रूप ।
मन नावत गावत निगम पावत ब्रह्म सरुप ॥२६८॥
सुत्र अपार अधार सब सोखन सकल विकार ।
पार करत ससार सर महासर को सार ॥२६९॥
राघव लाघव केरि करि कहत सव सतन सौ जुक्ति ।
अमै दान द्यो जानि जन सत सग हरि भक्ति ॥२७०॥
॥ इति ज्ञानसार रघुनाथ सा० कृत संपूर्ण ॥

(२) गण भेद—रघुनाथ साह । पत्र सख्या ३ । भाषा–हिन्दी पद्य विषय–छद शास्त्र (पत्र ३४ से ३७ तक) । पद्य सख्या–१५ । पूर्ण ।

प्रारम्भ—गवरिनद आनन्द कर विघन घाय वहु भाय ।
आदि कावि के राज कवि मगल दाय मनाय ॥१॥
प्रथम चरित्र व्रजराज के गाय सु मन वचकाइ ।
जन्म सुधारिउ धारि कुल कल मल सकल नसाइ ॥२॥
हरि गुन भेद विना अमल फल दुह लोक अपार ।
रहन सकत नर कवित्त विनि तिन मधि विवधि विचार ॥३॥

मध्य भाग दोहा—अष्ट गणागण अमरफल अशुभ च्यारि शुभ च्यारि ।
राधव भनि कवि राज सुनि धरहु विचारि विचारि ॥१०॥

अन्त भाग —सुणत गुणत गण भेद कौं रघा प्रकासत ज्ञान ।
हर जस कवि रस रीति कौं पावत सकल सुजान । १५॥
॥ इति श्री रघुनाथ साह कृत गण भेद सपूर्ण ॥

विशेष—छद शास्त्र की सक्षिप्त रचना है किन्तु वर्णन करने की शैली अच्छी है ।

(३) नित्य विहार (राधा माधो) रघुनाथ—पत्र सख्या-५ । भाषा-हिन्दी पद्य । पद्य स० १६ । पूर्ण ।

आरम्भ—छद चरचरी राजत व्रज रूप अग अग छवि अनूप ।
निरखि लजत काम भूप वहु विलास भीनैं ॥
रत्न जटित मुकट हारक मनि अमित वरन ।
कुडल दुति उदित करन तिमर हरत छीनैं ॥१॥
माल तरल तिलक लसत भौहै जुग अग रिसत ।
नैन चपल मीन चिसत नाशा शुक मोहै ॥
कुद कली दसन रसन वीरी जुत मंद हसन ।
कल कपोल अधर लोल मधुर वोल सोहै ॥२॥

अन्तिम—जे जन अघ नाम रटत मगल सव सुपनि जटत ।
अघ कटित जम जार फटित जगत गीत गावैं ॥
श्री वाल नित्य विहार आनद तउर जे उदार ।
राघो भय होत पार प्रेम भक्ति पावैं ॥१६॥
॥ इति राधो माधो नित्य विहार सपूर्ण ॥

विशेष रचना शृ गार रस की है ।

(४) प्रसग सार—रघुनाथ । पत्र सख्या-४३ से ५८ तक । भाषा-हिन्दी पद्य । पद्य सख्या-१६० । रचना काल-स० १७४६ माघ सुदी ६ । पूर्ण ।

प्रारम्भ—एक रदन राजत वदन गन मगल सुख कद ।
राघव रिधि सिधि वुधि दे नव निस गवरी नद ॥१॥
वांनि गति वांनीनतै व्यास वखानी जात ।
हरि मांनी रांनी सकल वर दानी जग मात ॥२॥
गुरु सत गुरु तीरथ निगम गगादिक सुख धाम ।
देव निदेव रखो सुमनि पूरत सवके काम ॥३॥

सीस नाय सब गाय हो राघो मनि इह रीति ।
सकल देव की सेवकों फल हरि पद सौं प्रीति ॥४॥

अंतिम पाठ—निस दिन रचि पचि भरत सठ सबको इह उनमान ।
सकल जांनि मन जांनि मन राधा भजो भगवान ॥१५६॥
भजनि भजै तिन तैं भजै पाप ताप दुख दानि ।
भागवत भगवत जन ग्यान वत सो जानि ॥१५७॥
सब सुख जुत सु दर सुमत सतरासैं गुनचास ।
कीयो माघ सुदि पचमी सार प्रसग प्रकास ॥१५८॥
रग रग बहु अग के वरने विवधि प्रसग ।
सुनै गुनै सुख मे सनै अति रति ह्वै सतसग ॥ १५६ ॥
अग उधारत गग ज्यों मलिन कर्म करि मग ।
उक्ति जुक्ति हरि भक्ति ह्वै समझै सार प्रसग ॥ १६० ॥

॥ इति श्री रघुनाथ साह कृत प्रसगसार सपूर्ण ॥

विशेष —रचना सुभाषित, उपदेशात्मक एव भक्ति रसात्मक है ।

५०७. गुटका न० ५—पत्र सख्या–८० । साइज–८½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण ।

विशेष—केवल नित्य नियम पूजा पाठ हैं ।

५०८ गुटका न० ६—पत्र सख्या–२५ । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–स० १६६३ भादवा बुदी १० । पूर्ण ।

विशेष—बारह भावना, इष्ट छत्तीसी भाषा, भक्तामर भाषा, निर्वाणकांडभाषा एव समाधिमरण आदि पाठों का सग्रह है ।

५०६ गुटका न० ७—पत्र सख्या–५४ । साइज–८½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–स० १८३६ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—रामचन्द कृत चौवीस तीर्थ करों की पूजा है ।

५१० गुटका न० ८—पत्र सख्या–२३ । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण ।

(१) वैराट पुराण—प्रभु कवि । प्रारम्भ के पत्र नहीं है ।

विशेष—प्रभु कवि चरणदासी सम्प्रदाय के है ।

अन्तिम पाठ—कांछ मिले ते पड कहाये, रुधिर अ उटी पीछे भरकायै।
कवन पवन तें वाक उचारा, कवन पवन के रहैय अधारा।
याकौ भेद बतावो मोय, प्रभु कहे गुरु पुछू तोय ॥ ॥

(२) आयुर्वेद के नुसखे—भाषा–हिन्दी। पूर्ण।

५११. गुटका न० ६–पत्र सख्या-२७। साइज-६×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण।

विशेष—यत्र चिन्तामणि के कुछ पाठ हैं।

५१२. गुटका न० १०—पत्र सख्या-३४। साइज–६×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी लेखन काल–×। पूर्ण।

विशेष—भक्तामर आदि पाठ एव पूजा सग्रह है।

५१३ गुटका न० ११–पत्र सख्या-७१। साइज–८½×५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण।

विशेष—प्रथम तत्वार्थ सूत्र है पश्चात् पूजाओं का सग्रह है।

५१४. गुटका न० १२—पत्र सख्या-। साइज–१०½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पद	कबीरदास	हिन्दी	
(२) शब्द व धातु पाठ सग्रह	—	सस्कृत	पत्र ५५ तक
(३) लक्षण चौबीसी पद	विद्याभूषण	हिन्दी	
(४) षोडशकारणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	हिन्दी	पद्य स० ३७

प्रारम्भ—श्री जिनवर चोवीस नमु, सारद प्रणमी अघ निगमु।
निज गुरु केरा प्रणमु पाय, सकल सत वदत सुख पाय ॥ १ ॥
षोडश कारण व्रतनी कथा, भांखु जिन आगम छे यथा।
श्रावक सुण जो निज मन शुद्ध, जे थी तीर्थंकर पद वृद्ध ॥२॥

अन्तिम भाग—जे नर नारी ए व्रत करे, तें तीर्थंकर पद अनुसरे।
इह भवि पावे रिद्धि अपार, पर भव मोक्ष तणो अधिकार ॥
पामे सकल भोग सयोग, टले आपदा रौरव रोग।
श्री भूषण गुरु पद आधार, ब्रह्म ज्ञान सागर कहे सार ॥३७॥

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(५) दशलक्षण व्रत कथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	हिन्दी	पद्य स० ५५

प्रारम्भ—प्रथम नमन जिनवर नें करू, सारद गणधर अनुसरू ।
दश लक्षण व्रत कथा विचार, भाखु जिन आगम अनुसार ॥१॥

अन्तिम पाठ—ए व्रत जे नर नारी करे, विर्गेते भव सागर तरे ।
सकल सौख्य पावे नव निद्ध, सर्वारथ मन वांछित सिद्ध ॥५४॥
भट्टारक श्री भूषण धीर, सकल शास्त्र पूरण गभीर ।
तस पद प्रणमी बोले सार ब्रह्म ज्ञान सागर सुविचार ॥५५॥

(६) रत्नत्रय व्रत कथा	ब्र० ज्ञानसार	हिन्दी	—
(७) अनन्त व्रत कथा	"	"	—
(८) त्रैलोक्य तीज कथा	"	"	—
(९) श्रावण द्वादशी कथा	"	"	—
(१०) रोहिणी व्रत कथा	"	"	—
(११) अष्टाह्निका व्रत कथा	"	"	—
(१२) लब्धि विधान कथा	"	"	—
(१३) पुष्पांजलि व्रत कथा	"	"	—
(१४) आकाश पचमी कथा	"	"	—
(१५ रक्षा बधन कथा	"	"	—
(१६) मौन एकादशी व्रत कथा	"	"	—
(१७) मुकुट सप्तमी कथा	"	"	—
(१८) श्रुतस्कध कथा	"	"	—
(१९) कोकिला पचमी कथा	"	"	स० १७३६ चैत्र सुदी ६ रविवार को सूरत में ब्रह्म कनकसागर ने प्रतिलिपि की थी।
(२०) चदन षष्ठी व्रत कथा	"	"	—
(२१) निशल्याष्टमी कथा	"	"	—
(२२) सुगध दशमी व्रत कथा	"	"	—
(२३) जिन रात्रि व्रत कथा	"	"	—
(२४) पल्य विधान कथा	"	"	—

(२५) जिनगुनसपति व्रत कथा	"	"	—
(२६) आदित्यवार कथा	"	"	—
(२७) मेघमाला व्रत कथा	"	"	—
(२८) पंच कल्याण बडा	—	"	—
(२९) " " "	—	"	—
(३०) परमानद स्तोत्र	पूज्यपाद स्वामी	सस्कृत	

प्रारम्भ—परमानद सयुक्तं निर्विकारं निरामय ।
ध्यानहीना न पश्यन्ति निजदेहे व्यवस्थित ॥१॥

(३१) वर्द्धमान स्तोत्र	—	सस्कृत	—
(३२) पार्श्वनाथ स्तोत्र	राजसेन	"	—
(३३) आदिनाथ स्तवन	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	

स्वामी आदि जिणद, करू वीनती आपणीय । तु जग साचो देव त्रिभुवन स्वामी तू धणी ए ॥१॥
लाख चोरासी योनि थावर जगम हू भम्यो ए । तुहु न लाधो छेह ससार सागर तेह तणो ए ॥२॥
चिहु गति ससार मांहि पाम्या दु खमि अति घणा ए । जामन मरण वियोग, रोग दारिद्र जरा तेह तणाए ॥३॥
क्रोध मान माया लोभ इन्द्रि चोरेंहु मोलव्योए । राग द्वेष मद मोह-मयण पापी घणु रोलव्योए ॥४॥
कुदेव कुगुरु कुशास्त्र मिथ्या मारग रंजियुए । साचो देव सुशास्त्र सह गुरु वयण नमे दीयुए ॥५॥
सजन कुटुब ने काज कीधा पापमि अति घणाए । ते पातिकनीवार जिनवर स्वामी अम्ह तणा ए ॥६॥
तु माता तु बाप, तु ठाकुर तु देव गुरु । तु बांधव जिन राज, वांछित फल हवे दान कर ॥७॥
हवें जो तुम्हे जग देव करम निवारो अम्ह तणाए । भवि भवि तुम्ह पाय सेव गुण आयो स्वामी अम्ह घणां ए ॥८॥
सकलकीरति गुरु वदि, जिनवर विनति जे भणेए । ब्रह्म जिणदास भणेसार, मुगति वरांगना ने वरे ए ॥९॥

(३४) चउवीस तीर्थकर विनती	ब्रह्म तेजपाल	"	—
(३५ जिनमगलाष्टक	—	सस्कृत	—

५१५ गुटका न० १३ – पत्र सख्या–२८ । साइज–६×६½ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण ।

विशेष – नित्य नियम की पूजाऐं हैं । ये पूजाऐं बाल सहेली जयपुर में प्रत्येक शुक्रवार को होती थी ।

५१६. गुटका न० १४—पत्र सख्या–११ । साइज–६×६½ इन्च । भाषा–सस्कृत लेखन काल–स० १९८२ भादवा सुदी १० । पूर्ण ।

विशेष—सुगन्ध दशमी व्रतोद्यापन का पाठ एवं कथा है ।

५१७. गुटका न० १५ – पत्र सख्या–१६२ । साइज–४×६½ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण

विष-सूची	कर्त्ता का नाम	माशा	ले॰ का॰	विशेष
ज्ञान तिलक के पद	कबीरदास	हिन्दी	स० १८०८ कातिक बुदी ७	—
कबीर की परचई	"	"	"	—
रेखता	"	"	"	—
काया पाजी	"	"	"	—
हंसमुक्तावली	"	"	"	—
कबीर धर्मदास की दया	"	"	"	—
अन्य पाठ	"	"	"	—
साखी	"	"	कितने ही प्रकार की है	—
सोसट बध	"	"	"	—

विशेष—कबीर दास कृत रचनाओं का अपूर्व सग्रह है।

कासी वसे कबीर गुसाईं एव। हरि भक्तन की पकडी टेक॥

बहोत दिना सकिट में गये। अब हरि को गुन लीन भये॥ (कवि की परचई)

५१६. गुटका न० १६—पत्र सख्या-१२ से ५०। साइज-६×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—महाभारत के पाचवे अध्याय से ३० वें तक है प्रारम्भ के ४ अध्याय नहीं है। जिसके कर्ता लालदास हैं।

५ वें अध्याय से प्रारम्भ—दरसन भीषम को प्रीय जदा, सकल रषीस्वर आये तिहां।

सरसज्या भीषम विश्राम, अब सुनि प्रगट रिषिन के नाम॥ १॥

भृगु वसिष्ठ पारास्त्र व्यास, चिवन अत्रिय अंगिरा प्रवगास।

अगस्त नारद परवत नाम, जमदग्नि दुरवासा राम॥ २॥

२८ वें अध्याय का अन्तिम भाग – धर्म रूपज राजा सिव भयौ, जिहि परकाज अपनपौ दयौ।

विस्नही आराधै इहि रीति धरम कथा सुनें करि मीति॥ १६॥

जो याह कथा सुनै अरु गावै, धरम सहित धरम गति पावै।

यौं सौ कथा पुरानन कही, लालादास भाख्यौ यो सही॥ २०॥

५१६. गुटका न० १७—पत्र सख्या-१०६। साइज-६×६। भाषा-हिन्दी। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८७५ पौष सुदी ७। पूर्ण।

विशेष—महाभारत में से 'उषा कथा' है जिसके रचयिता 'रामदास' है।

प्रारम्भ—श्री गणेसाहनम.। श्री सारदा माताजी नम। वो नमो भगवत वासदेवाय। श्री ऊषा चरण लिखते।

वासुदेव पुत्र नित लाउ, करो हो कृपा किछु न गुण गाउ ।
सुमरो गुरु गोविंद मुरारी, सदा होत भवन हितकारी ॥
सुमरो आदि सम्मति माता, सुमरो श्री गणपती सुखदाता ।
सुभर जोड़ चरण चित लाउ, करो हो कृपा कछु हरि गुणगाउ ॥
सुमरो मात पिता बडभाई, सुमरो श्री रघुपति के पाई ।

दोहा — दशमदा तोरथ कथे, सुमरो देव कोटी तेतीस ।
मलदास कथा कर सुधी देहो जगदीश ॥ १ ॥
ओहा नगनुज रोप बोराज, समसह तीतहि पुरसो राजा ।
आठ पहर कथा अधीकाई, दानव कुथ वो बोहोत बढाई ॥
दक्षोभाव नृ दरसन पुत्र सुमगान, गऊ विप्र की सेवा जान ॥ २ ॥
नारद उरना व्यास कहा नाहा, दसम सकंद भागवत कीहा ।
व्यास पुराण कह सब भाख्यो, श्री सुखदेव नृप सुभाखो ॥

दोहा — चित दे सुनी नृपति धनी परीक्षत राय ।
व्यास पुत्र उपदेश ते सब होयो धमाय ॥
धनर सोक पग गुल नहीं देखो, पच मग मलज सेवा ।
मनदास तबी भगति पाई, गावा सा हरा कीरति गाई ॥ ३
प्रन भगाना पुरुत गाता, तुम कमन कहा भये विधाता ।
आदि दन सुनाहारो कहा होइ, हम सुनजन कहो न जसोई ॥
नहना कह रान को दाउ, देश मालवो पती सुखराउ ।
भइर, भक्त निकट ताहो ठाउ, पायो जनम मालवो गाउ ॥
पिता मनोहर धन निधाना, बालक ने जनम दायो माता ।
रामदास सुत तीन मे मांहि, भगत नाव हो भगता तांहि ॥

दोहा — ता डराम पावन कथा, गोप्यो भगवत गाय ।
मदन का सुधी मधु पथ हृदे न गाय ॥ १० ॥
हेव पुत्र दुगर्ह व तु सुना, सुनाय करो हो माहि ।
धनदन उशा हृदे सा कथा, वह सुनायो मोहा ॥ १२ ॥
मेरो कथा हरा से नहीं, भव कारट भेट नहीं ।
कुण सुना धजन तुर गाया, पर उशा हरा दायन ध्याया ॥
मो न ना सुनी ध्यान लगायो, आदि पुरुष को अंत न पायो ।
कोई उकार हरा पूरा पाइ, मा मन नू कहायो ताकाई ॥

अन्तिम पाठ—धनी सो सुरता चीत दे सुन, अरथ वीचार ग्रेम गुनमन ।
धनी सोही देस धनी सोही गांव, नीस दिन कथा कृष्ण को नांव ।
उषा श्री भागोत पुराना, सहजही दुज दीजे दाना ॥
छुछ मसक पवन मर सोही, कृष्ण भगति विना अवरथा देही ।
रामदास कथा कियो पुराना, पढत गुणत गगा असनाना ॥

दोहा—चद वदन यो होय फल, तो पातु दल पान ।
ई विध हर पूजही, कथे हो पुत्र की लाण ॥

इति श्री हरिचरित्रपद समो असकदे श्री भागोतपुराणे ऊशा कथा वरणनो नाम सपत दसो अध्याय ॥ १७ ॥

॥ इति श्री उषाकथा सपूर्ण समाप्ता ॥

५२०. **गुटका न० १८**—पत्र सख्या–१३२ । साइज–९×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–स० १७६७ फागुन वुदी ७ । पूर्ण ।

विशेष—कवि वालक कृत सीता चरित्र है ।

५२१. **गुटका न० १६**—पत्र सख्या–१३१ । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशो—नंददास कृत भागवत महा पुराण भाषा है । केवल ६१ पत्र है ।

५२२ **गुटका नं० २०**—पत्र सख्या–३ से ३२ । साइज–८३⁄४×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—हितोपदेश कथा भाषा गद्य में है । रचना नवीन प्रतीत होती है भाषा अच्छी है आदि अत भाग नहीं है ।

५२३. **गुटका न० २१**—पत्र सख्या–१३६ । साइज–९×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी गद्य में राम कथा दी हुई है । प्रति अशुद्ध है ।

५२४. **गुटका न० २२**—पत्र सख्या–२८ । साइज–९×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत हिन्दी । लेखन काल–स० १८१५ । पूर्ण ।

विशेष—प० नकुल विरचित शालि होत्र है । सस्कृत से हिन्दी पद्य में भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२५. **गुटका न० २३**—पत्र सख्या–१० । साइज–८३⁄४×५३⁄४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—कृष्ण का बाल चरित वर्णन है। १२० पद्य हैं।

आदि—गर गनेम वदन करि के सतननि कौं सिर नाऊ।
बाल विनोद यथा मति हरि के सु दर सरस सुनाऊ ॥१।
भक्तन के वत्सल करुना मय अद्भुत तिन की क्रीडा।
सुनो सत हो सावधान हो श्री दामोदर लीला ॥२॥

५२६. गुटका नं० २६—पत्र सख्या-३०। साइज-६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२३ आसोज बुदी ३। पूर्ण।

विशेष—लच्छीराम कृत करूना भरन नाटक है। कृष्ण जीवन की बाल लीला का वर्णन है।

प्रारम्भ—रसिक भगत पडित कवितु कही महाफल लेहु।
नाटक करुणा भरन तुम लछीराम करि देहु ॥१॥
प्रेम बढे मन निपट ही अरु आवै अति रोइ।
करुणा अति सिंगार रस जहां बहुत करि होइ ॥
लछीराम नाटक कर्यो दीनौं गुनिन पढाइ।
मेत्र रेष नित्त न निपट लाये नर निसि लाइ ॥२॥

अन्तिम पाठ—श्रीकृष्ण कथा अमृत सर वरनी, जन्म जन्म के कल्मल हरनी।
अति अगाध रस वरन्यौ न जाई, बुधि प्रमान कछु वरनि सुनाइ ॥३४॥
सो मति थोरी हरि जस सागर, सिंधु सुमाइ कहा लो गागर।
लछीराम कवि कहा वखानौ, हरिजस को कोई हरिजन जानै ॥३५॥

इति श्री कृष्ण जीवन लछीराम कृत करूणा भरन नाटक सपूर्ण। स० १८२३ आश्वन बुदी ३ रविवासरे। सप्तमो अध्याय।

५२७ गुटका नं० २५—पत्र सख्या-३८। साइज-६×७ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण

विशेष—गुटके मे भद्रबाहु चरित्र है। यह रचना किशनसिंह द्वारा निर्मित है जिसको उसने स० १७८३ मे समाप्त की थी। प्रति नवीन है।

भद्रबाहु चरित्र—

प्रारम्भ—केवल बोध प्रकास रवि उदै होत सखि साल।
जग जन अतर तम सकल छेयो दीन दयाल ॥ १ ॥
सनमति नाम जु पाइयो ऐसे सनमति देव।

मोको सनमति दीजिए नमौ त्रिविध करि सेव ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—ग्रनत कीरति ग्राचारज जानि, ललित कीर्ति सू सिष प्रमान ।
रत्ननदि ताको सिष होय, ग्रलप मति धरि करना सोय ॥
श्वेतांबर मत्त को ग्रधिकार, मूढ लोक मन रजन हार ।
तिनही परीक्षा कारन जान, पूर्व श्रुत कृत मानस ग्रानि ॥ १० ॥
किया वहीं कविताइ करी, काव कर्न ग्रभिमान ही ग्ररी ।
मगलीक इस चरितह जानि, रच्यौ सवैं सुखदाइ मान ॥
मूल ग्र थ कर्ता भये रतन नदि सु जानि ।
तापरि भाषा ग्रहरि कीनी मती परमान ॥ ११ ॥
नगर चाल सुदेस मै वरवाडा को गांव ।
माधुराय वसत कौ दामपुरौ है नांव ॥
तहा वसत सगही कानो गोट पाटणी जोय ।
ता सुत जायो प्रगट सुख देव नाम तसु होय ॥
ताकौ लघु सुत जानीयौ किसन सिंघ सव वान ।
देस ढु ढाहर को भयौ सांगानेर सुथान ॥ १५ ॥
तहां करी भाषा यह भद्रवाह गुणधारी ।
सुमति कुमति को परख कै द्वेष भाव न विचारि ॥
किसनसिंघ विनती करै, लखि कविता की रीति ।
यह चरित्र भाषा कियौ, वाल वोध धरि प्रीति ॥ १७ ॥
जो याकौ वाचै सुनै विपुल मति उरधारी ।
कहुं ठौर जो भूल है लीज्यौ सुधी सवारी ॥ १८ ॥
सुमति कुमति कौ परख के, कीज्यौ कुमत निवार ।
ग्रहण सुमति कौ कीजियौ जो सुर सिव पदकार ॥ १९ ॥
सवत् सतरह सै ग्रसी उपरि ग्रौर है तीन ।
माघ कृष्ण कुज ग्रष्टमी ग्र थ समापत कीन ॥ २० ॥

५२८. गुटका न० २६—पत्र सख्या-२०० । साइज-८½×६½ इश्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । ग्रपूर्ण ।

विशेष—गुटका प्राचीन है । निम्न पाठों का सग्रह है ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	—
श्रीपालरास	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	—
नेमीश्वररास	”	”	—
विवेकजखडी	—	”	—
पद्य संग्रह	—	”	—
जखडी	रूपचंद	”	—
मांगीतुंगी की जखडी	रामकीर्त्ति	”	—
जखडी	जिनदास	”	र० का० सं० १६७६
कर्म हिंडोलणो	हर्षकीर्त्ति	”	—
गीत	चन्द्रकीर्त्ति	”	—
गीत	मुनि धर्मचन्द्र	”	—
चेतनगीत	देविदास	”	—
चेतन गीत	—	”	—
पंचवधावा	—	”	—
आदिनाथस्तुति	चन्द्रकीर्त्ति	”	—
शालिभद्रचौपई	—	”	अपूर्ण

५२९. गुटका नं० २७—पत्र संख्या–२५। साइज–६×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण।

विशेष—स्फुट पूजाओं का संग्रह है।

५३०. गुटका नं० २८—पत्र संख्या–२५। साइज–६×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है।

५३१. गुटका नं० २९—पत्र संख्या–१५। साइज–८½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। लेखन काल–×। अपूर्ण।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है।

५३२. गुटका नं० ३०—पत्र संख्या–१४। साइज–६×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी संस्कृत। लेखन काल–×। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

विनती संग्रह	—	हिन्दी	—
सबोधपश्चासिका भाषा	द्यानतराय	"	—
अठारह नाता	—	"	—

५३४ गुटका नं० ३२—पत्र संख्या-२० । साइज-७३/४×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—६५ चतुराई की वार्ता दी है जिसका रचना काल वीर सं० १६४२ है ।

५३५ गुटका नं० ३३—पत्र संख्या-२३ से १४२ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
स्तोत्रविधि	जिनेश्वरसूरि	हिन्दी	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	—
कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"	—
पद संग्रह (सतर प्रकार पूजा प्रकरण)	साधुकीर्ति	हिन्दी	र का १६५८ श्रा सु. ५
रागमाला	"	"	—
अष्टापदगिरिस्तवन	धर्मसुन्दर (वाचनाचार्य)	"	—
पद २	जिनदत्तसूरि	हिन्दी	—
स्तमनक पार्श्वनाथ गीत	महिमासागर	"	—
पद	जिनचन्द्र सूरि, जिनकुशल सूरि व कुमुदचन्द्र ।		
कवित्त	—	हिन्दी	र. का. सं १४११

इनके अतिरिक्त और भी हिन्दी पद हैं ।

सतर प्रकार पूजा प्रकरण—राग धनाश्री—माणि गुणि घनजि के । सठि दिन तेज तरणि सुख राजइ ।

कवित शतक आठ ध्युणति शक्रस्तव । धय धुप रगह मछाजइ ॥भ०॥
अणहिल पुर शान्ति सब सुखदाई । सो प्रभु नवनिधि सिधि आव जइ ॥
सतर सुपूज सुविधि श्रावक की । मणीमई भगति हिज काजइ ॥भ०॥
श्रीजिनचद्रसूरि गरू खरतरपति । धरमनि वचन तासु तसु राजइ ॥
सवत् १६ अठार श्रावण सुदि । पचमि दिवसि समाजइ ॥भ०॥

दयाकलशागणि अमरमाणिक गुरु । तासु पसाइ सुविधि हुँ गाइइ ।
कहइ साधु कीरति कर भजन सस्तव सवि ।
साधुकीरति करत जन सस्तव सविलील सव सुख साजइ ॥

॥ इति सत्तर प्रकार पूजा प्रकरण ॥

५३६. गुटका न० ३४—पत्र सख्या-१४ से ८६ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—द्रव्य सग्रह की गाथायें हिन्दी अर्थ सहित है तथा समयसार के २०१ पद्य हैं ।

५३७. गुटका न० ३५—पत्र सख्या-२ से ३८ । साइज-६½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का सग्रह है ।

५३८ गुटका न० ३६—पत्र सख्या-६ से ६३ । साइज-८½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—महाकवि कल्याण विरचित अनग रग नामक काव्य है । काम शास्त्र का वर्णन है आगे इसी कवि द्वारा निरूपित सभोग का वर्णन है । आयुर्वेद के नुसखे दिये हुए हैं ।

५३९ गुटका न० ३७—पत्र सख्या-१६ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—विष्णु सहस्रनाम के अतिरिक्त अन्य भी पाठ हैं ।

५४०. गुटका न० ३८—पत्र सख्या-१५० । साइज-७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १७१६ पौष सुदी ५ । पूर्ण ।

विशेष—विभिन्न साधारण पाठों का संग्रह है ।

५४१. गुटका न० ४०—पत्र सख्या-७ । साइज-१×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-स० १८८३ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—चाणक्य राजनीति शास्त्र का संग्रह है ।

५४२ गुटका न० ४१—पत्र संख्या-३८ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण एव जीर्ण ।

५४३. गुटका न० ४२—पत्र सख्या-११ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । लेखन काल-स० १८१२ । पूर्ण ।

विशेष—आचार्य कुन्दकुन्द कृत (दर्शन, चारित्र, सूत्र, बोध, माव और मोक्ष) षट पाहुड का वर्णन है।

५४४ गुटका न० ४३—पत्र सख्या-४८ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण एव जीर्ण ।

विशेष—देहली के बादशाहों की वशावलि दी हुई है अन्य निम्न पाठ भी हैं—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
कृष्ण का बारह मासा	धर्मदास	हिन्दी	—
विरहनी के गीत	—	"	—
आयुर्वेद के नुस्खे	—	"	—
दोहे	दादूदयाल	"	—

५४५. गुटका न० ४४—पत्र सख्या-६८ । साइज-८½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण

विशेष—मत्र शास्त्र से सम्बन्धित पाठ है।

५४६. गुटका न० ४५—पत्र सख्या-६० । साइज-·×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—पार्श्वनाथ स्तोत्र-सस्कृत, क्षेत्रपाल पूजा शनिश्चर स्तोत्र-हिन्दी आदि पाठ हैं।

५४७. गुटका न० ४६—पत्र सख्या-१२ । साइज-५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—चरनदास के पद है। कुल १५ पद हैं।

५४८. गुटका न० ४७—पत्र सख्या-१६ । साइज-८½×८½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—भुवनेश्वर स्तोत्र सोमकीर्ति कृत हैं।

५४९ गुटका न० ४८—पत्र सख्या-३४ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । लेखन काल-स० १८६० अषाढ सुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—ऋषि मडल स्तोत्र तथा अन्य पाठ हैं।

५५०. गुटका नं० ४६—पत्र सख्या-२० से ६०, १७२ से २१२ । साइज-५×३½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—पचस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, पचपरमेष्ठीस्तोत्र एवं वज्रपजरस्तोत्र (अपूर्ण) आदि हैं।

५५१. गुटका नं० ५०—पत्र संख्या–४ से २१० । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र आदि का संग्रह हैं ।

५५२. गुटका नं० ५१—पत्र संख्या २६ । साइज–५×३½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–संग्रह । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र आदि के संग्रह हैं गुटके के अधिकांश पत्र खाली हैं ।

५५३. गुटका नं० ५२—पत्र संख्या–४० । साइज–७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण ।

विशेष—गुटका जल्दी में लिखा गया है । कोई उल्लेखनीय पाठ्य नहीं है ।

५५४ गुटका नं० ५३—पत्र संख्या–६ । साइज–७×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र आदि का संग्रह हैं ।

५५५ गुटका नं० ५४—पत्र संख्या–६–२८४ । साइज–६½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ में स्वर्ग लोक का वर्णन है और पीछे तत्त्वार्थ सूत्र के सूत्रों की हिन्दी टीका है । कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है ।

५५६. गुटका नं० ५५—पत्र संख्या–२० । साइज–५×३½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तामर, पार्श्वनाथ, लक्ष्मीस्तोत्र आदि हैं ।

५५७ गुटका नं० ५६—पत्र संख्या–८६ । साइज–७×५ । भाषा–संस्कृत । लेखन काल–सं० १८७३ । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है ।

५५८ गुटका नं० ५७—पत्र संख्या–३–४१ । साइज–७×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह लेखन काल–सं० १६२३ । अपूर्ण ।

विशेष—उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

५५६ गुटका नं० ५८—पत्र संख्या–८० । साइज–८½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण एवं जीर्ण ।

विशेष—अक्षर घसीट होने पढने में नहीं आते हैं।

५६० गुटका न० ५६—पत्र सख्या—८ से ५७। साइज—६½×·½ इञ्च। भाषा—सस्कृत, हिन्दी। लेखन काल—×। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चौबीस तीर्थंकर पूजा	—	सस्कृत	—
सरस्वती जयमाल	—	,,	—
अकृतिम जयमाल	—	,,	—
परमज्योतिस्तोत्र	बनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत	—

५६१. गुटका न० ६०—पत्र सख्या—५ से ३८। साइज—७×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। लेखन काल—×। अपूर्ण।

विशेष—हितोपदेश की कथाएँ हैं।

५६२ गुटका न० ६१—पत्र सख्या—१०३। साइज—६×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। लेखन काल—×। अपूर्ण।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का सग्रह है।

५६३. गुटका न० ६२—पत्र सख्या—१७। साइज—६×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। लेखन काल-स० १७५४। अपूर्ण।

विशेष—१ से १६ एव १०७ से आगे के पत्र नहीं है। निम्न विषयों का सग्रह है।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
भट्टारक पट्टावली	—	हिन्दी	र. का स १७३३
कृष्णदास का रासो	—	,,	र. का स. १७८६ ले. का १७५२
पर्वत पाटणी को रासो	—	,,	ले. का स १७५८
बीचड रासो	—	हिन्दी	—
नवरत्न कवित	—	,,	—

५६४. गुटका न० ६३—पत्र सख्या—६० से १०५। साइज—७×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। लेखन काल—सं० १७६० माघ सुदी १५। अपूर्ण।

(१) भृ तृहरि की वार्ता—पत्र स ख्या-६० से ७८ । भाषा-हिन्दी गद्य । लेखन काल-स० १७६० माघ सुदी १५ । अपूर्ण

अन्तिम पाठ—भरथरी जी गोरखनाथजी का दरसण नै चालता रह्या । अणी की मात्र सारी देखी करि अकृत चीत हुओ । सारी जगत की सुख । हैद ताको सुध । त्रीणी पराजमन भो देखता और सुनां मडल मे चित दीजो । इति भरथरी जी का वात सपूरण । पोथी मान स्वघ चत्रभुज का वेटा की लिखी जैराम काइथ वाचैं जैजैराम । मी माह सुदी १५ स० १७५० ।

(२) आसावरी की वात—पत्र स०-८० से १२५ । भाषा-हिन्दी गद्य । अपूर्ण ।

श्री गणेसाई नीमो । अबै आसावरी की वात ऊतिपति वरण ववरणी जे छै । ईतरा मांही राणी के पुत्र हुवो । नाम सीवु नीसर्यो । उछाव हुवो जाति कर्म हुवो । दान पुनि वाजा छतीसु वाजवा लागा । नग्र माहे वुछाह घरि घरि हुवो । आवतै दीनि कन्या की जनम हुवो । पडिता नाम आसावरी काढ्या । सिधि को वचन छै । सोई नाम जनम को नीसर्यो । आसावरी देव अग अपछरा को ओतार हुई तदि आसावरी वरस छहकी हुई । तदि पढिवानै वैठी ।

५६५ गुटका न० ६४—पत्र सख्या-१३ । साइज-७½×५½ इश्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का सग्रह है—

विषाहार, एकीभाव एव भूपालचतुर्विंशति ।

५६६ गुटका न० ६५—पत्र सख्या-४४ । साइज-७×५ इश्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल स० १७७१ । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
मान मन्जरी	नंददास	हिन्दी	अपूर्ण
जानकी जन्म लीला	वालवृन्द	”	पूर्ण ले० का० स० १७७६
सीता स्वयवर लीला	तुलसीदास	”	माघ सुदी ६

आदि पाठ—गुर गणपति गिरजापति गौरी गिरा पति,
सारद सेष सुकवि श्रुति सत सरल मति ।
हाथ जोडि करि विनय सकल सिर नाऊ,
श्री रघुपति विवाह जथामति मगल गाऊ ॥१॥
सुभ दिन रच्यौ सुमगल मगल दाइक ।
सुनत श्रवन हिए वसहु सीय रघुनाइक ।
देस सुहावन पावन वेद वखानिये ।
भूमि तिलक सम तिरहुत त्रिभुवन मानिये ॥२॥

जानकी जन्म लीला—

आदि भाग—श्री रघुवर गुर चरन मनाऊ, जानकी जनम सुमगल गाऊ।
काम रहित सुधर्म जग जोहै, देस विरोहित तनु धरि सोहै ॥
ता महि मिथुला पुरि सुहाई, मनउ ब्रह्म विद्या छवि छाई ॥२॥

अन्तिम पाठ—भये प्रगट भक्ति अनत हित द्रग दया अमृत रस भरे।
सकल सुरनर मुनिन केई है छिनहि सब कारिज सरे ॥३॥
जै देवि दानि सिरोमने करि, दया यह वर दीजिये।
सदा अपने चरनदास के दास हम कहुँ कीजिये ॥४॥

॥ इति श्री जानुकी जनम लीला स्वामी वालग्रन्दजी कृत सपूरन ॥ माह सुदी ६ सवत् १७७६

५६७. गुटका न० ६६—पत्र सख्या–८० । साइज–६½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–स० १८२४ पौष बुदी ३ । पूर्ण ।

विषय- सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
भूषाभूषण	महाराज जसवतसिंह	हिन्दी	पद्य स• २१०
छवितरग	महाराजा रामसिंह	,,	पद्य स० ६४

प्रारम्भ—असुर कदन मोहन मदन वदन चद रघुनद।
सिया सहित वसियो सुचित, जय जय मय आनद ॥१॥

यहां कवि की रीति प्रधानता करिकै राम जू सौ विज्य होत है। तातें भाव धुनि। अरु प्रथम अनेक चरन अनेक वेर फिरत हैं तातें क्षिति अनुप्रास चद रघुनंद यह रुपक।

दोहा—आनदित बादत जगत सुख निर्कद सिव नंद।
माल चद तुव जपत ही दूरि होत दुख दद ॥ ॥

अन्तिम पाठ—परी परोसनि सौ अटक, चटक चहचही चाह।
भरि भादों की चोथि को चंद निहारत नाह ॥६३॥
कछूक गुन दोहान के, वरने और अनूप।
अैसे ही सहृदय सवै ओरौ लखौ अनूप ॥६४॥

इति श्री महाराजा रामसिंहजी विरचिते छवितरग सपूर्ण।

अष्टजाम	कवि देव	हिन्दी	पद्य स० १३१
औषधि वर्णन	—	,,	—

५६८ गुटका नं० ६७—पत्र संख्या-५ से ११३ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
कृष्णलीला वर्णन	—	हिन्दी	पत्र ५-१७
होली वर्णन	—	"	—
बारहमासा	—	"	पत्र सं० ७४ से ७७
स्फुट पद	—	"	पत्र ७८ से ११३

५६९ गुटका नं० ६८—पत्र संख्या-२३ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल- । पूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
पीपाजी की परचावलि	—	हिन्दी	—
ध्रु चरित	सुखदेव	"	—
विनति	—	"	—
पद्मावती कथा	—	"	—

५७०. गुटका नं० ६९—पत्र संख्या-२४ । साइज-५½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—निम्न रचना है—

कृमय कुठार—रामभद्र हिन्दी ।

मध्यम भाग—करनी हो सो कीजियो करनी की कछु दौर।

मो करनी जिन देखियो तो करनी की ओर ॥ २१ ॥

मो सो करनी कुटिल जग तो सो तारक ताज ।

यही भरोसो मोहि तो सरन गहे की लाज ॥ २२ ॥

इति श्रीमत् काम्यवनस्थ बाधूल सगोत्रोत्पन्न गणेश भट्टात्मज रामभद्र भट्टेन ... विरचिते कृमयकुठार ग्रंथ संपूर्ण ॥

५७१. गुटका नं० ७०—पत्र संख्या-५ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—रसराज नामक ग्रंथ है ।

५७२ गुटका नं० ७१—पत्र संख्या-५ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८०२ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । पद्य संख्या-२५ ।

विशेष—गुटके में नदराम पच्चीसी दी है । रचना स० १७४४ श्रथ नदराम पच्चीसी लिखते ।

दोहा—गनपति को ज मनाय हरि, रिद्ध सिद्ध के हेत ।
वाद वादनी मात तु, सुम श्रछिर वहु देत ॥
कछु कह्यो हु चाहत हु, तुम्हार पुनि प्रताप ।
ताहि सुएया सुख उपजै, दया करो श्रव श्राप ॥ २ ॥

श्रन्तिम पाठ—नद खडेलवाल है श्रबावति कौ वासी ।
सुत बलिराम गोत है रावत मत है कृष्ण उपासी ॥ २४ ॥
सवत् सतरासै चवाला कातिक चन्द्र प्रकासा ।
नदराम कछु . . ॥
कली व्योहार पच्चीसी वरनी जथा जोग मति तेरी ।
कलजुग की ज वानगी एहै है श्रौर रासी वहुतेरी ॥
राखे राम नाम या कलि मैं नद दामा ।
नदराम तुम सरनै श्रायो गायो श्रजव तमासा ॥ २५ ॥

इति श्री नदराम पच्चीसी सपूर्ण । सवत् १८१२ चैत वुदी १२ ।

५७३ गुटका न० ७२—पत्र सख्या-१६ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—कुछ हिन्दी के कवित्त हैं ।

५७४. गुटका न० ७३ पत्र सख्या-११-२६३ । साइज-६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× अपूर्ण ।

विशेष—मुख्य रूप से निम्न पाठ हैं—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
श्रीपाल रास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	ले. का. स. १८२५
मधु मालती कथा	चतुर्भुजदास	"	—
गोरख वचन	बनारसीदास	"	—
वैद्य लक्षण	"	"	—
शिव पच्चीसी	"	"	—
भवसिन्धु चतुर्दशी	"	"	—
ज्ञानपच्चीसी	"	"	—

तेरह काठिया	बनारसीदास	हिन्दी	—
ध्यान बत्तीसी	"	"	—
अध्यात्म बत्तीसी	"	"	—
सूक्ति मुक्तावली	"	"	—

मधु मालती कथा—

प्रथम—बरबीर चित नया वर पाउं, सक्र पूत गणपत मनाऊ।
चातुर हेत सहत रिझाउ, सरस मालती मनोहर गाऊ ॥ १ ॥
लीलावती ललित ऐक देसा, चन्द्रसेन जिहा सुघड नरेसा।
सुमग यामिनी हो गगन प्रवेसा, मानू मडप रचो महेसा ॥ २ ॥
वसहपुर नगर जोजन चार, चौरासी चोहटा चोवार।
अति विचित्र दीसे नरनार मानूं तिलक भूम मझार ॥ ३ ॥

मध्य भाग—चन्द्रावती निपूत मलियदा, ताको कवर नाम जसु चदा।
वरस बीस बाईस में सोई, ताम पटतर अवर न कोई ॥
जास मत्र ग्रह कन्या सुन्दर, वरस अठारह माहि पुलदर।
रूपरेख तसु नाम सोहै, जा देखे सुर नर मन मोहे ॥ ८५ ॥

अन्तिम पाठ—हम है काम अम अवतारी, इहै कहे कहै सोनी की न्यारी।
ऐसे कही मधु नृप सुमझायो, राजा सुनत बहोत सुख पायो ॥
राज पाट मधुक सब दीनों, चन्द्रसेन राजा तप लीनों।
राजरिपभिय बोहत होई, उनकी कथा लख नही कोई ॥ ८६२ ॥

दोहा—कायथ नैगमा कूल अहै, नाथा सुत मए राम।
तनय चतुर्भुज तास कें, कथा प्रकासी ताम ॥ ८६३ ॥
अलख वधू दीठ दई, काम प्रबध प्रकास।
कवियन सु कर जोर करि, कहत चतुर्भुज दास ॥ ८६४ ॥
काम प्रबध प्रकास पुनी, मधू मालती विलास।
प्रदु मनी का लाला इहै, कहत चतुर्भुज दास ॥ ८६५ ॥
वनासपति में अम्रफल, रस मे एक रसत।
कथा मध्य मधु मालती षट् रति मधि बसत ॥ ८६६ ॥
लता मध्या पवग लता, सो धन मे धनसार।
कथा मे मधु मालती, आभूषण में हार ॥ ८६७ ॥

राजनीत कीया मैं साखी, पचाख्यान बुध ईहां माषी ।
चरना ऐका चातुरी बनायी, थोरी थोरी सबहु आई ॥ ८६८ ॥
पुनि बसत राज रस गायो, यामै ईश्वर का मद भायो ।
ताका ऐह विलावसतारी, रसिकनि रसक श्रवन सुखकारी ॥ ८६६ ॥
रसिक होय सो रस कू चाहे, अध्यातम आतम अवगाहे ।
चातुर पूरश होई है जोई, ईहे कल रस समझू सोई ॥ ८७० ॥
किसन देव को कु वर कहावै, प्रदुमन काम अस मधु गावै ।
पुत्र कलत्र सब सुख पावै, दुख दालिद्र रोग नहीं आवै ॥ ८७१ ॥

दोहा – राजा पढै ही राज नीत, मित्र पढै ताही बधू ।
कामी काम विलास रस, ग्यानी ज्ञान सरूप ॥ ८७३ ॥
सपूरन मधु मालती, कलस भयो सपूरण ।
सुरता वक्ता सबन कू, सुख दायक दुख दूर ॥ ८७४ ॥
कैसर कै पति सामजी, तीण उपगार माहाराजै ।
कनक वदनी कामनी, तै पार्मा मै आजै ॥ ८७५ ॥
॥ इति श्री मधु मालती की कथा सपूर्ण ॥

फागुण वुदी ७ मगलवार सवत् १८२५ का दसकत नन्दराम सेठी का ।

५७५ गुटका न० ७४— पत्र सख्या–३४ । साइज–७×४ इश्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–स० १८७३ पूर्ण ।

विशेष—नन्ददास कृत मानमञ्जरी है । पद्य सख्या–२८६ है ।

प्रारम्भ—त नमामि पदम परम गुरु कृष्ण कमल दल नैन ।
जग कारण, करुणार्णव गोकुल जाको अैन ॥
नाम रूप गुण भेद लहि प्रगटत सब ही वोर ।
ता विन तहां ज्ञ आन कछु कहे सु अति वड वोर ॥

अन्तिम पाठ—
जुगल नाम–जुगल जुग्म जुग द्वय द्वय उभय मिथुन विविवीप ।
जुगल किशोर सदा वसहु नददास कै द्वीप ॥८७॥

रस नाम—सरख्य मधु पुनि पुष्प रस कुसम सार मकरद ।
रस के जाननहार जन सुनियै है आनद ॥८८॥

माला नाम—मालाष्टक ज गुणवती यह जु नाम की दाम ।
जो नर कठ करैं सुनें ह्वै है छवि को दाम ॥२८६॥

इति श्री मानमजरी नददास कृत सपूर्ण । सवत् १८७३ मगसिर वुदी १३ दीतवार ।

५७६   गुटका न० ७५—पत्र सख्या–६० ; साइज–६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण अशुद्ध ।

विशेष—साधु कवि की रचनाओं का सग्रह है । चरणदास को गुरू के रूप मे कितने ही स्थानों पर स्मरण किया है । कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है । प्रति अशुद्ध है ।

५७७   गुटका न० ७६—पत्र सख्या–२४ से १८६ । साइज–८×३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× अपूर्ण ।

विशेष—विविध पाठों का संग्रह है ।

५७८.   गुटका न० ७७ –पत्र सख्या–६२ । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । लेखन काल–× पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है ।

दस अछेरा, मुनि अहार लेता के पांच अरथ, मनुष्य राशि भेद, सुमेरु गिरि प्रमाण, जम्बू दीपका वर्णन, शील प्रमाद के भेद, जीव का भेद, अढाई द्वीप मे मनुष्य राशि, अष्ट कर्म प्रकृति, विवाह विधि आदि ।

५७९.   गुटका न० ७८—पत्र सख्या–१८ से २०४ । साइज–४×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-सग्रह । लेखन काल–स० १७६४ फागुण बुदी ६ । अपूर्ण ।

(१) श्री ध्रू चरित—हिन्दी । लेखन काल–स० १७६६ फागुण बुदी ६ ।

अन्तिम पाठ—राजा प्रजा पुत्र समाना, सकट दुखी न दीसै आंना ।
राजनीति राजा जु वीचारै, स्वामी धरम प्रजापति पाले ॥
चक्र सुदरशन रछया करई, आग्या भग करत सिर हरई ।
तातैं सबको आग्या कारी, चक्र सुदर्शन को डर भारी ॥४॥
अैसी विधि करै ध्रू राजु, हरि क्रिया सरै सब काजू ।
घर में वन, वन में घर भाई, अतर नाही राम दुहाई ॥५॥
पानी तेल मिलै पुनि न्यारो, यो ध्रू वरतौ राम पीयारो ।
परवनि पत्र मिलै नहीं पानी, येहि विधि वरतै दास वी रानी ॥६॥
उलटो मीन चलै जल मांही, यो हरि भगत मिलन हरि जांहि ।

जैसे सीप समद तै न्यारी, स्वाति बुंद वरषै सुय भारी ॥७॥
जैसे चद कमोद निमावै, जल में वसै अर प्रेम वढावै ।
जैसे कवल नीर तै न्यारो, अैसी विधि धू पीयारो ॥८॥
जैमे कनिक न काई लागै, अग्नि दीया तै बाती जागै ।
सुत लपेटि अग्नि में दीजै, मोहरै की सत्या नही छीजै ॥६॥
धू चरित जे को सुनै, मन वच क्रम चित लाय ।
हरिपुरवै सव कामनां, भक्ति मुकति फल पाय ॥१०॥
वसुधा सव कागद करू, सारदा लिखु वनाय ।
उदधि घोरि मसि कीजिये, धूमैह मान समाय ॥
मैं जानी मति आपनी, कलिप कही कछु वात ।
बक्सत सुत अपराध को, जन गोपाल पित मात ॥११॥

इति श्री धू चरित सपूरण समापता ।

(२) भक्ति भावती—(भक्तिभाव) हिन्दी

प्रारम्भ—सव सतन को नाय माथा, जा प्रसाद तै भयो सुनाथा ।
भव जल पार गयो की चाहै, तो संत चरन रज सीस चढावै ॥१॥
जे नारायण अतरजामी, सब की बुधि प्रकासक स्वामी !
तुम वाणी मैं प्रगटो आई, निर्वर्ति परवति देह वताई ॥२॥

दोहा—पर्म हस आस्वादित चरन, कंवल मकरद ।
नमो • रामानद नमो अनतानंद ॥३॥
जे प्रवृर्ति को दुख नहिं जानै, तो निवृर्ति सौ क्यो मनमानै ।
कलि अग्यांन भयो विस्तारा, पुरव नही सचारा ॥४॥

अन्तिम—भगति भावती याको नामा, दुख खडन सब सुख विसरामा ।
सीखै सुणैर करै विचारा, तौ कलि कुसमल कौ ह्वै ख्यो कारा ॥ २७५ ॥
अलप सुख नाही जायै केता, सु सुख पावै चाहै जेता ।

दोहा—जो बहु गुरु तैं मति लहै बहु पडित बुझैं होई ।
सो सब याही मे लहै जे निकै सोधै कोय ॥ २७६ ॥

चौपई—लरिका कछु बस्त जो पावै, ले माती आगे गुदरावै ।
भली बुरी वे लेहि पिछानी, यौ तुम आगै में यह आनी ॥ २७७ ॥
अब वहैडो कहा तै करई, अपणो फल ले आगै धरई ।
जैसी क्रिपा तुम मोस्यु कीन्ही, तैसी मैं वाणी कहि दीन्ही ।

सवत् सोलहसै नव सालै, मथुरापुरी केसवा आलै ।

असुन पहल ग्यारसि रविवारी, तहा पट पहर माहि विस्तारी ॥ २७६ ॥

करि जागरणै प्रक्रमा दीनी, तव ठाकरनै समरपण कीनी ।

भगत समेत सतोखे सोई, ज्यों तो तद वचन सुन के सुख होई ॥ २८० ॥

दोहा—नमह राम रामनदा, नमह अनंतानद ।

चरन कवल रज सिर धरै, पर पनगै सानद ॥ २८१ ॥

॥ इति श्री भगति भावती ग्रंथ समाप्ता ॥

(३) राजा चंद की कथा—प० फूरो । पत्र सख्या-१९१-२०४ । भाषा-हिन्दी । रचना काल-स० १६६३ फागुण सुदी २ ।

विशेष—राजा चद आभानेरी की कथा है । चन्दन मलयगिरी कथा भी इसका दूसरा नाम है ।

५८० गुटका नं० ७६—पत्र सख्या-२-२२ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—चरनदास कृत सतगुरु महिमा है—प्रथम व अन्तिम पत्र नहीं हैं ।

प्रारम्भ— .. ... . ।

सुख देव जी पूरन बिसवा वीस ।

परम हंस तारन तरन गुरु देवन गुरु देवा ।

अनभै वानी दीजिए सहजो पावै भेवा ।

नमो नमो गुर देवन देवा ॥

५८१ गुटका नं० ८०—पत्र संख्या-३० । साइज-७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—तीर्थंकरों के माता, पिता, गणधर, वंश नाम आदि का परिचय, नन्दीश्वर पूजा तथा जीव आदि के भेदों का वर्णन किया गया है ।

५८२. गुटका नं० ८१—पत्र सख्या-२८ । साइज-८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—पंचमगल, सिद्धपूजा-सोलह कारण, दशलक्षण, पचमेरु पूजा आदि का सग्रह है ।

५८३. गुटका नं० ८२—पत्र सख्या-१०२ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । लेखनकाल-× । अपूर्ण ।

विशेष—आचार्य कुन्दकुन्द कृत समयसार गाथा मात्र है, ग्रहबल विचार आदि पाठों का संग्रह है।

५८४ **गुटका नं० ८३**—पत्र सख्या-२३-५७। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—नारायण लीला के हिन्दी के २५६ पद्य हैं लेकिन वे कहीं २ अपूर्ण हैं।

५८५. **गुटका नं० ८४**—पत्र सख्या-४०। साइज-७×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—गुटके में कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है।

५८६ **गुटका नं० ८५**—पत्र सख्या-८५। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—शीलकथा-(भारामल्ल,) लावणी तथा समाधिमरण भाषा का सग्रह है।

५८७. **गुटका नं० ८६**—पत्र सख्या-२२। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण

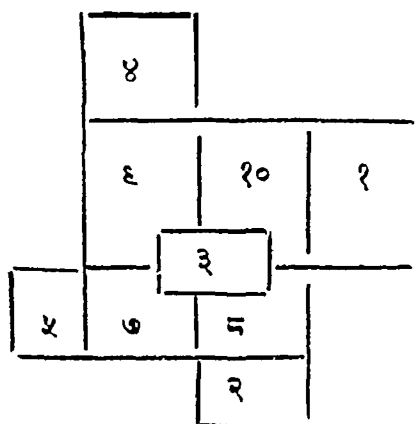
विशेष—विभिन्न चक्र दिये हुए हैं जो भिन्न २ कार्य पृच्छा से सम्बन्धित हैं। आगे उनके अलग २ फल लखे हुए हैं।

५८८. **गुटका नं० ८७**—पत्र सख्या-५०। साइज-६½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—मोह मर्दन कथा है। रचना काल-स० १७६२ कार्तिक बुदी १२ है। जीर्ण तथा अशुद्ध प्रति है।

५८९. **गुटका नं० ८८**—पत्र सख्या-१४६। साइज-७×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। लेखन काल-×।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, सिद्धप्रियस्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र (पद्मप्रभ), विषापहारस्तोत्र, परमज्योतिस्तोत्र, आयुर्वेदिक नुसखे, रत्नत्रय पूजा आदि पाठों का सग्रह है। बीसा यत्र भी है जो निम्न प्रकार है—



५६० गुटका नं० ८९—पत्र संख्या-६१ से १७१। साइज-५×३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—ज्वालामालिनीस्तोत्र, चक्रेश्वरीस्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र, क्षेत्रपालस्तोत्र, परमानंदस्तोत्र, लक्ष्मीस्तोत्र, चैतनवधस्तोत्र, शांतिकरस्तोत्र-(प्राकृत), चिन्तामणिस्तोत्र, पुण्डरीकस्तोत्र, भयहरस्तोत्र, उपसर्गहरस्तोत्र, सामायिक पाठ, जिन सहस्र नाम स्तोत्र आदि स्तोत्रों का संग्रह है।

५६१ गुटका नं० ९०—पत्र संख्या-६८। साइज-५×३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-सं० १८६६। पूर्ण।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—

न्हवण, सकलीकरणविधान, पुण्याहवाचन और याग मंडल।

५६२ गुटका नं० ९१—पत्र संख्या-६०। साइज-५×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५६३. गुटका नं० ९२—पत्र संख्या-७१। साइज-५×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—अधिकांशतः नन्ददास के हिन्दी पदों का संग्रह है। कुछ पद सूरदास के भी हैं। राधाकृष्ण से संबधित पद हैं। पदों की संख्या १५० से अधिक है।

५६४ गुटका नं० ९३—पत्र संख्या-१६१। साइज-५×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १७६३ वैसाख सुदी २। पूर्ण।

विशेष—नेमीश्वररास, श्रीपालरास (ब्रह्मरायमल्ल) हैं।

५६५. गुटका नं० ९४—पत्र संख्या-२३ से ५४। साइज-५½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है।

५६६. गुटका नं० ९५—पत्र संख्या-१४०। साइज-४½×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—ज्योतिष शास्त्र से सबंध रखने वाले पाठ हैं।

५६७. गुटका नं० ९६—पत्र संख्या-२६। साइज-९×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—पदों का संग्रह है।

५६८. गुटका नं० ६७—पत्र संख्या—२७६ । साइज—७×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—× । अपूर्ण एवं जीर्ण ।

विशेष—२ गुटकों का सम्मिश्रण है । मुख्यत निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय-सूचा	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) शालिभद्र चौपई	जिनराज सूरि	हिन्दी	र० का० सं० १६७८ आसोज बुदी ६

प्रारम्भ—सासण नायक समरियइ, वर्द्धमान जिनचंद ।
अभिय विघन दुरइ हरइ, आपइ परमानंद ॥१॥

अन्तिम पाठ—साधु चरित कहवा मन तरसइ, तिणए मास्यउ हरसइजी ।
सोलह सय अठित्तरि वरसइ, आसू वदि छठि दिवसइजी ॥
सा० जिनसिंह सूरि मतिसारइ भवियण नइ उपगारइ जी ।
श्री जिनराज वचन अनुसारइ, चरित कह्यउ रु विचारइजी ॥
इणि परिसाधु तणा गुण गावइ, जे भवियण मन भावइजी ।
अलिप विघन तसु दूरि पुलावइ मन वंछित सुख पावइजी ॥१०॥
ए सबध भविक जे भणिस्यइ, एक मना सांभलिस्यइजी ।
दुख दुह गतस दूरि गयावस्यइ, मनि वंछित फल लहिस्यइ जी ॥११॥

विषय-सूचा	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(२) शीतलनाथ स्तवन	धनराजजी के शिष्य हरखचंद	हिन्दी	र० का० सं० १७१६ कार्तिक सुदी १५
(३) पार्श्व स्तोत्र	"	"	र० का० सं० १७५४ कार्तिक सुदी ५
(४) नेमिनाथ स्तोत्र	—	"	र० का० सं० १७१३
(५) पदसग्रह	"	"	र० का० सं० १७५८
(६) नेमिनाथ स्तवन	धनराज	"	र० का० सं० १७४८
(७) चिन्तामणि जन्मोत्पत्ति जन्मोत्सव स्वध्याय	—	"	—
(८) गणनायक क्षेमकरण जन्मोत्पत्ति	धर्मसिंह सूरि	"	र० का० सं० १७६६ माघ सुदी
(९) पुण्यसार कथा	(पुण्यकीर्ति)	"	र० का० सं० १७६६

प्रारम्भ—नाभि राय नंदन नमु, शांति नेमि जिन पाशि ।
महावीर चउवीसमउ प्रणम्या पुरइ आस ॥१॥

श्री गौतम गणधर सदा, लीला लब्धि निधान ।
समरी सह गुर सरस्वती, वेविष वधारइ वांन ॥२॥

अंतिम पाठ—खरतर गछ मति महिय विरजिउ, युग प्रधान जिनचद ।
आचारज मिहमागिर मुनि वरूए, श्री जिनसिंह सुरद ॥२००॥
हर्षचद्र गणि हर्ष हितकरू, वाचक हस प्रमोद ।
तासु सीस पून्यकीरत इम भाखइ, मन धर अणक प्रमोद ॥१॥
सवत् सोलह सइ छासठि समइ विजय दसमी गुरुवार ।
सांगानेर नगर रलिया मणउ, पमएयउ एह विचार ॥२॥
पद्मप्रभ जिन सुपसाउलउ, दोष दोह गत जा दिन ।
उदय वद्धी मणउ, सुख सपद संतान ॥३॥
एह चरित्र भवियन जे सामलइ दुख दोह गतसु जाइ दीन ।
उदय अद्धकउ न तरुवइ, तसघरन वनि वधाइ ॥४॥

इति अष्ट प्रवचन माता उपर पुण्यसार कथा सपूर्ण ।

(१०) सीमधर स्वामी जिन स्तुति	—	हिन्दी	विशेष
(११) छ जीव कथा	—	,,	—

विशेष—६५ पद्य के आगे ८ पत्र किसी के द्वारा फाड दिए गये हैं।

(१२) श्रावक सूत्र (प्रतिक्रमण)	—	प्राकृत	—
(१३) अतिचार वर्णन	—	,,	—
(१४) नेम गीत	लब्धिविजय	हिन्दी	—
(१५) स्तवन	—	,,	—
(१६) सीमधर स्तवन	गणिलाल चद	,,	—
(१७) चउसरण परिकरण	—	,,	—
(१८) भक्तामरस्तोत्र	—	,,	—
(१९) नवतत्व	—	,,	—
(२०) नेमिराजुलस्तवन	जिनहर्ष	,,	—
(२१) नेमि राजुल गीत	—	,,	—
(२२) सुभद्रासती सज्भाय	—	,,	—
(२३) विजय सेठ विजया सेठाणी सज्भाय	सूरिहर्षकीति	,,	—
(२४) पद–करि अरिहतनी चाकरी	जिनवल्लभ	,,	—

(२५) सज्झाय	—	,,	ले० क० स० १७८१
(२६) पचाख्यान पचतत्र)	कवि निरर्मलदाम	,,	—

आरम्भ—प्रथम जपु अरिहंत, अग द्वादश जु मावधर ।
गणधर गुरु सञ्चत, नमो प्रति गणधर तिसतर ॥
नमो गणेश सारदा अवर गुरू गोत्तम स्वामी ।
तीर्थंकर चौबीस सकल मुनि भए शिवगामी ॥
नमो न्याति श्रावक सकल रस हाय मिल भविक सम ।
तुम्हरे प्रसाद यह उच्चरो पचतत्र की कथा अव ॥
पचख्यान वखानि हो न्याय नीति ससार ।
अल्प बुद्धि भाषा रचु करू ग्रन्थ विस्तार ॥१॥

अन्तिम पाठ—राम नाम निज हीरदै धरै, मुख तैं मिष्ट वचन उचरै ।
सव जिय,सुख सौं अपनै थान, सदा कहै निज मन मे ग्यान ।

दोहा—सम निज थानक सुख लहै, सव मुख सुमरै राम ।
सहस किरत भाषा कियो श्रावक निरमल नाम ॥

इति श्री पचाख्यान श्रावक निरमल दास कृत भाषा सपूर्ण । लेखन काल स० १७५४ जेठ सुदी ५ । ग्र थ ५१ पत्रों में है । तथा ११४१ पद्य हैं ।

(२७) सात व्यसन सिज्झाय	खेम कुशल	हिन्दी	—
(२८) ज्ञान पच्चीसी	—	,,	—
(२९) तमाखु गीत	सहसकर्ण	,,	—
(३०) नल दमयन्ती चौपई	समयसुन्दर	,,	र० का० स० १७२१ पद्य सं० १०
(३१) शाति नाथ स्तवन	केशव	,,	—
२१ क पार्श्वनाथ स्तवन	—	,,	—
(३२) महावीर स्तवन	—	,,	—
(३३) राजमती नो चिट्ठी	—	,,	—
(३४) नववाडी नो सिज्झाय	—	,,	—
(३५) शीलरासो	विजयदेव सूरि	,,	पद्य स० ७६
(३६) दान शील चौपई	जिनदत्त सूरि	,,	ले० का० स० १७४२
(३७) प्रमादी गीत	गोपालदास	,,	२५ पद्य

(३८) आत्म उपदेश गीत	समय सुन्दर	”	—
(३६) यादुरासो	गोपालदास	”	—
(४०) रात्रिभोजन सज्झाय	—	”	—
(४१) तमाखु गीत	मुनि आणद	”	—
(४२) शांति नाथ स्तवन	गुण सागर	”	—
(४३) पच सहेली	छीहल	”	र० का० स० १५७५ फागुण सुदी १५
(४४) माति छत्तीसी	यश कीर्ति	”	र० का० स० १६८८
(४५) यादवरासो	पुण्य रतन गणि	”	ले० का० स० १७४३
(४६) सिंहासन बत्तीसी	—	”	ले० का० स० १६३६
(४७) नेमिराजमतिगीत	—	”	—
(४८) मुनिगीत	—	”	—
(४६) मास	मनहरण	”	र० का० स० १७३५
(५०) सिंघासन बत्तीसी	हरि कलश	”	र० का० सं० १६३२ आसोज बुदी २

५६६. गुटका न० ६८—पत्र सख्या–१७४। साइज–६३⁄४×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–स० १७१८ वैशाख सुदी ६। पूर्ण।

विशेष—पर्वतधर्मार्थी कृत समाधितत्र की बाल बोध टीका है। प्रति जीर्ण है।

६०० गुटका न० ६६—पत्र सख्या–१४६। साइज–१०×८½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। लेखन काल–स० १७६७ वैशाख बुदी ३। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है –

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
जिनसहस्रस्तवन	आशाधर	सस्कृत	—
नवग्रहपूजाविधान	—	”	—
ऋषिमडलस्तोत्र	—	”	—
भूपाल चौवीसी	भूपाल कवि	”	—
आदित्यवार कथा	भाउ कवि	हिन्दी	५६ पद्य
सामायिक पाठ टीका सहित	जयचदजी छावडा	”	—

६०१. **गुटका न० १००**—पत्र सख्या–२८ । साइज–१०×७ इञ्च । भाषा–प्राकृत–हिन्दी । लेखन काल–स० १७०६ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष—गुणचद्र सूरि के शिष्य छात्र कल्याण कीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी । त्रिभगी का वर्णन है ।

६०२. **गुटका न० १०१**—पत्र सख्या–१२२ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—लक्ष्मीदास कृत श्रेणिक चरित्र है । भाषा–हिन्दी है । कुल पद्यों की सख्या १६७५ है, अन्तिम के कुछ पद्य नहीं हैं । श्रेणिक चरित्र के मूलकर्त्ता भ० शुभचन्द्र हैं ।

६०३ **गुटका न० १०२**—पत्र सख्या–८० । साइज–१०×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–स० १६४८ । पूर्ण ।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
पद	मघपति राइ डूगर	हिन्दी	—
	श्री जेण सासण सकल सुह गुर गिर दे राउर भाव ।		
पद	—	"	—
	कुशल करि कुशल करि कुसल सुरिंद गुरु ।		
पद	कालक सूरि	"	—
	जय जय भदा जय जय नदा वनिता वचन विकासइरे ।		
मणिहार गीत	कवि वीर	"	—
	वीर जी वयणे विरचीया, श्रेणिक मन माहि सोइ ।		
गीत	—	"	—
	करि शृगार पहिर हार तजि विकार कामनी ।		
जइतपद वेलि	कनकसोम	"	४६ पद्य हैं ।
	र० का० स० १६२५, ले० का० सं० १६४८ भादवा बुदी ८ ।		

प्रारम्भ—सरसति सामणि वीनवु , मुझ दे अमृत वाणि ।
मूलयकी खरतरतणा, करिस्यू विरद वखान ॥१॥
श्रावक श्रावी मिलि सुणउ मनि धरि अति आणद ।
चिति विष वादन कों धरउ, साचउ कहर मुनिंद ॥२॥
सोलह पचीसइ समइ, वाचक दया मुनीस ।
चउमामि आया आगरइ, बहुयरि करि सुजगीस ॥३॥

रतनचद्र वइरागि गणि, पडित साधु कीरति ।

हरिरंग गुण आगलउ ज्ञानादेवकी रति ॥४॥

अन्तिम पाठ—दया अमर माणिक गुरु सीस, साधु कीरति लहीय जगीस ।

मुनि कनक सोम इम आखइ चउ विह श्री सघ की साखइ ॥४६॥

इति श्री जइत पद वेलि । सवत् १६४८ वर्षे अषाढ बुदी अन्टमी ।

(६) चूनडी	साधुकीर्त्ति	हिन्दी	—
(थाउलपुरि सोहामणउ, गढ मढ मन्दिर वाई हो)			
(७) मजारी गीत	जिनचन्द्र सूरि	”	—
आली गारउ उदिरउ, नित खेलइ आखि ।			
(८) वइरागी गीत	—	”	—
(९) शील गीत	भारवदास	”	—
(१०) पद	—	”	—
(११) दानशीलतपभावना	—	हिन्दी	१४ पद्य हैं ।
सरसति स्वामिणि वीनवु वरदेई सारदा मोहि हो ।			
(१२) गोरी काली वाद	—	”	—
(१३) श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र	—	प्राकृत	—
(१४) पार्श्वनाथ नमस्कार	अभयदेव	”	—
(१५) रागरागिनी भेद, सगीत भेद	—	हिन्दी	—
(१६) नेमिनाथ स्तवन	—	”	—

आरम्भ—श्री सद्गुरुना पाय नमी, जिणवाणी पणमेवि ।

नय भव नेमीसर तणा सपेपइ पभणेसु ।

सील सिरोमणि गुण निलउ, जादव कुल सिणगार ।

सुणता तेह तण उचरी, पामीजइ भवपार ॥२॥

अन्त—इय नेमि जिण जगदीस गुरु, परम सिव लछी वरो ।

हरिवस खीर समुद्र ससिहर सामि सुह सपइ करो ।

उदाम काम कुरग केसरि, सिवादेवि नंदणउ ॥

मह देहि नीय पइ कमल सेवा, सयल जण आणंदणो ॥४३॥

(१७) वेताल पच्चीसी	वेतालदास	हिन्दी

प्रारम्भ—सरसति सुललित वचन विलास, आपउ सेवक पूरइ आस ।
तुम्ह पसाइ हुअइ वुद्धि विशाल, कविता रसके छवउ रसाल ।
महियल मालव देस विख्यात, धरमी लोक विसन नहीं सात ।
उज्जेणी नगरी सु विसाल, राज करइ विक्रम भूपाल ॥२॥

अन्तिम—प्रगट हुई सर्व सिधि रिधि वहु वुधि नरेसर ।
सरउ काज तुम्हि करउ राज, जाम तपइ दिणेसार ॥
इद्रइ दीधउ मान वली, वरदान इसी परि ।
ए प्रबंध तुम्ह तणउ प्रसिधि होसी जग भीतरि ॥
रंजउ राउ सुपसाउ लहि विक्रमा इत आव्यउ घरहिं ।
उज्जेण नगरि उछव हुय हरष करी अति विस्तरिहि ॥२९७॥
राज रिधि सव सिधि सुबस विस्तरइ महीतलि ।
जरा मरण अवहरण, जन्म लब्भइ उत्तिम कुलि ॥
धरम धराउ धरण करण सुख अहि निसि ।
रमण रूपि रमा समाण, तिजि माण हुउ वसि ॥
चिहु पदहि प्रथम अक्षर करी, जास नाम अछइ प्रसिद्धि ।
तिणि कही कथा पच वीसए सरस वाचउ विवुध ॥२९७॥

इति वेतालपचीसी चउपई समाप्त ।

(१८) विक्रमप्रवन्ध रास विनयसमुद्र हिन्दी र० का० स० १५८३
२६४ पद्य हैं ।

प्रारम्भ—देव सरसति २ प्रथम पणवेवि, वीणा पुस्तक धारिणी ।
चद्र विहसि सु प्रससि वल्लइ कासमीरपुर वासिणी ॥
देइ नांण अनाण पिल्लइ कवियणनी माडली दिउ मुझ वुधि विशाल ।
जिम विक्रम राजा तणउ कहउ प्रवन्ध रसाल ॥१॥

मध्य भाग—विक्रमा दत्य तेज आदित्य बोलइ वचन करइ ते सत्य ।
बलि मागइ सीजउ आदेस खम नयरि करि वेग प्रवेश ॥२४२॥
श्री जयकर्ण राय मेचरे त्रीजीमि चडि साहस करे ।
पेटी आणि वेगि तिहा जाइ, राजा चाल्यु करि समदाइ ॥२४६॥

अन्तिम भाग—सवत पनरह सई त्रासीयइ, ए चरित्र निसुणी हरि सीयइ ।
साहसीक जे होइ निसकि, कायर कपइ जे बलि रकि ।

श्री उवएसगच्छ गण वर सूरि, चरण करण गुण किरण मयूर ।
रयण प्रणु गुणगण भूरि, तसु ग्रंनुक्रमि जयइ सिद्धसूरि ॥६७॥
तेह नइ वाचक हर्ष समुद्र तसु जसु उजल धीर समुद्र ।
तसु विनये विन या वृद्धि एह, रच्यु प्रवधि निरपि तयेह ।
पच डड नामा सुचिरित्र, देखी वेहनउ आवि विचित्र ।
तिथि विनोद चउपई रसाल, कीधी सुणतां सुख रसाल ॥४६६॥

(१६) विद्याविलास चउपई   आज्ञासुदर   हिन्दी   ३६४ पद्य हैं।
रचना काल स० १५१६

प्रारम्भ—गोयम गणहर पाय नमी सरसति हियइ धरेवि ।
विद्या विलास नरवइ तणउ, चरिय भणु सखेवि ॥१॥
जिम जिम समालियइ श्रवणि पुण्य पवित्र चरित्र ।
तिम तिम परमाणद रस अहनिसि विलसइ चित्त ॥२॥
भण कण कचण सुयण जण राणिम भोग विलास ।
मन वछित सुख सपजइ जसु हुय पुण्य प्रकाश ॥३॥

चउपई—पुण्य पमाई पाम्यउ राज, पुण्य प्रमाणि चड्या सविकाज ।
धन वन विद्या विलासहचरी, तेहिय निमणउं आदर करी ॥४॥

मध्य भाग—कमलवती पुत्री तणउ पाणि ग्रहण करत ।
तउमु तउ नरवइ सुणउ वाचा अरणहु त ॥६८॥

अन्तिम पाठ—इण परि पूरउ पाली आउ, देवलोकि पहुतउ नरराउ ।
खरतर गच्छि जिन वरद्धन सूरि, तासु सीस बहु आणद पूरि ॥
श्री आज्ञासु दर वमु वज्झाय, नव रस किद्ध प्रवध सुभाव ।
सवत् पनरह सोल वरसमि सघ वयणिएविय सुरम्म ॥
विद्या विलास नरिंद चरित्त, भविय लोय एह पवित्त ।
जे नर पढइ सुणइ सामलइ, पुण्य प्रभाव मनोरथ फलइ ॥३६४॥
इति श्री विद्या विलास चउपई ।

(२०) साठि सवत्सरी   —   हिन्दी   —
स० १६४८ मे स० १६६० का वर्णन है। विषय-ज्योतिष ।

६०४   गुटका न० १०३—पत्र सख्या-७५ । साइज-७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण
विशेष—कर्मों की १४८ प्रकृतियों तथा चौवीस दडकों का वर्णन है ।

६०५. **गुटका नं० १०४**—पत्र संख्या-३१ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण

विशेष—सकलीकरणविधान, न्हवनविधि, तथा पूजा संग्रह है ।

६०६ **गुटका नं० १०५**—पत्र संख्या-१२० । साइज-५½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—नित्य नियम पूजायें आदि हैं ।

६०७. **गुटका नं० १०६**—पत्र संख्या-११८ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

६०८. **गुटका नं० १०७**—पत्र संख्या-२५५ । साइज-५½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशे—पूजा पाठ संग्रह है ।

६०९ **गुटका नं० १०८**—पत्र संख्या-२०० । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) यशोधर चरित्र	खुशालचंद	हिन्दी	र० का० सं० १७७५ पद्य ५९६
(२) सप्तपरमस्थानकथा	"	"	— पद्य सं० ८३
(३) मुकटसप्तमीव्रतकथा	"	"	लेखनकाल सं० १८३६ पद्य सं० ५२
(४) मेघमालाव्रतकथा	"	"	सं० १८३० पद्य ४४
(५) चन्दनषष्टिव्रतकथा	"	"	"
(६) लब्धिविधानव्रतकथा	"	"	"
(७) जिनपूजापुरंदरकथा	"	"	"
(८) षोडशकारणव्रतकथा	"	"	"
(९) पद (५)	"	"	"
(१०) रूपचंद की जखडी	रूपचंद	"	१८३०
(११) एकीभावस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"	१८३१ वैशाख बुदी ३
(१२) भक्तामरस्तोत्रभाषा	—	"	"
(१३) कल्याणमंदिरभाषा	—	"	"
(१४) शनिश्चर देव की कथा	—	"	१८७४ जेठ सुदी १५

(१५) आदित्यवार कथा　　भाऊ　　हिन्दी　　१८७४ आषाढ सुदी ४

१६) नेमिनाथ चरित्र　　अजयराज　　"

पद्य सख्या-२६४। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। रचना काल-स० १७६३ असाढ सुदी १३। लेखन काल-स० १७८८ चैत्र सुदी ८।

प्रारम्भ—श्री जिनवर वदौ सबै, आदि अत चववीसै।
ज्ञान पु जि गुण सागिखा, नमो त्रिभुवन का ईस ॥१॥
तामै नमि जिणंद को बदौ बारंबार।
तास चरित वखाणिस्यो, तुछ बुधि अनुसार ॥२॥

मध्य भाग—जो होइ वियोग तिहारो, निरफल ह्वै जनम हमारो।
तातै सजम अब तजिए ससार तणा सुख मजिए॥
जल विन मीन जिव क्मि मीन, तैसे हू तुम आधीन।
तुम भाव दया जी कीन्हा, सब जीव छुडाई जी॥

अन्तिम भाग—अजयराज इह कीयो बखाण, राज सवाई जयसिंह जाण।
अवावती सहरै सुभ थान, जिन मन्दिर जिम देव विमाण॥
नीर निवाण सोहै वन राई, वेलि गुलाब चमेली जाइ।
चपो मरवो अरै सेवति, यौ ही जाति नाना विध कीर्ता ॥२५८॥
वहु मेवा विधि सार, वरणत मोहि लागै वार।
गढ मन्दिर कछु कह्यो न जाइ, सुखिया लोग बसे अधिकाइ ॥२५६॥
तामै जिन मन्दिर इन सार, तहां विराजै श्री नेमिकुमार।
स्याम मूर्ति सोभा अति घणी, ताकी ओपमा जाइ न गणी ॥२६०॥
जाकै भाग उदै सुभ होइ, करि दरसण हरषै भेट सोई।
आवै जातै सरावग घणा, काटै कर्म सबै आपणा ॥२६१॥
अजैराज तहां पूजा कराई, मन वच तन अति हरष धराई।
निति प्रति वदै ते वारवार, तारण तरण कहै भव पार ॥२०२॥
ताको चरित कह्यौ मन अपणा बुधि सारू उपजाई।
पडित पुरुष हसो मति कोई, भूल चूक यामै जो होई ॥२६२॥
सवत् सतरासै त्रैणवै, मास असाढ पाई वर्णयो।
तिथि तेरस अधेरी पाख, शुकवार शुभ उतिम दाख॥

इति श्री नेमिनाथजी की चौपई सपूर्ण।

इह पोथी है साह की, चुहड माल तसु नाम।
मान महातमा लिपि करी, नगर अबावती धाम ॥

इसके अतिरिक्त चौवीस तीर्थंकर स्तुति एव कक्का बत्तीसी आदि पाठ और हैं।

६१०. **गुटका न० १०६**—पत्र सख्या–१६४। साइज–५३/४×४१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण।

विशेष—सुदर्शन रास—पद्य सख्या २०१। लेखन काल–स० १८०१ कातिक सुदी ८। पूर्ण।

इसके अतिरिक्त १० और पाठ है।

६११ **गुटका न० ११०**—पत्र सख्या–१२०। साइज–६×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का सग्रह है।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
ढ्ढाणागीत	—	हिन्दी	—
शिवपच्चीसी	बनारसीदास	,,	—
समवशरणस्तोत्र	—	संस्कृत	—
पचेन्द्रियवेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी	—
पद	सुन्दर	,,	—
बत्तीसी	मंनराम	,,	—

अत में बहुतसी जन्मकु डलियां दी हुई हैं।

६१२ **गुटका न० १११**—पत्र सख्या–५ से १२४। साइज–६×४१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
जिनसहस्रनाम भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	,,	—
भक्तामरस्तोत्र	हेमराज	,,	—
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	बनारसीदास	,,	—
पद	दीपचद	,,	—
	सेवा में जाय सोही सफल घडी।		
पद	—	,,	—
	मेरे तो यह चाव है निति दरसण पाउ।		

पद	कनककीर्ति	,,	—
	अवगुनहु बकसो नाथ मेरो।		
पद	द्यानत	,,	—
	सुमरण ही में त्यारो द्यानत प्रभू		
पद	मनराम	,,	—
	अखियां आज पवित्र भई मेरी		
पद	सोभा कही न जिनवर जाय जिनवर मूरति तेरी		

इस तरह के २२ पद्य और हैं।

त्रेपन क्रिया	ब्रह्मगुलाल	,,	—
पचमकाल का गण भेद	रमचद	,,	—

६१३. **गुटका नं० ११२**—पत्र संख्या-३०। साइज-६×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८८६ कातिक सुदी ११। पूर्ण।

विशेष—गुणविवेक त्रार निशाणी है।

६१४ **गुटका नं० ११३**—पत्र संख्या-८६। साइज-५×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—सर्वोपचामिका भाषा, बारह भावना, एवं पचपरमेष्ठियों के मूल गुण आदि का वर्णन है।

६१५. **गुटका नं० ११४**—पत्र संख्या-५८। साइज-५×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—त्रेपन भावों का वर्णन, नरकों के दोहे, भक्तामर आदि सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१६ **गुटका नं० ११५**—पत्र संख्या-६७। साइज-६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—नित्य नियम पूजा, चौवीसठाणा चर्चा, समायिक पाठ आदि का संग्रह है।

६१७ **गुटका नं० ११६**—पत्र संख्या-३०। साइज-५×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
जिनकुशलसूरि छंद	—	हिन्दी	—
स्तवन	जिनकुशलसूरि	,,	—

गगाष्टक	शकराचार्य	सस्कृत	—
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	,,	—
रगनाथ स्तोत्र	—	,,	—
गोविन्दाष्टक	शकराचार्य	,,	—

६१८. **गुटका न० ११७**—पत्र सख्या–६६ । साइज–७×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण । निम्न सग्रह है —

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पार्श्वनाथ नमस्कार	अभय देव	प्राकृत	—
(२) अजितशाति स्तोत्र	—	,,	—
(३) अजितशांति स्तवन	जिनवल्लभ सूरि	,,	—
(४) भयहर स्तोत्र	—	हिन्दी	—
(५) सर्वाधिष्टायिक स्तोत्र	—	,,	—
(६) जैनरक्षा स्तोत्र	—	,,	—
(७) भक्तामर स्तोत्र	—	,,	—
(८) कल्याणमदिर स्तोत्र	—	,,	—
(९) नमस्कार स्तोत्र	—	,,	—
(१०) वसुधारा स्तोत्र	—	,,	—
(११) पद्मावती चउपई	जिनप्रभसूरि	,,	—
(१२) शक्र स्तवन	सिद्धिसेन दिवाकर	,,	,,
(१३) गोतमरासा	विनयप्रभ	,,	र० का० स० १४१२

६१९. **गुटका न० ११८**—पत्र सख्या–२२० । साइज–६½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सग्रह । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—वीच २ में से पत्र काट लिये गये गये हैं ।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पीपाजी की चतुराई	—	हिन्दी	—
(२) नाग दमन कथा (कालिय नागणी सवाद)	—	हिन्दी गद्य	—
(३) महाभारत कथा	गद्य में ३३ अध्याय हैं ले० का० स० १७८१ आसोज सुदी ८		
(४) पद्मपुराण (उत्तर खड)	—	,,	ले० का० सं० १७८२ श्रावण सुदी ३

(५) पृथ्वीराजवेलि (कृष्ण रूकमणी वेलि)	पृथ्वीराज	,,	३०० पद्य हैं

लेखन का० १७८२ श्रावण सुदी १३ । हिन्दी गद्य टीका सहित है ।

६२०. गुटका नं० ११६—पत्र संख्या-१२ से ६६ । साइज-४½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—हेमराज कृत भक्तामर स्तोत्र टीका है । प्रति जीर्ण है ।

६२१. गुटका नं० १२०—पत्र संख्या-३४ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण एवं जीर्ण ।

विशेष—परमानन्द स्तोत्र, दर्शन पाठ, सहस्रनाम (जिनसेन), सकलीकरण तथा अन्य संग्रह आदि पाठों का संग्रह है ।

६२२. गुटका नं० १२१—पत्र संख्या-४० । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
रामस्तवन	—	संस्कृत	

सनत्कुमारसंहितायां नारदोक्त श्रीरामस्तवराज संपूर्ण ।

आदित्यहृदय स्तोत्र	—	,,	

भविष्योत्तरपुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे ।

सप्तश्लोकी गीता	—	,,	
चतुश्लोकीगीता	—	,,	
कृष्णकवच	—	,,	

६२३. गुटका नं० १२२-पत्र संख्या-११७ ।साइज-४×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र, देवसिद्ध पूजा, लघु चाणक्य नीति शास्त्र आदि पाठों का संग्रह है ।

६२४. गुटका नं० १२३—पत्र संख्या-६० । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—यन्त्र लिखने तथा उसके पूजने की दिनों की विधि दी हुई है ।

६२५. गुटका नं० १२४—पत्र संख्या-१२५ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) सघ पच्चीसी	—	हिन्दी	२५ पद्य
चौबीस तीर्थंकरों के सघों के साधुओं आदि की सख्या का वर्णन है।			
(२) बाईस परीषह वर्णन	—	”	—
(३) मांगीतु गी स्तवन	अभयचन्द सूरि	”	—
(४) सामायिक पाठ	—	”	—
(५) भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	”	—
(६) एकीभाव स्तोत्र भाषा	—	”	—
(७) नेमजी का व्याह लो (नव मगल)	लालचद	”	रचना काल स० १७४० भादवा सुदी ३

विशेष—अलग २ नो मगल हैं। अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

एरी इह सवत सुनहु रसालारी हां,
एरी सतरैसे अधिक चवालारी हां।
एरी भादु सुदि तीज उजारी री हां,
एरी तां इह दिन गीत सुधारी रीहां छै॥

इह गीत मगल नेम जिनका, साहजादपुर में गाइया।
अग्रवाल गरग गोती अनक चूर कहाईया॥
पातिसाह वैठाठिक या न्यौरा चक वैन वाईया।
नौरंगस्याह वली के वारै लाल मगल गाइया॥

(८) चरचा समग्रह	—	हिन्दी	—
विभिन्न चर्चाओं का संग्रह है।			
(९) परमात्म छत्तीसी	भगवतीदास	”	रचना काल सवत् १७५०
पद समग्रह	—	”	

ब्रह्म टोडर, विजयकीर्त्ति, विश्वभूषण, नवलराम, जगतराम, द्यानतराय, खुशालचद, कनककीर्त्ति, लालविनोद आदि कवियों के हिन्दी पदों का सग्रह है।

(१०) पचपरमेष्टी चरचा	—	हिन्दी	—
(११) भक्तामर स्तोत्र भाषा	—	”	—

६२६. गुटका न० १२५—पत्र सख्या—२ से ३३५। साइज—६×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। लेखन काल—स० १७१२ ज्येष्ठ सुदी २। अपूर्ण।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) गुनगजनम	—	हिन्दी	८२२ पद्यों

की सख्या है। प्रारम्भ के १०८ पद्य नहीं है। पद्य सुन्दर है लिपि विकृत है। ले० स० १७१२ जेठ सुदी २।

(२) डू गर की बावनी	पद्मनाभ	,,	र० का० स० १५४३

बावनी मे ५४ पद्य हैं। कवि ने प्रारम्भ और अन्त में अपना परिचय दे रखा है प्रति अशुद्ध है। लेखन काल स० १७१३ अषाढ बुदी २। बावनी के प्रत्येक पद्य में डू गर श्रीमाल को सम्बोधित किया गया है।

(३) विवेक चौपई	ब्रह्मगुलाल	,,	—
(४) चेतन गीत	जिनदास	,,	—
(५) मदनजुद्ध	बूचराज	,,	र० का० स० १५८६
(६) छीहल की बावनी	छीहल	,,	५० पद्य है।
(७) नन्दु सप्तमी कथा	—	,,	र० का० स० १६४३
(८) चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	,,	—
(९) पथीगीत	छीहल	,,	—
(१०) साधु वदना	बनारसीदास	,,	—
(११) जोगीरासो	जिनदास	,,	—
(१२) श्रीपाल रासो	ब्रह्मरायमल्ल	,,	अपूर्ण

इसके अतिरिक्त अन्य पाठ सग्रह भी है। भक्तामर स्तोत्र, पूजा, जयमाल, कल्याणमन्दिर स्तोत्र, पञ्चमगल, मेघकुमार गीत (पूनो) आदि।

६२७. **गुटका न० १२६**—पत्र सख्या-१४६। साइज-६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सग्रह। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—सामान्य पाठों का सग्रह है।

६२८. **गुटका न० १२७**—पत्र सख्या-२४०। साइज-१×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठो का सग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पचाणुव्रत की जयमाल	बाई मेघश्री	हिन्दी	(सुणि चेतन सुगुण वणा जीहां जीव दया व्रत पालो)
(२) सिद्धों की जयमाल	—	,,	—
(३) गोमट्ट की जयमाल	—	,,	

(४) मुनीश्वरों की जयमाल	जिणदास	”	—
(५) योगसार	योगचन्द्र	”	गद्य में दोहों पर अर्थ दिया हुआ है।
(६) अध्यात्म सवैया	रुपचद	”	—

प्रारम्भ—अनभौ अभ्यास में निवास सुध चेतन कौ।
अनभौ सरुप सुध बोध को प्रकास है॥
अनभौ अनूप उप रहत अनत ग्यान।
अनभौ अनीत त्याग ग्यान सुखरास है॥
अनभौ अपार सार आप ही कौ आप जानै।
आप ही मे व्याप्त दीसै जामै जड नास है॥
अनुभौ सरुप है सरुप चिदानन्द चद।
अनुभौ अतीत आठ कम स्यौ अकास है॥१॥

अन्तिम पाठ—चौथे सरवांग सुधि मानै सो मिथ्याती जीव,
स्यादवाद स्वाद विना भूलौ मूढ मती है।
चौथे अति इन्द्री ग्यान जानै नहीं सो अजान,
वहै जगवासी जीव महा मोह रती है॥
चौथे बध्यो खुल्यौ मानै दुहु नें को भेद जानै,
ठानै यो निदान कीयौ साचौ सील सती है।
वार चाल्यौ धारा दोइ ग्यान भेद जानै सोइ,
तेरहे प्रगट चौदे गयो सिध गती है॥

इति श्री अध्यात्म रूपचद कृत कवित्त समाप्त। ग्रन्था ग्रन्थ ४०१।

६२६. **गुटका न० १२८**—पत्र सख्या-१३०। साइज-६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखनकाल-×। अपूर्ण।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं।

काल चरित्र	कबीर	हिन्दी	अपूर्ण
साखी	”	”	२३ पद्य हैं

अन्तिम पद्य—ऐसे राम कहे सब कोई, इन बातीन तो भगतिन न होई।
कहै कबीर सुनहु गुर देवा, दूजो जानै नाही भेवा॥

साखी, कबीर धनी धर्मदास की माला, सबद, रमानी, रेषता तथा अन्य पदों व पाठों का सग्रह है।

गुटका अधिक प्राचीन नहीं है।

६३० गुटका नं० १२९—पत्र संख्या–२ से ८। साइज–८×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। लेखन काल–×। अपूर्ण।

विशेष—संस्कृत मे अभिषेक पाठ है।

६३१ गुटका नं० १३०—पत्र संख्या–१९। साइज–७½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। लेखन काल–×। अपूर्ण।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

६३२ गुटका नं० १३१—पत्र संख्या–२२५। साइज–४×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल–सं० १७७९ मगसिर सुदी ३। पूर्ण।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
मोक्ष पैडी	बनारसीदास	हिन्दी	—
विनती	मनराम	"	—
विनती	अजयराज	"	—
अठारह नाता का चौढाल्या	लोहट	"	दो प्रति हैं।
श्रीपाल स्तुति	—	"	२१ पद्य हैं।
साधु वंदना	बनारसीदास	"	—
आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	"	१५० पद्य हैं।
		ले० का० सं० १७७९ फागुण सुदी ३।	
गुणाक्षरमाला	मनराम	"	४० पद्य हैं।

प्रारम्भ—मन वच कर या जोडि कैरे वदौ सारद मायरे।
गुण अछिर माला कहु सुणौ चतर सुख पाई रे।
माई नर भव पायौ मिनख को ॥१॥
परम पुरिष प्रणमौ प्रथम रे, श्री गुर गुन आराधौ रे,
ग्यान ध्यान मारिगि लहै, होई सिधि सब साधो रे।
भाई नर भव पायौ मिनख कौ ॥२॥

अन्तिम भाग—हा हा हासी जिन करै रे, करि करि हासी थानौ रे।
हीरौ जनम निवारियौ, विना भजन भगवानौ रे ॥३७॥
पढै गुणै अर सरदहै रे, मन वच काय जो पीहारे।
नीति गहै अति सुख लहै, दुख न व्यापै ताही रे।
माई नर भव पायौ मिनख कौ ॥३८॥

निज कारण उपदेस मेरे, कीयौं वुधि अनुसार रे।
कवियण दूसण जिनधरो लीज्यौ सब सुधारी रे।
यह विनती मनराम की रे, तुम हो गुणह निधान रे।
सत सहज अब गणत जो, करै सुगुण परवानौ रे।
भाई नर भव पायौं मिनख कौ ॥४०॥

समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण
विनती	दीपचन्द	"	
	अविनासी आनन्द मय गुण पूरण भगवान ॥		
विनती	कुमुदचंद	"	—
	प्रभु पाय लागौं करू' सेव थारी ॥		
विनती	मनराम	"	—
	पारस प्रभु तुम नाम जी जो सुमरै मन वच काय		
पचमगति वेलि	हर्षकीर्ति	"	—
प्रद्युम्नरास	ब्र० रायमल्ल	"	—

६३३. **गुटका न० १३२**—पत्र सख्या-१० से ३७। साइज-६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—श्रीपाल चरित्र (ब्रह्मरायमल्ल) तथा प्रद्युम्नरास, (ब्रह्मरायमल) अपूर्ण हैं।

६३४. **गुटका न० १३३**—पत्र सख्या-३५। साइज-६×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। लेखन काल-स० १७७३ माह बुदी २। पूर्ण।

विशेष—चिन्तामणि महाकाव्य तथा उमा महेश्वर के संवाद का वर्णन है।

६३५. **गुटका न० १३४**—पत्र सख्या-१०१। साइज-८×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। लेखन काल-×। अपूर्ण

विशेष—ऋषिमण्डल पूजा, दशलक्षण पूजा तथा होम विधान (आशाधर) आदि हैं।

६३६ **गुटका न० १३५**—पत्र सख्या-१६। साइज-७½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

वच्छराज हसराज चौपई—जिनदेव सूरि।

प्रारम्भ— आदीपुर आदि करी, चौवीसउ जिणद।
सुरसती मन समरु सदा, श्री जिनतिलक सुनिंद ॥१॥
सद गुरु पाथि प्रणमु करी पामु गुरु आदेस।

पुनित थामल वोलिसु, कहस्यु लवलेस ॥२॥
पुनि हु सुख उपजै हां, पुन्य सपति होइ ।
राजरीव लोला घणी, पुण्य पावै सोई ॥३॥
पुन्य उत्तम कुल होवै, पुण्य पुरष प्रधान ।
पुण्य पुरो आवुषो, पुण्य वुधी निधान ॥४॥
पुण्य उपरि सुणी जो कथा, सुणता अचिरज थायि ।
हसराज वछराज नृप हुआ पुण्य पसाई ॥५॥

मध्यभाग—

कामनी—विविध तेल ताहा कादि घरे कुमर न जाणै भेद ।
कुमरी नगणे नरींवई रे देखी धरो विषाद ॥७१॥

कामनी—कत मणै ताहां कामनी के दाहारै छैई मन कुड ।
नस टालसी साधि परि करसी सगलो ओ धुड ॥७२
वछराज कहे कामनी रे, चिंता म करि काय ।
जेह वे जिण नई चितवई रे, तेह वो तिण नै थाय ॥७३॥

अंतिम पाठ नहीं है

६३७ गुटका नं० १३६—पत्र संख्या–११३ । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

निम्न लिखित पूजा पाठ संग्रह हैं—रत्नत्रयपूजा, त्रिपचाशतक्रियाव्रतोद्यापन, जिनगुणसपत्तिव्रतपूजा (म० रत्नचन्द), सारस्वतयंत्रपूजा, धर्मचक्रपूजा (अपूर्ण), रविव्रतविधान (देवेन्द्रकीर्ति) वृहत् सिद्धचक्रपूजा ।

६३८ गुटका नं० १३७—पत्र संख्या–५–३६ । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—गणधरवलय पूजा, एवं आचार्य केशव विरचित षोडशकारणपूजा है ।

६३९ गुटका नं० १३८—पत्र संख्या–६८ । साइज–८×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

भक्तामरस्तोत्र, (मंत्र सहित) तथा भक्तामर भाषा हेमराज कृत । एकीभावस्तोत्र मूल एवं भाषा । निर्वाण काण्ड भाषा । तत्वार्थसूत्र, पचमंगल रूपचन्द कृत । चरचा संग्रह–(आठ कर्मों की प्रकृतियों का वर्णन, जीव समास वर्णन आदि हिन्दी म) तथा संस्कृतमंजरी ।

६४०. **गुटका नं० १३६**—पत्र सख्या-१०२ । साइज-७३/४×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
मधुमालती की बात	चतुर्भुजदास	हिन्दी	अपूर्ण
६४५ पद्य तक हैं ।			
पचतत्रभाषा	—	हिन्दी गद्य	

विशेष—मित्र लाभ तथा सुहृद् भेद तो पूर्ण है किन्तु विग्रह कथा अपूर्ण है ।

६४१ **गुटका नं० १४०**—पत्र सख्या-५६ । साइज-७×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
नेमीश्वरराजुलसवाद	विनोदीलाल	हिन्दी	—
पद	नेमकीर्त्ति	"	—
	सरणागति तेरो नाथ त्यारिये श्री महावीर ।		
पचकुमारपूजा	—	"	—
बीस विद्यमान तीर्थंकर पूजा	—	"	—
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	सस्कृत	—
परीषह वर्णन	—	हिन्दी	—
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	"	—

६४२. **गुटका नं० १४१**—पत्र सख्या-६२ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र (मत्रसहित) तथा देवसिद्धपूजा है ।

६४३. **गुटका नं० १४२**—पत्र सख्या-१५ से १८६ । साइज-७×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण एव जीर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) अजितशांति स्तवन	—	प्राकृत	४० गाथा
		प्रथम चार गाथायें नहीं है ।	
(२) सीमधरस्वामीस्तवन	—		
(३) नेमिनाथ एव पार्श्वनाथ स्तवन,			
(४) वीर स्तवन और महावीर स्तवन	—	सस्कृत	—

(५) पार्श्वनाथ स्तवन	—	संस्कृत	—
(६) शत्रु जयमण्डल श्री आदिनाथ स्तवन	—	,,	१३ पद्य हैं
(७) गौतम गणधर स्तवन	—	,,	६ पद्य हैं
(८) वर्द्धमान जिन द्वात्रिंशिका	—	,,	—
(९) मारी स्तोत्र	—	,,	१२ पद्य हैं।
(१०) भक्तामर स्तोत्र	—	,,	४४ पद्य हैं।
(११) सप्तरिसय स्तोत्र	—	,,	—
(१२) शान्ति स्तवन एवं वृहद् शान्ति स्तवन	—	,,	—
(१३) आत्मानुशासन	पार्श्वनाग	,,	७७ पद्य हैं
		र० का० स० १०४० भादवा बुदी १५।	
(१३) अजितनाथ स्तवन	जिनप्रभ सूरि	,,	
(१४) वर्द्धमान स्तुति	—	,,	
(१५) वीतरागाष्टक	—	,,	
(१६) षष्टिशत	भण्डारी नेमिचन्द्र	,,	
(१७) गौतम पृच्छा	—	प्राकृत	
(१८) सम्यक्त्व सप्तति	—	संस्कृत	
(१९) उपदेश माला	—	हिन्दी	
(२०) भर्तृहरि शतक	भर्तृहरि	संस्कृत	

६४४. **गुटका नं० १४३**—पत्र संख्या-५५। साइज-५×२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—चौबीस तीर्थंकरों का सामान्य परिचय है।

६४५. **धर्मविलास—द्यानतराय**। पत्र संख्या-४४। साइज-१०½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८।

विशेष—धर्म विलास द्यानतरायजी की स्फुट रचनाओं का संग्रह है।

६४६. **पद संग्रह**—पत्र संख्या-४१ से ६१। साइज-११×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-संग्रह। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १४७।

६४७. **पाठ संग्रह**—पत्र संख्या-८८ से ११३। साइज-७½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२५।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) भक्तामर स्तोत्र	मानतु ग	सस्कृत	
(२) परमज्योति	बनारसीदास	हिन्दी	
(३) निर्वाणकाण्ड भाषा	भैयाभगवतीदास	”	
(४) छहढाला	द्यानतराय	”	

६४८. पाठसंग्रह—पत्र संख्या-३६ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है —

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पच मगल	रूपचद		
(२) कल्याणमन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	
(३) विषापहार	—	”	
(४) एकीभाव स्तोत्र	भूधर	”	
(५) जिनस्तुति	श्रीपाल	”	
(६) प्रभात जयमाल	विनोदीलाल	”	
(७) बीसतीर्थंकर जखडी	हर्षकीर्त्ति	”	
(८) पचमेरु जयमाल	भूधरदास	”	
(९) वीनती	नवलराम	”	
(१०) वीनतियां	भूधरदास	”	
(११) निर्वाण काण्ड भाषा	भैयाभगवतीदास	”	
(१२) साधु वदना	बनारसीदास	”	
(१३) सबोध पचासिका भाषा	द्यानतराय	”	
(१४) बारह खडी	सूरत	”	
(१५) लघु मगल	रूपचद	”	
(१६) जिनदेव पच्चीसी	नवलराम	”	
(१७) बारह भावना	आलू कवि	”	
(१८) बाईस परीषह	भूधरदास	”	
(१९) वैराग्य भावना	”	”	
(२०) गज भावना	”	”	

(२१) चौबीस दडक	दौलतराम	"
(२२) जखडी	भूधरदास	"

६४६. पाठसंग्रह—पत्र संख्या-४ से १२ तक। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४६।

विशेष—भक्तामर भाषा पूर्ण है एकीभाव स्तोत्र अपूर्ण है।

६५०. पाठसंग्रह—पत्र संख्या-६१। साइज-१०×४½ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३५।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	पत्र
(१) पाखीसूत्र	कुशल मुनिंद	प्राकृत	१ से २० तक
(२) प्रतिक्रमण	—	"	२० से २६ तक
(३) अजितशान्तिस्तवन	—	संस्कृत	३६ से ४६ तक
(४) पार्श्वनाथ स्तवन	—	"	४६ से ५० तक
(५) गणधर स्तवन	—	प्राकृत	५० से ५३ तक
(६) भक्तामर स्तोत्र	—	संस्कृत	५४ से ५८ तक
(७) शान्तिनाथ स्तोत्र	मालदेवाचार्य	"	

इनके अतिरिक्त ये पाठ और —स्थानक स्तुति, नवपद स्तुति, शत्रु जय स्तुति, कल्याणमन्दिर स्तोत्र। मध्या औ विहार, पचक, विचार, षटत्रिंशक, सामायिक विधि एवं संथारा विधि।

६५१. बुधजनविलास—बुधजन। पत्र संख्या-५६। साइज-१०½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-संग्रह। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०६।

विशेष—पं० बुधजनजी की रचनाओं का संग्रह है।

६५२. भूधरविलास—भूधरदास। पत्र संख्या-११६। साइज-७½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १३२।

विशेष—भूधरदास की स्फुट रचनाओं का संग्रह है।

६५३ मित्रविलास—घीसा। पत्र संख्या-५१। साइज-१०½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६५३। पूर्ण। वेष्टन नं० ११०।

विशेष—

प्रारम्भ—श्री जिन चरण नमूं सदा, भ्रम तम नाशक मान।
जा सुम दर्शन दर्शतै, प्रगटत आतम ज्ञान ॥१॥

चौपई—वदू श्रीमत वीर जिनद, मेटत सकल कर्म जग फद,
बन्दू सिद्ध निरजन देव, अप्टगुणातम त्रिभुवन सेव।
वदो आचारज गुण लीन, जिन निज भाव सुद्ध अति छीन ॥
वदो उपाध्याय करि ध्यान, नाशक मिथ्यातम अज्ञान,
वदू साधु महा गभीर, ध्यान विषय अति अचल शरीर।
वदू वीतराग हित भाव, आतम धर्म प्रकाशन चाव ॥४॥
मित्र विलास महासुख दैन, वरनू वस्तु स्वभाविक ऐन।
प्रगट देखिये लोक मझार, सग प्रसाद अनेक प्रकार ॥५॥

—सवैया—

अन्तिम— कर्म रिपु सो तो च्यारु गति में घसीट फिर्‌यो,
ताही के प्रसाद सेती घीसा नाम पायो है।
मारामल मित्र वो वहालसिंह पिता,
तिनकी सहाय सेती ग्र थ यो वनायो है ॥
यामें भूल चूक होय सोधि सो सुधार लीजो,
मो पै कृपा दृष्टि कीजो भाव यो जनायो है।
दिग निध सत ज्ञान हरि को चतुर्थ गन,
फागुन सुदि चोथ मान जिन गुन गायो है ॥

दोहा—आनंदमय आनद करन हरन सकल दुख रोग।
मित्र विलास ग्र थ यह निज रस अमृत भोग ॥

इसमें निम्न लिखित पाठों का सग्रह है —

षट द्रव्य निर्णय—दूसरे अधिकार तक। भावों का पूर्ण सैद्धान्तिक विवेचन है।

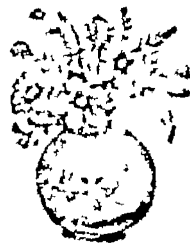
द्वादस व्रत वर्णन, कषाय के पच्चीस भेद वर्णन, सम्यक् दृष्टि अवस्था वर्णन, गुरु स्वरुप वर्णन, द्वादसानुप्रेक्षा वर्णन, वाईस परीषह वर्णन, पच प्रकारचारित्र वर्णन, मोक्ष तत्व वर्णन, एव सुख दुख निर्णय/ग्र थ का विषय है आत्मा में स्व और परभावों का सैद्धान्तिक विवेचन।

६५४ वचनशुद्धिव्याख्यान—पत्र सख्या–६। साइज–१२×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सग्रह। रचना काल–×। लेखन काल–स० १९४३ जेष्ठ बुदी ऽऽ। पूर्ण। वेष्टन न० १५१।

विशेष—व्याख्यान कर्ता झू थालालजी को कहा गया है।

६५५. विनती पद संग्रह—पत्र संख्या-[illegible] से [illegible] । साइज-[illegible] इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्फुट संग्रह । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० [illegible] ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
विनती	भूधरदास	हिन्दी	—
भक्तामर भाषा	हेमराज	"	—
सम्मेदशिखर पूजा	नंदराम	"	—
स्फुट श्लोक	—	संस्कृत	—
पद	द्यानतराय	"	—
उपदेश पद	—	"	—
पद	नवलराम	हिन्दी	—
आलोचना पाठ	जौहरीलाल	हिन्दी	—
पद	द्यानतराय	हिन्दी	—



卐 ग्रन्थानुक्रमणिका 卐

अ

आ

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
ज्ञानपच्चीसीव्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	२०५
ज्ञानपूजा	—	(सं०)	१००
ज्ञानसार	रघुनाथ	(हि०) प	२६०
ज्ञानसूर्योदयनाटक	वादिचन्द्र सूरि	(सं०)	८६
ज्ञानसूर्योदय नाटक भाषा	पारसदास निगोत्या	(हि०)	६०
ज्ञानमार्गणा	—	(हि०)	२८
ज्ञानसारगाथा	—	(प्रा०)	१३२
ज्ञानबत्तीसी	बनारसीदास	(हि०)	१६३
ज्ञानसूघडी	शोभचन्द्र	(हि०)	१२६
ज्ञानानंद श्रावकाचार	रायमल्ल	(हि०)	२८
ज्ञानार्णव	आ० शुभचन्द्र	(सं०)	४०, १६२
ज्ञानार्णव भाषा	जयचन्द छाबडा	(हि०)	४०
ज्ञानार्णव तत्वप्रकरण टीका		(हि०)	२५२
जिनकुशलसूरि छंद	—	(हि०)	१००
जिनगीत	अजयराज	(हि०)	१६३
जिनगुणसंपत्तिव्रतपूजा	भ० रत्नचन्द्र	(सं०)	३०८
जिनगुणसंपत्तिव्रतोद्यापन	—	(सं०)	२०५
जिनगुणसंपत्ति व्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६६
जिनगुणपच्चीसी	—	(हि०)	२८
जिनदत्तचरित्र	गुणभद्राचार्य	(सं०)	६६
जिणयत्तचरित्र (जिनदत्तचरित्र)	पं० लाखू	(अपभ्रंश)	६६
जिनधर्मपच्चीसी	भगवतीदास	(हि०)	१५५
जिनदेवपच्चीसी	नवलराम	(हि०)	३१०
जिनपंजरस्तोत्र	कमलप्रभ	(सं०)	१०२
जिनपूजापुरंदर कथा	खुशालचंद	(हि०)	२६७
जिनदर्शन	—	(प्रा०)	१०२
जिनदर्शन	—	(सं०)	१२३
जिनपालितमुनि स्वाध्याय	विमलहर्ष वाचक	(हि०)	१८४
जिनमंगलाष्टक	—	(सं०)	२६६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
जिनराजस्तुति	कनककीर्त्ति	(हि०)	१५२
जिनराज विनती	—	(हि०)	१५३
जिनरात्रिव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६५
जिणलाडूगीत	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	११७
जिनविनती	सुमतिकीर्त्ति	(हि०)	१६८
जिनयज्ञकल्प (प्रतिष्ठापाठ)	आशाधर	(सं०)	२००
जिनस्तुति	—	(हि०)	१०३
जिनस्तुति	रूपचंद	(हि०)	१५२
जिनस्तुति	श्रीपाल	(हि०)	३११
जिनवाणीस्तुति	—	(सं०)	१५८
जिनसंहिता	—	(सं०)	५३
जिनस्वामीविनती	सुमतिकीर्त्ति	(हि०)	११७
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	(सं०)	१०२, १०७, ११६, २०८, २३६, ३०१, ३०३
जिनसहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(सं०)	५३, ११४
जिनसहस्रनामपूजाभाषा	स्वरूपचंद बिलाला	(हि०)	५२
जिनसहस्रनाम	आशाधर	(सं०)	१०२, १३४, २०४, २३६, २६२
जिनसहस्रनामस्तोत्र	—	(सं०)	२८८
जिनसहस्रनामटीका	मू० आशाधर टीका० श्रुतसागर सूरि	(सं०)	१०२, २३६
जिनसहस्रनाम टीका	अमरकीर्त्ति	(सं०)	२३६
जिनसहस्रनाम भाषा	बनारसीदास	(हि०)	१०३, १३७, २६६
जीवों की संख्या का वर्णन	—	(हि०)	२८
जीतकल्पाव चूरि	—	(हि०)	१७०
जीवंधरचरित्र	आ० शुभचन्द्र	(सं०)	२११
जीवमोक्षबत्तीसीपाठ	—	(हि०)	२
जीवसमासवर्णन	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
त्रिलोकसार भाषा	उत्तमचन्द	(हि०)	६३
त्रिलोकसार बंध चौपई	सुमतिकीर्त्ति	(हि०)	६२,११८
त्रिलोकसार सन्दृष्टि	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१८०
त्रिलोकप्रज्ञप्ति	—	(प्रा०)	१५६
त्रिलोकप्रज्ञप्ति	यति वृषभ	(प्रा०)	२३४
त्रिलोकसार सटीक	मू० क० नेमिचन्द्राचार्य टीका० सहस्रकीर्त्ति	(प्रा०)	२३४
त्रिभंगीवर्णन	—	(हि०)	२६३
त्रिवर्णाचार	सोमसेन	(सं०)	१८४
त्रिंशतिकाटीका	—	(सं०)	२४७
त्रिंशच्चतुर्विंशति पूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	२००
तीनचौबीसी	—	(हि०)	११
तीन चौबीसी तीर्थङ्करों की नामावलि		(हि०)	१५७,१५८
तीनचौबीसीपूजा	—	(सं०)	२०६,२००
तीर्थ करविनती	कल्याणकीर्त्ति	(हि०)	१४१
तीर्थमालास्तोत्र	—	(सं०)	१३३
तीर्थंकरवर्णन	—	(हि०)	६
तीर्थंकरों की गर्भ जन्मादि कल्याणों की तिथियां		(हि०)	१५७
तीर्थंकरजयमाल	—	(हि०)	१६२
तीनलोक के चैत्यालयों का वर्णन		(हि०)	१२४
तीनलोककथन	—	(हि०)	१२८
तीनलोकपूजा	टेकचंद	(हि०)	८०
तीर्थमहात्म्य	लोहाचार्य	(प्रा०)	३०
तीनचौबीसी के नाम	—	(हि०)	१२८
तीनचौबीसीपाठ	—	(हि०)	२
तीस चौबीसीपूजा भाषा	वृन्दावन	(हि०)	८३
तीनचौबीसीपूजा भाषा	—	(हि०)	६३
त्रेपनक्रियाविधि	दौलतराम	(हि०)	८८
त्रेपन क्रिया	ब्रह्म गुलाल	(हि०)	३००
त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	२०५
त्रेपनभाववर्णन	—	(हि०)	३००
तेरहकाठिया	बनारसीदास	(हि०)	२८२
तेरहद्वीपपूजा	—	(हि०)	५३
तेलाव्रत की पूजा	—	(सं०)	२०१
त्रेसठशलाकापुरुष	—	(हि०)	१६३
त्रेसठशलाकापुरुषों का वर्णन	ब्र० कामराज	(हि०)	१६३
त्रेसठशलाकापुरुष नामावलि	—	(हि०)	१५६
त्रैलोक्यदीपक	वामदेव	(सं०)	६३
त्रैलोक्यतीजकथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	(हि० प०)	२६५

द

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
दक्षिणयोगीन्द्रपूजा	आ० सोमसेन	(सं०)	२०१
दशक्षेत्रों के चौबीस नाम	—	(हि०)	१२७
दशरथजयमाल	—	(प्रा०)	१२०
दशलक्षणजयमाल	रइधू	(अ०)	५३,२०१
दशलक्षणजयमाल	—	(सं०)	५६,६१
दशलक्षणजयमाल	भावशर्मा	(प्रा०)	५४,२०१
दशलक्षणधर्म प०	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	१८८
दशलक्षण धर्म वर्णन	—	(हि०)	२८,३६
दशलक्षणपूजा	—	(सं०)	५४,२०१ ३०७
दशलक्षण पूजा	अभयनदि	(सं०)	२०१
दशलक्षण पूजा	सुमति सागर	(सं०)	५४
दशलक्षण पूजा	—	(हि०)	२८६
दशलक्षण व्रत कथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२८५
दशलक्षणव्रतोद्यापन पूजा	—	(हि०)	२०१,२०४
दशस्थान चौबीसी	द्यानतराय	(हि०)	२५६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
पदसग्रह	टेकचंद	(हि०)	११३
पद	टोडर	(हि०)	१२८
पद	डालूराम	(हि०)	१८७
पद	सघपति राइ डू गर	(हि०)	२६३
पदसंग्रह	ब्र० दयाल	(हि०)	१०४
पद	द्यानतराय	(हि०)	१२६, १३७, १६३, ३१०
पदसग्रह	दीपचन्द्र	(हि०)	११३, १५१, १५३, १६३, २६६, १२७, १३७
पदसग्रह	मंदास	(हि०)	११३
पद	नददस	(हि०)	२८८
पद	नवलराम	(हि०)	१३७, १५१, १६२
पद	नाथू	(हि०)	१०७
पद	नेमकीर्त्ति	(हि०)	३०६
पद	पूनो	(हि०)	१३२
पद	परमानद	(हि०)	११६
पद	बुधजन	(हि०)	१३७
पद	बालचन्द	(हि०)	१२३
पद	भागचन्द	(हि०)	१६२
पद	बनारसीदास	(हि०)	११३, १५३, १५५, १६१, १६३
पद	भूधरदास	(हि०)	११३, १३७, १५१, १५५
पदसग्रह	मनराम	(हि०)	११४, ११५, १२०, १६०, ३००, ३१०
पद	मलजी	(हि०)	१३७
पद	रामदास	(हि०)	१२६, १३२
पद	ऋषभनाथ	(हि०)	१३१
पद	रूपचंद	(हि०)	१११, ११३, १२३, १२६, १६३, १६५

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
पद	बखतराम	(हि०)	१३७
पद	वृन्द	(हि०)	१३२
पद	विश्वभूषण	(हि०)	१३१, १३२
पद	श्यामदास	(हि०)	१६४
पद	सालिग	(हि०)	१६२
पद	कवि सुन्दर	(हि०)	१६७, २८६
पद	सूरदास	(हि०)	२८८
पद	सोभचद	(हि०)	१५५
पद	हरखचद (धनराज के शिष्य)	(हि०)	२८६
पदसग्रह	हर्षचद	(हि०)	११३
पद	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	११७
पद	हरीसिंह	(हि०)	१२७, १३७, १६२
पदसग्रह	—	(हि०)	१०३, १०४, १२६, २८०, १२८, १४३, १४५, १४६, १४८, १५१, १५३, १५८, १६३, २६३, २६४, २६६, ३०३, १३४, २८८, २७२
पदसग्रह (सत्तर प्रकार पूजा प्रकरण)	साधुकीर्त्ति	(हि०)	२७३
पद्मपुराण	रविषेणाचार्य	(सं०)	२२३
पद्मपुराण (उत्तर खण्ड)	—	(हि०)	३०१
पद्मनदिपचविंशति	पद्मनदि	(प्रा०)	३०, २५६
पद्मनदिपच्चीसी	मन्नालाल खिन्दुका	(हि०)	३१
पद्मपुराणभाषा	खुशालचद	(हि०)	६८
पद्मपुराणभाषा	दौलतराम	(हि०)	६४, २२३
पद्मावतीअष्टकवृत्ति	—	(सं०)	१०८
पद्मावतीकवच	—	(सं०)	२०२
पद्मावतीपटल	—	(सं०)	२०२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
प्रवचनसार सटीक	अमृतचन्द्र सूरि	(सं०)	१६३
प्रश्नोत्तरोपासकाचार	बुलाकीदास	(हि०)	३१,१८६
प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	सकलकीर्त्ति	(सं०)	३१, ३२, १८६
प्रश्नोत्तरमाला	—	(हि०)	१३७
प्रशस्तिका	—	(सं०)	२५६
प्रसंगसार	रघुनाथ	(हि०)	२६२
प्रस्ताविकदोहा	जिनरंग सूरि	(हि०)	१४१
पल्यविधानपूजा	रत्ननंदि	(सं०)	५८, १७२
पल्यविधान	—	(हि०)	१५७
पल्यविधानकथा	—	(सं०)	१५७
पल्यव्रतोद्यापनपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	२०५
पल्यविधानकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि० प०)	२६५
पहेलियाँ	—	(हि०)	१३६
पाखण्डदलन	वीरभद्र	(सं०)	१८१
पाखीसूत्र	कुशाल मुनिंद	(प्रा०)	३१०
पाठसंग्रह	—	(प्रा०)	१७२
पाठसंग्रह	—	(हि०)	१७०,३१०
पाठसंग्रह	—	(सं०)	१७२
प्राकृतव्याकरण	चउ	(सं०)	२३०
प्राकृतव्याकरण	—	(सं०)	२३०
पांडवपुराण	बुलाकीदास	(हि०)	६८
पांडवपुराण	भ० शुभचंद्र	(सं०)	६८, १२३
पार्श्वनाथपूजा	—	(हि०)	५८
पार्श्वनाथजयमाल	—	(सं०)	१५१
पार्श्वनाथ की वीनती	—	(हि०)	१५२
पार्श्वनाथजिनस्तवन	—	(सं०)	१४०
पार्श्वनाथस्तवन	—	(हि०)	१३८,२४०, २६१
पार्श्वनाथस्तवन	रंगवल्लभ	(हि०)	१४०
पार्श्वनाथस्तवन	विजयकीर्त्ति	(हि०)	१६१
पार्श्वनाथस्तवन	—	(सं०)	३०६,३१०, ३१२
पार्श्वनाथनमस्कार	अभयदेव	(प्रा०)	३०१,२६४
पार्श्वदेशान्तर छन्द	—	(हि०)	२६०
पार्श्वनाथस्तुति	—	(हि०)	१६५
पार्श्वनाथस्तुति	भाव कुशल	(हि०)	१६६
पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(सं०)	१०४,२८८, १८७, २४०, २७५
पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(प्राचीन हि०)	१३३
पार्श्वनाथस्तोत्र	जिनराज सूरि	(सं०)	१६०
पार्श्वनाथस्तोत्र	कमललाभ	(हि०)	१४०
पार्श्वनाथस्तोत्र	मनरंग	(हि०)	१४०
पार्श्वनाथस्तोत्र	जिनरंग	(हि०)	१४०
पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(हि०)	१५२
पार्श्वनाथस्तोत्र	मुनि पद्मनंदि	(सं०)	२४०
पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	(सं०)	२६६
पार्श्वनाथलघुस्तोत्र	समयराज	(हि०)	१४०
पार्श्वनाथ का सालेहा	अजयराज	(हि०)	३०,१६३
पार्श्वजिनस्थान वर्णन	सहजकीर्त्ति	(हि०)	१६७
पार्श्वनाथचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	२१३
पार्श्वपुराण	भूधरदास	(हि०)	७०,२११, २१३
पार्श्वलघुपाठ	—	(प्रा०)	१०४
पार्श्वस्तोत्र	—	(सं०)	११२,२७६
पार्श्वस्तोत्र	पद्म प्रभदेव	(सं०)	११२,२८७
पार्श्व भजन	सहज कीर्त्ति	(हि०)	१४७
पार्श्वस्तोत्र	हरखचंद (धनराज के शिष्य)	(हि०)	२८६
प्रायश्चितसमुच्चय	नंदिगुरु	(सं०)	३१,१८६
प्रायश्चितसंग्रह	अकलंक देव	(सं०)	१८६

भ

म

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
सखेश्वर पार्श्वनाथस्तुति	रामविजय	(हि०)	१५०
सखेश्वर पार्श्वनाथस्तवन	—	(हि०)	१४०
सथारा विधि	—	(स०)	३१२
सन्मतितर्क	सिद्धसेन दिवाकर	(स०)	१६६
सस्कृतमजरी	—	(स०)	३०८
सप्तपदार्थी	श्री भावविद्येश्वर	(स०)	४८
सप्तऋषिपूजा	—	(स०)	१५६,२०७
सप्तपरमस्थान कथा	खुशालचद	(हि०)	२६७
सप्तपरमस्थान पूजा	—	(स०)	२०५
सप्तपरमस्थान विधानकथा	श्रुतसागर	(स०)	८६
सप्तव्यसन कथा	आ० सोमकीर्त्ति	(स०)	८६,१२६
सप्तव्यसन कवित्त	—	(हि०)	१५५
सप्तव्यसन चरित्र	—	(हि०)	२१६
सप्तश्लोकी गीता	—	(स०)	३०२
सबोधपचासिका	गोतमस्वामी	(प्रा०)	१२३,१८६
सबोधपचासिका	त्रिभुवनचद	(हि०)	११४
सबोधपचासिका	द्यानतराय	(हि०)	३७,११६, १२३, २७३, ३११
सबोधपचासिका	देवसेन	(प्रा०)	११८
सबोधपचासिका	विहारीदास	(हि०)	१५३
सबोधपचासिका	—	(प्रा०)	१३६
सबोधपचासिका	—	(हि०)	३००
सबोधपचासिका टीका	—	(प्रा० सं०)	१८६
सबोधपचासिका	रइधू	(अप०)	३६
सबोधसत्तरी सार	—	(स०)	३७
सम्मेदशिखरपूजा	जवाहरलाल	(हि०)	२०७
सम्मेदशिखरपूजा	नदराम	(हि०)	२०७
सम्मेदशिखरपूजा	रामचद	(हि०)	६१
सम्मेदशिखरपूजा	—	(हि०)	६१, ११६
सम्मेदशिखरपूजा	—	(स०)	२०७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
सम्मेदशिखरमहात्म्य	दीक्षित देवदत्त	(स०)	३६,१६०
सम्मेदशिखरमहात्म्य	मनसुख सागर	(हि०)	३६
सम्यग्प्रकाश	डालूराम	(हि०)	३६
सम्यग्दर्शन के आठ अगों की कथा	—	(स०)	८६
सम्यक्त्वकौमुदी	मुनि धर्मकीर्त्ति	(स०)	८६
सम्यक्त्वकौमुदी कथा	जोधराज गोदिका	(हि० प०)	८६, २२५
सम्यक्त्वकौमुदी कथा	—	(हि०)	८६
सम्यक्त्व के आठ अगों का कथा सहित वर्णन	—	(हि०)	११८
सम्यक्चतुर्दशी	—	(हि०)	३
सम्यक्त्वपच्चीसी	भगवतीदास	(हि०)	३६,१७२
सम्यक्त्वसप्तति	—	(स०)	३१०
सम्यक्त्वी का वधावा	—	(हि०)	१५२
समकितभावना	—	(हि०)	१६४
समतभद्रस्तुति (वृहद् स्वयभू स्तोत्र)	समतभद्र	(स०)	१०८
समयसारकलशा	अमृतचन्द्राचार्य	(स०)	४३,१६४, २५६
समयसारगाथा	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	१३२, १६४, २८७
समयसारटीका	अमृतचन्द्राचार्य	(स०)	४३
समयसारनाटक	बनारसीदास	(हि०)	४४,११३, ११५, ११८, १२०, १५८, १६५, २७४, ३०३
समयसारभाषा	राजमल्ल	(हि०)	४४,१६५
समयसारभाषा	जयचद छाबडा	(हि०)	४५
समयसारवचनिका	—	(हि०)	१६३
समवशरणपूजा	पन्नालाल	(हि०)	२०३
समवशरणपूजा	लालचद विनोदीलाल	(हि०)	११४



★ ग्रन्थ प्रशस्तियों की सूची ★



क्रम संख्या	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	रचना काल	ग्र थ सूची का क्रमांक
२४	चारित्रसारभापा	मन्नालाल	सं० १८७१	१६२
२५	चौवीसठाणाचौपई	साह लोहट	स० १७३६	८६१
२६	चौरासीगोत्रोत्पत्तिवर्णन	नदानद	—	४८३
२७	छवितरंग	महाराजा रामसिह	—	५६७
२८	छंदरत्नावली	हरिराम	स० १७०८	५८२
२९	जइतपदवेलि	कनकसोम	स० १६२५	६०३
३०	जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम	—	२४७
३१	जानकीजन्मलीला	बालवृन्द	—	५६६
३२	जिनपालित मुनि स्वाध्याय	विमलहर्ष वाचक	—	५५
३३	जैनमार्त्तण्ड पुराण	भ० महेन्द्र भूषण	—	४८४
३४	ज्ञानसार	रघुनाथ	—	५०७
३५	तत्वसारदोहा	भ० शुभचन्द्र	—	१६
३६	तत्वार्थबोध भाषा	बुधजन	स० १८७९	६५
३७	तत्वार्थसूत्र भाषाटीका	कनककीर्त्ति	—	८२, ९२
३८	तमाखू की जयमाल	आणदमुनि	—	८०८
३९	त्रिलोकसारबधचौपई	सुमतिकीर्त्ति	स० १६२७	७१६, ५९४
४०	त्रिलोकसारभाषा	उत्तमचन्द	स० १८४१	५९८
४१.	दशलक्षणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	—	५१४
४२	दस्तूरमालिका	बशीधर	स० १७६५	८६४
४३	द्रव्यसग्रहभाषा	बशीधर	—	१२४
४४	श्री धू चरित्त	—	—	५७९
४५	नववाडसज्भाय	जिनहर्ष	—	८८८
४६	न्यायदीपिकाभाषा	पन्नालाल	स० १९३५	३१२
४७.	नागदमनकथा	—	—	७५८
४८	नित्यविहार (राधामाधो)	रघुनाथ साह	—	५०७
४९	नेमिजी का ब्याहलो (नवमगल)	लालचन्द	—	६२५
५०	नेमिब्याहलो	हीरा	स० १८४८	५५४
५१	नेमिनाथचरित्र	अजयराज	स० १७९३	६०९

क्रम सख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	रचना काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
५२	नदबत्तीसी	हेमविमल सूरि	सं० १५९०	४८२
५३	नदरामपच्चीसी	नदराम	सं० १७४५	५७२
५४	परमात्मपुराण	दीपचन्द	—	२६८
५५	पाकशास्त्र	अजयराज पाटनी	सं० १७९३	७२९
५६	पार्श्वनाथ स्तुति	भावकुशल	—	८०९
५७	पुरदरचौपई	ब्र० मालदेव	—	५५७
५८	पुण्यसारकथा	पुण्यकीर्त्ति	सं० १७६६	५९७
५९	पचाख्यान (पचतंत्र)	कवि निरमलदास	—	५९३
६०	पचास्तिकायभाषा	बुधजन	सं० १८९२	१३२
६१	प्रबोधचन्द्रोदय	मल्ल कवि	सं० १६०१	४८९
६२	प्रतिष्ठासारसग्रह	वसुनन्दि	—	४०५
६३	प्रद्युम्नचरित्र	सधारु	सं० १४११	४९७
६४	प्रसगसार	रघुनाथ	—	५०७
६५	बारहखडी	श्रीदत्तलाल	—	८४०
६६	बुधरासा	—	—	८०८
६७	भक्तामरस्तोत्रभाषा	गगाराम पाडे	—	७३१
६८	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	भ० रत्नचन्द्र सूरि	सं० १६६७	४२९
६९	भक्तिभावती (भक्ति भाव)	—	—	५७९
७०	भद्रबाहुचरित्रभाषा	चपाराम	सं० १८००	२६६
७१	भद्रबाहुचरित्र	किशनसिंह	सं० १७८२	५२७
७२	मदनपराजय भाषा	स्वरूपचद बिलाला	सं० १९१८	५९०
७३	मधुमालतीकथा	—	—	५७४
७४	महाभारत	लालदास	—	५१८
७५	मानमजरी	नददास	—	५३५
७६	मितभाषिणी टीका	शिवादित्य	—	३१६
७७	मूलाचारभाषाटीका	ऋषभदास	सं० १८८८	२११
७८	मृगीसवाद	—	—	७२९
७९	मोडा	हर्षकीर्त्ति	—	८०७
८०	यशोधरचरित्र	परिहानद	सं० १६७०	५१४
८१	रामकृष्णकाव्य	प० सूर्यकवि	—	२९३

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	रचना काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
८२.	रूपदीपपिंगल	जयकृष्ण	स० १७७६	५८५
८३.	वच्छराजहंसराजचौपई	जिनदेव सूरि	—	६३६
८४.	वणिकप्रिया	सुखदेव	स० १७६०	७१६
८५.	वर्द्धमानपुराणभाषा	प० केशरीसिंह	स० १८७३	४७१
८६.	वकचोरकथा	नथमल	स० १७२५	३३४
८७.	विक्रमप्रबधरास	विनयसमुद्र	स० १५८३	६०३
८८.	विद्याविलासचौपई	आज्ञासुन्दर	स० १५१६	६०३
८९.	वैतालपच्चीसी	—	—	५६२, ६०३
९०	वैनविलास	नागरीदास	—	४७७
९१.	वैराग्यशतक	—	—	२७६
९२.	व्रतविधानरासो	सगही दौलतराम	सं० १७६७	५०४
९३	शांतिनाथस्तोत्र	कुशलवर्द्धन शिष्य नगागणि	—	४४२
९४.	शालिभद्रचौपई	जिनराज सूरि	स० १६७८	५२७
९५	शृंगारपच्चीसी	छविनाथ	—	४७५
९६.	षट्मालवर्णन	श्रुतसागर	स० १८२१	७९२
९७.	षोडशकारणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	—	५१४
९८	सतरप्रकारपूजा प्रकरण	साधुकीर्त्ति	स० १६१८	५३५
९९.	सप्तपदार्थी	भावविद्येश्वर	—	३१७
१००.	सखेश्वरपार्श्वनाथ स्तुति	रामविजय	—	८०८
१०१.	सयमप्रवहण	मुनि मेघराज	सं० १६६१	९४
१०२.	संबोधसत्तरी सार	—	—	२४१
१०३.	सबोधपंचासिका	रइधू	—	२३६
१०४.	साखी	कबीरदास	—	६२९
१०५.	सामायिकपाठभाषा	त्रिलोकेन्द्रकीर्त्ति	सं० १८३२	६८७
१०६	सारसमुच्चय	कुलभद्र	—	२४४
१०७	सारसमुच्चय	दौलतराम	—	२४५
१०८.	सुकुमालचरित्र भाषा	नाथूलाल दोसी	—	२६३
१०९	सुबुद्धिप्रकाश	थानसिंह	स० १८४७	६११

★ लेखक प्रशस्तियों की सूची ★

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	लेखन काल	ग्रन्थ सूची का क्रमांक
१.	आगमसार	मुनि देवचन्द्र	सं० १७६६	१
२.	आत्मानुशासन टीका	पं० प्रभाचन्द्र	सं० १५८१	२५३
३.	आदिपुराण	पुष्पदंत	सं० १५४३	२६६
४.	आराधनाकथाकोष	—	सं० १५४५	३१७
५.	उत्तरपुराण	पुष्पदंत	सं० १५५७	४७६
६	उपासकाध्ययन	आ० वसुनंदि	सं० १८०८	४८
७	कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	सं० १६०६	६
८.	कर्मप्रकृति	"	सं० १६७३	१२
६.	गोमट्टसार	"	सं० १७६६	२६
१०	चतुर्विंशतिजिनकल्याणक पूजा	जयकीर्त्ति	सं० १६८४	३४५
११.	चारित्रशुद्धिविधान	भ० शुभचन्द्र	सं० १५८४	३५३
१२.	जंबूस्वामीचरित्र	महाकवि वीर	सं० १६०१	४८५
१३.	जिणयत्तचरित्त	पं० लाखू	सं० १६०६	४८६
१४.	जिनसंहिता	—	सं० १५६०	३४६
१५	णायकुमारचरिए	पुष्पदंत	सं० १५१७	४६०
१६	"	"	सं० १५२८	४६१
१७.	तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	सं० १६४६	७८
१८.	तत्वार्थसूत्र वृत्ति	—	सं० १५५७	७६
१६.	त्रैलोक्य दीपक	वामदेव	सं० १५१६	६०१
२०.	द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	—	१११
२१.	द्रव्यसंग्रहटीका	ब्रह्मदेव	सं० १४१६	२८
२२	धन्यकुमारचरित्र	सकलकीर्त्ति	सं० १६५६	४६३
२३.	धन्यकुमारचरित्र	"	सं० १५६४	३५१
२४.	धर्मपरीक्षा	आ० अमितगति	सं० १७६२	१७७
२५	नदयत्तीसी	हेमविमल सूरि	सं० १६	४८५
२६.	पद्मनंदिपंचविंशति	पद्मनंदि	सं० १५३२	१६१

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	लेखन काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
२७.	परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	स० १४८६	११६
२८	प्रबोधसार	पं० यश कीर्त्ति	सं० १५२५	१६५
२६.	प्रवचनसारभाषा	हेमराज	स० १७११	२७१
३०.	प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	सकलकीर्त्ति	स० १६३७	१६६
३१	वाहुवलिदेवचरिए	प० धनपाल	स० १६०२	५००
३२	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	भ० रत्नचन्द्र सूरि	सं० १७२५	४२६
३३	भगवानदास के पद	भगवानदास	सं० १८७३	४२६
३४	भविसयत्तचरिए	पं० श्रीधर	स० १६४६	५०५
३५.	भविसयत्तचरिए	"	सं० १६०६	५०६
३६.	भावसंग्रह	देवसेन	सं० १६२१	१३३
३७	"	"	सं० १६०६	१३४
३८.	"	श्रुतमुनि	स० १५१०	१३५
३६.	भोजचरित्र	पाठक राजवल्लभ	स० १६०७	५०७
४०.	मृगीसंवाद	—	स० १८२३	७२६
४१	मूलाचारप्रदीपिका	भ० सकलकीर्त्ति	स० १५८१	२१०
४२.	यशोधरचरित्र	वासवसेन	सं० १६१४	२७७
४३	लब्धिसार	नेमिचन्द्राचार्य	सं० १५५१	१३६
४४	वड्ढमाणकहा	नरसेन	स० १५८४	५१८
४५.	वड्ढमाणकव्व	प० जयमित्रहल	स० १५५०	५१६
४६	वणिकप्रिया	सुखदेव	सं० १८५५	७१६
४७	शब्दानुशासनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	स० १५२४	३६५
४८.	षट्कर्मोपदेशमाला	अमरकीर्त्ति	स० १५५६	५२३
४६	षट्कर्मोपदेशमाला	भ० सकलभूषण	स० १६४४	८६
५०	षट्पचासिका बालाबोध	भट्टोत्पल	स० १६५०	४५६
५१	समयसार टीका	अमृतचन्द्राचार्य	स० १७८८	२८३
५२	"	"	स० १८००	२८६
५३	समयसारनाटक	बनारसीदास	स० १७०३	२६०
५४.	संयमप्रवहण	मुनि मेघराज	स० १६८१	६४
५५	सिद्धचक्रकथा	नरसेनदेव	स० १५१५	५३३
५६	हरिवंशपुराण	महाकवि स्वयभू	सं० १५८२	५३६

❋ ग्रंथ एवं ग्रंथकार ❋

संस्कृत-भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अकलंकदेव—	तत्त्वार्थराजवार्तिक	१५
	प्रायश्चित्त संग्रह	१८६
अक्षयराम—	णमोकारपैंतीसी	२०५
	मासांतचतुर्दशी	२०५
	सौख्यव्रतोद्यापनपूजा	६३, २०१, २०६
अग्निवेश—	अंजनशास्त्र	[illegible]४
ब्रह्म अजित—	हनुमच्चरित्र	२२१
अनन्तवीर्य —	प्रमेयरत्नमाला	४८
अन्नंभट्ट—	तर्कसंग्रह	४२, १९६
अनुभूतिस्वरूपाचार्य-	सारस्वतप्रक्रिया	८७, २३१
अभयदेव सूरि—	अन्तगडदशाओ वृत्ति	१
	उपासकदशासूत्र विवरण	[illegible]४
अभयनंदि—	दशलक्षण पूजा	[illegible]०१
अभ्रदेव—	व्रतोद्योतन श्रावकाचार	३४
अभिनव वादिराज (प० जगन्नाथ)	कर्मस्वरूप वर्णन	५
अभिनव धर्मभूषण-	न्यायदीपिका	४७, १९[illegible]
अमरकीर्त्ति—	जिनसहस्रनामटीका	२३९
अमरसिंह—	अमरकोश	८८, २३२
अमितिगति—	धर्मपरीक्षा	२४, १८४
	भावनाबत्तीसी	१५[illegible], २५७
	श्रावकाचार	३६
	सुभाषितरत्नसंदोह	२३६
अमृतचन्द्र—	तत्त्वार्थसार	१७९
	पंचास्तिकायटीका	१६, १८९
	प्रवचनसार टीका	१९[illegible]
	पुरुषार्थसिद्ध्युपाय	३२, १८४
	समयसार कलशा	४३, १९४, २४[illegible]
	समयसार टीका	[illegible]४३
अमृतप्रभसूरि—	योगशतक	२४७
प० अल्लारी—	भोजप्रबंध	२१[illegible]
असग—	शांतिनाथ पुराण	६६
आनन्दराम—	चौबीसठाणा चर्चा टीका	९
आशाधर—	जिनयज्ञकल्प (प्रतिष्ठापाठ)	२००
	जिनसहस्रनाम	१०२, १३४, २०४, २३६, २४[illegible]
	रत्नत्रयपूजा	२००
	सागारधर्मामृत	३७, १६०
	स्तोत्र टीका	२४४
	होमविधान	३०[illegible]
इन्द्रनंदि—	अंकुरारोपणविधि	४९
	नीतिसार	२३५
उमास्वामी—	तत्त्वार्थसूत्र	११, १२, ५८, १०१, १११, ११२, १३५, १६७, १७२, १७९, २६४, २७२, २७५, ३०२, ३०८, ३१९

प्राकृत—भाषा

अपभ्रंश भाषा

हिन्दी भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	निशिभोजनत्याग कथा	८४, २२६
	शीलकथा	८५, २८७
भावकुशल—	पार्श्वनाथस्तुति	१४१
भावभद्र—	चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	१४०
भुवनकीति —	कलावती चरित्र	६७
	चिंतामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	१४०
भूधरदास—	एकीभावस्तोत्र भाषा	२२८, ३११
	गजभावना	३११
	चर्चा समाधान	६, ११७
	जखड़ी	१३७, ३१२
	जैनशतक	६४, १३४, २३५
	पद संग्रह	११३, १३२, १३७, १५५
	पंचमेरु पूजा	५७, ३११
	पार्श्वपुराण	७०, १११, २१३
	बारह भावना	१५७
	भूधर विलास	३१२
	वज्रनाभि चक्रवर्त्ती की	१५४, १६२
	वैराग्य भावना	३११
	बाईस परीषह	३११
	बीनतियां	३११
भूधरमल्ल—	हुक्का निषेध	१२६
मनराम—	अक्षरमाला	१२०
	गुणाक्षरमाला	३०६
	धर्मसहेली	१६७
	पद	११४, ११५, १२०, १४०, ३००
	बड़ा कक्का	१५३
	बत्तीसी	२६६
	मनराम विलास	२३६
	रोगापहार स्तोत्र	११५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	विनती	३०६, ३०७
मनरंग—	चौबीस तीर्थंकर पूजा	१६६
	पार्श्वनाथ स्तोत्र	१४०
मनसुखराम—	शिखर विलास	१८८
मनसुख सागर—	सम्मेदशिखर महात्म्य	३६
मन्नालाल (खिन्दूका)		
	चारित्रसार भाषा	२५
	पद्मनंदिपच्चीसी भाषा	३१
मनोहरदास—	ज्ञानचिंतामणि	२८, १३१, १५३, २३५
	धर्म परीक्षा	२६
मनोहर—	चिन्तामणि मान बावनी	११२, ११६
	लघु बावनी	११६
	सुगुरु सीख	१६५
मनहरण—	मास	२६२
मलजी—	पद संग्रह	१३०
कवि मल्ल—	प्रबोधचन्द्रोदय (नाटक)	६०
महमद—	पद	१४१
महिमा सागर—	स्तम्भनक पार्श्वनाथ गीत	२७३
मुनि महिसिंह—	अक्षर बत्तीसी	२५०
ब्र० मालदेव—	पुरंदर चौपई	८४, ११५
बाई मेघश्री—	पंचाणुव्रत की जयमाल	३०५
मुनि मेघराज—	संयम प्रवहण	१८९
उपाध्याय मेरुनन्दन—		
	अजित शांति स्तोत्र	१६०
सहजकीर्त्ति—	प्रीति छत्तीसी	२६२
यशोनन्दि—	श्रीजिननमस्कार	१६५
रघुनाथ—	गणभेद	२६१
	ज्ञानसार	२६१
	नित्यविहार (राधा माधो)	२६२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पंचमंगल	१३१
	राजुल पच्चीसी	१३१, १३२, १४६, १५१, १६६, २२७
	समवशरण पूजा	११४
लालदास—	महाभारत कथा	१३६, २६७
मुनि लावन स्वामी—	शालिभद्र सज्झाय	१७४
साह लोहट—	अठारह नाता का चौढाला	११३, १३२, १६१, १६६, ३०६
	चौबीसठाणा चौपई	१६६
ब्रह्मवर्द्धन—	गुणस्थान गीत	११६, १६४
वृन्द—	दोहा	१३६
	पद	१३२
	वृन्द सतसई	१११
वृन्दावन—	चतुर्विंशति जिनपूजा	५१, १६६
	छन्द शतक	८८
	तीस चौबीसी पूजा	५३
	प्रवचनसार भाषा	४२
भ० विजयकीर्त्ति—	चन्दनषष्ठिव्रतकथा	६१
	पार्श्वनाथस्तवन	१४१
	श्रेणिकचरित्र	७६
विजयतिलक—	आदिनाथ स्तवन	१४०
विजयदेव सूरि—	शीलरास	११३, २६१
विजयभद्र—	सज्झाय	१७८
विद्याभूषण—	लक्षण चौबीसी पद	२६८
विनयसमुद्र—	विक्रम प्रबंध रास	२६५
विनयप्रभ—	गोतम रासा	२०१
विश्वभूषण—	पद	१३१
	पंचमेरु पूजा	१५२
वाचक विनय सूरि—	आराधनास्तवन	१००

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
विनोदीलाल—	नेमीश्वर राजमति गीत	१५६
	नेमीश्वर राजुल संवाद	२०६
	प्रभात जयमाल	३११
	भक्तामरस्तोत्रकथा भाषा	२२६
	मान पच्चीसी	२५७
	राजुल पच्चीसी	१६५
मुनि विमलकीर्त्ति—	नंद बत्तीसी	६४
विमलहर्ष वाचक—	जिनपालितमुनि स्वाध्याय	१८४
विहारी—	विहारी सतसई	१११, १३८
कवि वीर—	मणिहार गीत	२६३
वील्हव—	नेमीश्वर गीत	
श्यामदास (गोधा)	पद	१६४
	नेमिनाथ का बारहमासा	१६६
पं० शिरोमणिदास—	धर्मसार चौपई	७६
शिव कवि—	किशोर कल्पद्रुम	१६६
शुभचन्द्र—	चतुर्विंशति स्तुति	१४३
	तत्वसार दोहा	१७८
शोभचन्द—	ज्ञान सूखडी	१२६
	पद	१५५
श्रीपाल—	जिनस्तुति	३११
श्रुतसागर—	पद्माल वर्णन	१४३
सदासुख कासलीवाल—		
	अकलंकाष्टक भाषा	३४, १८७
	अर्थप्रकाशिका	१८
	तत्वार्थसूत्र भाषा	१८
	भगवतीआराधना भाषा	३३, १८७
	रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा	३४, १८७
	लघु भाषा वृत्ति	१४
	षोडशकारणभावना तथा	१८८



★ शुद्धाशुद्धि विवरण ★



पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१× १ ३१५×१५	अन्तगढदशाओ वृत्ति	अन्तगडदशाओ वृत्ति
१× ७	इकवीसठाणा चर्चा	इकवीसठाणा—सिद्धसेनसूरि
१×१३	जीवपाठ	जीवसंख्यापाठ
१×१४	माघ सुदी	पोस बुदी
२×१६	—	१ से १७ तक सभी पाठ रामचन्द्र कृत हैं।
४× ६	कणयणिंद	कणयणंदी
५×२२	पावच्छी	यावच्छी
८×१५	वोछ	वोच्छं
६×२१	समोसरमवर्णन	समोसरणवर्णन
१३×११	१८३६	१८४६
१५×१७	×	१४२६
२०×२२	जिनाय	—
२४× ७	भडार	भडारी
२८×२२	—	भाषा—हिन्दी
२६× ६	रचनाकाल ×	रचनाकाल—
३६×२३ ३४५×२५ ३५३×२४	रइधू	अज्ञात
३८×१६	मे प्रतिलिपि की थी	मे संशोधन करके प्रतिलिपि करवाई थी
३६× ७	५१	२५१
३६×२०	चिन्तान	चित्तान्
३६×२०	धर्मरेजितचैतसान	धर्मरजितचेतसान
४१× ६	भाषा—अपभ्रंश	—
४५×१८	विद्यानन्दि	विद्यानन्द

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
४६×१४	१८८३	१८६३
४६× ७ ३४६×१२	आ. समन्तभद्र	पूज्यपाद
४७×१०	यति	अभिनव
४७×१३	३१	३१२
४८×१०	सं० १६२७ श्रावण सुदी ७	सं० १८६३ अषाढ सुदी ४ बुधवार
६०×२३	—	भाषा–संस्कृत
६१× ३	प्राकृत	अपभ्रंश
६५×२५	रामचन्द्र	रायचन्द
६६× ८	अधुसारि	अनुसारि
६६× ७	वसतपाल	वसंतपाल
७०×१८	प्रद्युम्नचरि	प्रद्युम्नचरित—सधारू
७३×२४	भविमपत्त	भविसयत्त
७४× २	संस्कृत	अपभ्रंश
७५× ४ ३३६×२३ ३५२×३०	परिहानन्द	नन्द
७६×२७	परिहानन्द	परि हां नन्द
७८×१६	सं० १६१८	सं० १६७८
७८×२६	आराधना	दौलतरामजी कृत आराधना
७९× ३	श्रेणिक चरित्र	श्रेणिक चरित्र (वर्द्धमान काव्य)
७९×११	कवि वालक	कवि रामचन्द्र "वालक"
८१×१६	गौतम पृच्छा	गौतमपृच्छा वृत्ति
८२× १	अंतिमपाठ–"पाठक पद सयुक्तं" के पूर्व निम्न श्लोक और पढ़ें —	

श्रीजिनहर्षसूरिणा सुशिष्या पाठकवरा ।

श्रीमत्सुमतिहंसाश्च तच्छिष्योमतिवर्द्धते ॥ १ ॥

८४×१८	ब्र० मालदेव	मालदेव
८४×२१	अनुरुव कोठ	अउरुव कोउ
८४×२५	अगर्या मील तो	अगमी मीलतो
८५×२५	मारामल्ला	मारामल्ल

पत्र एव पक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
८५×२५	पथ	पद्य
८६× ८	आ०	भ०
८७× ७	१७०८	१७६५
८७× ७	लेखनकाल ×	लेखनकाल–सं० १८०६ फागुण बुदी १३
८७×२१	रचन	रचना
६०×१५	प्रारंभिक पाठ के चौथे पद्य से आगे निम्न पद्य और पढें—	

अंतर नाडी सोखै बाय, समरस आनद सहज समाय।
विस्व चक्र में चित न होय, पडित नाम कहावै सोय ॥ ५ ॥
जब वर खेमचन्द गुर दीयो, तव आरभ ग्र थ को कीयो।
यह प्रवोध उतपन्यो आय, अधकार तिहि वाल्यो खाय ॥ ६ ॥
भीतर बाहर कहि समुझावै, सोई चतुर तापै कहि आवै।
जो या रस का भेदी होय, या मे खोजै पावै सोइ ॥ ७ ॥
मथुरादास नाम विस्तार्यो, देवीदास पिता कौ धार्यो।
अंतर वेद देस मे रहै, तीजै नाम मल्ह कवि कहै ॥ ८ ॥
ताहि सुनत अदभुति रुचि भई, निहचै मन की दुविधा गई।
जितने पुस्तक पृथ्वी आंहि, यह श्री कथा सिरोमणि ताहि ॥ ६ ॥
यह निज बात जानीयो सही, पर्चै प्रगट मल कवि कही।
पोथी एक कहुं तै आनि, ज्यो उहा त्यों इहा राखी जानि ॥ १० ॥
सोरह सै सबत जब लागा, तामहि वरष एक अर्द्ध भागा।
कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वादसी, ता दिन कथा जु मन मे बसी ॥११॥
जो हों कृष्ण भक्ति नित करौं, वासुदेव गुरु मन मे धरौं।
तो यह मोपै ह्वै ज्यों जिसी, कृष्ण भट्ट भाषी है तिसी ॥१२॥

॥ दोहा ॥

मथुरादास विलास इहि, जो रमि जानैं कोय।
इहि रस वेधे मल्ह कहि, वहुरनि उलटै सोय ॥१३॥
जब निसु चन्द्र अकासै होइ, तब जो तिमिर न देखै कोइ।
तैसे हि ज्ञान चन्द्र परकासै, ज्यौं अज्ञान अंध्यारौ नासै ॥१४॥
परमात्म परगट है जाहि, मानौ इहै महादेव आहि।
ग्यान नेत्र तीजे जब होई, मृगतृष्णा देखै जगु सोई ॥१५॥

पत्र एव पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
	अनुभै ध्यान धारना करै, समता सील माहि मन धरै।	
	इहि विधि रमि जो जानै सही, महादेव मन वच क्रम कही ॥१६।	
६०×२६	या र	यार
६२×३, ३६४×७	उतमचद	टोडरमल
६४×६	वनारसीदास	द्यानतराय
१००×१८	वाचक विनय सूरि	वाचक विनय विजय
१०१×६	उगणसीयइ	उगणतीसइ
१०१×६	राते रचउ	राते
१०१×७	कारया	कारणां
१०१×६	इठवन	इतवन
१०३×२६	नेमिदशभवर्णन	नेमिदश भववर्णन
१०५×२२	मानतु गाचार्य टीकाकार	मानतु गाचार्य । टीकाकार
१०७×२१	६	५
१०६×१	प्रथम पक्ति के आगे निम्न पक्ति और पढे—	
	"शिष्य ताहि भट्टारक सत, तिलोकेन्द्रकीरति मतिवंत।	
११०×११	प्राकृत (,,)	अपभ्रंश
११४×१,१८	कवि बालक	कवि रामचन्द्र 'बालक'
११४×२३	दोह	दोहा
११५×२४	१६६१	१६६३
१ ७×१४	नि कनकामर	मुनि कनकामर
१२१×२	१७६०	१७१७
१२७× २	ोप	विशेप
१३ ×६	मनरकट	मरकट
१३५×३	वडा चादन्त	वडाचा दन्त
१३७×५	वदो के पठनार्थ ने	चदो के पठनार्थ
१३८×११	क	धार्मिक
१३६×१	का नाम	कर्त्ता का नाम
१३६×२६	चरित	ध्रु चरित

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१४६×५	ललचचंद	लालचन्द
१४७×१६ ३६३×२७	अमरमणिक	अमरमणिक के शिष्य साधुकीर्त्ति
१४८×२	माणिक सूरि	पुण्यसागर
१४८×२४, २६ ३३८×२६ ३५०×२६	मोडा	मोरडा
१४६×२१	गुजराती	हिन्दी (राजस्थानी)
१४६×३	मोडो	मोरडो
१५०×११	जसुमालीया	जसु मालिया
१५०×१८	कापथ	कायथ
१५०×२०	पखार	परवार
१५१×६	नारी चरित्र	नारी चरित्र सबंधी एक कथा
१५५×१०	जैन	जे न
१५५×२१	बुधजन	द्यानतराय
१५०×६	राज पट्टावली	देहली की राजपट्टावली
१५६×१०	राजाओं के	देहली के राजाओं के
१६३×१५ ३७०×२१	ज्ञानबत्तीसी	अध्यात्म बत्तीसी
१७०×६	३५ वें पद्य के आगे की पक्ति निम्न प्रकार है— तस शिष्य मुनि नारायण जंपइ धरी मनि उल्हास ए ॥१३५॥	
१६६×८	पत्र सख्या– ।	पत्र संख्या–१६ ।
१७८×२६	रचनाकाल–× ।	रचनाकाल सं० १४२६ ।
१८०×१६	कण कणत्व	देवपट्टोदयाद्रितरुण तरुणित्व
१८०×१८	लोधा ही	लोधाही
१८४×६	विमलहर्षवाचक	भाव
१८७×११	१६०७	१६००
१८७×१६	१८२१	१६२१
१८८× ६	१४४४	१६४४
१६०×२१	श्रीरत्नहर्ष	श्री रत्नहर्ष के शिष्य श्रीसार
१६४× ४	भव वैराग्य शतक	वैराग्यशतक

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१६४×१८	भूधर	पं० भूधर
१६६×१७	धर्मभूषण	अभिनव धर्मभूषण
२००×२५	तेलाव्रत	लब्धिविधान तेला व्रत
२०४×१५ ३१८×१०	आ० गणिनंदि	आ० गुणिनदि
२०४×२४	पीले	पील्या
२१८×१६	पंडि	पडित
२१६×२४	रचनाकाल	रचनाकाल स० १६१८
२२१×१२	कवि वालक	कवि रामचन्द्र 'बालक'
२२१×१३	सं० १७०३	१७१३
२२४×१६	अष्टान्हिका कथ	अष्टान्हिका कथा-मतिमन्दिर
२२७× ७	कनककीर्ति	कनक
२२७×२१ ३३६× ७	वकचोरकथा (धनदत्त सेठकी कथा)	वकचोरकथा, धनदत्त सेठ की कथा
२२८×२१	देव ए	देवरा
२२८×२६	सै मदारखा	सैमदारखा
२३५× २ ३५०×१८ ३६४×५	कामन्द	—
२३५×१५	१७२६	१७२८
२३७× ७	१८८०	१७८०
२३८×१०	कुमुदचन्द्र	मू० क० कुमुदचन्द्र/टीकाकार उतमऋषि
२४०× ८	जयानंदिसूरि	जयनंदिसूरि
२४०×१४	शालिपडित	शालि पडित
२४३×१७	(युगादि देव स्तवन)।	(युगादिदेव स्तवन) विजयतिलक
२४३×२७	मिधुण्यो	मिंघुण्यो
२४४× २	ए भणइ	पभणइ
२४५× ६	ज्योतिष (शकुनशास्त्र)	वास्तुविज्ञान
२४६× ७	वराहमिहरज	वराहमिहर
२५२×१०	महिसिंह	महेस

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२५२×१४	महसंहि	महेसहि
२५२×१६	गोत्रवर्णन	खडेलवालों के गोत्र वर्णन
२५३× ६	रचनाकाल।	रचनाकाल सं० १८८६
२५३× ६	लेखनकाल स० १८८६	लेखनकाल ×।
२५३×१५	छह सतीयासिंह	छहस तीयासिंह
२५४×२५	अव्दनीवासी	अब्द नीवासी
२५५×१४	हेमविमलसूरि	हेमविमल सूरि के प्रशिष्यगण संघकुल
२५७×१६	समासो	तमासो
२५८× ६	व्रतविधानवासो	व्रतविधानरासो
२५६× ५	श्रावण	श्रावक
२६०× ८	२७०	२७० रचना काल सं० १७४३
२६७× ६	५१६	५१८
२६६×१२	वालक	रामचन्द्र 'बालक'
२७०× ६	२६	२४
२७१×१२	गोट	गोत
२७३× ६	वीर स०	विक्रम स०
२७३×११	हिन्दी	सस्कृत
२७३×१५	१६५८	१६१८
२७३×१८	पद २	जिनदत्त सूरि गीत
२७३×१८	जिनदत्तसूरि	
२७६×८	पाठ्य	पाठ
२७६×१३	भूषाभूषण	भाषाभूषण
२८०×१०	पत्रावली	ऋपत्रावली
२८४×१८, ३२८×१६, ३५१×२२	श्री धूचरित	श्री धूचरित—जनगोपाल
२८६×२८	१७६६	१६६६
२६०× ६	भाथइ	भाषइ
२६०×१२	तसघरन वनि धथाइ	तस घर नवनिधथाइ
२६०×१२	अद्वकउ न तरुवइ	अधक उनत हुवइ

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२६१×२८	जिनदत्त सूरि	सययसुन्दर
२६१×२०	र० का० स० १७२१ पद्य १०	—
२६२×८ ३१८×१८	माति छत्तीसी	प्राति छत्तीसी
२६२×८ ३३८×१८	यश' कीर्त्ति	सहजकीर्त्ति
२६२×१४	हरिकलश	हीरकलश
२६२×१४	स० १६३२	१६३६
२६४×७	थाउलपुरि	पाडलपुरि
२६४×११	भारवदा	भैरवदास
२६४×२८	वेतालदास	—
२६७×६	२१८	३१८
३०१×१६	„ (१२)	सस्कृत (१२)
३०१×२०	„ (१३)	हिन्दी (१३)
३०१×२५	चतुराई	परिचई
३०३×६	१७४०	१७४४
३०४×२ ३२०×२४	गुनगंजनम	गुनगंजन कला
३१०×१५	पष्ठिशत	पष्ठिशत प्रकरण
३१०×१५	„	प्राकृत
३१०×६	६१	८१
३१२×६	कुशलमुनिंद	—
३१५×८	चैनसुखदास	चैनसुख
३१५×१५	मुनि महिसिंह	मुनि महेस
३१६×७	गणचन्द्र	गुणचन्द्र
३१८×६	उपदेशशतक-बनारसीदास	उपदेशशतक-द्यानतराय
३२०×१६	यति धर्मभूषण	अभिनव धर्मभूषण
३३१×११	मंदास	धर्मदास
३४१×२२	२६१	२६०
३५०×१८	२७६	३७६
३६२×१४	गोयमा	गोयम
३६३×१४	संबोध पंचासिका	—
३६४×७	उत्तमचंद्र	टोडरमल
३६४×५	कामन्द कामन्दकीय नीतिसार	—

जैन-आगम-ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्क ५,

पंचमगणहरभयवंसिरिसुहम्मसामिविरइयं छट्ठं अंगं

णायाधम्मकहाओ

[ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम]

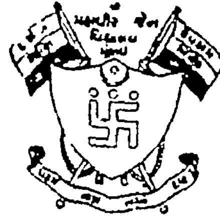
सम्पादकः

पूज्यपादाचार्यमहाराजश्रीमद्विजयसिद्धिसूरीश्वरपट्टालङ्कार-
पूज्यपादाचार्यमहाराजश्रीमद्विजयमेघसूरीश्वरशिष्य-
पूज्यपादमुनिराजश्रीभुवनविजयान्तेवासी

मुनि जम्बूविजयः

सहायकः

मुनि धर्मचन्द्रविजयः



श्री महावीर जैन विद्यालय

बम्बई ४०००३६